एम. ए. द्वितीय सत्र पाठ्यक्रम – **MSKTC-203**

संस्कृत व्याकरण

(लघुसिद्धान्त कौमुदी - प्रारम्भ से लेकर तिङ्न्त प्रकरण तक)

इकाई 1-20

सम्पादक: डॉ. भानु शर्मा

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

	विषयानुक्रमणिका	पृ. संख्या
इकाई -1	सञ्ज्ञा प्रकरण	2-18
इकाई-2	अच्सन्धि प्रकरण	19-41
इकाई-3	हल्सन्धि प्रकरण	42-67
इकाई-4	विसर्ग सन्धि प्रकरण	68-78
इकाई-5	अकारान्त तथा आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द (अजन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	79-102
इकाई-6	इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द (अजन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	103-118
इकाई-7	ईकारान्त-ऊकारान्त- ऋकारान्त-ओकारान्त-ऐकारान्त शब्द (अजन्त पुं.प्रकरण)	119-132
इकाई-8	अजन्त स्त्रीलङ्ग प्रकरण	133-145
इकाई-9	अजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण	146-157
इकाई-10	हकारान्त-वकारान्त-रेफान्त-मकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	158-177
इकाई-11	नकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	178-193
इकाई-12	दकारान्त, जकारान्त तथा चकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	194-221
इकाई-13	तकारान्त, शकारान्त, षकारान्त, सकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	222-237
इकाई-14	हलन्त स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग शब्द	238-249
इकाई-15	भ्वादि गण- भू धातु	250-280
इकाई-16	भ्वादि गण- अन्य परस्मैपदी धातुएं	281-304
इकाई-17	भ्वादि गण- आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुएं	305-324
इकाई-18	अदादि गण	325-351
इकाई-19	जुहोत्यादि-दिवादि-स्वादि गण	352-372
इकाई-20	रुधादिगण से चुरादि गण	373-400
परिशिष्ट		401-413

इकाई-1

सञ्ज्ञाप्रकरण

संरचना

1.1. पाठ का परिचय

1.2. पाठ का उद्देश्य

1.3. मङ्गलाचरण तथा वर्ण परिचय

- 1.3.1. मङ्गल श्लोक
- 1.3.2. वर्ण परिचय
    - स्वयं आकलन प्रश्न-1

1.4. इत् सञ्ज्ञा तथा प्रत्याहार

- 1.4.1. इत् सञ्ज्ञा
- 1.4.2. लोप सञ्ज्ञा
- 1.4.3. लोप विधान
- 1.4.4. प्रत्याहार
    - स्वयं आकलन प्रश्न-2

1.5. वर्णों के भेद

- 1.5.1. ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत सञ्ज्ञा
- 1.5.2. उदात्त सञ्ज्ञा
- 1.5.3. अनुदात्त सञ्ज्ञा
- 1.5.4. स्वरित सञ्ज्ञा
- 1.5.5. अनुनासिक सञ्ज्ञा
    - स्वयं आकलन प्रश्न-3

1.6. वर्णों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न

- 1.6.1. उच्चारण स्थान
- 1.6.2. प्रयत्न- आभ्यन्तर, बाह्य
- 1.6.3. सवर्ण सञ्ज्ञा
- 1.6.4. सवर्ण ग्रहण
    - स्वयं आकलन प्रश्न-4

1.7. अन्य सञ्ज्ञाएं

- 1.7.1. संहिता सञ्ज्ञा
- 1.7.2. संयोग सञ्ज्ञा
- 1.7.3. पद सञ्ज्ञा

- स्वयं आकलन प्रश्न-5

1.8. सारांश

1.9. कठिन शब्दावली

1.10. स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.11. सहायक ग्रन्थ

1.12. अभ्यासात्मक प्रश्न

1.1 पाठ का परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ लघुसिद्धान्तकौमुदी आचार्य वरदराज द्वारा प्रणीत है। यह एक वृत्ति-ग्रन्थ है जिसमें सरल वाक्यों में महर्षि पाणिनि के सूत्रों का अर्थ बताया गया है। इसमें अष्टाध्यायी के सभी सूत्रों के नहीं लिया गया है अपितु बालकों का सरलता से व्याकरण में प्रवेश हो सके इसके लिए प्रक्रियोपयोगी मुख्य सूत्रों का ही ग्रहण किया गया है। इसके अतिरिक्त महाभाष्य आदि बृहत् ग्रन्थों में प्रतिपादित व्याकरण के क्लिष्ट सिद्धान्त इस ग्रन्थ में नहीं हैं अपितु छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा सूत्रों का अर्थ बताया गया है। अतः इस का नाम लघु सिद्धान्तकौमुदी यथोचित ही है। यहाँ अष्टाध्यायी के सूत्रों का क्रम अनुसृत नहीं है बल्कि समान प्रक्रिया वाले शब्दों की सिद्धि के लिए सूत्र समान प्रकरणों में स्थापित किए गए हैं। विभिन्न प्रकरणों में विभाजित इस ग्रन्थ के आदि में हम सञ्ज्ञा प्रकरण पढते हैं। सञ्ज्ञा का अर्थ किसी पदार्थ का नाम होता है। अतः कुछ नामों के विषय में हम जानेंगे। चूँकि भाषा शिक्षण वर्णों के परिचय से आरम्भ होता है इसलिए इस प्रकरण में वर्णों की सञ्ज्ञाएं प्रतिपादित की जाएंगी। व्याकरण में छह प्रकार के सूत्रों में सञ्ज्ञा सूत्र भी एक प्रकार है। सञ्ज्ञा सूत्र किसी वर्ण, शब्द अथवा शब्दांश का नाम हमें बताता है। सञ्ज्ञा सूत्र में दो प्रकार के पद होते हैं। पहला सञ्ज्ञा पद, जो वर्ण आदि के नाम का प्रतिपादन करता है। दूसरा सञ्ज्ञी पद, जो उक्त नाम को धारण करने वाले वर्ण आदि के विषय में बताता है। इसी के साथ वर्णों के उच्चारण की प्रक्रिया के ज्ञान के लिए वर्णों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न बताए जाएंगे।

1.2. उद्देश्य-

- वर्णों का परिचय करवाना
- वर्णों की विभिन्न सञ्ज्ञाओं का ज्ञान करवाना
- प्रत्याहार का ज्ञान करवाना

- वर्णों के भेदों का ज्ञान करवाना
- वर्णों के उच्चारण स्थानों तथा प्रयत्नों का परिचय करवाना

1.3. मङ्गलाचरण तथा वर्ण परिचय

ग्रन्थ को लिखने से पूर्व ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गल वचन करने की शास्त्रीय परम्परा है। यहाँ भी सञ्ज्ञा प्रकरण के आरम्भ में हम सर्वप्रथम ग्रन्थकार द्वारा किया गया मङ्गलाचरण तथा वर्णों के परिचय के लिए माहेश्वर सूत्र पढेंगे।

1.3.1. मङ्गल श्लोक

नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्।
पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीम्॥

अन्वय- अहं शुद्धां गुण्यां देवीं सरस्वतीं नत्वा पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीं करोमि।

अर्थ- मैं (वरदराज) शुद्ध- दोषरहित, गुण्य- प्रशस्त गुणों से युक्त, देवी सरस्वती को नमस्कार कर के पाणिनि द्वारा कहे गए व्याकरण में छात्रों के प्रवेश के लिए लघुसिद्धान्तकौमुदी की रचना कर रहा हूँ।

ग्रन्थ के लेखक आचार्य वरदराज देवी सरस्वती को प्रणाम कर ग्रन्थारम्भ करते हैं तथा लघुसिद्धान्तकौमुदी को लिखने का प्रयोजन पाणिनि व्याकरण में अध्येताओं का प्रवेश स्वीकार करते हैं।

वरदराज ने पाणिनि के सभी सूत्रों का ग्रन्थ में समावेश न करते हुए केवल मुख्य प्रक्रियाओं को बताने वाले सूत्रों के अर्थों को लिखा है जिसका अध्ययन करने के बाद छात्रों की समग्र पाणिनि व्याकरण में प्रवृत्ति उत्पन्न हो सके।

1.3.2. **वर्ण परिचय**- संस्कृत में कौन कौन वर्ण स्वीकृत हैं, यह जानने के लिए चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों का अध्ययन आवश्यक है। इन सूत्रों को अक्षरसमाम्नाय, वर्णसमाम्नाय तथा प्रत्याहारसूत्र भी कहा जाता है।

माहेश्वर सूत्र- **अ इ उण्। ऋ लृक्। ए ओङ्। ऐ औच्। ह य व र ट्। लण्। ञ म ङ ण नम्। झ भञ्। घ ढ धष्। ज ब ग ड दश्। ख फ छ ठ थ च ट तव्। क पय्। श ष सर्। हल्।**

संस्कृत वर्णमाला दो प्रकार से विन्यस्त है। पहला क्रम उपर्युक्त है तथा दूसरा कवर्गादि रूप में है। वर्णों को सूत्र रूप में बताने का यहाँ पर विशिष्ट प्रयोजन अन्तिम वर्णों की इत्सञ्ज्ञा करना है, जिसका उपयोग प्रत्याहार निर्माण में होता है। सूत्रों में प्रायेण सभी वर्णों को एक बार कहा गया है किन्तु अकार का उच्चारण सभी व्यञ्जनों में पुनः पुनः होता है जो व्यञ्जन वर्णों के उच्चारण के लिए है। भगवान् महेश्वर से प्राप्त होने के कारण इन्हें माहेश्वर सूत्र कहा जाता है। वर्ण समाम्नाय तथा अक्षरसमाम्नाय भी इन्हीं सूत्रों के पर्याय हैं।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. लघुसिद्धान्तकौमुदी का रचयिता कौन है?

ख. लघुसिद्धान्तकौमुदी की रचना करने का क्या प्रयोजन है?

ग. माहेश्वर सूत्रों के अन्तिम वर्णों की कौन सी सञ्ज्ञा होती है?

घ. माहेश्वर सूत्रों के अन्तिम वर्णों का क्या प्रयोजन है?

1.4. इत् सञ्ज्ञा तथा प्रत्याहार विधि

वर्णों को जानने के लिए हमने चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों को जाना। अब हम इन सूत्रों में होने वाली इत् सञ्ज्ञा तथा वर्णों को संक्षिप्त करने के लिए प्रत्याहार विधि को समझेंगे।

1.4.1. इत् सञ्ज्ञा

सूत्र- हलन्त्यम्। हल् अन्त्यम्। उपदेशे तथा इत् दूसरे सूत्र से लभ्य हैं।

सूत्रार्थ-इस सूत्र में इत् यह सञ्ज्ञा, अन्त्यं हल् यह सञ्ज्ञी है। उपदेश का अर्थ आद्य उच्चारण अर्थात् पाणिनि द्वारा प्रथमोच्चारित पदार्थ हैं,जिसमें धातु, माहेश्वर सूत्र, प्रत्यय, आदेश, आगम इत्यादि आते हैं। अतः धातु इत्यादि उपदेश के अन्तिम हल् अर्थात् व्यञ्जन वर्ण की इत् सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- 14 माहेश्वर सूत्र उपदेश हैं। अतः प्रत्येक सूत्र का अन्तिम व्यञ्जन वर्ण इत् है। जैसे अ इ उण् में ण्, ऋ लृक् में क्, ए ओङ् में ङ् इत्यादि। इसी प्रकार धातु- डुकृञ् धातु के अन्तिम ञ्, अण् प्रत्यय के अन्त में ण्, वुक् आगम के अन्त में क्, तिप् के स्थान में णल् आदेश के अन्त में ल् की इत् सञ्ज्ञा होती है।

1.4.2. **लोप सञ्ज्ञा-**

सूत्र- अदर्शनं लोपः ।

सूत्रार्थ-यहाँ लोपः यह सञ्ज्ञा तथा अदर्शनं यह सञ्ज्ञी है । जो पदार्थ विद्यमान है, उसका अदर्शन लोप कहलाता है ।

उदाहरण- जैसे अ इ उण् सूत्र में अन्त्य ण् विद्यमान है । किन्तु जब हम अण् प्रत्याहार बनाते हैं, उस समय उसका अदर्शन हो जाता है । इसे ही लोप कहते हैं ।

1.4.3. **लोप विधान-**

सूत्र- तस्य लोपः ।

सूत्रार्थ- तस्य पद से यहाँ इत्सञ्ज्ञक वर्ण लिया जाता है । अतः जिस वर्ण की इत् सञ्ज्ञा होती है उसका लोप हो जाता है ।

उदाहरण-जैसे माहेश्वर सूत्रों के अन्तिम व्यञ्जन वर्णों की इत् सञ्ज्ञा होने से उनका लोप होता है।

1.4.4. **प्रत्याहार-**

सूत्रम्- आदिरन्त्येन सहेता । आदिः अन्त्येन सह इता ।

सूत्रार्थ- अन्तिम इत्सञ्ज्ञक वर्ण के साथ आदि वर्ण अपना तथा मध्य में आए वर्णों की सञ्ज्ञा होता है । जैसे- अण्, अच्, हल् आदि सञ्ज्ञाएं ।

यह सूत्र प्रत्याहार का निर्माण करता है । माहेश्वर सूत्रों में किसी भी सूत्र के अन्तिम वर्ण से पहले कोई भी वर्ण लेकर उसके साथ अन्तिम इत् सञ्ज्ञक वर्ण लिया जाता है जिसमें इत् को छोडकर सभी वर्णों का ग्रहण होता है ।

उदाहरण- जैसे अ इ उण् सूत्र का आदि वर्ण अ लिया, तथा उसके साथ अन्तिम इत् ण् जोड दिया, जिससे अण् प्रत्याहार बना। यही अण् सञ्ज्ञा है । इस से हमें अ इ उ इन वर्णों का बोध होता है । उसी प्रकार अच्, हल् आदि 42 प्रत्याहारों का व्याकरण में उपयोग होता है । जैसे आदि वर्ण अ तथा अन्तिम इत् च् से अच् प्रत्याहार बना जिसमें अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ इन स्वर वर्णों का ग्रहण होता है । उसी प्रकार आदि ह् तथा अन्तिम ल् से बना हल् प्रत्याहार व्यञ्जन वर्णों का बोधक है ।

पाणिनीय व्याकरण में प्रयुक्त प्रत्याहार- अण्, अक्, अच्, अट्, अण्, अम्, अल्, अश्, इक्, इच्, इण्, उक्, एङ्, एच्, ऐच्, खय्, खर्, ङम्, चय्, चर्, छव्, जश्, झश्, झर्, झल्, झष्, बश्, भष्,मय्, यञ्, यण्, यम्, यय्, यर्, रल्, वल्, वश्, शर्, शल्, हल्, हश् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. उपदेश किसे कहते हैं ?

ख. किन वर्णों की इत् सञ्ज्ञा होती है ?

ग. लोप सञ्ज्ञा किस की होती है ?

घ. अक्, एच्, यण्, हश्, खर् प्रत्याहार के वर्णों को लिखो ।

1.5. वर्णों के भेद

यहाँ से हम वर्णों के भेदों को जानेंगे । इस उद्देश्य से हम अकारादि वर्णों की कुछ सञ्ज्ञाओं का अध्ययन करेंगे ।

1.5.1. ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत सञ्ज्ञा-

सूत्र- ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः । ऊकालः अच् ह्रस्वदीर्घप्लुतः ।

सूत्रार्थ- इस सूत्र में ह्रस्वदीर्घप्लुतः यह सञ्ज्ञा, तथा ऊकालः अच् यह सञ्ज्ञी है । अच् प्रत्याहार है जो स्वरों का बोधक है । अतः अच्- स्वर वर्णों की ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत सञ्ज्ञाएं होती हैं। कैसे स्वरों की, तो उसका उत्तर है- ऊकालः । जिस स्वर का उच्चारण काल ऊ जैसा है । ऊ का अर्थ यहाँ उ ऊ उ3 ये तीन प्रकार की मात्राएं हैं । अतः जिस स्वर का उच्चारण काल उ जैसा- एकमात्रिक है, उसकी ह्रस्व सञ्ज्ञा, जिसका उच्चारण काल ऊ जैसा- द्विमात्रिक, उसकी दीर्घ सञ्ज्ञा तथा जिसका उच्चारण काल उ3 जैसा- त्रिमात्रिक, उसकी प्लुत सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- अ इ उ ऋ लृ- एकमात्रिक ह्रस्व । आ ई ऊ ॠ ए ओ ऐ औ- द्विमात्रिक दीर्घ । अ3 इ3 उ3 ऋ3 लृ3 ए3 ओ3 ऐ3 औ3- त्रिमात्रिक प्लुत ।

1.5.2. उदात्त सञ्ज्ञा-

सूत्र- उच्चैरुदात्तः । उच्चैः उदात्तः । इसमें अच् पिछले सूत्र से लभ्य है ।

सूत्रार्थ-उदात्तः यह सञ्ज्ञा तथा उच्चैः अच् यह सञ्ज्ञी है । उच्चैः का अर्थ तालु आदि उच्चारण स्थानों का ऊपरी भाग है । अतः तालु आदि उच्चारण स्थानों के ऊपरी भाग से उत्पन्न हुए अच्- स्वर वर्ण की उदात्त सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- आ ये में आ तथा ए ।

1.5.3. अनुदात्त सञ्ज्ञा-

सूत्र- नीचैरनुदात्तः। नीचैः अनुदात्तः (अच्)।

सूत्रार्थ-अनुदात्तः यह सञ्ज्ञा तथा नीचैः अच् यह सञ्ज्ञी है । नीचैः का अर्थ तालु आदि उच्चारण स्थानों का निम्न भाग है । अतः तालु आदि उच्चारण स्थानों के निम्न भाग से उत्पन्न हुए अच्- स्वर वर्ण की अनुदात्त सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- अर्वाङ् में अ ।

1.5.4. स्वरित सञ्ज्ञा-

सूत्र- समाहारः स्वरितः (अच्)।

सूत्रार्थ-स्वरित यह सञ्ज्ञा तथा समाहारः अच् यह सञ्ज्ञी है । समाहार का अर्थ है मिश्रण । अर्थात् जिस अच् वर्ण में उदात्त तथा अनुदात्त का मिश्रण हो , वह स्वरित होता है ।

उदाहरण- अग्निमीडे पुरोहितम् में ईकार ।

1.5.5. अनुनासिक सञ्ज्ञा-

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः । मुखनासिकावचनः अनुनासिकः ।

सूत्रार्थ-यहाँ अनुनासिकः यह सञ्ज्ञा तथा मुखनासिकावचनः यह सञ्ज्ञी है। जिस वर्ण का उच्चारण मुख के साथ- साथ नासिका से होता है, उसकी अनुनासिक सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- ञ् म् ङ् ण् न् ।

इस प्रकार वर्णों की उक्त सञ्ज्ञाओं के आधार पर वर्णों के कई भेद हो जाते हैं । जैसे अ इ उ ऋ इन के प्रत्येक वर्ण के 18-18 भेद हैं- ह्रस्व- 3 (उदात्त-अनुदात्त- स्वरित), दीर्घ-3 (उदात्त-अनुदात्त-स्वरित), प्लुत-3 (उदात्त-अनुदात्त-स्वरित)- 9+9 (अनुनासिक)- 18 क्योंकि ऌ दीर्घ नहीं होता, अतः ऌवर्ण के12 भेद हैं । ए ओ ऐ औ ह्रस्व नहीं होते , अतः इन वर्णों के भी 12-12 भेद हैं । य व ल इन तीन वर्णों के अनुनासिक तथा अननुनासिक दो-दो भेद हैं । इन्हे हम अग्रिम सारणी से भी समझ सकते हैं ।

वर्ण	अ, इ, उ, ऋ	लृ	ए, ओ, ऐ, औ	य, व, ल
निरनुनासिक	ह्रस्व उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	ह्रस्व उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3		1
	दीर्घ उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3		दीर्घ उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	
	प्लुत उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	प्लुत उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	प्लुत उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	
अनुनासिक	ह्रस्व उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	ह्रस्व उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3		1
	दीर्घ उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3		दीर्घ उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	
	प्लुत उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	प्लुत उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	प्लुत उदात्त-अनुदात्त- स्वरित- 3	
कुल भेद	18	12	12	2

- **स्वयं आकलन प्रश्न- 3**

क. दो मात्रा उच्चारण काल वाले स्वर वर्ण की कौन सी सञ्ज्ञा होती है ?

ख. स्वरित सञ्ज्ञा में किस का मिश्रण होता है ?

ग. लृ वर्ण के कितने भेद होते हैं ?

1.6. वर्णों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न

यहाँ तक हमने वर्णों के समस्त भेदों के बारे में जाना । इसके बाद हम यह जानेंगे कि कौन- कौन वर्ण एक दूसरे के समान होते हैं । वर्णों की समानताएं समझने के लिए उनके उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न जानने आवश्यक हैं ।

1.6.1. उच्चारण स्थान- वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का स्पर्श मुख में जिस भाग में होता है, अथवा जिस स्थान पर चेष्टा अधिक होती है उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं।

कण्ठ- अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - अ कु- कवर्ग, ह, विसर्ग इनका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

तालु- इचुयशानां तालु- इ, चु- चवर्ग, य, श का उच्चारण स्थान तालु है।

मूर्धा- ऋटुरषाणां मूर्धा- ऋ, टु- टवर्ग, र, ष का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

दन्त- लृतुलसानां दन्ताः- लृ, तु- तवर्ग , ल, स का उच्चारण स्थान दन्त है।

ओष्ठ- उपूपध्मानीयानामोष्ठौ- उ, पु-पवर्ग, उपध्मानीय (प,फ से पूर्व में विसर्ग) का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

नासिका- ञमङणनानां नासिका च- ञ् म् ङ् ण् न् इन का उच्चारण स्थान नासिका तथा अपने- अपने वर्ग का है।

कण्ठतालु- एदैतोः कण्ठतालु- ए ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठतालु है।

कण्ठोष्ठ- ओदौतोः कण्ठोष्ठम्- ओ औ का उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ है।

दन्तोष्ठ- वकारस्य दन्तोष्ठम्- व का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ है।

जिह्वामूल- जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्- जिह्वामूलीय (क, ख से पूर्व में आने वाला विसर्ग) का जिह्वामूल है।

इस प्रकार वर्णों के उच्चारण स्थान प्रतिपादित किए गए हैं।

1.6.2. प्रयत्न- वर्णों के उच्चरित होने से पहले तथा बाद में मुख के अभ्यन्तर में जो प्रक्रियाएं होतीं हैं उन्हे प्रयत्न कहा जाता है। प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- आभ्यन्तर तथा बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न वर्णोच्चारण के पूर्व में होने वाली प्रक्रियाएं हैं। ये भी कई प्रकार के हैं। आइए इनके भेदों के विषय में जानते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न के पाँच भेद हैं- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत, संवृत।

स्पृष्ट- यह प्रयत्न उन वर्णों का होता है जिन के उच्चारण में उच्चारण स्थानों का परस्पर स्पर्श ठीक से होता है। अतः उन वर्णों को स्पर्श कहा जाता है। ये वर्ण क से म तक हैं, जिनमें कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग के 25 वर्ण सन्निहित हैं।

ईषत्स्पृष्ट- यह प्रयत्न उन वर्णों का होता है जिन के उच्चारण में उच्चारण स्थानों का परस्पर स्पर्श थोडा कम होता है। इन वर्णों को अन्तःस्थ कहा जाता है जिनमें य व र ल ये 4 वर्ण आते हैं।

ईषद्विवृत- जब वर्णों के उच्चारण में मुख के अन्दर का भाग थोडा खुलता है तब वर्णों का यह प्रयत्न होता है। ये वर्ण श ष स ह हैं, जिन्हे ऊष्म भी कहा जाता है।

विवृत- जब वर्णों के उच्चारण में मुख के अन्दर का भाग ठीक से खुलता है तब वर्णों का विवृत प्रयत्न होता है। ये वर्ण स्वर- अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ हैं।

संवृत- जब वर्णों के उच्चारण में मुख के अन्दर का भाग बंद होता है तब वर्णों का संवृत प्रयत्न होता है। यह प्रयत्न केवल ह्रस्व अ का है जब यह प्रयोगस्थ होता है। जैसे घट, भवन आदि शब्दों में सभी ह्रस्व अ संवृत हैं। जब यही ह्रस्व अ प्रक्रिया अवस्था में होता है जब यह विवृत है। जैसे घट+आलयः यहाँ पर ट के बाद ह्रस्व अ विवृत है।

इस प्रकार हम आभ्यन्तर प्रयत्नों को समझ सकते हैं। आइए अब बाह्य प्रयत्न को जानते हैं।

बाह्य प्रयत्न वर्णोच्चारण के बाद में होने वाली प्रक्रियाएं हैं। ये भी कई प्रकार के हैं। आइए इनके भेदों के विषय में जानते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न के ग्यारह भेद हैं- विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।

विवार, श्वास, अघोष- ये तीन बाह्य प्रयत्न समान वर्णों के होते हैं, जो खर् प्रत्याहार में सन्निहित हैं– ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा तथा श ष स इन वर्णों के ये प्रयत्न हैं।

संवार, नाद, घोष- ये प्रयत्न हश् प्रत्याहार के वर्णों के हैं- ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द। अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा तथा य व र ल।

अल्पप्राण- जिन वर्णों के उच्चारण में कम प्राण (वायु) का उपयोग होता है उन्हे अल्पप्राण कहा जाता है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा तथा पाँचवा एवं यण् प्रत्याहार का यह प्रयत्न है। जैसे- कवर्ग में क, ग, ङ। इसी प्रकार अन्य वर्गों का भी समझना चाहिए।

महाप्राण- जिन वर्णों के उच्चारण में अधिक प्राण (वायु) का उपयोग होता है उन्हे महाप्राण कहा जाता है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, तथा चौथा एवं शल् (श ष स) प्रत्याहार का यह प्रयत्न है। जैसे- कवर्ग में ख, घ। इसी प्रकार अन्य वर्गों का भी समझना चाहिए।

उदात्त, अनुदात्त, स्वरित- ये प्रयत्न अच् प्रत्याहार के होते हैं जिसमें सभी स्वर आते हैं।

प्रयत्नों को हम अग्र प्रदर्शित सारणी से भी समझ सकते हैं।

	प्रयत्न	वर्ण
आभ्यन्तर प्रयत्न	स्पृष्ट	स्पर्श- कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग- 25 वर्ण
	ईषत्स्पृष्ट	अन्तःस्थ- य, व, र, ल
	ईषद्विवृत	ऊष्म- श, ष, स, ह
	विवृत	स्वर- अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए,ओ, ऐ, औ
	संवृत	ह्रस्व अ (प्रयोग अवस्था)- घटः, पटः
बाह्य प्रयत्न	विवार, श्वास, अघोष	खर् प्रत्याहार- ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स
	संवार, नाद, घोष	हश् प्रत्याहार- ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
	अल्पप्राण	वर्ग का पहला, तीसरा तथा पाँचवा एवं यण् प्रत्याहार
	महाप्राण	वर्ग का दूसरा तथा चौथा एवं शल् प्रत्याहार
	उदात्त, अनुदात्त, स्वरित	स्वर वर्ण

अब वर्णों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न जानने के बाद हम सवर्ण सञ्ज्ञा को ठीक से समझ सकते हैं।

1.6.3. सवर्ण सञ्ज्ञा-

सूत्र- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ।

सूत्रार्थ-यहाँ सवर्ण सञ्ज्ञा तथा तुल्यास्यप्रयत्नं यह सञ्ज्ञी है। जिन वर्णों के आस्य- उच्चारण स्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न समान होते हैं, उनकी परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है । इस सञ्ज्ञा को समझने के लिए हम वर्णो के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न जान चुके हैं।

उदाहरण- अ वर्ण के हमने अठारह भेद पढे। उन सभी का उच्चारण स्थान कण्ठ तथा आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत है। अतः 18 अ वर्णों की परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। इसी प्रकार इ उ ऋ आदि सभी स्वरों के भेदों की परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। कवर्ग में क ख ग घ ङ इन पाँच वर्णों के उच्चारण स्थान कण्ठ तथा आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट है। अतः इनकी भी परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। यद्यपि अन्तिम वर्ण ङ में नासिका स्थान अधिक है, तथापि से ङ की सवर्ण सञ्ज्ञा पहले चारों के साथ होती है क्योंकि नासिका आस्य के अन्तर्गत नहीं माना जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ग में समझना चाहिए।

वार्तिक- ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम् ।

ऋ तथा लृ की परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है । ऋ का उच्चारण स्थान मूर्धा तथा लृ का दन्त है । अतः सूत्र द्वारा इन वर्णों की सवर्ण सञ्ज्ञा प्राप्त नहीं थी जिसके कारण सवर्ण सञ्ज्ञा का विधान करने के लिए इस वार्तिक को कहा गया है ।

1.6.4. सवर्ण ग्रहण-

सूत्र- अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः । अण् उदित् सवर्णस्य च अप्रत्ययः।

सूत्रार्थ-यह सूत्र हमें बताता है कि सवर्ण सञ्ज्ञा का क्या प्रयोजन है। सवर्ण सञ्ज्ञा का प्रयोजन है, सवर्ण सञ्ज्ञक वर्णों का परस्पर ग्रहण होना । परन्तु सभी सवर्ण सञ्ज्ञकों के परस्पर ग्रहण नहीं होता है । अण् प्रत्याहारस्थ वर्णों तथा उदित् में यह नियम कार्य करता है । यहाँ पर अण् प्रत्याहार के विषय में सन्देह होता है कि हम अण् पहले ण तक स्वीकार करें या दूसरे लण् के ण तक । अतः यहाँ पर यह समझना चाहिए कि केवल इसी सूत्र में अण् प्रत्याहार लण् तक गृहीत होता है । अतः अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल इन वर्णों में सवर्ण ग्रहण होता है । जैसे अ का उच्चारण करने पर 18 अवर्णों का ग्रहण किया जाता है । इसी प्रकार इ उ से भी 18-18 सवर्णों का ग्रहण होता है । क्योंकि ऋ तथा लृ की परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा कही गई है, अतः ऋ से 30 वर्णों (ऋ18+लृ 12), इसी तरह लृ से भी 30 वर्णों (लृ 12+ ऋ 18) का ग्रहण होता है । य, व, ल से 2-2 (य-यँ, व-वँ, ल-लँ) का ग्रहण होता है । तत्पश्चात् उदित् का अर्थ कु चु टु तु पु है । अतः कु से क ख ग घ ङ, चु से च छ ज झ ञ, टु से ट ठ ड ढ ण, तु से त थ द ध न, पु से प फ ब भ म गृहीत होते हैं ।

विशेष- सूत्र में अप्रत्ययः यह अंश प्रयुक्त है, जिसका अर्थ है अविधेय । इसका अन्वय अण् के साथ होता है । अतः जो अण् विधेय हो, उससे सवर्णों का ग्रहण नहीं होता है। जैसे- त्यदादीनामः इस सूत्र में अ विधेय है । अतः उससे आ इत्यादि सवर्णों का ग्रहण नहीं होता है । अतः सूत्र से केवल ह्रस्व अ का ही ग्रहण होगा । दूसरी तरफ आद् गुणः में आद् पद से निर्दिष्ट अ अविधेय है । अतः अकार से दीर्घ आकार का भी ग्रहण होगा. जिससे गण+ ईशः- गणेशः, यहाँ ह्रस्व अ के साथ गुण होता है वहीं रमा+ ईशः- रमेशः यहाँ दीर्घ आ के साथ भी गुण होता है ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

क. इ, र, व, ङ का उच्चारण स्थान लिखो ।

ख. अन्तःस्थ वर्ण लिखो ।

ग. ईषत्स्पृष्ट आभ्यन्तर प्रयत्न किन वर्णों का होता है ?

घ. अल्पप्राण वर्ण कौन से हैं ?

ङ. विवार, श्वास, अघोष प्रयत्न किन वर्णों का होता है ?

च. ऋकार से कितने सवर्णों का ग्रहण होता है ?

1.7. वर्णों की अन्य सञ्ज्ञाएं

अभी तक वर्णों की जो सञ्ज्ञाएं जानी, उनके अतिरिक्त भी सञ्ज्ञाएं जाननी आवश्यक हैं जिनका प्रयोग सन्धि प्रकरण, सुबन्त प्रकरण तथा तिङन्त प्रकरण की विभिन्न प्रक्रियाओं में होता है ।

1.7.1. संहिता संज्ञा-

सूत्र- परः सन्निकर्षः संहिता ।

सूत्रार्थ-इस सूत्र में संहिता संज्ञा है तथा परः सन्निकर्षः यह संज्ञी है । परः सन्निकर्षः का अर्थ अत्यन्त सन्निधि है । किसकी अत्यन्त सन्निधि, ऐसा प्रश्न होने पर समाधान है – वर्णों की अत्यन्त सन्निधि । तात्पर्य यह है कि वर्णों के बीच में जो अत्यन्त सन्निधि है, उसकी संहिता संज्ञा होती है । अत्यन्त से अभिप्राय है- अर्ध मात्रा से अधिक उच्चारण काल का अभाव । यहाँ पर यह अभिप्राय है कि एक वर्ण के बाद दूसरे वर्ण के उच्चारण में आधी मात्रा के उच्चारण काल का स्वाभाविक व्यवधान होता है । उससे अधिक काल के व्यवधान होने पर संहिता होती है ।

उदाहरण- जैसे विद्या आलय यहाँ पर दोनो आकारों के बीच जो अत्यधिक सामीप्य है , वही संहिता है । इस सञ्ज्ञा का उपयोग प्रायः सन्धि कार्यों में होता है जहाँ पर **संहितायाम्** इस सूत्र का अधिकार व्यवस्थित है ।

1.7.2. संयोग संज्ञा-

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः। हलः अनन्तराः संयोगः ।

सूत्रार्थ- यहाँ संयोगः यह संज्ञा पद है तथा अनन्तराः हलः यह संज्ञी है । अनन्तराः का अर्थ है, जिन के बीच में अन्तरा- व्यवधान न हो। अतः उन हल्- व्यञ्जन वर्णों की संयोग संज्ञा होती है जिन के बीच में स्वर वर्णों का व्यवधान न हो ।

उदाहरण- जैसे सत्यम् यहाँ पर त् य् के बीच किसी स्वर का व्यवधान नहीं है । अतः त्, य् इन दो व्यञ्जनों की संयोग संज्ञा होती है । इन्द्रः यहाँ पर न् द् र् इन तीन व्यञ्जनों की संयोग संज्ञा होती है ।

1.7.3. पदसञ्ज्ञा –

सूत्र- सुप्तिङन्तं पदम् ।

सूत्रार्थ-यहाँ पर पदम् यह स़ञ्ज्ञा तथा सुप्तिङन्तम् यह सञ्ज्ञी है । सुप्तिङन्तम् का अर्थ सुबन्त तथा तिङन्त है । सुप्- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय(विभक्ति) जिसके अन्त में हों , वह सुबन्त है । तिङ्- तिप् तस् झि आदि प्रत्यय जिसके अन्त में हों, वह तिङन्त है ।

उदाहरण- सुबन्त- रामः रामौ रामाः, हरिः हरी हरयः आदि । तिङन्त- पठति पठतः पठन्ति, भवति भवतः भवन्ति आदि ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-5**

क. संहिता सञ्ज्ञा किस की होती है ?

ख. किन हल् वर्णों की संयोग सञ्ज्ञा होती है ?

ग. प्रकाशः, विश्वासः, इन्द्रः इन शब्दों में किन वर्णों की संयोग सञ्ज्ञा होती है ?

घ. सुबन्त तथा तिङन्त की कौन सी सञ्ज्ञा होती है ?

1.8. सारांश

इस पाठ में हमने वर्णों का परिचय प्राप्त किया । अगर हम थोडा ध्यान दें, तो वर्णों के ज्ञान में एक विशेष क्रम का ग्रहण किया गया है । सर्वप्रथम वर्णों का उपदेश (14 माहेश्वर सूत्र)- ततः सूत्रों के अन्तिम व्यञ्जनों की इत् सञ्ज्ञा- इत्सञ्ज्ञा द्वारा प्रत्याहार निर्माण- अच् प्रत्याहार (स्वरों) की ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित सञ्ज्ञाएं- स्वरों तथा कुछ व्यञ्जनों की अनुनासिक सञ्ज्ञा- वर्णों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न- सवर्ण सञ्ज्ञा- सवर्णों का परस्पर ग्रहण । इसी के साथ संहिता, संयोग तथा पद सञ्ज्ञाएं भी हमनें जानीं । वस्तुतः वर्णों की विभिन्न सञ्ज्ञाओं के माध्यम से हमने वर्णों के भेदों का अध्ययन किया, जिनका उपयोग आगामी विषयों (सन्धि आदि) में होगा ।

1.9. कठिन शब्दावली

क. **लघुसिद्धान्तकौमुदी**- लघवः सिद्धान्ताः- लघुसिद्धान्ताः, लघुसिद्धान्तानां कौमुदी- चन्द्रिका । व्याकरण के सरल सिद्धान्तों का ज्ञान रूपी प्रकाश ।

ख. **पाणिनीय**- पाणिनिना प्रोक्तम् । पाणिनि द्वारा कहा गया (व्याकरण) । अथवा पाणिनि द्वारा कहे गए व्याकरण को पढने वाले छात्र ।

ग. **सूत्र**- किसी बडे सिद्धान्त का छोटा रूप । जिसमें कम अक्षर हों, जो असन्दिग्ध हो, जो किसी विस्तृत सिद्धान्त का सार हो, जिससे बहुत शब्दों की सिद्धि हो, जो अन्य द्वारा निन्दित न हो, उसे सूत्र कहा जाता है ।

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् ।

अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ।।

घ. **उपदेश**- उपदेश पाणिनि द्वारा किया गया आद्य (आरम्भिक उच्चारण) है । इसमें माहेश्वर सूत्र, धातु, गण, उणादि प्रत्यय, प्रत्यय, आगम तथा आदेश अन्तर्भूत होते हैं ।

ङ. प्रत्याहार- जिसमें वर्णों को संक्षिप्त किया जाता है, उसे प्रत्याहार कहते हैं । जैसे- अण् इसमें अ इ उ वर्णों को संक्षिप्त रूप से कहा जाता है । अतः अण् एक प्रत्याहार है ।

च. उच्चारण स्थान- मुख में जिस भाग से वर्णों का उच्चारण होता है, उसे उच्चारण स्थान कहते हैं । जैसे कण्ठ, तालु आदि ।

छ. प्रयत्न- वर्णों का उच्चारण होने के पूर्व तथा पश्चात् मुख में जो विभिन्न प्रक्रियाएं होती हैं उन्हें प्रयत्न कहते हैं । जैसे मुख के अन्दर विकास या संकोच होना, जिह्वा का उच्चारण स्थानों में स्पर्श या कम स्पर्श होना इत्यादि ।

ज. उपध्मानीय- प तथा फ से पहले जो विसर्ग आता है वह अर्ध विसर्ग सदृश हो जाता है । वह उपध्मानीय है। जैसे- रामः पठति ।

झ. जिह्वामूलीय- क तथा ख से पूर्व जो विसर्ग आता है वह भी अर्धविसर्ग सदृश हो जाता है । वह जिह्वामूलीय है । जैसे- रामः खादति ।

ञ. उदित्- कु चु टु तु पु इन्हे उदित् कहा गया है जिनसे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग का बोध होता है ।

1.10. स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

यहाँ हम ऊपर प्रत्येक भाग में पूछे गए स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर जानेंगे ।

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. वरदराज

ख. पाणिनि व्याकरण में अध्येताओं का प्रवेश करवाना

ग. इत् सञ्ज्ञा

घ. प्रत्याहार निर्माण

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. पाणिनि द्वारा किए गए आद्य उच्चारण को उपदेश कहते है ।

ख. उपदेश (धातु आदि) के अन्तिम हल् (व्यञ्जन) की इत् सञ्ज्ञा होती है ।

ग. अदर्शन की लोप सञ्ज्ञा होती है ।

घ. अक्- अ, इ, उ, ऋ, लृ एच्- ए, ओ, ऐ, औ यण्- य, व, र, ल

हश्- ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द

खर्- ख. फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. दीर्घ सञ्ज्ञा ।

ख. उदात्त तथा अनुदात्त ।

ग. 12

स्वयं आकलन प्रश्न-4

क. इ- तालु, र- मूर्धा, व- दन्तोष्ठ, ङ- नासिका, कण्ठ

ख. य,व, र, ल ।

ग. स्पर्श वर्ण ।

घ. वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम तथा य, व, र, ल ।

ङ. खर्- ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्

च. 30

स्वयं आकलन प्रश्न-5

क. वर्णों के बीच अत्यन्त सन्निधि ।

ख. जिन हल् वर्णों के बीच में अच्- स्वरों का व्यवधान नहीं होता है ।

ग. प्रकाशः- प्- र्, विश्वासः- श्-व्, इन्द्रः- न्-द्-र् ।

घ. पद सञ्ज्ञा

1.11. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, पाणिनीय-शिक्षा, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

1.12. अभ्यासात्मक प्रश्न

क. हलन्त्यम् सूत्र की व्याख्या करें ।

ख. आदिरन्त्येन सहेता इस सूत्र द्वारा निर्दिष्ट प्रत्याहार-निर्माण की विधि बताएं ।

ग. वर्णों की सवर्ण सञ्ज्ञा का सूत्र बताकर व्याख्या करें ।

इकाई-2

अच्सन्धिप्रकरण

संरचना

2.1. पाठ का परिचय

2.2. पाठ का उद्देश्य

2.3. यण् सन्धि

2.3.1. सन्धि सूत्र

2.3.2. परिभाषा सूत्र

2.3.3. द्वित्व तथा जश् कार्य

2.3.4. लोप कार्य

- स्वयं-आकलन प्रश्न-1

2.4. अयादि सन्धि

2.4.1. सन्धि सूत्र -1

2.4.2. सन्धि सूत्र-2

- स्वयं-आकलन प्रश्न-2

2.5. गुण सन्धि-

2.5.1. गुण सञ्ज्ञा

2.5.2. तपर विधि

2.5.3. सन्धि सूत्र

2.5.4. रपर विधि

- स्वयं-आकलन प्रश्न-3

2.6. वृद्धि सन्धि

2.6.1. वृद्धि सञ्ज्ञा सूत्र

2.6.2. सन्धि नियम (1-6)

2.6.3. उपसर्ग सञ्ज्ञा

2.6.4. धातु सञ्ज्ञा

2.6.5. सन्धि नियम-7

- स्वयं-आकलन प्रश्न-4

2.7. पररूप सन्धि-

2.7.1. सन्धि सूत्र-1

2.7.2. टि सञ्ज्ञा तथा सन्धि वार्तिक

2.7.3. सन्धि सूत्र-2

- स्वयं-आकलन प्रश्न-5

2.8. दीर्घ तथा पूर्वरूप सन्धि-

2.8.1. दीर्घसन्धि सूत्र

2.8.2. पूर्वरूप सन्धि सूत्र

2.8.3. गो शब्द में प्रकृतिभाव

2.8.4. अवङ् विधि सूत्र

- स्वयं-आकलन प्रश्न-6

2.9. प्रकृतिभाव

2.9.1. प्रकृतिभाव विधि

2.9.2. प्लुत विधि

2.9.3. प्रगृह्य सञ्ज्ञा

- स्वयं-आकलन प्रश्न-7

2.10. सारांश

2.11. कठिन-शब्दावली

2.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

2.13. सहायक ग्रन्थ

2.14. अभ्यासात्मक- प्रश्न

2.1. पाठ का परिचय

पिछले पाठ में हमनें वर्णों का परिचय प्राप्त किया । इस पाठ में हम वर्णों में कौन- कौन सन्धियाँ होती हैं, यह जानेंगे । सन्धि का सामान्य अर्थ मेलन होता है । जैसे अ+ अ, अ+इ, इ+अ इत्यादि । जहाँ पर दो वर्णों के अत्यधिक सामीप्य होने पर दोनों में से एक वर्ण में अथवा दोनों वर्णों में विकार होता है, उस कार्य को सन्धि कहते हैं । जैसे- सु+ आगतम्- स्वागतम्, यहाँ पर उकार तथा आकार के अत्यधिक सामीप्य होने से उकार के स्थान पर व होता है । विद्या+ आलयः- विद्यालयः में दोनों आकारों के स्थान पर आ रूप विकार हुआ ।

सन्धि के मुख्य तीन प्रकार हैं- अच्सन्धि, हल्सन्धि, विसर्ग सन्धि ।

जहाँ पर एक या दो अच् (स्वर) वर्णों के स्थान पर अच् (स्वर) ही विकार होता है, वहाँ पर अच्सन्धि होती है । जैसे- विद्या+ आलय- विद्यालयः ।

2.2. पाठ का उद्देश्य

- सन्धि के अर्थ का ज्ञान करवाना
- सन्धि के भेदों का परिचय देना
- एक स्थान पर अनेक सन्धियों की प्राप्ति में सन्देह का निवारण करना
- सन्धियों में रूप सिद्धि की प्रक्रिया बताना

2.3. यण् सन्धि

यण् सन्धि अच् सन्धि प्रकरण की सबसे पहली सन्धि है । यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि सन्धि का नाम से हमे ज्ञात हो जाता है कि सन्धि में कौन से वर्ण आदेश रूप में होंगे । जैसे यण् सन्धि में यण् वर्ण- य् व् र् ल् आदेश होंगे । आइए इसे समझते हैं ।

2.3.1. सन्धि सूत्र- इको यणचि – इकः यण् अचि ।

इकः- षष्ठी, यण्- प्रथमा, अचि- सप्तमी

इक् के स्थान पर यण् आदेश हो, अच् होने पर । यह सूत्र का सामान्य अर्थ है ।

इक् –इ, उ, ऋ, लृ के स्थान पर यण्- य, व, र ,ल आदेश (विकार) होता है, यदि अच्- स्वर वर्ण हो ।

यहाँ प्रश्न होता है कि सुधी + उपास्य इस स्थल पर उकार तीन इक् हैं- सु में उ, धी में ई तथा उपास्य का उ । कौन से इक् के स्थान पर यण् आदेश होगा ? इस प्रकार यहाँ अनियम हो रहा है। यहाँ नियम बनाने के लिए परिभाषा सूत्र की आवश्यकता होती है । आइए देखते हैं-

2.3.2.परिभाषा सूत्र-

तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य - तस्मिन् इति निर्दिष्टे पूर्वस्य ।

सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट कार्य सप्तमी-निर्दिष्ट से व्यवधानरहित पूर्व के स्थान पर होता है । जैसे- इको यणचि में सप्तमी निर्दिष्ट अचि है । अतः अच् वर्ण से व्यवधानरहित पूर्व इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है । उदाहरणार्थ- सुधी+ उपास्य यहाँ अच् उकार से व्यवधान रहित पूर्व इक् ईकार के स्थान पर यण् आदेश यकार होता है ।

इस प्रकार जो प्रश्न उपस्थित हुआ था, कि तीन इक् वर्णों में से किस के स्थान पर आदेश होगा, उसका समाधान हुआ ।

यहाँ दूसरा प्रश्न होता है- सुधी + उपास्य यहाँ ई के स्थान पर यण् प्राप्त है । यण् वर्ण चार हैं- य् व् र् ल् । ईकार के स्थान पर कौन सा यण् वर्ण होगा ? यहाँ हम दूसरे परिभाषा सूत्र की सहायता लेते हैं-

स्थानेऽन्तरतमः । स्थाने अन्तरतमः ।

एक वर्ण के स्थान पर अनेक वर्णों के प्रसङ्ग (प्राप्ति) होने पर वह वर्ण आदेश होता है, जो स्थानी से सबसे अधिक समान हो । जैसे- सुधी + उपास्यः यहाँ इक् ईकार के स्थान पर यण्- य्, व्, र्, ल् ये चारों आदेश प्राप्त हैं । यकार स्थानी ईकार के सबसे अधिक समान है क्योंकि ईकार तथा यकार दोनों का उच्चारण स्थान तालु है । इस स्थिति में ईकार के स्थान पर यकार आदेश होता है । इसी प्रकार ओष्ठ उच्चारण स्थान की समानता से उ को व्, मूर्धा से ऋ को र्, दन्त से लृ को ल् आदेश होते हैं ।

2.3.3.द्वित्व तथा जश् कार्य

सूत्र- अनचि च ।

अच् के बाद यर के स्थान पर विकल्प से द्वित्व होता है, यदि यर् के बाद अच् न हो । जैसे सु ध् य्+ उपास्यः यहाँ पर अच् उकार के बाद यर् धकार को विकल्प से द्वित्व होता है, क्योंकि धकार के बाद में यकार है, जो अच् नहीं है ।

सूत्र- झलां जश् झशि ।

झल् वर्णों के स्थान पर जश् वर्ण आदेश होते हैं, यदि झश् वर्ण परे हो । जैसे- सु ध् ध् य् + उपास्यः इस अवस्था में झल् वर्ण ध के स्थान पर जश् वर्ण द् आदेश होता है, क्योंकि ध् के परे झश् वर्ण ध् है ।

2.3.4.लोप कार्य

सूत्र- संयोगान्तस्य लोपः ।

संयोगान्त पद के अन्तिम वर्ण का लोप होता है। जैसे- सु द् ध् य् यह संयोगान्त पद है, जिसके अन्त में यकार का लोप प्राप्त होता है।

निषेध वार्तिक- यणः प्रतिषेधो वाच्यः।

संयोगान्त पद का अन्तिम वर्ण यदि यण् हो, तो उसके लोप का निषेध होता है। जैसे- सु द् ध् य् यह संयोगान्त पद है, जिसके अन्त में यण् यकार का लोप नहीं होता है। इस प्रकार सु द् ध् य् + उपास्यः- सुद्ध्युपास्यः रूप सिद्ध होता है।

उदाहरण- इकार के स्थान पर यकार- सुधी+ उपास्य- सुद्ध्युपास्यः

उकार के स्थान पर वकार- मधु + अरि- मद्ध्वरिः,

ऋकार के स्थान पर रेफ - धातृ + अंश – धात्रंशः,

लृकार के स्थान पर लकार - लृ + आकृति- लाकृतिः

- **रूपसिद्धि**

सन्धि रूपों का साधन करने के लिए हम अग्र प्रदर्शित सारणी का प्रयोग कर सकते हैं।

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	सुधी + उपास्यः
तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य	इस सूत्र की सहायता से	
स्थानेऽन्तरतमः	इस सूत्र की सहायता से	
इको यणचि	इस सूत्र से उ के पूर्व में ई के स्थान पर यकार आदेश हुआ	सु ध् य् + उपास्यः
अनचि च	इस सूत्र से धकार के स्थान पर द्वित्व आदेश हुआ	सु ध् ध् य् + उपास्यः
झलां जश् झशि	इस सूत्र से पूर्व धकार के स्थान पर दकार आदेश हुआ	सु द् ध् य् + उपास्यः
संयोगान्तस्य लोपः	इस सूत्र से यकार के स्थान पर लोप आदेश प्राप्त हुआ	
यणः प्रतिषेधो वाच्यः	इस वार्तिक से यकार- लोप का निषेध हुआ।	सु द् ध् य् + उपास्यः **सुद्ध्युपास्यः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. यण् सन्धि किन वर्णों के स्थान पर होती है ?

ख. सु ध् य् + उपास्यः यहाँ पर धकार को द्वित्व किस सूत्र से होता है ?

ग. म द् ध् व् + अरि यहाँ संयोगान्त लोप किस वर्ण को प्राप्त होगा ?

घ. यण् सन्धि में स्थानेऽन्तरतमः सूत्र से किस की समानता ग्रहण की जाती है ?

ङ. पितृ + आज्ञा-................

2.4. अयादि सन्धि

अच् सन्धि प्रकरण की अग्रिम सन्धि अयादि है । इसमें अयादि आदेश- अय् अव् आय् आव् होंगे ।

2.4.1. सन्धि सूत्र. 1

एचोऽयवायावः । एचः अयवायावः ।

एच्- ए, ओ, ऐ, औ के स्थान पर अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं , यदि एच् के बाद अच् हो

सहायक सूत्र- यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् ।

यदि स्थानी तथा आदेश समान सङ्ख्या में हो, तो क्रमशः आदेश होते हैं । जैसे पूर्वोक्त सूत्र में स्थानी एच्- ए, ओ, ऐ, औ चार हैं, तथा आदेश भी अय्, अव्, आय्, आव् चार हैं । अतः क्रमशः ए के स्थान पर अय्, ओ के स्थान पर अव्, ऐ के स्थान पर आय्, औ के स्थान पर आव आदेश होता है ।

उदाहरण- ए के स्थान पर अय् - हरे + ए- हर् अय् +ए - हरये
ओ के स्थान पर अव्- विष्णो + ए - विष्ण् अव् + ए - विष्णवे
ऐ के स्थान पर आय् - नै + अकः – न् आय् + अकः – नायकः
औ के स्थान पर आव् – पौ + अकः - प् आव् + अकः - पावकः

- **रूपसिद्धि**

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सन्धि विच्छेद	हरे + ए
यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्	इस सूत्र की सहायता से	
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से ए के स्थान में अय् आदेश हुआ	हर् अय् + ए- **हरये**

2.4.2. **सन्धि सूत्र.2-** वान्तो यि प्रत्यये ।

यकारादिप्रत्यये परे होने पर ओ तथा औ के स्थान पर वान्त- अव् तथा आव् आदेश होते है ।

उदाहरण- गो + य (यत्)– ग् अव् + य- गव्यम्

नौ + य (ण्यत्)- न् आव् + य – नाव्यम्

➢ **रूपसिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	गो + य (यत्)
यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्	इस सूत्र की सहायता से	
वान्तो यि प्रत्यये	इस सूत्र से ए के स्थान में अय् आदेश हुआ	ग् अव् + य- **गव्यम्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. अयादि सन्धि में किन वर्णों के स्थान पर कौन से आदेश होते हैं?

ख. गुरो + ए -.............

ग. भावुकः- सन्धिविच्छेद लिखो ।

घ. वान्त आदेश कौन से हैं ?

ङ. गव्यम्- सन्धि विच्छेद लिखो ।

2.5. गुण सन्धि

गुण सन्धि को समझने के लिए हमें पहले गुण सञ्ज्ञा को जानना आवश्यक है ।

2.5.1. **गुण सञ्ज्ञा**

सूत्र- अदेङ् गुणः- अत् एङ् गुणः ।

इस सूत्र में गुण सञ्ज्ञा तथा अत्, एङ् सञ्ज्ञी हैं। अत्- ह्रस्व अकार, एङ्- ए, ओ इन तीन वर्णों की गुण सञ्ज्ञा होती है। अतः गुण सन्धि में अ, ए, ओ ये तीन वर्ण आदेश होते हैं।

2.5.2. तपरविधि-

सूत्र- तपरस्तत्कालस्य। तपरः तत्कालस्य।

जिस वर्ण के वाद तकार जोडा जाता है, या तकार के बाद कोई वर्ण आए, तो वह वर्ण समकाल का बोधक होता है। जैसे- अत् एङ् गुणः यहाँ पर अ के बाद त् होने पर तपर हुआ। अतः अत् से केवल ह्रस्व अकार का ही ग्रहण होता है। इसी प्रकार इत् से ह्रस्व इकार, उत् से ह्रस्व इकार, ऋत् से ह्रस्व ऋकार इत्यादि वर्णों में भी समझना चाहिए।

2.5.3. गुण सन्धि सूत्र- आद् गुणः।

अवर्ण के बाद अच् वर्ण आने पर गुण एकादेश होता है।

उदाहरण- उप + इन्द्रः- उपेन्द्रः – अ + इ- ए

गङ्गा+उदकम्- गङ्गोदकम्- आ + उ- ओ

2.5.4. रपर विधि

सूत्र- उरण् रपरः। उः अण् रपरः।

ऋ के स्थान पर अण्- अ, इ, उ आदेश रपर होते हैं। जैसे ऋ के स्थान पर अ होने पर अर्, इ को इर्, उ को उर् होता है।

कृष्ण + ऋद्धि- कृष्णर्द्धिः- अ + ऋ- अर्

उसी प्रकार लृ के अण्- अ, इ, उ आदेश लपर होते हैं। जैसे लृ के स्थान पर अ होने पर अल्, इ को इल्, उ को उल् होता है।

तव + लृकारः- तवल्कारः- अ + लृ – अल्

- **रूपसिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	कृष्ण + ऋद्धि
अदेङ् गुणः	इस सूत्र से अ की गुण सञ्ज्ञा हुई	
आद् गुणः	इस सूत्र से अ तथा ऋ के स्थान में गुण आदेश हुआ	कृष्ण् अर् + द्धि **कृष्णर्द्धि**
उरण् रपरः	इस सूत्र से ऋ के स्थान पर अ को अर् हुआ	

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. महोदयः, ग्रीष्मर्तुः का सन्धिविच्छेद लिखो।

ख. गुण सञ्ज्ञा किन वर्णो की होती है ?

ग. अ + ऋ = ... (गुण)

घ. तपर विधि द्वारा इत् कहने से किन वर्णों का ग्रहण होगा ?

2.6. वृद्धि सन्धि

वृद्धि सन्धि को समझने के लिए हमें वृद्धि सञ्ज्ञा को जानना चाहिए।

2.6.1. **वृद्धि सञ्ज्ञा-** वृद्धिरादैच्। वृद्धिः आत् ऐच्।

इस सूत्र में वृद्धि सञ्ज्ञा तथा आत्, ऐच् (प्रत्याहार) सञ्ज्ञी हैं। आ, ऐ, औ इन तीन वर्णों की वृद्धि सञ्ज्ञा होती है।

2.6.2. वृद्धि सन्धि नियम (1-6)

1. सूत्र- वृद्धिरेचि। वृद्धिः एचि।

अवर्ण के बाद एच् वर्ण आने पर दोनों के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

उदाहरण- कृष्ण + एकत्वम् – अ + ए – ऐ – कृष्णैकत्वम्

गङ्गा + ओघः- आ + ओ- औ- गङ्गौघः

देव + ऐश्वर्यम्- अ + ऐ - ऐ - देवैश्वर्यम्

कण्ठ+ औत्सुक्यम्- अ + औ- औ- कण्ठौत्सुक्यम्

- **रूपसिद्धि**

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सन्धि विच्छेद	कृष्ण + एकत्वम्

वृद्धिरादैच्	इस सूत्र से ऐ की वृद्धि सञ्ज्ञा हुई	
वृद्धिरेचि	इस सूत्र से अ तथा ए के स्थान में वृद्धि आदेश हुआ	कृष्ण् ऐ + कत्वम् - **कृष्णैकत्वम्**

3. **सूत्र.** एत्येधत्यूठसु।
अवर्ण के बाद एजादि एति, एधते तथा ऊठ् परे हों, तो वृद्धि एकादेश होता है।

उदाहरण- उप + एति – अ + ए – ऐ - उपैति

उप + एधते – अ + ए – ऐ - उपैधते

प्रष्ठ + ऊहः - अ + ऊ – औ- प्रष्ठौहः

- **रूपसिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	प्रष्ठ + ऊहः
वृद्धिरादैच्	इस सूत्र से औ की वृद्धि सञ्ज्ञा हुई	
एत्येधत्यूठसु	इस सूत्र से अ तथा ऊ के स्थान में वृद्धि आदेश हुआ	प्रष्ठ् औ हः **प्रष्ठौहः**

4. **वृद्धि सन्धि वार्तिक.-** प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु।
प्र के बाद में ऊह, ऊढ, ऊढि, एष, एष्य होने पर वृद्धि एकादेश होता है।

उदाहरण-

प्र + ऊहः - अ + ऊ – औ- प्रौहः

प्र + एषः- अ + ए – ऐ - प्रैषः

प्र + ऊढः - अ + ऊ – औ- प्रौढः

प्र + एष्यः- अ + ए – ऐ - प्रैष्यः

प्र + ऊढिः - अ + ऊ – औ- प्रौढिः

5. **वृद्धि सन्धि वार्तिक-** अक्षात् ऊहिन्याम् उपसङ्ख्यानम्।
अक्ष के बाद ऊहिनी शब्द आने पर वृद्धि होती है।

उदाहरण- अक्ष + ऊहिनी – अ + ऊ – औ - अक्षौहिणी

6. **वृद्धि सन्धि वार्तिक -** ऋते च तृतीयासमासे ।

अवर्णान्त पद का ऋत पद के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होने पर वृद्धि होती है ।

उदाहरण- सुखेन ऋतः- सुख + ऋतः – अ + ऋ - आर् - सुखार्तः

यहाँ पर ऋकार के स्थान पर आ आदेश होने पर रपर विधि होती है । अतः अ + ऋ – आर् आदेश होता है ।

7. **वृद्धि सन्धि वार्तिक-** प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानाम् ऋणे ।

प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण, दश शब्दों के बाद ऋण शब्द आने पर वृद्धि एकादेश होता है ।

उदाहरण- प्र + ऋणम् - अ + ऋ – आर् - प्रार्णम्

वत्सतर + ऋणम्- अ + ऋ – आर् - वत्सतरार्णम्

उसी प्रकार कम्बलार्णम्, वसनार्णम्, दशार्णः ये शब्द भी सिद्ध होते हैं ।

1.6.3. उपसर्ग सञ्ज्ञा सूत्र

उपसर्गाः क्रियायोगे ।

इस सूत्र में प्रादयः यह पद अनुवृत्ति से लभ्य है । इस प्रकार सूत्र होगा- प्रादयः क्रियायोगे उपसर्गाः । इसमें उपसर्ग सञ्ज्ञा तथा प्रादयः सञ्ज्ञी है जिससे सूत्र का यह अर्थ होगा-

प्र आदि 22 शब्दों की उपसर्ग सञ्ज्ञा होती है, यदि उनका योग क्रिया के साथ हो । जैसे- प्रभवति, अनुभवति, सम्भवति आदि स्थल में प्र, अनु, सम् ये शब्द उपसर्ग हैं ।

प्रादि 22 उपसर्ग- प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ।

1.6.4. धातु सञ्ज्ञा सूत्र-

भूवादयो धातवः ।

भू आदि शब्दों की धातु सञ्ज्ञा होती है, यदि ये शब्द क्रिया अर्थ के वाचक हों ।

उक्त दोनों सञ्ज्ञाओं का उपयोग वृद्धि सन्धि में होता है ।

1.6.5. वृद्धि सन्धि सूत्र-7

उपसर्गादृति धातौ - उपसर्गात् ऋति धातौ ।

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद ऋकारादि धातु हो, तो वृद्धि एकादेश होता है । इस सूत्र में उपसर्ग तथा धातु दो पद आए हैं । आइए पहले इन्हे समझते हैं ।

उदाहरण- (अवर्णान्त उपसर्ग) प्र + ऋच्छति (ऋकारादि धातु) - अ + ऋ – आर्- प्राच्र्छति

- **रूपसिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	प्र + ऋच्छति
उपसर्गाः क्रियायोगे	इस सूत्र से प्र की उपसर्ग सञ्ज्ञा हुई	
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से ऋ की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वृद्धिरादैच्	इस सूत्र से आ की वृद्धि सञ्ज्ञा हुई	
उपसर्गादृति धातौ	इस सूत्र से अ तथा ऋ के स्थान में वृद्धि आदेश हुआ	
उरण् रपरः	इस सूत्र से रपर होकर आर् हुआ	प्र् आर् + च्छति- **प्राच्र्छति**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

क. वृद्धि सञ्ज्ञा किन वर्णों की होती है?

ख. प्रष्ठौहः, प्राच्र्छति का सन्धिविच्छेद लिख कर सन्धि का सूत्र लिखो ।

ग. धातु- सञ्ज्ञा सूत्र लिखो ।

घ. उपसर्ग कौन- कौन से हैं ?

ङ. उप + एधते, कम्बल + ऋणम्- सन्धिरूप लिखो ।

1.7. पररूप सन्धि

पररूप सन्धि में पूर्व (पहले शब्द का अन्तिम वर्ण) तथा पर (दूसरे शब्द का आदि वर्ण) के स्थान पर पर (दूसरे शब्द का आदि वर्ण) आदेश होता है ।

2.7.1. सन्धि सूत्र. 1- एङि पररूपम् ।

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद धातु के आदि में एङ् आए, तो पररूप सन्धि होती है। पररूप सन्धि में पूर्व तथा पर वर्ण के स्थान पर पर वर्ण आदेश होता है।

उदाहरण- प्र + एजते - (पूर्व) अ + ए (पर) – ए (पर) - प्रेजते

उप+ ओषति - (पूर्व)अ + ओ(पर) – ओ (पर)- उपोषति

2.7.2. टि सञ्ज्ञा तथा सन्धि वार्तिक

सूत्र- अचोऽन्त्यादि टि - अचः अन्त्यादि टि।

किसी शब्द का अन्तिम अच् वर्ण जिस भाग के आदि में होता है, उस भाग की टि सञ्ज्ञा होती है। जैसे भवत् शब्द में अन्तिम अच् वर्ण वकारोत्तरवर्ती अकार अत् के आदि में है। अतः अत् भाग की टि सञ्ज्ञा होती है। राम शब्द में अन्तिम अच् वर्ण मकारोत्तरवर्ती अ किसी भाग के आदि में यद्यपि नहीं है, तथापि अकार को अपने ही आदि में मान कर अकार की टि सञ्ज्ञा होती है।

सन्धि वार्तिक- शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्।

शकन्ध्वादि गण में पढे हुए शब्दों में टि भाग तथा अच् के स्थान में पररूप आदेश होता है। यहाँ हमें एक नया शब्द प्राप्त होता है- टि। अतः आइए पहले टि के विषय में जानते हैं।

उदाहरण- शक + अन्धुः - (टि) अ + अ - अ - शकन्धुः

मनस्+ ईषा - (टि)अस् + ई – ई - मनीषा

इसी प्रकार कर्क + अन्धुः- कर्कन्धुः, पतत् + अञ्जलिः – पतञ्जलिः इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	मनस्+ ईषा
अचोऽन्त्यादि टि	इस सूत्र से अस् की टि सञ्ज्ञा हुई	
शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्	इस वार्तिक से अस् तथा ई के स्थान में पररूप आदेश हुआ	मन् + ईषा – **मनीषा**

2.7.3. सन्धि सूत्र. 2

ओमाङोश्च।

अवर्ण के बाद ओम् या आङ् आने पर पररूप एकादेश होता है ।

उदाहरण – शिवाय + ओम् - अ + ओ (ओम्) – ओ - शिवायोम्

शिव + एहि - अ + ए (आङ्) - ए - शिवेहि

यहाँ शिव + एहि में हमें एकार प्राप्त होता है, आङ् नहीं । वस्तुतः एहि की पूर्वावस्था आ + इहि है, जहाँ गुण सन्धि से एकार आया है । अतः एहि के आदि में आङ् तो है , पर दिखाई नहीं देता है । इस समस्या का समाधान करने के लिए हम **अन्तादिवच्च** इस सूत्र की सहायता लेते हैं । यह सूत्र एकादेश में पूर्व भाग के अन्त की तरह तथा उत्तर भाग के आदि की तरह व्यवहार का बोध कराता है । जैसे आ + इहि यहाँ पर एकादेश एकार में पूर्व भाग आ के अन्त आ होने का व्यवहार होता है । उस आ अर्थात् आङ् को एकार में स्वीकार कर हम आ + ए – ए पररूप होता है ।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	शिव + एहि
ओमाङोश्च	इस सूत्र से अ तथा ए के स्थान में पररूप एकार आदेश हुआ	शिव् ए हि - **शिवेहि**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-5**

क. टि सञ्ज्ञा सूत्र लिखो ।

ख. एजते, इच्छति, ऊहः- इनमें कौन एङादि है ?

ग. पतत् यहाँ टि सञ्ज्ञा किस भाग की होती है ?

घ. शिवेहि- सन्धि विच्छेद लिखो ।

2.8. दीर्घ तथा पूर्वरूप सन्धि

दीर्घ सन्धि में दीर्घ वर्ण आदेश होते हैं । जैसे आ, ई, ऊ, ॠ । यद्यपि ए ओ ऐ औ ये भी दीर्घ वर्ण हैं परन्तु यह सन्धि केवल अक् वर्णों में होती है । अतः एच् वर्ण दीर्घ के रूप में नहीं होते । इसके अतिरिक्त पूर्वरूप सन्धि में पूर्व (पहले शब्द का अन्तिम वर्ण) तथा पर (दूसरे शब्द का आदि वर्ण) के स्थान पर पूर्व (पहले शब्द का अन्तिम वर्ण) आदेश होता है ।

2.8.1. दीर्घ सन्धि सूत्र-

अकः सवर्णे दीर्घः ।

अक् (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के बाद सवर्ण अच् आने पर दीर्घ सन्धि होती है ।

अ + अ (सवर्ण अच्) – आ (दीर्घ)   इ + इ (सवर्ण अच्) – ई (दीर्घ)

उ + उ(सवर्ण अच्)-   ऊ(दीर्घ)   ऋ+ऋ(सवर्ण अच्)- ॠ(दीर्घ)

लृ +लृ (सवर्ण अच्)- ॠ(दीर्घ)

उदाहरण- दैत्य + अरिः –   अ + अ – आ -   दैत्यारिः

श्री+ ईशः -   ई + ई - ई - श्रीशः

विष्णु+ उदयः-   उ + उ - ऊ - विष्णूदयः

होतृ+ ऋकारः-   ऋ+ ऋ- ॠ - होतॄकारः

गम्लृ+ लृकारः-   लृ+ लृ- ॠ   - गमॄकारः

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	श्री+ ईशः
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से ई तथा ई के स्थान में दीर्घ ईकार एकादेश हुआ	श्र् ई शः- **श्रीशः**

2.8.2. पूर्वरूप सन्धि सूत्र

एङः पदान्तादति ।

पद के अन्त में यदि एङ्- ए, ओ वर्ण हों, तथा उसके बाद ह्रस्व अकार हो, तब एङ् और अ के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है । यह सन्धि पररूप की विपरीत है । यहाँ पर पूर्व तथा पर वर्ण के स्थान पर पूर्व वर्ण आदेश होता है ।

उदाहरण- हरे + अव -   (पदान्त) ए + अ (ह्रस्व) – ए -   हरेऽव

विष्णो + अव - (पदान्त) ओ + अ (ह्रस्व)+ ओ -   विष्णोऽव

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	हरे + अव

एङः पदान्तादति	इस सूत्र से ए तथा अ के स्थान में पूर्वरूप एकार आदेश हुआ	हर् ए व- **हरेऽव**

2.8.3. गो शब्द में प्रकृतिभाव

हम जान चुके हैं कि पदान्त में ए/ओ के बाद ह्रस्व अ आने पर पूर्वरूप होता है। जैसे- विष्णो + अव- विष्णोऽव। परन्तु गो शब्द को पूर्वरूप की प्राप्ति में प्रकृतिभाव भी होता है।

सूत्र- सर्वत्र विभाषा गोः।

गो शब्द के बाद ह्रस्व अकार आने पर विकल्प से प्रकृतिभाव होता है। प्रकतिभाव का अर्थ प्रकृति की अवस्था में रहना होता है। अर्थात् सन्धि कार्य नहीं होता है।

उदाहरण- गो + अग्रम्- ओ + अ- ओ + अ - गो अग्रम्

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	गो + अग्रम्
एङः पदान्तादति	इस सूत्र से ओ तथा अ के स्थान में पूर्वरूप ओकार आदेश प्राप्त हुआ	
सर्वत्र विभाषा गोः	इस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ	**गो अग्रम्**

यहाँ पर प्रकृतिभाव विकल्प से होता है। अतः दूसरे पक्ष में प्राप्त पूर्वरूप सन्धि होगी।

गो + अग्रम् – गोऽग्रम्।

इसके अतिरिक्त गो शब्द के विषय में तीसरा कार्य भी कहा गया है -

2.8.4. अवङ् विधि

गो शब्द में प्रकृतिभाव के अतिरिक्त अवङ् आदेश होता है। आइए समझते हैं-

सूत्र- अवङ् स्फोटायनस्य।

गो शब्द को अवङ् आदेश होता है।

यहाँ पर आदेश किस वर्ण के स्थान पर होगा , इसे निर्धारित करने के लिए हम दो सूत्रों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

परिभाषा सूत्र- अनेकाल् शित् सर्वस्य ।

जो आदेश अनेक अल् (वर्ण) वाला या शित् (जिसमें श् की इत् सञ्ज्ञा हो) होता है, वह सम्पूर्ण स्थानी के स्थान पर होता है । यहाँ पर अवङ् आदेश अनेकाल् है । अतः सम्पूर्ण गो शब्द के स्थान पर अवङ् प्राप्त होता है ।

परिभाषा सूत्र- ङिच्च ।

जो आदेश ङित् (जिसमें ङ् की इत् सञ्ज्ञा है) होता है , वह अन्तिम वर्ण के स्थान पर होता है । अतः

उदाहरण- गो + अग्रम् इस अवस्था में अन्तिम ओ वर्ण के स्थान पर अवङ् होता है-

ग् अवङ् + अग्रम्, अवङ् में अन्तिम हल् वर्ण ङ् इत् है, अतः उसका लोप होता है –

ग् अव+ अग्रम् यहाँ पर दीर्घ सन्धि होने पर - गवाग्रम् ।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	गो + अग्रम्
ङिच्च	इस सूत्र की सहायता से अन्तिम वर्ण ओकार के स्थान पर	
अवङ् स्फोटायनस्य	इस सूत्र से अवङ् आदेश हुआ	ग् अवङ् + अग्रम्
हलन्त्यम्	इस सूत्र से ङकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से इत् ङकार का लोप हुआ	ग् अव + अग्रम्
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से दीर्घ सन्धि हुई	ग् अवाग्रम्- **गवाग्रम्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-6**

क. सुष्ठु + उक्तम्- ....

ख. रामोऽत्र- सन्धि विच्छेद लिखो ।

ग. गवाग्रम् यहाँ पर अवङ् आदेश का सूत्र लिखो ।

घ. गो + अग्रम् यहाँ प्रकृतिभाव होकर क्या रूप होगा ?

2.9. प्रकृतिभाव

अभी तक हमने जाना कि अच् वर्णों में कहां- कहाँ किस प्रकार के परिवर्तन होते हैं । कुछ अवस्थाओं में ये परिवर्तन नहीं होते हैं । बल्कि जैसी प्रकृति सन्धि विच्छेद में हम देखते हैं वही रह जाती है । जैसे- हरी + एतौ- हरी एतौ । इसे प्रकृतिभाव कहते हैं ।

2.9.1. प्रकृतिभाव विधि

सूत्र- प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ।

प्लुत सञ्ज्ञक तथा प्रगृह्य सञ्ज्ञक के बाद में अच् आने पर प्रकृतिभाव होता है । प्रकृतिभाव को जानने के लिए यह समझना जरूरी है , कि प्लुत तथा प्रगृह्य कहाँ- कहाँ पर होता है ।

2.9.2. प्लुत विधि

सूत्र- दूराद्धूते च - दूरात् हूते च ।

दूर से सम्बोधन करने पर वाक्य के टि भाग को प्लुत होता है ।

उदाहरण- आगच्छ कृष्ण + अत्र गौश्चरति यहाँ पर अ + अ – आ दीर्घ सन्धि प्राप्त होती है । इस वाक्य में सम्बोधन वाक्य के टि भाग को प्लुत होता है तथा प्लुत होने से **प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्** इस सूत्र से प्रकृतिभाव हो जाता है- आगच्छ कृष्ण अत्र गौश्चरति ।

इस प्रकार जहां प्लुत हो, वहाँ प्रकृतिभाव होता है । इसके बाद जहाँ प्रगृह्य सञ्ज्ञा हो, वहाँ भी प्रकृतिभाव होता है । अतः प्रगृह्य सञ्ज्ञा के स्थलों को जानना आवश्यक है ।

2.9.3. प्रगृह्य सञ्ज्ञा

प्रकृतिभाव के लिए प्लुत के अतिरिक्त प्रगृह्य की आवश्यकता होती है । प्रगृह्य एक सञ्ज्ञा है जो अग्रिम सूत्रों से होती है ।

प्रगृह्य संज्ञा सूत्र. 1- ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् ।

द्विवचनान्त ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त पदों की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण – द्विवचनान्त ईकारान्त- **हरी** एतौ, द्विवचनान्त ऊकारान्त- **विष्णू** इमौ, द्विवचनान्त एकारान्त- **लते** इमे

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सन्धि विच्छेद	हरी एतौ
इको यणचि	इस सूत्र से अन्तिम वर्ण ईकार के स्थान पर यकार प्राप्त हुआ	
ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्	इस सूत्र से द्विवचनान्त ईकारान्त- हरी शब्द की प्रगृह्य सञ्ज्ञा हुई	
प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ	**हरी एतौ**

प्रगृह्य सञ्ज्ञा सूत्र. 2- अदसो मात्।
अदस् शब्द में यदि मकार आए, तो उसके बाद आने वाले ईकार तथा ऊकार की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- अदस् शब्द - **अमी** ईशाः- मकारोत्तरवर्ती ईकार

अमू आसाते- मकारोत्तरवर्ती ऊकार

प्रगृह्य सञ्ज्ञा सूत्र. 3- निपात एकाजनाङ्। निपातः एकाच् अनाङ्।
एक अच् रूप निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- (एकाच् निपात) **इ** इन्द्रः, (एकाच् निपात) **उ** उमेशः, (एकाच् निपात) **आ** एवं नु मन्यसे

इस सूत्र में प्रगृह्य सञ्ज्ञा के बोध के लिए निपात को समझना चाहिए।

निपात सञ्ज्ञा सूत्र- चादयोऽसत्त्वे।

च आदि शब्दों की निपात सञ्ज्ञा होती है, यदि वे असत्त्व- द्रव्य भिन्न अर्थ का बोध कराएं। द्रव्य में लिङ्ग तथा सङ्ख्या का अन्वय होता है। जैसे- राम, वृक्ष, फल आदि। यहाँ पर इ, उ, आ इन शब्दों में किसी भी लिङ्ग या सङ्ख्या का अन्वय नहीं है। अतः अद्रव्य तथा एक अच् होने के कारण इनकी निपात सञ्ज्ञा होती है। निपात होने से प्रगृह्य सञ्ज्ञा तथा प्रगृह्य होने से प्रकृतिभाव होता है।

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	इ + इन्द्रः
अकः सवर्णे दीर्घ-	इस सूत्र से दोनों इकारों के स्थान पर दीर्घ ईकार प्राप्त हुआ	
चादयोऽसत्त्वे	इस सूत्र से इ की की निपात सञ्ज्ञा हुई	
निपात एकाजनाङ्	इस सूत्र से इ निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा हुई	
प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	इस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ	**इ इन्द्रः**

प्रगृह्य सञ्ज्ञा सूत्र. 4 - ओत् ।
ओकारान्त निपात की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- (ओकारान्त निपात) **अहो** + ईशाः ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-7**

क. प्लुत तथा प्रगृह्य में प्रकृतिभाव किस सूत्र से होगा ?

ख. हरी एतौ यहाँ पर प्रगृह्य सञ्ज्ञा किस सूत्र से होती है ?

ग. इ इन्द्रः यहाँ इ की निपात सञ्ज्ञा का सूत्र लिखो ।

घ. ओत् इस सूत्र का उदाहरण लिखो ।

2.10. सारांश

इस पाठ में हमने तीन भागों में अच् सन्धि को पढा । अच् सन्धि में मुख्य दो प्रकार की विधियाँ है । प्रथम, जब अच् वर्णो के स्थान पर अच् रूप विकार होता है । यह भी दो प्रकार से विकार होता है । एक , जब पूर्व तथा पर दो वर्णों में से एक के स्थान पर विकार (आदेश) होता है । जैसे यण् सन्धि में इक् + अच् में पूर्व इक् वर्ण के स्थान पर यण् तथा अयादि सन्धि में एच् + अच् में पूर्व एच् के स्थान पर अयादि आदेश होते हैं । दूसरे प्रकार में पूर्व तथा पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होता है जिसे एकादेश कहते हैं । जैसे गुण सन्धि में अ + इ, उ, ऋ, लृ (अच्) पूर्व- पर दोनों के स्थान पर एक

गुण आदेश ए, ओ, अर्, अल् होता है। उसी प्रकार वृद्धि सन्धि में अ + एच्- एच्, पररूप में टि + अच्- अच्, अ + एङ्- एङ्, पूर्वरूप में एङ् + अ- एङ्, दीर्घ सन्धि में अ + अ- आ, इ + इ- ई, उ + उ- ऊ, ऋ + ऋ- ॠ, लृ + लृ- ॠ आदेश होते हैं। दूसरी विधि, जब पूर्वोक्त यणादि सन्धियाँ प्राप्त होती हैं, पर किसी वर्ण के स्थान पर कोई आदेश नहीं होता है। इसे प्रकृतिभाव कहते हैं। यह दो स्थानों पर होता है। पहला गो शब्द में ह्रस्व अकार आने पर- गो अग्रम्। दूसरे प्रकृतिभाव के लिए प्लुत तथा प्रगृह्य सञ्ज्ञा आवश्यक है।

2.11. कठिन शब्दावली

स्थानी- जिस के स्थान पर कोई कार्य होता है।

आदेश- जो वर्ण आदि किसी के स्थान पर होता है।

निमित्त- जिस वर्ण को मान कर कोई कार्य होता है।

अन्तरतम- सबसे अधिक समान

एकादेश- दो वर्णों के स्थान पर एक वर्ण आदेश

2.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. इक्- इ उ ऋ लृ।

ख. अनचि च

ग. संयोगान्तस्य लोपः

घ. वकार

ङ. उच्चारण स्थान

च. पित्राज्ञा

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. ए ओ ऐ औ वर्णों के स्थान पर क्रमशः अय् अव् आय् आव् आदेश।

ख. गुरवे

ग. भौ + उक

घ. अव् आव्

ङ. गो + य

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. महोदयः- महा + उदयः, ग्रीष्मर्तुः- ग्रीष्म + ऋतुः ।

ख. ह्रस्व अ, ए, ओ

ग. अर्

घ. ह्रस्व इकार

स्वयं आकलन प्रश्न-4

क.आ ऐ औ

ख. प्रष्ठौहः- प्रष्ठ + ऊहः- एत्येधत्यूठ्सु, प्रार्च्छति- प्र + ऋच्छति- उपसर्गादृति धातौ ।

ग.धातु- भूवादयो धातवः ।

घ.उपसर्ग- प्र परा अप सम अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अभि प्रति परि उप ।

ङ.उपैधते, कम्बलार्णम्

स्वयं आकलन प्रश्न-5

क. अचोऽन्त्यादि टि

ख. एजते

ग. अत्

घ. शिव + एहि

स्वयं आकलन प्रश्न-6

क. सुष्टूक्तम्

ख. रामो + अत्र

ग. अवङ् स्फोटायनस्य

घ. गो अग्रम्

स्वयं आकलन प्रश्न-7

ङ. प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्

च. ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्

छ. निपात एकाजनाङ्

ज. अहो ईशा

2.13. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी,मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

2.14. अभ्यासात्मक प्रश्न

क. इको यणचि इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

ख. नायकः, तवल्कारः- रूप सिद्धि करो ।

ग. प्राच्छ्र्छति, मनीषा, शिवेहि- सन्धि विच्छेद लिखकर सन्धि सूत्र बताइए ।

घ. ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्- इस सूत्र का अर्थ बताकर उदाहरण स्पष्ट करो ।

इकाई-3
हल्सन्धि प्रकरण

संरचना

3.1. पाठ का परिचय

3.2. पाठ का उद्देश्य

3.3. श्चुत्व सन्धि

  3.3.1. सन्धि नियम

  3.3.2. निषेध

  - स्वयं-आकलन प्रश्न-1

3.4. ष्टुत्व सन्धि

  3.4.1. सन्धि नियम

  3.4.2. निषेध

  3.4.3. ष्टुत्व वार्तिक

  - स्वयं-आकलन प्रश्न-2

3.5. अनुनासिक- जश्- परसवर्ण सन्धि

  3.5.1. अनुनासिक सन्धि नियम

  3.5.2. जश् सन्धि नियम

  3.5.3. परसवर्ण सन्धि नियम

  - स्वयं आकलन प्रश्न-3

3.6. पूर्वसवर्ण तथा छत्व सन्धि

  3.6.1. पूर्वसवर्ण सन्धि नियम-1

  3.6.2. चर् सन्धि नियम

  3.6.3. लोप कार्य

  3.6.4. परसवर्ण सन्धि नियम- 2

  3.6.5. छत्व सन्धि नियम

  - स्वयं-आकलन प्रश्न-4

3.7. अनुस्वार तथा परसवर्ण सन्धि

3.7.1. अनुस्वार सन्धि नियम-1.

3.7.2. अनुस्वार सन्धि नियम- 2

3.7.3. परसवर्ण सन्धि नियम-1

3.7.4. परसवर्ण सन्धि नियम- 2

- स्वयं-आकलन प्रश्न-5

3.8. आगम

3.8.1. कुक्-टुक् आगम

3.8.2. धुट् आगम

3.8.3. तुक् आगम-1

3.8.4. ङुट्-णुट्-नुट् आगम

3.8.5. तुक् आगम-2

- स्वयं-आकलन प्रश्न -6

3.9. रु प्रकरण

3.9.1. रु विधि सूत्र.1

3.9.2. अनुनासिक विधि

3.9.3. अनुस्वार विधि

3.9.4. विसर्ग विधि

3.9.5. सत्व विधि

3.9.6. अन्य रु विधियाँ

- स्वयं-आकलन प्रश्न-7

3.10. सारांश

3.11. कठिन-शब्दावली

3.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

3.13. सहायक ग्रन्थ

3.14. अभ्यासात्मक- प्रश्न

3.1. पाठ का परिचय

पिछले पाठ में हमनें अच्सन्धि का परिचय प्राप्त किया । इस पाठ में सन्धि के दूसरे प्रकार हल्सन्धि को जानेंगे । सन्धि का सामान्य अर्थ तथा सन्धि का अर्थ भी अच्सन्धि में समझ चुके हैं । यहाँ हम यह जानेंगे कि दो हल् वर्णों में संहिता होने पर कौन-कौन से परिवर्तन होते हैं । कुछ परिस्थितियों में हल् वर्णों के स्थान पर कोई नया वर्ण आदेश रूप में होता है तथा कहीं पर बिना किसी वर्ण को हटाए कोई नया वर्ण आगम के रूप में आ जाता है । इसी के साथ कहाँ विसर्ग का विधान होता है तथा कहाँ विसर्ग से अतिरिक्त, यह भी इसी पाठ में हम समझेंगे । इस प्रकार इस अध्याय में हल् सन्धि से सम्बन्धित प्रक्रियाओं का प्रतिपादन किया जाएगा ।

हल् सन्धि- जहाँ हल्+ अच्, हल्+ हल् अथवा पद के अन्त में केवल हल्, इन तीनों अवस्थाओं में हल् वर्ण के स्थान पर कोई विकार होता है, वहाँ हल् सन्धि होती है । जैसे- तस्मिन् + इति- तस्मिन्निति, रामस् + शेते- रामश्शेते, वाक्- वाग् ।

3.2. पाठ का उद्देश्य

- हल्सन्धि के विभिन्न भेदों का ज्ञान करवाना ।
- हल्सन्धि में विभिन्न आदेशों का बोध करवाना ।
- विभिन्न आगमों की प्रक्रिया का बोध करवाना ।
- किसी वर्ण के स्थान पर विसर्ग होने की प्रक्रिया का ज्ञान करवाना ।

3.3. श्चुत्व सन्धि

इस सन्धि के नाम से पता चलता है कि हमें यहाँ शकार तथा चवर्ग आदेश के रूप में प्राप्त होंगे । आइए उन स्थितियों को समझते हैं जिन में ये आदेश होंगे ।

3.3.1. सन्धि नियम-

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः ।

सकार या तवर्ग का शकार या चवर्ग के साथ योग हो, तब सकार के स्थान पर शकार तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग होता है ।

उदाहरण- रामस् + शेते - स् + श् – स् के स्थान पर श्- रामश्शेते

रामस् + चिनोति- स् + च् - स् के स्थान पर श् - रामश्चिनोति

सत् + चित् - त् + च् – त् के स्थान पर च् - सच्चित्

शार्गिन् + जयः- न् + ज् – न् के स्थान पर ञ् - शार्गिञ्जयः

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	रामस् + शेते
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर शकार हुआ	रामश् + शेते- **रामश्शेते**

3.3.2. निषेध

निषेध सूत्र- शात् ।

श् के बाद में तवर्ग हो, तब तवर्ग के स्थान पर चवर्ग नहीं होता है ।

उदाहरण- विश् + नः - श् + न् – न् को चवर्ग नहीं हुआ - विश्नः

प्रश् + नः - श् + न् – न् को चवर्ग नहीं हुआ - प्रश्नः

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. निश्चयः, उच्चारणम् सन्धिविच्छेद लिख कर सन्धि सूत्र लिखो ।

ख. श्चुत्व सन्धि में नकार के स्थान पर क्या आदेश होगा ?

ग. सद् + जिज्ञासा, याच् + ना- सन्धि रूप लिखो ।

घ. प्रश् + न यहाँ श्चुत्व सन्धि का निषेध किस सूत्र से होता है ?

3.4. ष्टुत्व सन्धि

इस सन्धि में हमें यहाँ षकार तथा टवर्ग आदेश के रूप में प्राप्त होंगे । आइए उन स्थितियों को समझते हैं जिन में ये आदेश होंगे ।

3.4.1. ष्टुत्व सन्धि नियम

सूत्र- ष्टुना ष्टुः ।

सकार या तवर्ग का षकार या टवर्ग के साथ योग हो, तब सकार के स्थान पर षकार तथा तवर्ग के स्थान पर टवर्ग होता है ।

उदाहरण- रामस् + षष्ठः- स् + ष् - स् के स्थान पर ष् - रामष्षष्ठः

रामस् + टीकते- स् + ट् – स् के स्थान पर ष् - रामष्टीकते

तत् + टीका- त् + ट् - त् के स्थान पर ट् - तट्टीका

पेष् + ता - ष्+ त् - त् के स्थान पर ट् - पेष्टा

चक्रिन्+ ढौकसे- न्+ ढ् - न् के स्थान पर ण्- चक्रिण्ढौकसे

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सन्धि विच्छेद	रामस् + षष्ठः
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर षकार हुआ	राम ष् + षष्ठः- **रामष्षष्ठः**

3.4.2. निषेध

निषेध सूत्र.1 – तोः षि ।

पदान्त तवर्ग के बाद षकार होने पर तवर्ग के स्थान पर टवर्ग आदेश नहीं होता है ।

उदाहरण – सन् + षष्ठः - सन्षष्ठः

निषेध सूत्र. 2- न पदान्ताट्टोरनाम् । न पदान्तात् टोः अनाम् ।

पदान्त टवर्ग के बाद में तवर्ग के स्थान पर टवर्ग आदेश नहीं होता है ।

उदाहरण- षट् + ते - षट् ते ।

यह निषेध कुछ स्थानों पर नहीं होता है जिसे अग्रिम वार्तिक द्वारा बताया गया है ।

3.4.3. सन्धि वार्तिक- अनाम्-नवति-नगरीणाम् इति वाच्यम् ।

नाम्, नवति, नगरी इन स्थानों पर पूर्वोक्त निषेध की प्रवृत्ति नहीं होती है । अतः यहाँ पर ष्टुत्व सन्धि हो जाती है ।

उदाहरण- षड्+ नाम्, षड् + नवतिः, षड् + नगर्यः- न् के स्थान पर ण् होने पर-

षड्+ णाम्, षड् + णवतिः, षड् + णगर्यः - अनुनासिक सन्धि होने पर

षण्+ णाम्, षण् + णवतिः, षण् + णगर्यः

षण्णाम्, षण्णवतिः, षण्णगर्यः ।

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	षड् + नवतिः
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से नकार के स्थान पर णकार प्राप्त हुआ	
न पदान्ताट्टोरनाम्	इस सूत्र से नकार के स्थान पर णकार का निषेध प्राप्त हुआ	
अनाम्-नवति-नगरीणाम् इति वाच्यम्	इस वार्तिक से नकार के स्थान पर णकार हुआ	षड् + णवतिः
यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	इस वार्तिक से डकार के स्थान पर अनुनासिक णकार हुआ	षण् + णवतिः- **षण्णवतिः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. ष्टुत्व सन्धि में तवर्ग के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ख. उट्टङ्कणम्, द्रष्टा – सन्धि विच्छेद लिखो ।

ग. षड् + नवति, हरिस् + षष्ठः – सन्धि रूप लिखो ।

घ. तोः षि इस सूत्र का उदाहरण तथा कार्य लिखो ।

3.5. अनुनासिक –जश्- परसवर्ण सन्धि

कुछ स्थितियों में अनुनासिक वर्ण परे होने पर पूर्व वर्ण भी अनुनासिक होता है । अनुनासिक वर्ण ञ म ङ ण न हैं । ये ही आदेश होंगे । इसी प्रकार जश् सन्धि में ज ब ग ड द आदेश होंगे । परसवर्ण शब्द का अर्थ है कि तो वर्ण पर (दूसरे शब्द का आदि वर्ण) है उसी का सवर्ण पूर्व वर्ण के स्थान पर होगा । यही परसवर्ण सन्धि है । आइए इन तीन सन्धियों को समझते हैं ।

3.5.1. अनुनासिक सन्धि नियम

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा । यरः अनुनासिके अनुनासिकः वा ।

यर् प्रत्याहारस्थ वर्ण के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक होता है, यदि यर् के पर में अनुनासिक वर्ण हो ।

उदाहरण- एतत् + मुरारिः – (यर्) त् + म् (अनुनासिक) – एतन् + मुरारिः – एतन्मुरारिः

अनुनासिक न होने पर जश् सन्धि- **झलां जशोऽन्ते**

एतत् + मुरारिः- एतद् + मुरारिः-   एतद्मुरारिः ।

सन्धि वार्तिक- प्रत्यये भाषायां नित्यम् ।

यर् प्रत्याहारस्थ वर्ण के स्थान पर नित्य अनुनासिक होता है, यदि यर् के पर में अनुनासिक वर्ण प्रत्यय का हो ।

उदाहरण- तत् + मात्रम् -   (यर्) त् + म् (प्रत्यय का अनुनासिक वर्ण) – एतन्मात्रम्

चित्+ मयम् -   (यर्) त् + म् (प्रत्यय का अनुनासिक वर्ण) - चिन्मयम्

3.5.2. जश् सन्धि नियम

सूत्र- झलां जशोऽन्ते - झलां जशः अन्ते ।

पद के अन्त में झल् वर्णों के स्थान पर जश् वर्ण आदेश होते हैं । जश्- ज, ब, ग, ड, द । अर्थात् प्रत्येक वर्ग का तीसरा वर्ण आदेश होता है । वर्णों की उच्चारण स्थान की समानता के आधार पर अग्रिम प्रकार से आदेश होते हैं -

च, छ, झ के स्थान पर ज   प, फ, भ के स्थान पर ब

क, ख, घ के स्थान पर ग   ट, ठ, ढ के स्थान पर ड   त, थ, ध के स्थान पर द

उदाहरण- वाक् + ईशः - (पदान्त) क् के स्थान में जश् ग् -   वाग् + ईशः- वागीशः

अच् + अन्तम्- (पदान्त) च् के स्थान में जश् ज्-   अज् + अन्तम्- अजन्तम्

षट् + अन्तम्- (पदान्त) ट् के स्थान में जश् ड्-   षड् + अन्तम् – षडन्तम्

सत् + आचारः- (पदान्त) त् के स्थान में जश् द्-   सद् + आचारः- सदाचारः

सुप् + अन्तम्- (पदान्त) प् के स्थान में जश् ब् -   सुब् + अन्तम् – सुबन्तम्

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	वाक् + ईशः
झलां जशोऽन्ते	इस सूत्र से ककार के स्थान पर गकार हुआ	वाग् + ईशः- **वागीशः**

3.5.3. परसवर्ण सन्धि नियम

सूत्र- तोर्लि । तोः लि ।

तवर्ग के बाद लकार होने पर तवर्ग के स्थान पर परसवर्ण होता है । परसवर्ण- पर में जो वर्ण है, उसका सवर्ण पूर्व वर्ण के स्थान पर होता है । जैसे पर वर्ण लकार है , उसका सवर्ण पूर्व में तवर्गीय वर्ण के स्थान पर होता है ।हम सञ्ज्ञा प्रकरण में जान चुके हैं, कि य, व, ल वर्णों के दो-दो भेद हैं- अनुनासिक तथा अननुनासिक । अतः ल से भी अनुनासिक लँ तथा अननुनासिक ल दो सवर्णों का ग्रहण होगा ।

उदाहरण- तद् + लयः - द् + ल् - द् के स्थान पर ल् - तल् + लयः - तल्लयः

विद्वान्+ लिखति- न् + ल् - न् के स्थान पर लँ - विद्वालँ + लिखति – विद्वाँल्लिखति

यहाँ पर पूर्व वर्ण न् अनुनासिक है । अतः अनुनासिक के स्थान पर ल् का सवर्ण अनुनासिक लँ ही होगा ।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	विद्वान्+ लिखति
तोर्लि	इस सूत्र से नकार के स्थान पर परसवर्ण लँकार हुआ	विद्वा लँ+ लिखति - **विद्वाँल्लिखति**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. चिदानन्दः - सन्धि विच्छेद लिख कर सन्धि सूत्र लिखो ।

ख. भगवत् + लीनः, वाक् + मयम् का सन्धि रूप लिखो ।

ग. जश् सन्धि में कौन से वर्ण आदेश होते हैं ?

घ. तन्मम- सन्धि विच्छेद लिख कर सन्धि का नाम बताओ ।

3.6. पूर्वसवर्ण तथा छत्व सन्धि

पूर्वसवर्ण शब्द का अर्थ है कि तो वर्ण पूर्व (पहले शब्द का अन्तिम वर्ण) है उसी का सवर्ण पर वर्ण के स्थान पर होगा । यही पूर्वसवर्ण सन्धि है । आइए इन तीन सन्धियों को समझते हैं ।

3.6.1. पूर्वसवर्ण सन्धि नियम-1

सन्धि सूत्र.1- उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ।

उद् शब्द के बाद स्था या स्तम्भ शब्द होने पर पूर्वसवर्ण होता है । पूर्वसवर्ण सन्धि परसवर्ण के विपरीत होती है । यहाँ पर पर वर्ण के स्थान पर पूर्व वर्ण का सवर्ण आदेश होता है । इस सूत्र के अर्थ को समझने के लिए हमे कुछ सहायक सूत्रों को समझना आवश्यक है ।

सहायक सूत्र- तस्मादित्युत्तरस्य । तस्माद् इति उत्तरस्य ।

पञ्चमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट कार्य पञ्चमीनिर्दिष्ट वर्ण के व्यवधानरहित उत्तर वर्ण के स्थान पर होता है । जैसे पूर्वोक्त सूत्र में पञ्चमी विभक्ति उदः इस पद में है । अतः उससे निर्दिष्ट कार्य उद् के पर में स्था या स्तम्भ के स्थान पर होता है । यहाँ पर प्रश्न उठता है, कि पूर्वसवर्ण स्था या स्तम्भ के किस वर्ण के स्थान पर होता है । इसके समाधान के लिए हम अग्रिम सहायक सूत्र को जानेंगे-

सहायक सूत्र- आदेः परस्य ।

यह सूत्र पिछले सूत्र से सम्वन्धित है । पिछले सूत्र से पञ्चमीनिर्दिष्ट कार्य पर के स्थान पर होता है । यह सूत्र बताता है, कि जो कार्य पर के स्थान पर होता है, वह पर भाग के आदि में होता है । जैसे- उद् से पर भाग स्था या स्तम्भ है, उसके आदि सकार के स्थान पर पूर्वसवर्ण होता है ।पूर्वसवर्ण का अर्थ है, कि पूर्व मे जो उद् का दकार है, उसका सवर्ण स्था या स्तम्भ के आदि सकार के स्थान पर होता है । इस प्रक्रिया को इस प्रकार समझ सकते हैं-

उदाहरण- उद् + स्थानम्- (पूर्व)द् + स् (पर) – स् के स्थान पर पूर्व दकार के सवर्ण प्राप्त- त, थ, द, ध

उद् + थ् थानम्- (पूर्व)द् + स् (पर) – स् के स्थान पर उसके सर्वाधिक समान दकार का सवर्ण थकार आदेश

(थकार की सकार के साथ सबसे अधिक समानता है, क्योंकि दोनों के बाह्य प्रयत्न विवार, श्वास, अघोष तथा महाप्राण हैं।)

पूर्वसवर्ण की प्रक्रिया में हमें अन्य सन्धि भी जानने की आवश्यकता है ।

3.6.2. चर् सन्धि नियम

सूत्र- खरि च ।

खर् वर्ण यदि पर में हों, तब झल् वर्ण के स्थान पर चर् वर्ण आदेश होता है। चर्- च, ट, त, क, प, श, ष, स। ये अधिकतर वर्ग के पहले वर्ण हैं। अतः इस सन्धि में वर्ग का पहला वर्ण आदेश होता है।

उद् + थ् थानम् - (झल्) थ् + थ् (खर्) -

उद् + त् + थानम् (झल्) थ् के स्थान पर (चर्) त्

उद् + त् + थानम्- (झल्) द् + त् (खर्) -

उत् + त् + थानम्- (झल्)द् के स्थान पर (चर्)त्

उत्थानम्

यहाँ पर उद् + थ् थानम् इस अवस्था में एक अतिरिक्त प्रक्रिया प्राप्त होती है।

3.6.3. लोप कार्य

सूत्र- झरो झरि सवर्णे।

हल् वर्ण के बाद झर् के स्थान पर विकल्प से लोप होता है यदि सवर्ण झर् पर में हो।

उद् + थ् थानम् - (हल्) द् + (झर्) थ + थ (सवर्ण झर्) –

उद् + थानम् – पूर्व थकार का लोप-

उत्थानम्

इस प्रकार लोप पक्ष में एक तकार सहित उत्थानम् रूप सिद्ध होता है तथा लोप के न होने पर दो तकार सहित उत्थानम् रूप बनता है।

रूप सिद्धि

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	उद् + स्थानम्
तस्मादित्युत्तरस्य	इस सूत्र की सहायता से उद् के पर में-	
आदेः परस्य	इस सूत्र की सहायता से स्था शब्द के आदि -	
उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य	सकार के स्थान पर पूर्वसवर्ण थकार आदेश हुआ	उद् + थ् थानम्
खरि च	पूर्व थकार के स्थान पर तकार आदेश हुआ दकार के स्थान पर तकार आदेश हुआ	उद् + त् थानम् उत्+ त् थानम्- **उत्थानम्**

झरो झरि सवर्णे	पूर्व थकार के स्थान पर विकल्प से लोप आदेश हुआ	उद् + थ् थानम् उद्+ थानम्
खरि च	दकार के स्थान पर तकार आदेश हुआ	उत्+थानम् **उत्थानम्**

3.6.4. परसवर्ण सन्धि नियम -2

सूत्र. 2- झयो होऽन्यतरस्याम् । झयः हः अन्यतरस्याम् ।

झय् के बाद में हकार होने पर हकार के स्थान पर विकल्प से पूर्वसवर्ण होता है ।

उदाहरण-

वाक् + हरिः - वाक् + हरिः- क् + ह् - क् के स्थान पर जश् ग् आदेश- झलां जशो न्ते

(झय्) ग् + ह् - हकार के स्थान पर पूर्व ग् के सवर्ण प्राप्त- क्, ख, ग, घ

वाग् +घरिः - (झय्) ग् + ह् - हकार के स्थान पर पूर्व ग् का सवर्ण घ्

(घकार की हकार के साथ सबसे अधिक समानता है, क्योंकि दोनों के बाह्य प्रयत्न संवार, नाद, घोष तथा महाप्राण हैं।)

वाग्घरिः ।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	वाक् + हरिः
तस्मादित्त्युत्तरस्य	इस सूत्र की सहायता से झय् क् के पर में-	
झयो होऽन्य तरस्याम्	हकार के स्थान पर पूर्वसवर्ण घकार आदेश हुआ	वाक् + घरिः
झलां जशोऽन्ते	ककार के स्थान पर गकार आदेश हुआ	वाग् + घरिः- **वाग्घरिः**
	जब पूर्वसवर्ण घकार आदेश नहीं हुआ	**वाग्हरिः**

3.6.5. छत्व सन्धि नियम

सन्धि सूत्र- शश्छोऽटि। शः छः अटि।

झय् के बाद में शकार के स्थान पर छकार आदेश विकल्प से होता है, यदि शकार के बाद अट् हो

उदाहरण- तद् + शिवः – द् + श्- श्चुत्व सन्धि होने पर- तज् + शिवः

चर् सन्धि होने पर - तच् + शिवः

तच् + शिवः – (झय्) च् + श् + इ (अट्)- शकार के स्थान पर छकार होने पर - तच् + छिवः

तच्छिवः।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सन्धि विच्छेद	तद् + शिवः
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से दकार के स्थान पर जकार हुआ	तज् + शिवः
खरि च	इस सूत्र से जकार के स्थान पर चकार हुआ	तच् + शिवः
तस्मादित्युत्तरस्य	इस सूत्र की सहायता से झय् च् के पर में-	
शश्छोऽटि	शकार के स्थान पर विकल्प से छकार आदेश हुआ	तच् + छिवः- **तच्छिवः**
	शकार के स्थान पर छकार आदेश नहीं हुआ	**तच्शिवः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

क. उत्थानम् में कौन सी सन्धि है ? सूत्र लिखो।

ख. आदेः परस्य यह सूत्र सूत्रों की किस कोटि में आता है ?

ग. पद् + हतिः- सन्धिरूप लिखो।

घ. झय् वर्ण के बाद किस वर्ण को पूर्वसवर्ण होता है ?

ङ. श्रीमत् + शङ्करः- ....

3.7. अनुस्वार तथा परसवर्ण सन्धि

अनुस्वार सन्धि में हम यह जानेंगे कि रामं पश्यति, मनांसि आदि शब्दों में अनुस्वार कहाँ से प्राप्त होता है। अनुस्वार प्राप्त होने के बाद हम उसके स्थान पर परसवर्ण (पर वर्ण का समान वर्ण) आदेश करते हैं। जैसे – शां + त- शान्तः। यही सम्पूर्ण अनुस्वार तथा परसवर्ण की प्रक्रिया हम यहाँ देखेंगे।

3.7.1. अनुस्वार सन्धि नियम-1

सन्धि सूत्र. 1- मोऽनुस्वारः। मः अनुस्वारः।

पद के अन्त में मकार के स्थान पर अनुस्वार होता है, यदि हल् वर्ण पर में हो।

उदाहरण- हरिम् + वन्दे - (पदान्त) म् + व् (हल्) - हरिं वन्दे।

उसी प्रकार ग्रामं गच्छति, चित्रं पश्यति, यानं याति इन स्थानों पर मकार के स्थान पर अनुस्वार हुआ, क्योंकि मकार के बाद हल् वर्ण है।

3.7.2. अनुस्वार सन्धि नियम-2

सूत्र. 2- नश्चापदान्तस्य झलि।

यदि नकार या मकार पद के अन्त में न हों, तब झल् वर्ण पर में होने पर नकार तथा मकार के स्थान पर अनुस्वार होता है।

उदाहरण- यशान् + सि - (अपदान्त) न् + स् (झल्) - यशांसि

आक्रम् + स्यते- (अपदान्त) म् + स् (झल्) - आक्रंस्यते

इसी प्रकार मनांसि, विद्वांसः, गंस्यते, ध्वंसते इत्यादि स्थानों पर भी अनुस्वार होता है।

3.7.3. परसवर्ण सन्धि नियम-1

सन्धि सूत्र. 1- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

अपदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण होता है, यदि यय् वर्ण पर में हो। यह सन्धि पिछले सूत्र से हुए नकार या मकार के स्थान में हुए अनुस्वार से सम्बन्धित है।

उदाहरण- शाम् + तः- म् के स्थान पर अनुस्वार- शां + तः

शां + तः – अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण न् - शान् + तः- शान्तः।

अन् + कितः- न् के स्थान पर अनुस्वार- अं + कितः

अं + कितः - अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण ङ् – अङ् + कितः- अङ्कितः ।

इस प्रकार अनुस्वार के स्थान में पर वर्ण के वर्ग का अन्तिम वर्ण आदेश होता है क्योंकि अनुस्वार तथा प्रत्येक वर्ग का अन्तिम वर्ण अनुनासिक होते हैं ।

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	शाम् + तः
नश्चापदान्तस्य झलि	मकार के स्थान पर अनुस्वार आदेश हुआ	शां + तः
अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण नकार आदेश हुआ	शान्+ तः- **शान्तः**

3.7.4. परसवर्ण सन्धि नियम-2

सूत्र. 2- वा पदान्तस्य ।

पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है, यदि यय् वर्ण पर में हो । यह परसवर्ण **मोऽनुस्वारः** सूत्र से हुए मकार के स्थान में हुए अनुस्वार से सम्बन्धित है ।

उदाहरण- त्वम् + करोषि – म् के स्थान पर अनुस्वार - त्वं + करोषि

त्वं + करोषि - अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण ङ् - त्वङ् + करोषि

त्वङ्करोषि । त्वं करोषि ।

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	त्वम् + करोषि
मोऽनुस्वारः	मकार के स्थान पर अनुस्वार आदेश हुआ	त्वं + करोषि
वा पदान्तस्य	अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण ङकार आदेश हुआ	त्वङ् + करोषि- **त्वङ्करोषि**
	जब अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण ङकार आदेश नहीं हुआ	**त्वं करोषि**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-5**

क. अनुस्वार सन्धि के दो उदाहरण लिखो ।

ख. सं + चितः, कुं + ठितः- सन्धि रूप लिखो ।

ग. ग्रामं + गच्छति -..........................

घ. शान्तिः, मनांसि- सन्धिविच्छेद लिखो ।

3.8. आगम

आगम का अर्थ बिना किसी वर्ण को हटाए नये वर्ण का आना होता है । आगम आदेश से विपरीत होता है । आदेश किसी वर्ण के स्थान में होता है जबकि आगम किसी वर्ण का अवयव बन कर आता है । यहाँ पर प्रश्न होता है, कि आगम वर्ण का आदि अवयव होता है, या अन्तिम । इसे जानने के लिए हम अग्रिम सूत्र की सहायता लेते हैं –

3.8.1. परिभाषा सूत्र

सूत्र – आद्यन्तौ टकितौ ।

टित् आगम वर्ण के आदि में होता है, तथा कित् अन्त में । जिस आगम में ट् की इत् सञ्ज्ञा हो, वह टित् होता है, तथा जहाँ क् इत हो , वह कित् होता है ।

3.8.2. कुक् – टुक् आगम

सूत्र – ङ्णोः कुक् टुक् शरि ।

ङ् वर्ण को कुक् तथा ण् वर्ण को टुक् आगम होता है यदि शर् वर्ण पर में हो । ये दोनों आगम कित् हैं । अतः ङकार तथा णकार के अन्त में होते हैं ।

उदाहरण -

प्राङ् + षष्ठः -	ङ् + ष् (शर्) -		प्राङ् कुक् + षष्ठः
	प्राङ् क्+ षष्ठः-	अनुबन्ध लोप -	प्राङ्क्षष्ठः
सुगण् + षष्ठः -	ण् + ष् (शर्) -		सुगण् टुक् + षष्ठः

सुगण् ट् +षष्ठः-   अनुबन्ध लोप-   सुगण्ट्षष्ठः

वार्तिक- चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेः इति वाच्यम्
चय् वर्ण को द्वितीय वर्ण आदेश होते हैं यदि शर् पर में हो। चय्- च, ट, त, क, प। अर्थात् वर्ग के पहले वर्ण के स्थान पर द्वितीय वर्ण आदेश होता है।

प्राङ् क् + षष्ठः - (चय्) क् + ष् (शर्) – प्राङ् ख् षष्ठः-   प्राङ्ख्षष्ठः।

सुगण् ट् + षष्ठः- (चय्) ट् + ष् (शर्)- सुगण् ठ् + षष्ठः-   सुगण्ठ्षष्ठः।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	प्राङ् + षष्ठः
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
ङ्णोः कुक् टुक् शरि	ङ्वर्ण के अन्त में कुक् आगम हुआ	प्राङ् कुक्+ षष्ठः
हलन्त्यम्	इस सूत्र से अन्तिम क् की इत् सञ्ज्ञा हुई	
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	इस सूत्र से अन्तिम उ की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से अन्तिम क् तथा उ का लोप हुआ	प्राङ् क्+ षष्ठः- **प्राङ्क्षष्ठः**
चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम्	इस वार्तिक से क् के स्थान पर विकल्प से ख् हुआ	प्राङ् क्+ षष्ठः प्राङ् ख+ षष्ठः- **प्राङ्ख् षष्ठः**

3.8.3. धुट् आगम

सूत्र- डः सि धुट्।
ड् वर्ण के बाद सकार को विकल्प से धुट् आगम होता है। धुट् टित् है। अतः यह सकार के आदि में होता है।

उदाहरण- षड् + सन्तः - ड् + स्-   षड् + धुट् सन्तः

षड् + ध् सन्तः- अनुबन्ध लोप- षड् + त् सन्तः- चर् सन्धि
षट् + त् सन्तः- चर् सन्धि- षट्त्सन्तः । षट्सन्तः ।

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	षड् + सन्तः
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
डः सि धुट्	सकार के आदि में धुट् आगम हुआ	षड् + धुट् सन्तः
हलन्त्यम्	इस सूत्र से अन्तिम ट् की इत् सञ्ज्ञा हुई	
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	इस सूत्र से उ की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से अन्तिम ट् तथा उ का लोप हुआ	षड् + ध् सन्तः
खरि च	इस सूत्र से धकार के स्थान पर तकार तथा डकार के स्थान पर टकार हुआ	षट् + त् सन्तः- **षट्त्सन्तः**
	जिस पक्ष में धुट् आगम नहीं हुआ	**षट् सन्तः**

3.8.4. तुक् आगम-1

सूत्र – शि तुक् ।

नकारान्त पद को विकल्प से तुक् आगम होता है, यदि श् पर में हो ।

उदाहरण-

सन् + शम्भुः - सन् तुक् + शम्भुः- सन् त्+शम्भुः - अनुबन्ध लोप
सन् त् +छम्भुः- छत्व सन्धि-
सञ् च् +छम्भुः- श्चुत्व सन्धि- **सञ्च्छम्भुः** ।

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	सन् + शम्भुः
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
शि तुक्	नकार के अन्त में तुक् आगम हुआ	सन् तुक् + शम्भुः
हलन्त्यम्	इस सूत्र से अन्तिम क् की इत् सञ्ज्ञा हुई	

उपदेशेऽजनुनासिक इत्	इस सूत्र से उ की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से अन्तिम त् तथा उ का लोप हुआ	सन् त् + शम्भुः
शश्छोऽटि	इस सूत्र से शकार के स्थान पर विकल्प से छकार हुआ	सन् त्+ छम्भुः
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से तकार के स्थान पर चकार तथा नकार के स्थान पर ञकार हुआ	सञ् च्+ छम्भुः- **सञ्छम्भुः**
	जिस पक्ष में श् को छ नहीं हुआ	सन् त् शम्भुः सञ् च् शम्भुः **सञ्शम्भुः**
झरो झरि सवर्णे	जिस पक्ष में विकल्प से चकार का लोप हुआ	सञ् च्+ छम्भुः सञ् + छम्भुः **सञ्छम्भुः**
	जिस पक्ष में तुक् आगम नहीं हुआ	सन् + शम्भुः **सञ्शम्भुः**

3.8.5. ङुट्-णुट्-नुट् आगम

सूत्र- ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् । ङमः ह्रस्वात् अचि ङमुट् नित्यम् ।

ह्रस्व वर्ण के बाद ङम्- ङ्, ण्, न् हो, तथा उसके बाद अच् हो, तो अच् वर्ण को ङमुट्- ङुट्, णुट्, नुट् आगम होते हैं ।

उदाहरण-

प्रत्यङ् + आत्मा- (ह्रस्व) अ + ङ्+ आ (अच्)- प्रत्यङ् +ङुट् आत्मा

प्रत्यङ् + ङ् आत्मा - **प्रत्यङ्ङात्मा**

सुगण् + ईशः - (ह्रस्व)अ + ण्+ ई (अच्)- सुगण् +णुट् ईशः

सुगण् + ण् ईशः- **सुगण्णीशः**

सन् + अच्युतः – (ह्रस्व) अ + न् + अ (अच्) – सन् + नुट् अच्युतः

सन् + न् अच्युतः- **सन्नच्युतः**

यहाँ पर नुट् आगम के उदाहरण अधिक लोक में प्रयुक्त होते हैं। जैसे – गच्छन् + अस्ति – गच्छन्नस्ति, पिबन्+ अपि - पिबन्नपि।

3.8.6. तुक् आगम-2

सूत्र- छे च।

ह्रस्व स्वर को तुक् आगम होता है, यदि छ वर्ण पर में हो।

उदाहरण-

शिव + छाया - (ह्रस्व)अ + छ - शिव तुक् + छाया-

शिव त् + छाया- अनुबन्ध लोप

शिव च् +छाया- श्चुत्व सन्धि- **शिवच्छाया**।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	शिव + छाया
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
छे च	ह्रस्व अकार के अन्त में तुक् आगम हुआ	शिव तुक्+ छाया
हलन्त्यम्	इस सूत्र से अन्तिम क् की इत् सञ्ज्ञा हुई	
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	इस सूत्र से उ की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से अन्तिम त् तथा उ का लोप हुआ	शिव त् + छाया
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से तकार के स्थान पर चकार हुआ	शिव च् + छाया- **शिवच्छाया**

सूत्र- पदान्ताद् वा।

पद के अन्त में दीर्घ स्वर को तुक् आगम होता है, यदि छ वर्ण पर में हो।

उदाहरण- लक्ष्मी + छाया - (दीर्घ)ई + छ -

लक्ष्मी तुक् + छाया- लक्ष्मी त् + छाया-

लक्ष्मी च् +छाया- श्चुत्व सन्धि- **लक्ष्मीच्छाया।**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-6**

क. सन् + शम्भुः, प्राङ् + षष्ठः – आगम लिख कर सूत्र लिखो।

ख. षड् + सन्तः यहाँ धुट् आगम किस वर्ण के साथ होगा ?

ग. कित् आगम कहाँ जोडा जाता है ?

घ. तस्मिन् + इति-...................

ङ. शोध + छात्र यहाँ कौन सा आगम होगा ?

3.9. रु प्रकरण

इस सन्धि में मकार या नकार के स्थान पर विभिन्न सूत्रों से रु होता है। इसके अतिरिक्त अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, सत्व आदि कई दूसरे कार्य भी होते हैं जिनका क्रम इस प्रकार है- म न- रु, रु से पूर्व में अनुनासिक या अनुस्वार, रेफ के स्थान पर विसर्ग, विसर्ग के स्थान पर सकार।

3.9.1. रु विधि-1

सूत्र. 1- समः सुटि ।

सम् शब्द के मकार को रु होता है, यदि सुट् आगम परे हो।

उदाहरण-

सम् + स् (सुट्) + कर्ता - स रु + स् + कर्ता- स र् + स् + कर्ता – अनुबन्ध लोप

3.9.2. अनुनासिक विधि

सूत्र- अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा।

यहाँ रु विषय में रु से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होता है।

उदाहरण- स र् + स् + कर्ता- सँ र् + स् + कर्ता

3.9.3. अनुस्वार विधि

सूत्र- अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः ।

रु विषय में अनुनासिक से पर में अनुस्वार आगम होता है, जब अनुनासिक न हो ।

उदाहरण- स र् + स् + कर्ता- सं र् + स् + कर्ता

इस प्रकार अनुनासिक तथा अनुस्वार के पक्ष में रु विषय में सर्वत्र दो रूप होते हैं ।

3.9.4. विसर्ग विधि

सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः ।

रेफ के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है, यदि रेफ के बाद खर् वर्ण या अवसान हो ।

उदाहरण- सँ र् + स् + कर्ता- सँ :+ स् + कर्ता

सं र् + स् + कर्ता- सं : + स् + कर्ता

3.9.5. सत्व विधि

सूत्र- विसर्जनीयस्य सः ।

विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है, यदि खर् वर्ण पर में हो ।

वार्तिक- सम्-पुम्-कानां सो वक्तव्यः ।

सम्, पुम् तथा कान् के विसर्ग के स्थान पर सकार होता है ।

सँ :+ स् + कर्ता- सँ स्+ स् + कर्ता - सँस्कर्ता

सं : + स् + कर्ता- सं स्+ स् + कर्ता - संस्कर्ता

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	सम् + स् (सुट्) + कर्ता
समः सुटि	सम् के मकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	सरु + स् (सुट्) + कर्ता
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	इस सूत्र से उ की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से अन्तिम उ का लोप हुआ	सर् + स् (सुट्) + कर्ता

अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	इस सूत्र से रु से पूर्व के स्थान पर अनुनासिक हुआ	सँर् + स् (सुट्) + कर्ता
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	इस सूत्र से रेफ के स्थान पर विसर्ग हुआ	सँ : + स् (सुट्) + कर्ता
सम्-पुम्-कानां सो वक्तव्यः	इस वार्तिक से विसर्ग के स्थान पर सकार हुआ	सँ स् + स् (सुट्) + कर्ता- **सँस्स्कर्ता**
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जिस पक्ष में रु से पूर्व में अनुस्वार हुआ	सं स् + स् (सुट्) + कर्ता- **संस्स्कर्ता**

3.9.6. अन्य रुविधियाँ

सूत्र- पुमः खय्यम्परे । पुमः खयि अम्परे ।

पुम् के मकार के स्थान पर रु होता है , यदि बाद में खय् तथा उसके बाद में अम् हो ।

उदाहरण-

पुम् + कोकिलः- म् + (खय्) क् + ओ (अम्)- पु रु + कोकिलः- पु र् + कोकिलः

उसके बाद अनुनासिक तथा अनुस्वार पक्षों में पूर्ववत्- पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः

रुविधि सूत्र- नश्छव्यप्रशान् । नः छवि अप्रशान् ।

प्रशान् शब्द से भिन्न नकारान्त पद के नकार के स्थान पर रु होता है, यदि छव् वर्ण पर में हो ।

उदाहरण-

चक्रिन् + त्रायस्व - न् + त् (छव्) - चक्रि रु + त्रायस्व- चक्रि र् + त्रायस्व-

उसके बाद अनुनासिक तथा अनुस्वार पक्ष में पूर्ववत् कार्य होते हैं । यहाँ पर विसर्ग विधि के लिए हमें अतिरिक्त सूत्र की आवश्यकता है।

विसर्ग विधि सूत्र- विसर्जनीयस्य सः ।

विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है, यदि खर् वर्ण पर में हो ।

उदाहरण- चक्रिँ : + त्रायस्व- : + त् (खर्) - चक्रिँ स् + त्रायस्व- चक्रिँस्त्रायस्व

चक्रिं : + त्रायस्व- : + त् (खर्) - चक्रिं स् + त्रायस्व- चक्रिंस्त्रायस्व

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	चक्रिन् + त्रायस्व
नश्छव्यप्रशान्	चक्रिन् के नकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	चक्रि रु + त्रायस्व
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	इस सूत्र से उ की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	इस सूत्र से अन्तिम उ का लोप हुआ	चक्रि र् + त्रायस्व
अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा	इस सूत्र से रु से पूर्व के स्थान पर अनुनासिक हुआ	चक्रिँ र् + त्रायस्व
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	इस सूत्र से रेफ के स्थान पर विसर्ग हुआ	चक्रिँ : + त्रायस्व
विसर्जनीयस्य सः	इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार हुआ	चक्रिँ स् + त्रायस्व- **चक्रिँस्त्रायस्व**
अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः	जिस पक्ष में रु से पूर्व में अनुस्वार हुआ	चक्रिं स् + त्रायस्व- **चक्रिंस्त्रायस्व**

रुविधि सूत्र- नृन् पे ।
नृन् पद के नकार को विकल्प से रु होता है, जब पवर्ण पर में हो ।

उदाहरण- नृन् + पाहि - नृ रु + पाहि

उसके बाद अनुनासिक तथा अनुस्वार पक्ष में पूर्ववत् विसर्ग आदि कार्य- नृँ : पाहि, नृं : पाहि

इस अवस्था में-

सूत्र- कुप्वोः क पौ च ।
कवर्ग तथा पवर्ग से पूर्व विसर्ग के स्थान पर विकल्प से जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय आदेश होता है । पक्ष में विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही होता है ।

नृँ : पाहि- नृँ पाहि नृं : पाहि- नृं पाहि

विसर्ग के पक्ष में- नृँ : पाहि नृं : पाहि

रु के अभाव पक्ष में- नृन् पाहि

अग्रिम रु विधि के लिए हमें आम्रेडित सञ्ज्ञा को जानना आवश्यक है ।

आम्रेडित सञ्ज्ञा सूत्र- तस्य परमाम्रेडितम् ।

जो शब्द दो बार कहा गया हो, उसके उत्तर रूप की आम्रेडित सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- कान् कान् यहाँ पर दूसरे कान् शब्द की आम्रेडित सञ्ज्ञा होती है ।

रुविधि सूत्र- कानाम्रेडिते च ।

कान् शब्द के नकार को रु होता है यदि आम्रेडित सञ्ज्ञक पर में हो ।

उदाहरण- कान् + कान् - का रु + कान्

उसके बाद अनुनासिक तथा अनुस्वार पक्ष में पूर्ववत् विसर्ग, सत्व आदि कार्य होने पर- काँस्कान्, कांस्कान् ।

- **स्वयं- आकलन प्रश्न-7**

क. सँस्स्कर्ता, पुँस्कोकिलः- रु विधि सूत्र लिखो ।

ख. विसर्ग विधान किस सूत्र से होता है ?

ग. कस्मिन् + चित् यहाँ नकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

घ. रु विधि में अनुनासिक किस सूत्र से होता है ?

ङ. आम्रेडित सञ्ज्ञा किस सूत्र से होती है ?

3.10. सारांश-

इस पाठ में हमने हल्सन्धि को पढा । हल् सन्धि में हमने दो प्रकार के कार्य समझे । प्रथम, आदेश जो किसी वर्ण के स्थान पर होते हैं तथा द्वितीय आगम, जो किसी वर्ण के स्थान पर न होकर उसके आदि या अन्त में अवयव के रूप में जुड जाते हैं । आदेश- जैसे श्चुत्व सन्धि में सकार के स्थान पर शकार एवं तवर्ग के स्थान पर चवर्ग, ष्टुत्व में सकार को षकार एवं तवर्ग को टवर्ग, अनुनासिक वर्ण पर में होने पर पूर्व को अनुनासिक, जश् सन्धि में पदान्त में वर्ग का तीसरा वर्ण, परसवर्ण सन्धि में पूर्व तवर्ग के स्थान पर लकार का सवर्ण, पूर्वसवर्ण में स्था या स्तम्भ के सकार को पूर्व दकार का सवर्ण थकार एवं हकार को पूर्व का सवर्ण, अनुस्वार सन्धि में मकार या नकार के स्थान पर अनुस्वार तथा अनुस्वार को परसवर्ण तथा अन्त में कुछ सम्-पुम् आदि विशेष स्थलों पर मकार तथा नकार पर रु आदेश । दूसरी तरफ कुक्, टुक्, धुट्, तुक्, ङुट्, णुट्, नुट् ये सात आगम श्रेणी में आते हैं, जिसमें कित् वर्ण के आदि तथा टित् वर्ण के अन्त में होते हैं ।

3.11. कठिन शब्दावली

श्चुत्व- शकार तथा तवर्ग आदेश होना।

ष्टुत्व- षकार तथा टवर्ग आदेश होना।

पूर्वसवर्ण- जो वर्ण पूर्व में स्थित है उसका सवर्ण (समान वर्ण)।

परसवर्ण- जो वर्ण पर (बाद) में स्थित है उसका सवर्ण (समान वर्ण)।

आगम- जो वर्ण किसी के स्थान पर नहीं होता है, किसी वर्ण का आदि या अन्तिम अवयव होता है।

3.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. निस् + चयः, उत् + चारणम्- स्तोः श्चुना श्चुः

ख. ञकार

ग. सज्जिज्ञासा, याच्ञा

घ. शात्

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. टवर्ग

ख. उत् + टङ्कणम्, द्रष् + ता

ग. षण्णवतिः, हरिष्षष्ठः

घ. ष्टुत्व का निषेध- सन्षष्ठः

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. चित् + आनन्दः - झलां जशोन्ते ,

ख. भगवल्लीनः, वाङ्मयम्

ग. ज ब ग ड द

घ. तत् + मम- अनुनासिक सन्धि

स्वयं आकलन प्रश्न-4

क. पूर्वसवर्ण सन्धि। सूत्र- उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य।

ख. परिभाषा सूत्र

ग. पद्धतिः

घ. हकार

ङ. श्रीमच्छङ्करः

स्वयं आकलन प्रश्न-5

क. गुरुं वन्दे- गुरुम् + वन्दे, ग्रामं गच्छति- ग्रामम् + गच्छति ।

ख. सञ्चितः, कुण्ठितः ।

ग. ग्रामङ् गच्छति, ग्रामं गच्छति

घ. शां + ति, मनान् + सि

स्वयं आकलन प्रश्न-6

क. तुक्- शि तुक्, ङुट्– ङ्णोः कुक् टुक् शरि ।

ख. सकार

ग. अन्त में

घ. तस्मिन्निति

ङ. तुक्

स्वयं आकलन प्रश्न-7

क. समः सुटि, पुमः खय्यम्परे ।

ख. खरवसानयोर्विसर्जनीयः

ग. रु आदेश

घ. अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा

ङ. तस्य परमाम्रेडितम्

3.13. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी,मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

3.14. अभ्यासात्मक-प्रश्न

क. रामश्चिनोति, षण्णवतिः, तल्लयः- इन सन्धि रूपों की सिद्धि करो ।

ख. उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य सूत्र की सोदाहरण व्याख्या करो ।

ग. संस्स्कर्ता- रूप सिद्धि करो ।

घ. भोभगोअघोअपूर्वस्य योशि- सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

इकाई-4

विसर्गसन्धि प्रकरण

संरचना

4.1. पाठ का परिचय

4.2. पाठ का उद्देश्य

4.3. सत्व कार्य

4.3.1. सकार आदेश

4.3.2. विसर्ग आदेश

- स्वयं आकलन प्रश्न-1

4.4. रुत्व तथा उत्व कार्य

4.4.1. रु आदेश

4.4.2. उकार आदेश

- स्वयं आकलन प्रश्न-2

4.5. यत्व कार्य

4.5.1. यकार आदेश

4.5.2. लोप कार्य

- स्वयं आकलन प्रश्न-3

4.6. रेफलोप तथा दीर्घ कार्य

4.6.1. रेफ लोप

4.6.2. दीर्घ आदेश

4.6.3. विप्रतिषेध

- स्वयं आकलन प्रश्न-4

4.7. सुलोप कार्य

4.7.1. सुलोप आदेश

- स्वयं-आकलन प्रश्न-5

4.8. सारांश

4.9. कठिन-शब्दावली

4.10. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

4.11. सहायक ग्रन्थ

4.12. अभ्यासात्मक प्रश्न

4.1. पाठ का परिचय

पिछले पाठ में हमनें हल्सन्धि का परिचय प्राप्त किया। इस पाठ में सन्धि के तीसरे प्रकार विसर्ग सन्धि को जानेंगे। सन्धि का सामान्य अर्थ तथा सन्धि का अर्थ भी अच्सन्धि में समझ चुके हैं। यहाँ हम यह जानेंगे कि कहाँ विसर्ग का विधान होता है तथा कहाँ विसर्ग से अतिरिक्त। इस प्रकार इस अध्याय में विसर्ग सन्धि से सम्बन्धित प्रक्रियाओं का प्रतिपादन किया जाएगा।

4.2. पाठ का उद्देश्य

- किसी वर्ण के स्थान पर विसर्ग होने की प्रक्रिया का ज्ञान करवाना।
- किसी वर्ण के स्थान पर विसर्ग न होकर किसी दूसरी प्रक्रिया का बोध करवाना।
- विसर्ग वाले स्थलों पर दीर्घ कार्य का बोध करवाना।
- सूत्रों में विप्रतिषेध का बोध करवाना

4.3. सत्व तथा विसर्ग कार्य

जब विसर्ग से सम्बन्धित विकार होता है, वहाँ विसर्ग सन्धि होती है। जैसे- रामः गच्छति- रामो गच्छति इत्यादि। कुछ स्थलों पर विसर्ग के स्थान पर सकार होता है तथा उसी स्थिति में विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही होता है। यही इस बिन्दु का प्रतिपाद्य है।

4.3.1. सकार आदेश

सत्व सूत्र- विसर्जनीयस्य सः।

विसर्जनीय के स्थान पर सकार आदेश होता है, यदि खर् वर्ण पर में हो।

उदाहरण- विष्णुः + त्राता - विसर्ग + त् (खर्) - विष्णु स् + त्राता- विष्णुस्त्राता।

इसी तरह - हरि + तत्र - हरिस्तत्र, रामः + चिनोति- रामस् + चिनोति – रामश्चिनोति

4.3.2. विसर्ग आदेश

विसर्ग सूत्र – वा शरि।

विसर्जनीय के स्थान पर विकल्प से विसर्ग आदेश होता है, यदि पर में शर् वर्ण हो ।

उदाहरण- हरिः + शेते - विसर्ग + श् (शर्) - हरिः + शेते- हरिः शेते

विसर्ग के न होने पर-

हरिः + शेते - हरि स् + शेते - हरि श् + शेते (श्चुत्व सन्धि) - हरिश्शेते

➢ **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	हरिः शेते
विसर्जनीयस्य सः	इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार प्राप्त हुआ	
वा शरि	इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग हुआ	**हरिः शेते**
	जिस पक्ष में विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग नहीं हुआ	
विसर्जनीयस्य सः	इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश हुआ	हरिः शेते हरि स् + शेते
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर शकार हुआ	हरि श् + शेते - **हरिश्शेते**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

  क. रामः + तरति- सन्धि रूप लिख कर सन्धि सूत्र लिखो ।

  ख. विसर्ग + ... – विसर्ग के स्थान पर सकार

  ग. मनः + शुद्धम्-...................

4.4. रुत्व तथा उत्व कार्य

हम जानते हैं कि विसर्ग का प्रयोग रेफ के स्थान पर होता है । यहाँ हम यह समझेंगे कि रेफ की प्राप्ति सामान्यतया कहाँ से होती है जिसके लिए हमें रुत्व कार्य जानना है । इसके अतिरिक्त जहाँ विसर्ग की प्राप्ति में हम कुछ स्थलों पर ओकार का प्रयोग करते हैं । जैसे- बालकः हसति/ बालको हसति । इसके लिए हम उत्व कार्य को समझेंगे ।

रुत्व सूत्र- ससजुषो रुः ।

पद के अन्त में सकार तथा सजुष् के सकार के स्थान पर रु आदेश होता है ।

उदाहरण- (रामः) राम स् - राम रु

(रामाः) रामा स्- रामा रु

(शिवो र्च्यः) शिवस् + अर्च्यः - शिव रु + अर्च्यः

4.4.1. उत्व कार्य

उत्व सूत्र. 1- अतो रोरप्लुतादप्लुते । अतः रोः अप्लुतात् अप्लुते ।

रु के स्थान पर उकार आदेश होता है यदि रु से पहले तथा बाद में ह्रस्व अकार हो । यह सन्धि पिछले सूत्र से हुए रु से आरम्भ होती है ।

उदाहरण-

शिवस् + अर्च्यः - शिव रु + अर्च्यः- (ह्रस्व) अ + रु + अ(ह्रस्व)-

रु के स्थान पर उकार होने पर-

शिव उ + अर्च्यः - अ + उ – ओ – गुण सन्धि

शिवो + अर्च्यः- (पदान्त) ओ + अ (ह्रस्व)- पूर्वरूप

शिवोऽर्च्यः ।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	शिवस् + अर्च्यः
ससजुषो रुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	शिव रु + अर्च्यः
अतो रोरप्लुतादप्लुते	इस सूत्र से रु के स्थान पर उकार आदेश हुआ	शिव उ + अर्च्यः
आद् गुणः	इस सूत्र से अकार तथा उकार के स्थान पर गुण ओकार आदेश हुआ	शिवो + अर्च्यः
एङः पदान्तादति	इस सूत्र से ओकार तथा अकार के स्थान पर पूर्वरूप ओकार आदेश हुआ	शिव् ओ + र्च्यः- **शिवोऽर्च्यः**

इसी प्रकार रामस् + अत्र - रामोऽत्र । कृष्णस् + अपि - कृष्णोऽपि ।

उत्व सूत्र. 2- हशि च ।

रु के स्थान पर उकार आदेश होता है यदि रु के बाद में हश् वर्ण तथा पहले ह्रस्व अकार हो ।

उदाहरण- देव स् + वन्द्यः- देवरू + वन्द्यः- (ह्रस्व) अ + रु + व् (हश्)

रु के स्थान पर उकार होने पर- देव उ + वन्द्यः- अ + उ – ओ - गुण सन्धि- देवो वन्द्यः

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	देवस्+ वन्द्यः
ससजुषो रुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	देव रु वन्द्यः
हशि च	इस सूत्र से रु के स्थान पर उकार आदेश हुआ	दे उ + वन्द्यः
आद् गुणः	इस सूत्र से अकार तथा उकार के स्थान पर गुण ओकार आदेश हुआ	देवो वन्द्यः

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. शिव रु + अर्च्यः- रु के स्थान पर उकार किस सूत्र से होता है ?

ख. रामस् + हसति का सन्धि रूप लिखो ।

ग. बालकस् + अटति-.................

घ. अ + रु + हश् = रु के स्थान पर...................

4.5. यत्व कार्य

जिस प्रकार हम देखते हैं कि विसर्ग की प्राप्ति में ओकार का प्रयोग होता है । उसी प्रकार कुछ जगहों पर विसर्ग की प्राप्ति में यकार होता है अथवा कोई भी वर्ण नहीं होता है । जैसे देवाः / देवायिह / देवा इह । इन स्थितियों को जानने के लिए हमें यत्व कार्य को पढना होगा ।

4.5.1. यत्व सूत्र

भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि । भोभगोअघोअपूर्वस्य यः अशि ।

भो, भगो, अघो तथा अवर्ण पूर्व में हो, तब रु के स्थान पर यकार आदेश होता है यदि अश् वर्ण पर में हो । यहाँ पर भोस्, भगोस्, अघोस् ये सकारान्त निपात हैं ।

उदाहरण-

भोस् + देवाः - भो रु + देवाः – भो + रु + द् (अश्) -

रु के स्थान पर यकार होने पर-   भो + य् + देवाः-
इस अवस्था में अग्रिम प्रक्रिया के लिए अग्रिम लोप विधि को जानना आवश्यक है।

4.5.2. लोप कार्य

यलोप सूत्र- हलि सर्वेषाम्।
भो, भगो, अघो तथा अवर्ण पूर्व में हो तथा हल् वर्ण पर में हो, तब यकार का लोप होता है।
उदाहरण- भो + य् + देवाः- भो + य् + द् (हल्)- यकार का लोप होने पर- भो देवाः।
उसी प्रकार भगो नमस्ते, अघो याहि , देवा इह ये सभी रूप भी सिद्ध होते हैं।

विशेष- यहाँ लोप के विषय में यह समझना आवश्यक है कि जहाँ हल् वर्ण होगा वहाँ नित्य यलोप होगा। जैसे- भो देवाः यहाँ हमने देखा।
परन्तु जहाँ अच् वर्ण होगा वहाँ **लोपः शाकल्यस्य** से विकल्प से लोप होगा।
जैसे- देवास् + इह,   देवा रु + इह   देवा य् इह
यहाँ यकार के बाद अच् वर्ण इकार है। अतः विकल्प से यलोप होगा-
देवा इह/ देवायिह।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	देवास् + इह
ससजुषो रुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	देवा रु + इह
भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि	इस सूत्र से रु के स्थान पर यकार आदेश हुआ	देवा य् + इह
लोपः शाकल्यस्य	इस सूत्र से यकार के स्थान पर विकल्प से लोप आदेश हुआ	**देवा इह**
	लोप न होने पर	देवा य् इह- **देवायिह**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

च. देवा रु + इह – रु के स्थान पर यकार किस सूत्र से होता है ?

छ. अ + रु +.......... = रु के स्थान पर यकार

ज. भो देवाः- सन्धिविच्छेद लिखो ।

4.6. रेफ लोप कार्य

कुछ जगहों पर विसर्ग की प्राप्ति में कोई नया वर्ण हमें नहीं दिखाई देता है तथा किसी एक स्वर को दीर्घ होता है । जैसे- निर् रोग- नीरोग । इसके लिए हमें रेफ लोप तथा दीर्घ विधि जाननी होगी ।

4.6.1. रेफ लोप

सूत्र – रो रि ।

रेफ का लोप होता है यदि रेफ पर में हो ।

उदाहरण- पुनर् + रमते - र् + र् – रेफ का लोप होने पर- पुन + रमते

इस अवस्था में अग्रिम दीर्घ विधि प्राप्त होती है-

4.6.2. दीर्घ आदेश

सूत्र-

ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घो णः । ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घः अणः ।

ढकार या रेफ का लोप होने पर उनके लोप का निमित्त पर में हो, तब पूर्व अण् को दीर्घ आदेश होता है ।

उदाहरण- पुनर् + रमते - र् + र् – रेफ का लोप होने पर

पुन + रमते – रेफ के लोप का निमित्त रेफ परे होने पर पूर्व (अण्) अकार को दीर्घ- पुना रमते ।

उसी प्रकार-

हरिस् + रम्यः - हरि रु + रम्यः- हरि र् + रम्यः- हरि + रम्यः- हरी रम्यः ।

शम्भुस् + राजते- शम्भुरु+ राजते- शम्भुर् + राजते- शम्भु + राजते- शम्भू राजते

4.6.3. विप्रतिषेध कार्य

सूत्र- विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।

जिस स्थान पर समान बल वाले दो सूत्रों की प्राप्ति हो, वहाँ अष्टाध्यायी क्रम मे उत्तर सूत्र कार्य करता है ।

उदाहरण- मनस् + रथः- मन रु + रथः- (ह्रस्व) अ + र् (हश्)-

रु के स्थान पर उकार प्राप्त – **हशि च**

मन र् + रथः- र् + र् - पूर्व र् के स्थान पर लोप प्राप्त- **रो रि**

एक स्थान पर दो सूत्रों की प्राप्ति होने पर-

मन र् + रथः- र् + र् - पूर्व र् के स्थान पर लोप प्राप्त- **रो रि** (पर सूत्र)

इस अवस्था में इष्ट रूपसिद्धि के लिए सपादसप्ताध्यायी सूत्र (हशि च) की दृष्टि में त्रिपादी सूत्र (रो रि) असिद्ध - **पूर्वत्रासिद्धम्**

मन उ + रथः- (ह्रस्व) अ + र् (हश्)- रु के स्थान पर उकार आदेश – **हशि च**

मनोरथः ।

रूप सिद्धि

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
	सन्धि विच्छेद	मनस् + रथः
ससजुषो रुः	इस सूत्र से सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	मन रु+ रथः
हशि च	इस सूत्र से रु के स्थान पर उकार आदेश प्राप्त हुआ	
रो रि	इस सूत्र से पूर्व रेफ के स्थान पर लोप आदेश प्राप्त हुआ	
विप्रतिषेधे परं कार्यम्	इस सूत्र से पर कार्य पूर्व रेफ के स्थान पर लोप आदेश प्राप्त हुआ	
पूर्वत्रासिद्धम्	(हशि च) की दृष्टि में (रो रि) असिद्ध होने से	
हशि च	इस सूत्र से रु के स्थान पर उकार आदेश हुआ	मन रु+ रथः
आद् गुणः	इस सूत्र से अकार तथा उकार के स्थान पर गुण ओकार आदेश हुआ	**मनोरथः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

  क. हरी रम्यः – रेफ का लोप किस सूत्र से होता है ?

  ख. ....+ र् – रेफ लोप

ग. शम्भु + राजते- यहां किस वर्ण को दीर्घ होता है ।

घ. विप्रतिषेध होने पर कौन सा कार्य होता है ?

4.7. सुलोप कार्य

सः, एषः इन दोनों के विसर्ग हमें कुछ स्थलों पर प्राप्त नहीं होते हैं । जैसे स देवः, एष बालकः । इसे जानने के लिए हमें सुलोप की विधि समझनी है ।

4.7.1. सुलोप आदेश

सूत्र. 1- एतत्तदोः सुलोपोकोरनञ्समासे हलि । एतत्तदोः सुलोपः अकोः अनञ्समासे हलि ।
एतत् तथा तत् शब्द के सु का लोप होता है, यदि इनसे पूर्व में ककार न हो, नञ् समास न हो तथा हल् वर्ण पर में हो ।

उदाहरण- स स् + शम्भुः - (तत्)स् + श् (हल्) – सु के सकार का लोप होने पर - स शम्भुः ।

एष स् + विष्णुः - (एतत्)स् + व् (हल्)- सु के सकार का लोप होने पर- एष विष्णुः ।

इसी प्रकार स गच्छति, एष हसति इत्यादि प्रयोग होते हैं ।

सूत्र. 2 - सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् । सः अचि लोपे चेत् पादपूरणम् ।
(सः) सस् के सकार का लोप होता है यदि लोप होने पर श्लोक के पाद की पूर्ति हो ।
उदाहरण- सैष दाशरथी रामः ।

सस् + एष- सकार को रु – रु को यकार- यकार का लोप, यहाँ पर यह क्रम प्राप्त है ।

सस् + एष- सकार का लोप करने पर- स + एष - वृद्धि सन्धि करने पर- **सैष** ।

सैष दाशरथी रामः यहां पर गणना करने पर आठ वर्ण प्राप्त होते हैं, जिससे श्लोक के एक पाद की पूर्ति होती है । प्रस्तुत पाद अनुष्टुप् छन्द का है, जिसमें प्रत्येक पाद में आठ वर्ण होते हैं । यदि यहाँ पर सकार का लोप नहीं करते, तो स एष दाशरथी रामः, यह अवस्था होती, जिसमें नौ वर्ण हैं ।

- **स्वयं- आकलन प्रश्न-5**

क. एषस् + रामः-.................

ख. किस स्थिति में सुलोप होगा- स स् + बालकः, स स् + आत्मा

ग. सैष दाशरथी रामः यहाँ किस स्थिति में सुलोप होता है ?

4.8. सारांश-

इस पाठ में हमने विसर्ग सन्धि को पढा । विसर्ग सन्धि में हमने विसर्ग से सम्बन्धित कार्य पढे । इस विषय में हमें यह तथ्य ज्ञात होता है कि रामः खादति, रामस्तिष्ठति, रामो हसति, रामोऽर्चति, राम आगच्छति इत्यादि विसर्ग के विषय में विविध प्रकार से प्रयोग का व्यवहार होता है । अतः इस पाठ में हम विसर्ग के स्थान पर सकार- रामस्तिष्ठति, सकार के स्थान पर रु, रु के स्थान पर उकार- रामो हसति, रामोऽर्चति तथा यकार एवं यकार का लोप- राम आगच्छति इत्यादि कार्य पढते हैं । इसी के साथ र के पौर्वापर्य में पूर्व रेफ का लोप, रेफ लोप होने पर पूर्व अण् को दीर्घ- पुना रमते तथा सुलोप – स शिवः, सैष दाशरथी रामः इत्यादि कार्य भी होते हैं ।

4.9. कठिन शब्दावली

- अपूर्वस्य — जिसके पूर्व में अ हो (अ पूर्वः यस्मात्)
- ढ्रलोपे — ढकार तथा रेफ के लोप का निमित्त पर में होने पर
- विप्रतिषेधः — तुल्य बल वाले सूत्रों में परस्पर विरोध

4.10. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं-आकलन प्रश्न-1

ङ. रामस्तरति - विसर्जनीयस्य सः ।

च. खर्

छ. मनः शुद्धम्, मनश्शुद्धम्

स्वयं-आकलन प्रश्न-2

क. अतो रोरप्लुतादप्लुतेति

ख. रामो हसति ।

ग. बालकोऽटति

घ. उ

स्वयं-आकलन प्रश्न-3

क. भोभगोअघोअपूर्वस्य योशि

ख. अश्

ग. भोस् + देवाः

स्वयं-आकलन प्रश्न-4

क. रो रि

ख. र्

ग. उकार

घ. पर कार्य (अष्टाध्यायी के सूत्रों के क्रम में बाद में आने वाला सूत्र)

स्वयं-आकलन प्रश्न-5

क. एष रामः

ख. सस् + बालकः

ग. पाद-पूर्ति होने पर

4.11. सहायक ग्रन्ध

लघुसिद्धान्तकौमुदी,मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

4.12. अभ्यासात्मक-प्रश्न

ङ. अतो रोरप्लुतादप्लुतेऽति इस सूत्र का पद विच्छेद कर सोदाहरण अर्थ संगति करो।

च. भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि- सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

छ. मनोरथः इस प्रयोग में सूत्रों में विप्रतिषेध बताकर सही सूत्र के प्रयोग को समझाएं।

इकाई-5

अकारान्त तथा आकारान्त शब्द

(अजन्त पुंल्लिंग प्रकरण)

संरचना

5.1. पाठ का परिचय
5.2. पाठ का उद्देश्य
5.3. ह्रस्व अकारान्त पुंल्लिंग शब्द
  5.3.1. राम
  5.3.2. निर्जर
    • स्वयं आकलन प्रश्न-1
5.4. सर्वनाम शब्द
  5.4.1. सर्वनाम शब्द सर्व
  5.4.2. पूर्व आदि शब्द
  5.4.3. सर्वनाम सञ्ज्ञा निषेध
    • स्वयं आकलन प्रश्न-2
5.5. आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द
  5.5.1. विश्वपा
    • स्वयं-आकलन प्रश्न-3
5.6. सारांश
5.7. कठिन शब्दावली
5.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर
5.9. सहायक-ग्रन्थ
5.10. अभ्यासात्मक-प्रश्न

5.1. पाठ का परिचय

पाणिनीय व्याकरण में दो प्रकार के पद स्वीकृत किए गए हैं- सञ्ज्ञा शब्द तथा क्रिया शब्द । इन्ही को सुबन्त तथा तिङन्त पद कहा जाता है । इस पाठ में हम सुबन्त शब्दों के विषय में जानेंगे । जिनके अन्त में सुप्(सु औ जस्) आदि प्रत्यय (विभक्ति) लगे होते हैं वे सुबन्त शब्द हैं । जैसे- रामः रामौ रामाः, हरिः हरी हरयः आदि । इन शब्दों की प्रकृति (मूल शब्द) प्रातिपदिक (नाम) होती है । जैसे रामः रामौ रामाः इनकी प्रकृति राम तथा हरिः हरी हरयः इनकी प्रकृति हरि । सुबन्तों की प्रकृति कभी अजन्त (जिनके अन्त में स्वर है) होती है । जैसे- राम, हरि, लता आदि । कभी इनकी प्रकृति हलन्त (जिनके अन्त में व्यञ्जन है) होती है । जैसे भवत्, विद्वस्, मनस् आदि । इन शब्दों का प्रयोग तीनों लिङ्गो (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग) में होता है । इस पाठ में हम अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में अकारान्त तथा आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों का ज्ञान प्राप्त करेंगे । जैसे- राम, निर्जर,सर्व,पूर्व, विश्वपा ।

5.2. पाठ का उद्देश्य

- सुबन्त पदों का सामान्य ज्ञान
- सुबन्त पदों की प्रकृति(प्रातिपदिक) का ज्ञान
- विभक्ति का परिचय
- विभिन्न सञ्ज्ञाओं जैसे- अङ्ग, सर्वनाम, पद, सर्वनामस्थान आदि का ज्ञान
- ह्रस्व अकारान्त तथा आकारान्त शब्दों राम-विश्वपा आदि की सिद्धि-प्रक्रिया का ज्ञान
- अकारान्त सर्वनाम शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान

5.3. ह्रस्व अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

जिन शब्दों के अन्त में अच् (स्वर) होता है, तथा जिनका पुंल्लिङ्ग में प्रयोग होता है उन शब्दों को हम अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्द कहते हैं । जैसे राम, हरि, विष्णु, पितृ आदि । इनमें जिन के अन्त में ह्रस्व अकार है वे ह्रस्व अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द हैं । जैसे राम, निर्जर, बालक आदि । इन शब्दों की सिद्धि-प्रक्रिया इस बिन्दु का प्रतिपाद्य विषय है ।

5.3.1. राम शब्द

किसी भी सुबन्त शब्द को सिद्ध करने के लिए दो तरह के कार्यों का ज्ञान आवश्यक है । पहले वे सामान्य कार्य जो सभी शब्दो की सिद्धि में करने होते हैं । जैसे प्रातिपदिक सञ्ज्ञा, विभक्ति प्रयोग आदि । दूसरे वे विशेष कार्य, जो विभक्ति लगाने के बाद हम करते हैं । जैसे राम + भ्याम्-

रामाभ्याम् यहाँ पर दीर्घ, राम + भ्यस् – रामेभ्यः यहाँ एकार आदेश इत्यादि। यहाँ हम राम शब्द की सिद्धि में सामान्य कार्यों को समझेंगे ।

- **प्रातिपदिक सञ्ज्ञा-**

सूत्र- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

पदच्छेद- अर्थवत् अधातुः अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

अर्थ- इस सूत्र में प्रातिपदिक सञ्ज्ञा है, तथा अर्थवत् सञ्ज्ञी है । अर्थवत्- अर्थः अस्ति अस्य- जिसका कोई अर्थ होता है । अर्थवत् के विशेषण हैं- अधातुः तथा अप्रत्ययः। अप्रत्यय से अप्रत्ययान्त का भी ग्रहण होता है । इस प्रकार सूत्र का अर्थ यह होता है- जिसका कोई अर्थ हो, तथा वह धातु, प्रत्यय एवं प्रत्ययान्त न हो, उस शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- जैसे- घट, पट आदि अर्थवान् शब्द ।

अर्थवान् होने पर भी इन शब्दों की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा नहीं होती – धातु जैसे पठ्, गम् आदि, अप्रत्ययः- प्रत्यय जैसे सु , औ, आदि तथा प्रत्ययान्त जैसे- रामः , रामेषु ।

सूत्र- कृत्तद्धितसमासाश्च ।

पदच्छेद- कृत्-तद्धित-समासाः च ।

अर्थ- कृत्- कृत्प्रत्ययान्त, तद्धित- तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- कृत्प्रत्ययान्त- कारक, पाचक, धावक (ण्वुल् कृत् प्रत्यय)

तद्धितप्रत्ययान्त- श्रीमत्, बुद्धिमत्, धनवत् (मतुप् तद्धित प्रत्यय)

समास- प्रतिदिन, राजपुरुष, पीताम्बर

यहाँ हमने प्रातिपदिक सञ्ज्ञा किन शब्दों की होती है, यह समझा । अब प्रातिपदिक सञ्ज्ञा का फल क्या है, आइए इसे समझते हैं-

- **अधिकार सूत्र-** ङ्याप्प्रातिपदिकात् ।

प्रत्ययः ।

परश्च ।

प्रथम सूत्र का पञ्चमाध्याय की समाप्ति पर्यन्त अधिकार है । यह तीन प्रकार की प्रकृतियों को उत्तर सूत्रों में उपस्थित कराता है- ङ्यन्त, आबन्त तथा प्रातिपदिक । इसके अतिरिक्त **प्रत्ययः** तथा **परश्च** दोनों सूत्र भी अधिकार सूत्र हैं । पहला प्रत्यय सञ्ज्ञा का अधिकार है, जिससे उत्तर सूत्रों से विधेय सु औ जस् आदि की प्रत्यय सञ्ज्ञा होती है । प्रत्यय का प्रकृति क्या है, तो इस विषय मे पिछला सूत्र उपस्थित होता है । प्रत्यय का प्रयोग पूर्वोक्त प्रकृति के किस भाग में होता

है, तो इसे बताने के लिए अग्रिम सूत्र(परश्च) उपस्थित होता है । अतः ङ्यन्त आबन्त तथा प्रातिपदिक (प्रकृति) से पर में प्रत्यय का विधान होता है, यह सम्पूर्ण अर्थ हुआ ।
उक्त तीनों के अधिकार में कौन से प्रत्यय होते हैं, इस आकाङ्क्षा की पूर्ति के लिए अग्रिम विधि पढते हैं-

- **स्वादिप्रत्यय-**

सूत्र- स्वौजसमौट्छस्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् ।
इस सूत्र में पिछले तीन अधिकार सूत्र उपस्थित होते हैं । अतः सूत्र का अर्थ होता है- ङ्यन्त, आबन्त तथा प्रातिपदिक से परे सु औ जस् आदि प्रत्यय होते हैं । इन इक्कीस प्रत्ययों में तीन- तीन में प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियों का व्यवहार होता है –

प्रथमा- सु औ जस्, द्वितीया- अम् औट् शस्, तृतीया- टा भ्याम् भिस्, चतुर्थी- ङे भ्याम् भ्यस्, पञ्चमी- ङसि भ्याम् भ्यस्, षष्ठी- ङस् ओस् आम्, सप्तमी- ङि ओस् सुप् । ये प्रत्यय जिस के अन्त में होते हैं, उसे सुबन्त कहते हैं तथा सुबन्त की पद सञ्ज्ञा होती है । इसके बाद कौन सा प्रत्यय कहाँ प्रयुक्त होता है यह जानने के लिए हम अग्रिम सूत्र पढेंगे-

- **एकवचन-द्विवचन-बहुवचन विधि-**

सञ्ज्ञा सूत्र- सुपः ।
सुप् प्रत्याहार में आने वाले प्रत्ययों में तीन- तीन के समूह में क्रमशः एकवचन- द्विवचन- बहुवचन सञ्ज्ञा होती है । सुप् प्रत्याहार सु से सुप् प्रत्यय तक प्रत्ययों का बोधक है । इसमें सु की एकवचन, औ की द्विवचन तथा जस् की बहुवचन सञ्ज्ञा होगी । इसी क्रम से अन्यों को भी समझना चाहिए ।

विधि सूत्र- द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ।
पदच्छेदः- द्व्येकयोः द्विवचनैकवचने ।
द्वित्व सङ्ख्या में द्विवचन सञ्ज्ञक तथा एकत्व सङ्ख्या में एकवचन सञ्ज्ञक प्रत्यय विहित होता है । जैसे यदि दो बालक हैं, तब बालक शब्द से औ,औट्, भ्याम् आदि द्विवचन प्रत्यय तथा यदि एक बालक है तब सु, अम्, टा आदि एकवचन प्रत्यय होगा ।

विधि सूत्र- बहुषु बहुवचनम् ।
बहुत्व सङ्ख्या में बहुवचन सञ्ज्ञक प्रत्यय विहित होता है । जैसे यदि तीम या अधिक बालक हैं, तब बालक शब्द से जस्, शस्, भिस् आदि बहुवचन प्रत्यय होंगे ।

एकत्व सङ्ख्या होने पर एकवचन सु प्रत्यय- राम + सु, राम + स् (अनुबन्ध लोप), राम + रु (ससजुषो रु) , राम+ र् –

इस अवस्था में रेफ के स्थान में विसर्ग आदेश लाना है, उसके लिए रेफ के बाद में खर् वर्ण या अवसान होना चाहिए (खरवसानयोर्विसर्जनीयः) । अतः यहाँ हमें अवसान को समझना चाहिए।

- **अवसान सञ्ज्ञासूत्र-** विरामोऽवसानम् ।

पदच्छेद- विरामः अवसानम्

वर्णों के विराम की अवसान सञ्ज्ञा होती है । विराम का अर्थ वर्णों का अभाव है । जैसे प्रस्तुत प्रसङ्ग में राम + र् यहाँ रेफ के बाद वर्णों का अभाव है, जिसकी अवसान सञ्ज्ञा होती है । अतः-

राम + र् - अवसान पर में होने पर रेफ को विसर्ग- खरवसानयोर्विसर्जनीयः ।

रामः

द्वित्व सङ्ख्या होने पर राम राम- दो शब्दों की प्राप्ति होने पर-

- **एकशेष विधि**

सूत्र- सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ।

समान स्वरूप वाले शब्दों में एक शब्द का शेष होता है, यदि समान विभक्ति हो ।

जैसे राम राम- समान रूप वाले शब्दों में एकशेष- राम

द्वित्व सङ्ख्या होने पर द्विवचन में राम + औ- इस अवस्था में (वृद्धिरेचि) वृद्धि सन्धि प्राप्त होती है-

- **पूर्वसवर्णविधि तथा निषेध-**

विधि सूत्र- प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ।

अक् वर्ण के बाद प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति का अच् आने पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होता है ।

राम + औ- वृद्धि को बाध कर अकार तथा औकार के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त -

निषेध सूत्र- नादिचि ।

पदच्छेद- न आत् इचि ।

अवर्ण के बाद प्रथमा- द्वितीया विभक्ति का इच् आने पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश नहीं होता है ।

राम + औ - अकार के बाद इच्- औकार होने पर पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध-

रामौ - (वृद्धिरेचि) वृद्धि सन्धि ।

- **इत् सञ्ज्ञा विधि तथा निषेध-**

बहुत्व सङ्ख्या में बहुवचन जस् प्रत्यय- राम + जस् यहाँ पर जस् के अन्तिम हल् सकार की इत् सञ्ज्ञा प्राप्त होती है । उसका निषेध करने के लिए हमें पहले विभक्ति सञ्ज्ञा को जानना आवश्यक है ।

सञ्ज्ञा सूत्र- विभक्तिश्च ।

पदच्छेद-   विभक्तिः च ।

सुप् तथा तिङ् की विभक्ति सञ्ज्ञा होती है । सुप् प्रत्याहार में सु, औ, जस् आदि 21 प्रत्यय, तथा तिङ् प्रत्याहार में तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय आते हैं । इन सभी प्रत्ययों की विभक्ति सञ्ज्ञा होती है ।

निषेध सूत्र- न विभक्तौ तुस्माः ।

विभक्ति में आने वाले तवर्ग, सकार तथा मकार की इत् सञ्ज्ञा नहीं होती है । जैसे- जस् प्रत्यय विभक्ति है, उसमें रहने वाले सकार की इत् सञ्ज्ञा का निषेध होता है ।

सञ्ज्ञा सूत्र- चुटू ।

प्रत्यय के आदि में यदि चवर्ग तथा टवर्ग हो, तब उनकी इत्सञ्ज्ञा होती है ।

जैसे- राम + जस्- जस् प्रत्यय के आदि चवर्गीय वर्ण जकार की इत्सञ्ज्ञा

राम + अस् – अनुबन्ध लोप

रामास्- पूर्वसवर्ण दीर्घ

रामाः रुत्व विसर्ग ।

- **सम्बुद्धि लोप विधि-**

रामः यहाँ प्रथमा विभक्ति एक वचन में हमें विसर्ग दिखाई देता है, तथापि हे राम यहाँ सम्बोधन की प्रथमा में विसर्ग नहीं है । इसलिए हमें यहाँ विसर्ग को न लाने के लिए विसर्ग के मूल सु के दो सञ्ज्ञाएं जाननी आवश्यक हैं ।

सञ्ज्ञा सूत्र- यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ।

पदच्छेदः-   यस्मात् प्रत्ययविधिः तदादि प्रत्यये अङ्गम् ।

इस सूत्र में अङ्ग सञ्ज्ञा तथा तदादि सञ्ज्ञी है । जिस प्रकृति से प्रत्यय का विधान हुआ है, वह जिसके आदि में है, उसकी अङ्ग सञ्ज्ञा होती है, यदि वह प्रत्यय पर में हो । जैसे राम + सु यहाँ सु प्रत्यय का विधान राम शीब्द से हुआ है । सु प्रत्यय पर में होने पर राम जिस भाग के आदि में

है, उस भाग की अङ्ग सञ्ज्ञा होगी। यहाँ पर राम शब्द के बाद सु को छोडकर कुछ भी नहीं है, अतः राम शब्द स्वयं के आदि में है। अतः राम शब्द ही तदादि है जिससे उसकी अङ्ग सञ्ज्ञा होती है।

सञ्ज्ञा सूत्र- एकवचनं सम्बुद्धिः।
सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति के एकवचन की सम्बुद्धि सञ्ज्ञा होती है।

जैसे राम + सु – सु की सम्बुद्धि सञ्ज्ञा

लोप सूत्र- एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः।
एङन्त तथा ह्रस्वान्त अङ्ग के बाद सम्बुद्धि के हल् वर्ण का लोप होता है।
जैसे राम + स्- ह्रस्वान्त अङ्ग राम के बाद सम्बुद्धि के हल् सकार का लोप- **हे राम**।

- **पूर्वरूप विधि**

सूत्र- अमि पूर्वः।
अक् वर्ण के बाद अम् प्रत्यय पर में होने पर पूर्वरूप एकादेश होता है।
जैसे- राम + अम् – दोनों अकारों के स्थान पर पूर्वरूप अकार- **रामम्**।
द्वितीयाबहुवचन में राम + शस्

- **इत्सञ्ज्ञा विधि-**

सूत्र- लशक्वतद्धिते।
पदच्छेद- लशकु अतद्धिते
तद्धित को छोड कर सभी प्रत्ययों के आदि में लकार, शकार तथा कवर्ग की इत्सञ्ज्ञा होती है।
जैसे राम + शस्- शस् प्रत्यय के आदि शकार की इत् सञ्ज्ञा
राम + अस् – अनुबन्ध लोप- रामास् - पूर्वसवर्णदीर्घ

- **नत्व विधि-**

सूत्र- तस्माच्छसो नः पुंसि।
पदच्छेद- तस्मात् शसः नः पुंसि।
जहाँ पर पूर्वसवर्ण दीर्घ हो, वहाँ पर पुँल्लिङ्ग शब्द से विहित शस् के सकार के स्थान पर नकार होता है।
जैसे रामास्- पूर्वसवर्ण दीर्घ होने पर सकार के स्थान पर नकार आदेश - रामान्।

- **णत्व विधि**

सूत्र- अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ।

पदच्छेद- अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये अपि

रेफ या षकार के पर में नकार हो, तथा मध्य अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ्, नुम् में से किसी का व्यवधान हो, तब नकार के स्थान पर णकार आदेश होता है ।

जैसे रामान्- र् + (अट्)आ + (पवर्ग)म् + (अट्)आ न्- नकार के स्थान पर णकार आदेश प्राप्त-

निषेध सूत्र- पदान्तस्य ।

पद के अन्त में नकार के स्थान पर णकार नहीं होता है- रामान् ।

- **विविध प्रत्ययों के स्थान पर विविध आदेश-**

सूत्र- टा-ङसि-ङसामिनात्स्याः ।

अकारान्त अङ्ग से पर में टा- इन, ङसि- आत्, ङस्- स्य आदेश होते हैं ।

उदाहरण- राम + टा - राम + इन- रामेन (गुण) - रामेण (णत्व) ।

राम + ङसि- राम + आत् - रामात् (दीर्घ)

राम + ङस्- राम + स्य - रामस्य

सूत्र- अतो भिस ऐस् ।

अकारान्त अङ्ग से पर में भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश होता है ।

उदाहरण- राम + भिस् - राम + ऐस्- रामैस् (वृद्धि)- रामैः (रुत्व-विसर्ग)

सूत्र- ङेर्यः ।

अकारान्त अङ्ग से पर में ङे प्रत्यय के स्थान पर य आदेश होता है ।

उदाहरण- राम + ङे - राम + य

- **दीर्घ विधि-**

सूत्र- सुपि च ।

अकारान्त अङ्ग को दीर्घ होता है, यदि सुप् प्रत्याहार का कोई प्रत्यय हो, तथा उसके आदि में यञ् वर्ण हो ।

राम + य- राम (अकारान्त अङ्ग) + य (यञादि सुप्)- रामाय

उसी प्रकार राम + भ्याम् - रामाभ्याम् ।

- **एत्व विधि-**

सूत्र- बहुवचने झल्येत् ।

अकारान्त अङ्ग को एत्व होता है, यदि बहुवचन में झलादि प्रत्यय पर में हो ।

राम + भ्यस्- राम (अकारान्त अङ्ग) + भ्यस् (झलादि प्रत्यय) - रामेभ्यः ।

सूत्र- ओसि च ।

अकारान्त अङ्ग को एत्व होता है, यदि ओस् प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- राम + ओस् - रामे + ओस् - राम् अय् + ओस् (अयादि सन्धि)- रामयोः (रुत्व-विसर्ग)

- **आगम विधि-**

सूत्र- ह्रस्वनद्यापो नुट् ।

ह्रस्वान्त, नदी सञ्ज्ञक तथा आबन्त अङ्ग से पर में आम् प्रत्यय को नुट् आगम होता है ।

उदाहरण- राम + आम्- राम + नुट् + आम् - राम + न् + आम्- राम + नाम्

- **दीर्घ विधि-**

सूत्र- नामि ।

अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है, यदि नाम् पर में हो ।

राम + नाम् - रामा + नाम् - रामाणाम् (णत्व) ।

- **षत्व विधि-**

सूत्र- आदेशप्रत्यययोः ।

इण् एवं कवर्ग से पर में आदेश या प्रत्यय के अवयव सकार के स्थान पर मूर्धन्य आदेश होता है ।

उदाहरण- राम + सुप् - राम + सु- रामे + सु (एत्व) - (इण्)ए + सु - रामेषु

- **रूपसिद्धि- रामः**

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	राम
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	राम + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	राम + स्
ससजुषो रुः	सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	राम + रु
तस्य लोपः	अनुबन्ध उकार का लोप हुआ	राम + र्

विरामोऽवसानम्	अवसान सञ्ज्ञा हुई	
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ के स्थान पर विसर्ग हुआ	**रामः**

हे राम-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	राम
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सम्बोधन में सु प्रत्यय का विधान हुआ	राम + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	राम + स्
एकवचनं सम्बुद्धिः	सम्बोधन में सु प्रत्यय की सम्बुद्धि सञ्ज्ञा हुई	
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सम्बुद्धि के हल् वर्ण सकार का लोप हुआ	**हे राम**

रामाः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु राम शब्दों की प्राप्ति	राम राम राम
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ	एक राम शब्द का शेष हुआ	राम
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	जस् प्रत्यय का विधान हुआ	राम + जस्
हलन्त्यम्	सकार की इत् सञ्ज्ञा प्राप्त	
न विभक्तौ तुस्माः	सकार की इत्सञ्ज्ञा का निषेध	
चुटू	जकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	जकार का लोप हुआ	राम + अस्

प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ हुआ	रामास्
ससजुषो रुः	सकार के स्थान पर रु आदेश हुआ	रामा रु
तस्य लोपः	अनुबन्ध उकार का लोप हुआ	रामा र्
विरामोऽवसानम्	अवसान सञ्ज्ञा हुई	
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ के स्थान पर विसर्ग हुआ	**रामाः**

रामान्

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु राम शब्दों की प्राप्ति	राम राम राम
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ	एक राम शब्द का शेष हुआ	राम
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	राम + शस्
हलन्त्यम्	सकार की इत् सञ्ज्ञा प्राप्त	
न विभक्तौ तुस्माः	सकार की इत्सञ्ज्ञा का निषेध	
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	शकार का लोप हुआ	राम + अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ हुआ	रामास्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार के स्थान पर नकार आदेश हुआ	रामा न्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार के स्थान पर णकार आदेश प्राप्त हुआ	रामा न्
पदान्तस्य	नकार के स्थान पर णकार आदेश का निषेध हुआ	**रामान्**

रामेण-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	

सुपः	इस सूत्र से टा प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	टा प्रत्यय का विधान हुआ	राम + टा
टाङसिङसामिनात्स्याः	टा के स्थान पर इन आदेश हुआ	राम + इन
आद् गुणः	अकार तथा इकार के स्थान पर गुण आदेश हुआ	रामेन
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार के स्थान पर णकार आदेश हुआ	**रामेण**

रामाय-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङे प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	ङे प्रत्यय का विधान हुआ	राम + ङे
ङेर्यः	ङे के स्थान पर य आदेश हुआ	राम + य
सुपि च	अकार के स्थान पर दीर्घ आदेश हुआ	**रामाय**

रामाणाम्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु राम शब्दों की प्राप्ति	राम राम राम
	एक राम शब्द का शेष हुआ	राम
सुपः	इस सूत्र से आम् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	आम् प्रत्यय का विधान हुआ	राम + आम्
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् प्रत्यय के आदि में नुट् आगम हुआ	राम + नुट्
तस्य लोपः	टकार तथा उकार के स्थान पर लोप आदेश	राम + न् +

	हुआ	आम् राम + नाम्
नामि	अकार के स्थान पर दीर्घ आदेश हुआ	रामा + नाम्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार के स्थान पर णकार आदेश हुआ	**रामाणाम्**

रामेषु-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से राम शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु राम शब्दों की प्राप्ति	राम राम राम
	एक राम शब्द का शेष हुआ	राम
सुपः	इस सूत्र से सुप् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सुप् प्रत्यय का विधान हुआ	राम + सुप्
तस्य लोपः	पकार के स्थान पर लोप आदेश हुआ	राम + सु
बहुवचने झल्येत्	अकार के स्थान पर एकार आदेश हुआ	रामे + सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार के स्थान पर षकार आदेश हुआ	**रामेषु**

5.3.2. निर्जर शब्द

निर्जर ह्रस्व अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द है। अतः इसके रूप राम की तरह होंगे। पर कुछ स्थानों पर विशेष प्रक्रिया होती है।

सूत्र- जरायाः जरसन्यतरस्याम्।

जरा शब्द के स्थान पर विकल्प से जरस् आदेश होता है यदि अजादि विभक्ति पर में हो।

उदाहरण- निर्जर + औ- निर्जरस् + औ- निर्जरसौ, अजादि विभक्ति होने पर जर (जरा) के स्थान पर जरस् आदेश हुआ।

प्रश्न- सूत्र में जरा शब्द के स्थान पर जरस् आदेश बताया गया है तब प्रयोग में निर्जर के स्थान पर जरस् कैसे होगा।

समाधान- पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदन्तस्य च।

पदस्य तथा अङ्गस्य सूत्रों के अधिकार में होने वाले कार्य सूत्र द्वारा निर्दिष्ट तथा तदन्त दोनों के स्थान पर होते हैं। यहाँ पर जरस् कार्य अङ्गस्य के अधिकार में आता है। अतः जहाँ पर केवल जरा शब्द हो, वहाँ भी जरस् होगा, तथा जहाँ पर जरान्त निर्जर हो, वहाँ भी।

प्रश्न- उक्त परिभाषा से जराशब्दान्त सम्पूर्ण निर्जर के स्थान पर जरस् प्राप्त होता है।
समाधान- निर्दिश्यमानस्य आदेशा भवन्ति।

सूत्र द्वारा निर्दिष्ट स्थानी के स्थान पर आदेश होता है। सूत्र मे जरायाः यह स्थानी बताया गया है, अतः निर्जर के स्थान पर जरस् आदेश नहीं होगा।

प्रश्न- उक्त परिभाषा से सूत्र द्वारा निर्दिष्ट के स्थान पर कार्य होगा। सूत्र द्वारा निर्दिष्ट स्थानी जरा है, जबकि प्रयोग में जर शब्द है।
समाधान- एकदेशविकृतम् अनन्यवत्।
किसी समुदाय के एक भाग में विकार होने पर भी समुदाय वही रहता है, उसमें अन्य का व्यवहार नहीं होता है। यहाँ पर जरा शब्द के भाग आकार में विकार ह्रस्व होता है, तथापि उसमें जरा शब्द का ही व्यवहार होगा। अतः जर शब्द में जरा का व्यवहार मान कर यहाँ पर जरस् आदेश होता है।
इस प्रकार अजादि प्रत्यय पर में होने पर वैकल्पिक जरस् आदेश के कारण दो- दो रूप होते हैं –

निर्जसः	निर्जरसौ-निर्जरौ	निर्जरसः-निर्जराः
निर्जरसम्- निर्जरम्	निर्जरसौ-निर्जरौ	निर्जरसः-निर्जरान्
निर्जरसा-निर्जरेण	निर्जराभ्याम्	निर्जरसैः-निर्जरैः
निर्जरसे-निर्जराय	निर्जराभ्याम्	निर्जरेभ्यः
निर्जरसः-निर्जरात्	निर्जराभ्याम्	निर्जरेभ्यः
निर्जरसः-निर्जरस्य	निर्जरसोः-निर्जरयोः	निर्जरसाम्-निर्जराणाम्
निर्जरसि-निर्जरे	निर्जरसोः-निर्जरयोः	निर्जरेषु
हे निर्जर	हे निर्जरसौ- निर्जरौ	हे निर्जरसः- निर्जराः

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से किस की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा होती है ?

ख. अङ्ग सञ्ज्ञा सूत्र लिखो।

ग. एकशेष विधान किस सूत्र से होता है?

घ. विभक्ति संज्ञा किस की होती है?

ङ. शस् प्रत्यय के शकार का इत् सञ्ज्ञासूत्र लिखो ।

च. रामेण इस प्रयोग में नकार के स्थान पर णकार किस सूत्र से होता है ?

छ. आदेशप्रत्यययोः सूत्र से किस कार्य का विधान होता है ?

ज. निर्जर शब्द के प्रथमा विभक्ति के रूप लिखो ।

5.4. अकारान्त पुंल्लिङ्ग सर्वनाम शब्द-

इस भाग में हम ह्रस्व अकारान्त शब्दों के अन्तर्गत सर्वनाम शब्दों को जानेंगे । हिन्दी भाषा में हम पढते ही हैं कि सञ्ज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को हम सर्वनाम कहते हैं । तथापि संस्कृत व्याकरण में सर्वनाम एक सञ्ज्ञा है । कुछ गिने-चुने (35) शब्दों की सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है । शब्दों सर्वनाम शब्दों में कुछ प्रक्रियाएं ह्रस्व अकारान्त शब्द राम के समान होती हैं । तथापि बहुत से कार्य सर्वनाम होने के कारण भिन्न होते हैं । यही इस बिन्दु का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है ।

5.4.1. सर्व शब्द

➢ **सर्वनाम सञ्ज्ञा- सूत्र-** सर्वादीनि सर्वनामानि ।

सर्व आदि शब्दों की सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है । सर्व आदि का अर्थ सर्वादि गण है, जिसमें 35 शब्द पढे गए हैं । अतः 35 सर्व आदि शब्दों की सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है ।

सर्व आदि शब्द- सर्व, विश्व, उभय, उभय, डतर (डतरच्-प्रत्ययान्त), डतम(डतमच्-प्रत्ययान्त), अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम, पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम् ।

इन सभी सर्वनाम शब्दों में उभ शब्द नित्य द्विवचन में प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ होता है- दोनो । डतरच् तथा डतमच् दो प्रत्यय हैं जिनमें हमें डतरच्-प्रत्ययान्त तथा डतमच्- प्रत्ययान्त का ग्रहण करना है । जैसे डतरच्-प्रत्ययान्त कतर, तथा डतमच्प्रत्ययान्त कतम शब्द की सर्वनाम सञ्ज्ञा होगी ।

➢ **सर्वनाम कार्य-**

सूत्र- जसः शी ।

ह्रस्व अकारान्त सर्वनाम सञ्ज्ञक शब्द से पर में जस् प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश होता है ।

उदाहरण- सर्व + जस् - सर्व + शी- सर्व + ई (अनुबन्ध लोप)- सर्वे (गुण)

सूत्र- सर्वनाम्नः स्मै ।

ह्रस्व अकारान्त सर्वनाम सञ्ज्ञक शब्द से पर में ङे प्रत्यय के स्थान पर स्मै आदेश होता है ।

उदाहरण- सर्व + ङे- सर्व + स्मै- सर्वस्मै ।

सूत्र- ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ।

ह्रस्व अकारान्त सर्वनाम सञ्ज्ञक शब्द से पर में ङसि प्रत्यय के स्थान पर स्मै तथा ङि के स्थान पर स्मिन् आदेश होता है ।

उदाहरण- सर्व + ङसि- सर्व + स्मात् - सर्वस्मात्

सर्व + ङि - सर्व + स्मिन्- सर्वस्मिन्

सूत्र- आमि सर्वनाम्नः सुट् ।

ह्रस्व अकारान्त सर्वनाम सञ्ज्ञक शब्द से विहित आम् प्रत्यय को सुट् आगम होता है ।

उदाहरण- सर्व + आम् - सर्व + सुट् + आम् – सर्व + स् + आम् (अनुबन्ध लोप)

सर्वे + स् + आम्(बहुवचन में एत्व)- सर्वे + ष् + आम् (षत्व)

सर्वेषाम् ।

- **रूप सिद्धि-**

सर्वे-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से सर्व शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सर्वादीनि सर्वनामानि	इस सूत्र से सर्व शब्द की सर्वनाम सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु सर्व शब्दों का प्रयोग	सर्व सर्व सर्व
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ	एक सर्व शब्द का शेष	सर्व
सुपः	इस सूत्र से बहुत्व सङ्ख्या में जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	जस् प्रत्यय का विधान हुआ	सर्व + जस्
जसः शी	जस् के स्थान पर शी आदेश हुआ	सर्व + शी
लशक्वतद्धिते	प्रत्यय के आदि शकार की इत्सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	शकार का लोप हुआ	सर्व + ई
आद् गुणः	अकार तथा ईकार के स्थान पर गुण एकादेश हुआ	**सर्वे**

सर्वेषाम्-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से सर्व शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सर्वादीनि सर्वनामानि	इस सूत्र से सर्व शब्द की सर्वनाम सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु सर्व शब्दों का प्रयोग	सर्व सर्व सर्व
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ	एक सर्व शब्द का शेष	सर्व
सुपः	इस सूत्र से बहुत्व सङ्ख्या में आम् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	आम् प्रत्यय का विधान हुआ	सर्व + आम्
आमि सर्वनाम्नः सुट्	आम् प्रत्यय के आदि में सुट् आगम हुआ	सर्व + सुट् + आम्
हलन्त्यम्	प्रत्यय के अन्त में टकार की इत्सञ्ज्ञा हुई	
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	टकार तथा उकार का लोप हुआ	सर्व + स् + आम्
बहुवचने झल्येत्	अकार के स्थान पर एकार आदेश हुआ	सर्वे + स् + आम्
आदेशप्रत्यययोः	सकार के स्थान पर षकार आदेश हुआ	सर्वे + ष् + आम् **सर्वेषाम्**

5.4.2. पूर्वादि शब्द

- **वैकल्पिक सर्वनाम सञ्ज्ञा-**

सूत्र- पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसञ्ज्ञायाम्।

पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर- इन शब्दों की जस् प्रत्यय होने पर विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है, यदि व्यवस्था अर्थ हो तथा सञ्ज्ञा अर्थ न हो।

व्यवस्था- पूर्वादि शब्दों के उच्चारण से जो अवधि भाव ज्ञात होता है, उसे व्यवस्था कहते हैं। जैसे- यण् सन्धि में इक् वर्ण पूर्व में हो तब यण् आदेश होता है। यहाँ पर पूर्व कहने से किस से पूर्व, इस प्रकार पर(अवधि) के विषय में आकाङ्क्षा होती है। इसी अवधिभाव को व्यवस्था कहते हैं।

उदाहरण- पूर्व + जस् – विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा- पूर्व + शी- पूर्व + ई- पूर्वे

पूर्व + जस् – सर्वनाम सञ्ज्ञा न होने पर – पूर्व + अस्- पूर्वास् - पूर्वाः

सूत्र- स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ।

स्व शब्द की जस् प्रत्यय होने पर विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है, यदि ज्ञाति(जाति) तथा धन अर्थ न हो ।

उदाहरण- स्व + जस् – विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा- स्व + शी- स्व + ई- स्वे

स्व + जस् – सर्वनाम सञ्ज्ञा न होने पर – स्व + अस्- स्वास् - स्वाः

यहाँ पर स्व शब्द का आत्मीय अर्थ है । अतः विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा हुई ।

सूत्र- अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ।

अन्तर शब्द की जस् प्रत्यय होने पर विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है, यदि बाह्य तथा उपसंव्यान- परिधान अर्थ हो ।

उदाहरण-

अन्तर + जस् – विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा- अन्तर + शी- अन्तर + ई- अन्तरे गृहाः

अन्तर + जस् – सर्वनाम सञ्ज्ञा न होने पर – अन्तर + अस्- अन्तरास् - अन्तराः गृहाः

बहिर्योग अर्थ- अन्तरे अन्तराः वा गृहाः । यहाँ पर बाह्य अर्थ है ।

उपसंव्यान अर्थ- अन्तरे अन्तराः वा शाटकाः । यहाँ पर परिधान अर्थ है ।

कुछ शब्द ऐसे हैं जो सर्वादि गण (35 शब्द) में नहीं आते हैं । तथापि उनकी सर्वनामसञ्ज्ञा होती है । जैसे निम्न सूत्र द्वारा बताए गये शब्द-

सूत्र- प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च ।

प्रथम, चरम, तयप्- तयप् प्रत्ययान्त, अल्प, अर्ध, कतिपय, नेम शब्दों की जस् प्रत्यय होने पर विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण-

प्रथम + जस् – प्रथमे प्रथमाः, तयप् प्रत्ययान्त- द्वितय + जस्- द्वितये द्वितयाः, अल्प+ जस् - अल्पे अल्पाः, अर्ध+ जस्- अर्धे अर्धाः, कतिपय+ जस् - कतिपये कतिपयाः, नेम+ जस्- नेमे- नेमाः ।

5.4.3. सर्वनाम सञ्ज्ञा निषेध-

सूत्र-1. न बहुव्रीहौ ।

बहुव्रीहि समास चिकीर्षित होने पर सर्वनाम सञ्ज्ञा नहीं होती है। चिकीर्षित होने का यह अर्थ है कि अलौकिक विग्रह वाक्य में ही यह निषेध होता है।

उदाहरण- त्वं पिता यस्य- लौकिक विग्रह

युष्मद् + सु पितृ + सु- अलौकिक विग्रह- युष्मद् शब्द की सर्वनाम सञ्ज्ञा का निषेध

त्वत्कपितृकः।

यहाँ पर सर्वनाम सञ्ज्ञा के निषेध का प्रयोजन है- युष्मद् शब्द से अकच् प्रत्यय न होना। अतः उक्त स्थान पर क- प्रत्यय हुआ है।

सूत्र-2. तृतीयासमासे।

तृतीया तत्पुरुष समास में सर्वनाम सञ्ज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण- मासेन पूर्वः, मासपूर्वः, तस्मै मासपूर्वाय।

यहाँ पर मासपूर्व पद में तृतीयातत्पुरुष समास होने से सर्वनाम सञ्ज्ञा का निषेध हुआ। अतः चतुर्थी विभक्ति में ङे प्रत्यय के स्थान पर स्मै आदेश नहीं हुआ।

सूत्र-3. द्वन्द्वे च।

द्वन्द्व समास में सर्वनाम सञ्ज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण- वर्णाश्रमेतराणाम्। वर्णाश्च आश्रमाश्च इतरे च, वर्णाश्रमेतराणि, तेषाम्।

यहाँ पर षष्ठी बहुवचन में आम् प्रत्यय पर में होने पर (आमि सर्वनाम्नः सुट्) सुट् आगम प्राप्त होता है। द्वन्द्व समास में सर्वनाम सञ्ज्ञा का निषेध होने से सुट् आगम नहीं हुआ। अतः रामाणाम् के समान नुट् आगम होकर वर्णाश्रमेतराणाम् प्रयोग बना।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. सर्वादिगण में कितने शब्दों का अन्तर्भाव होता है?

ख. सर्वेषाम् इस प्रयोग में सुट् आगम किस सूत्र से होता है?

ग. कौन सा सर्वनाम नित्य द्विवचन में प्रयुक्त होता है?

घ. स्व शब्द की किस अर्थ में विकल्प से सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है?

ङ. द्वन्द्वे च इस सूत्र का कार्य लिखो।

5.5. आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द

इस बिन्दु के अन्तर्गत हम दीर्घ आकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे। दीर्घ आकारान्त शब्दों में हम विश्वपा शब्द प्रतिनिधि के रूप में पढेंगे।

5.5.1. विश्वपा शब्द

विश्वपा शब्द में हम उन्ही स्थानों का स्पर्श करेंगे, जहाँ पर कोई विशेष कार्य होता है । जैसे प्रथमैकवचन में सु प्रत्यय पर में होने पर रुत्व-विसर्ग होकर विश्वपाः होता है । इस प्रकार के कार्य स्वयं समझने योग्य हैं ।

विश्वपा + औ- वृद्धि सन्धि प्राप्त- वृद्धि को बाधकर पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त (प्रथमयोः पूर्वसवर्णः)

सूत्र- दीर्घाज्जसि च ।

पदच्छेद- दीर्घात् जसि च

सूत्रार्थ- दीर्घ वर्ण से पर में जस् तथा इच् वर्ण हो, तब पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है ।

उदाहरण- विश्वपा + औ- दीर्घ आ + औ (इच्)- पूर्वसवर्ण दीर्घ का निषेध

विश्वपौ- वृद्धि सन्धि

विश्वपा + शस् इस अवस्था में-

सूत्र- सुडनपुंसकस्य ।

पदच्छेद- सुट् अनपुंसकस्य ।

सूत्रार्थ- सुट् की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है । सुट् प्रत्याहार- सु औ जस् अम् औट् । अतः इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनाम सञ्ज्ञा होती है । अनपुंसकस्य कहने के कारण नपुंसक लिङ्ग में यह सञ्ज्ञा नहीं होती है । प्रस्तुत प्रसङ्ग में यह सञ्ज्ञा शस् प्रत्यय की नहीं होती है, क्योंकि शस् सुट् प्रत्याहार में नहीं आता है। अतः शस् असर्वनामस्थान कहा जाएगा ।

सूत्र- स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ।

पदच्छेद- स्वादिषु असर्वनामस्थाने ।

सूत्रार्थ- असर्वनामस्थान स्वादि प्रत्यय या कप् (तद्धित)प्रत्यय तक कोई भी पर में हो, तब पूर्व भाग (प्रकृति) की पद सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- विश्वपा + शस् – शस् असर्वनामस्थान प्रत्यय पर में होने से- पूर्व भाग विश्वपा की पद सञ्ज्ञा प्राप्त होती है ।

सूत्र- यचि भम् ।

सूत्रार्थ- यकारादि अजादि असर्वनामस्थान स्वादि प्रत्यय या कप् (तद्धित)प्रत्यय तक कोई भी पर में हो, तब पूर्व भाग (प्रकृति) की भ सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- विश्वपा + शस्- विश्वपा + अस्- अस् अजादि असर्वनामस्थान प्रत्यय पर में होने से- पूर्व भाग की भ सञ्ज्ञा प्राप्त होती है ।

सूत्र- आकडारादेका सञ्ज्ञा ।

पदच्छेद- आकडारात् एका सञ्ज्ञा ।

सूत्रार्थ- कडाराः कर्मधारये इस सूत्र तक एक की एक ही सञ्ज्ञा होती है । इस नियम से प्रस्तुत स्थल में विश्वपा शब्द की पद तथा भ दो सञ्ज्ञाओं में एक सञ्ज्ञा होगी । जब एक स्थान पर दो कार्य प्राप्त हों, तब (विप्रतिषेधे परं कार्यम्) पर कार्य होता है । यहाँ पर पद तथा भ में भ सञ्ज्ञा पर है । अतः-

विश्वपा + अस् – भ सञ्ज्ञा

भ स़ञ्ज्ञा करने का प्रयोजन-

सूत्र- आतो धातोः ।

सूत्रार्थ- जो धातु आकारान्त हो, तदन्त जो भसञ्ज्ञक अङ्ग, उसके आकार का लोप होता है ।

विश्वपा + अस् -

यहाँ आकारान्त धातु पा है, वह विश्वपा के अन्त में है, अतः तदन्त अङ्ग हुआ विश्वपा, जिसकी भ सञ्ज्ञा होती है । अतः- विश्वप् + अस् - आलोप

विश्वपस्- (रुत्व-विसर्ग) ।

विश्वपः

इसी प्रकार सर्वत्र भसञ्ज्ञा होने पर आलोप होता है ।

जैसे- विश्वपा + टा- विश्वप् + आ- विश्वपा

विश्वपा + ङे- विश्वप् + ए- विश्वपे

विश्वपा + ङसि- विश्वप् +अस्- विश्वपः

विश्वपा + ङस्- विश्वप् + अस्- विश्वपः

विश्वपा + ओस्- विश्वप् + ओस्- विश्वपोः

विश्वपा + आम् - विश्वप् + आम्- विश्वपाम्

विश्वपा + ङि- विश्वप् + इ- विश्वपि

विशेष- पद तथा भ सञ्ज्ञा महत्त्वपूर्ण विषय है क्योंकि तद्धित प्रत्ययों तक इनकी प्रवृत्ति होती है, जिससे अनेक प्रयोजन सिद्ध होते हैं । अतः यहाँ पर इनमें भेद जान लेना बहुत आवश्यक है । दोनों सञ्ज्ञाएं असर्वनाम स्थान स्वादि तथा कप् आदि प्रत्ययों के परे होने पर पूर्व भाग की होती

है । तथापि जहाँ प्रत्यय के आदि में अच् या यकार हो वहाँ भ सञ्ज्ञा एवं अन्यत्र यकार से भिन्न हल् वर्ण प्रत्यय के आदि में हो, तब पद सञ्ज्ञा होती है । जैसे यदि हम स्वादि प्रत्ययों के विषय में देखें, तो स्पष्ट रूप से जान सकते हैं-

अजादि असर्वनामस्थान प्रत्यय- शस्, टा, ङे, ङसि, ङस्, ओस्, आम्, ङि, ओस् परे होने पर- भ सञ्ज्ञा

हलादि असर्वनामस्थान प्रत्यय- भ्याम्, भिस्, भ्यस्, सुप् परे होने पर - पद सञ्ज्ञा

- **रूपसिद्धि-**

विश्वपः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु विश्वपा शब्दों की प्राप्ति	विश्वपा विश्वपा विश्वपा
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ	एक विश्वपा शब्द का शेष हुआ	विश्वपा
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	विश्वपा + शस्
हलन्त्यम्	सकार की इत् सञ्ज्ञा प्राप्त	
न विभक्तौ तुस्माः	सकार की इत्सञ्ज्ञा का निषेध	
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	शकार का लोप हुआ	विश्वपा + अस्
स्वादिष्वसर्वनामस्थाने	विश्वपा की पद सञ्ज्ञा प्राप्त हुई	
यचि भम्	विश्वपा की भ सञ्ज्ञा प्राप्त हुई	
आकडारादेका सञ्ज्ञा	इस नियम से विश्वपा की दो में एक सञ्ज्ञा प्राप्त हुई	
विप्रतिषेधे परं कार्यम्	विश्वपा की पर भ सञ्ज्ञा हुई	
आतो धातोः	आकार का लोप हुआ	विश्वप् + अस् विश्वपस् **विश्वपः** (रुत्व-विसर्ग)

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-3**

क. भ- संज्ञासूत्र लिखो ।

ख. सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा किन प्रत्ययों की होती है ?

ग. विश्वपः यहाँ आकार का लोप किस सूत्र से होता है ?

5.6. सारांश

इस पाठ में हमने अजन्त शब्दों के साधुत्व की प्रक्रिया का परिचय प्राप्त किया । प्रथमतया अजन्त पुंल्लिङ्ग उपशीर्षक के अन्तर्गत ह्रस्व अकारान्त शब्द राम, सर्व, निर्जर आदि की प्रक्रिया देखते हैं । ह्रस्व अकारान्त होने पर भी सर्वनाम शब्दों सर्व, पूर्व आदि की प्रक्रिया में कुछ भेद को होता है । साथ ही इन पदों की प्रक्रिया में उपयोगी प्रातिपदिक, अङ्ग, सम्बुद्धि, सर्वनाम आदि सञ्ज्ञाएं विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं । दीर्घ आकारान्त शब्द विश्वपा की प्रक्रिया के लिए सर्वनामस्थान, पद तथा भ सञ्ज्ञाओं की भूमिका स्पष्ट होती है

5.7. कठिन शब्दावली

प्रकृति- प्रकृति किसी भी पद का मूल शब्द होता है । सुबन्त शब्दों के प्रसङ्ग में प्रकृति को प्रातिपदिक कहा जाता है । जैसे- रामः में राम ।

सम्बुद्धि- सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति के एकवचन में सु प्रत्यय सम्बुद्धि होता है ।

सर्वनामस्थान- पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग शब्दों से परे सु, औ, जस्, अम्, औट् पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है । प्रायः सर्वनामस्थान को सर्वनाम सञ्ज्ञा से जोड कर भ्रम होता है।

5.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं-आकलन प्रश्न-1

क. कृत्प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास

ख. यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्

ग. सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ

घ. सुप् तथा तिङ् ।

ङ. लशक्वतद्धिते

च. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेपि ।

छ. सकार के स्थान पर षकार ।

ज. निर्जरः निर्जरौ/ निर्जरसौ निर्जराः/निर्जरसः

स्वयं-आकलन प्रश्न-2

क. 35

ख. आमि सर्वनाम्नः सुट् ।

ग. उभ

घ. ज्ञाति तथा धन से भिन्न अर्थ में (आत्मीय अर्थ में)

ङ. द्वन्द्व समास में सर्वनाम सञ्ज्ञा का निषेध

स्वयं-आकलन प्रश्न-3

क. यचि भम्

ख. सु औ जस् अम् औट्

ग. आतो धातोः

5.9. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी,मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

5.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

क. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्- इस सूत्र की व्याख्या करो ।

ख. रामान्, विश्वपः, सर्वे – इन रूपों की सिद्धि करो ।

ग. अवसान, विभक्ति, सम्बुद्धि इन के सञ्ज्ञी लिखो ।

घ. सुप्, सुट् इन प्रत्याहारों के प्रत्यय लिखो ।

इकाई-6
ह्रस्व इकारान्त शब्द
(अजन्त पुंल्लिंग प्रकरण)

संरचना

6.1. पाठ का परिचय

6.2. पाठ का उद्देश्य

6.3. हरि, पति

6.3.1. गुण कार्य

6.3.2. घि सञ्ज्ञा

6.3.3. घि सञ्ज्ञा का प्रयोजन

6.3.4. पति शब्द की घि सञ्ज्ञा

- स्वयं आकलन प्रश्न-1

6.4. सखि

6.4.1. अनङ् आदि कार्य

6.4.2. उपधा तथा अपृक्त कार्य

6.4.3. वृद्धि कार्य

6.4.4. पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्ति

- स्वयं आकलन प्रश्न-2

6.5. कति, द्वि, त्रि

6.5.1. त्यदादि शब्दों का कार्य

6.5.2. त्रय आदेश

6.5.3. संख्या तथा षट् सञ्ज्ञा

6.5.4. लुक् कार्य

- स्वयं आकलन प्रश्न-3

6.6. सारांश

6.7. कठिन शब्दावली

6.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

6.9. सहायक-ग्रन्थ

6.10. अभ्यासात्मक-प्रश्न

6.1. पाठ का परिचय

इस पाठ में हम उन अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के विषय में जानेंगे जिनके अन्त में ह्रस्व इकार होता है । ह्रस्व इकारान्त जैसे- हरि, पति, सखि, द्वि, त्रि, कति आदि । इन सभी शब्दों की सामान्य प्रक्रिया वही होगी जो हमने पिछले पाठ में राम शब्द को पढते समय समझी है । इसके अतिरिक्त विशेष कार्य ही इस पाठ में हम जानेंगे ।

6.2. पाठ का उद्देश्य

- ह्रस्व इकारान्त शब्दों की सिद्धि-प्रक्रिया का ज्ञान
- ह्रस्व उकारान्त शब्दों की सिद्धि की प्रक्रिया का ज्ञान
- विभिन्न सञ्ज्ञाओं जैसे- घि, उपधा,अपृक्त, संख्या आदि का ज्ञान
- लुक् कार्य का ज्ञान

जिन शब्दों के अन्त में ह्रस्व इकार होता है, तथा जिनका पुंल्लिङ्ग में प्रयोग होता है उन शब्दों की सिद्धि-प्रक्रिया इस बिन्दु का प्रतिपाद्य विषय है । यहाँ सामान्य सूत्र राम शब्द की तरह ही प्रयुक्त होंगे । अतः हम केवल विशेष कार्य के विधायक सूत्र ही पढेंगे ।

6.3. हरि

ह्रस्व इकारान्त शब्दों में हरि, मुनि, रवि, कवि आदि शब्द आते हैं । इनमें हम हरि शब्द की प्रक्रिया को जानेंगे । यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि हरि शब्द की प्रक्रिया ह्रस्व उकारान्त शब्दों जैसे भानु, विष्णु आदि में भी प्रयुक्त होती है ।

हरिः- हरि + स् (सु)- रुत्व,विसर्ग- हरी- हरि + औ- पूर्वसवर्ण दीर्घ

6.3.1. गुण कार्य

हरयः- हरि + जस्- अनुबन्धलोप- हरि + अस्

हरयः शब्द को ध्यानपूर्वक देखने के ज्ञात होता है, कि इसके अन्त में विसर्ग तथा उससे पहले अकार हमें अस् से प्राप्त होते है । अतः रेफोत्तरवर्ती अय् नवीन वर्ण हैं, दो अयादि सन्धि में एकार के से स्थान पर होते हैं । इसलिए अब हम एत्व के लिए गुण विधि पढेंगे ।

सूत्र- जसि च ।

सूत्रार्थ- जस् प्रत्यय परे होने पर ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है ।

उदाहरण- हरि + जस्- ह्रस्वान्त अङ्ग हरि के इकार को गुण- हरे + जस्-

हरे + अस् (अनुबन्ध लोप)

हर् अय् + अस्- अयादिसन्धिः - हरयस्

हरयः (रुत्व-विसर्ग)।

उसी प्रकार कवि- कवयः, मुनि-मुनयः, पति- पतयः इत्यादि।

यही गुण उकारान्त शब्दों में भी होगा।

जैसे- भानु + जस् भानु + अस् भानो + अस् भानव् + अस्

भानवस्- **भानवः**

तथैव- गुरु- गुरवः, विष्णु- विष्णवः इत्यादि।

सम्बोधन में- हे हरे- हरि + स् (सु)- सु की सम्बुद्धि सञ्ज्ञा

यहाँ पर भी हमें एकार दिखाई देता है। अतः पुनः गुण विधि-

सूत्र- ह्रस्वस्य गुणः।

सूत्रार्थ- ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है, यदि सम्बुद्धि पर में हो।

उदाहरण- हरि + स् (सम्बुद्धि) -

ह्रस्वान्त अङ्ग हरि के इकार को गुण- हरे + स्-

हे हरे- सम्बुद्धि स् का लोप - एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः।

उसी प्रकार हे कवे. हे मुने, हे पते इत्यादि।

ह्रस्व उकारान्तों में भी गुण होने से हे भानो, हे विष्णो आदि रूप होंगे।

6.3.2. घि सञ्ज्ञा

ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त शब्दों की प्रक्रिया समान रूप से होती है। उसका कारण इन शब्दों की एक विशिष्ट सञ्ज्ञा है। आइए समझते हैं-

सूत्र- शेषो घ्यसखि।

पदच्छेद- शेषो घि असखि।

सूत्रार्थ- यहाँ पर घि सञ्ज्ञा तथा शेष सञ्ज्ञी है। शेष की घि सञ्ज्ञा होती है। शेष का अर्थ होता है- बचा हुआ। वस्तुतः इस सूत्र में **यू स्त्र्याख्यौ नदी** सूत्र से यू की अनुवृत्ति होती है। नदी सूत्र मे यू (ई + ऊ)का अर्थ दीर्घ ईकारान्त तथा दीर्घ ऊकारान्त शब्द है। इस सूत्र में उससे शेष यू (इ + उ) ह्रस्व इकारान्त एवं ह्रस्व उकारान्त शब्द हुए। अतः ह्रस्व इकारान्त एवं ह्रस्व उकारान्त शब्दों की घि सञ्ज्ञा होती है। असखि कहने से सखि की घि सञ्ज्ञा नहीं होती।

ह्रस्व इकारान्त जैसे हरि, मुनि, कवि आदि।

ह्रस्व उकारान्त जैसे भानु,साधु, विष्णु आदि।

6.3.3. घि सञ्ज्ञा के प्रयोजन-

सूत्र- आङो नास्त्रियाम् ।

पदच्छेद- आङः ना अस्त्रियाम्

सूत्रार्थ- घि सञ्ज्ञक शब्द के बाद में टा प्रत्यय के स्थान पर ना आदेश होता है । अस्त्रियाम् कहने से स्त्रीलिङ्ग में यह नहीं होता है ।

उदाहरण- तृतीयैकवचन में हरि + टा- घि सञ्ज्ञक हरि के बाद टा को ना आदेश- हरि + ना

हरि + णा- नकार को णकार- **हरिणा** ।

उसी प्रकार ह्रस्व उकारान्त भानु की भी घि सञ्ज्ञा होने से यह ना आदेश होगा- भानुना ।

सूत्र- घेर्ङिति ।

सूत्रार्थ- घि सञ्ज्ञक को गुण होता है, यदि ङित् प्रत्यय पर में हो । ङ् इत् यस्य- जिसमें ङकार की इत् सञ्ज्ञ हो वह ङित् है । स्वादि प्रत्यय में चार ङित् प्रत्यय हैं- ङे, ङसि, ङस्, ङि । अतः इन चार स्थानों पर गुण सम्भव होता है ।

उदाहरण- चतुर्थी के एकवचन में

हरि + ए (ङे)- घि सञ्ज्ञक हरि के बाद ङित् प्रत्यय ङे-

हरे + ए- इकार के स्थान पर गुण एकार- हर् अय् + ए- अयादि सन्धि- **हरये** ।

उसी प्रकार पञ्चमी के एकवचन में-

हरि + ङसि- हरि (घि) + अस्(ङित्)- हरे + अस् - गुण

सूत्र- ङसिङसोश्च ।

सूत्रार्थ- घि सञ्ज्ञक के बाद ङसि तथा ङस् प्रत्यय पर में होने पर पूर्वरूप एकादेश होता है।

जैसे – हरे + अस् (ङसि)- एकार एवं अकार के स्थान में पूर्वरूप एकार - हरेस्

हरेः – रुत्व-विसर्ग ।

उसी प्रकार षष्ठी एकवचन ङस् में भी समान प्रक्रिया होने से- हरेः ।

सप्तमी एकवचन में हरि + ङि- ङित् प्रत्यय होने से गुण प्राप्त

सूत्र- अच्च घेः ।

पदच्छेद- अत् च घेः ।

सूत्रार्थ- घि सञ्ज्ञक शब्द के अन्त में ह्रस्व अकार तथा ङि के स्थान पर औकार आदेश होता है ।

उदाहरण- हरि + ङि-   हर + औ-   **हरौ** (वृद्धि) ।

उसी प्रकार मुनौ, कवौ, रवौ आदि ।

उपर्युक्त गुण, पूर्वरूप तथा औकार आदेश भानु शब्द में भी होंगे । अतः पञ्चमी-षष्ठी ए.व. में भानोः तथा सप्तमी-ए.व. में भानौ ये रूप बनते हैं ।

6.3.4. पति शब्द की घि सञ्ज्ञा

ह्रस्व इकारान्त शब्दों में सखि को छोड कर सभी शब्दों के रूप हरि के समान हैं । तथापि पति शब्द में कहीं पर हरि के समान तथा कहीं पर सखि के समान रूप होते हैं । अतः पति शब्द की प्रक्रिया का ज्ञान आवश्यक है ।

सूत्र- पतिः समास एव ।

सूत्रार्थ- यहाँ शेषो घ्यसखि इस सूत्र से घि की अनुवृत्ति होती है । पति शब्द की घि सञ्ज्ञा होती है । इकारान्त होने से पति शब्द की घि सञ्ज्ञा यद्यपि पूर्व सूत्र से हो सकती है, तथापि पुनः इस सूत्र से घि सञ्ज्ञा का विधान करना नियम का बोध कराता है- पति शब्द की समास में ही घि सञ्ज्ञा होती है । यथा- भूपति, गणपति आदि ।

समास में घि सञ्ज्ञा होने से टा- ना, गुण आदि कार्य हरि के समान होते हैं – भूपतिना, भूपतये, भूपतेः, भूपतौ आदि ।

दूसरी तरफ जब पति शब्द का समास नहीं होता है, तब घि सञ्ज्ञा नहीं होती है । अतः हरि के समान रूप भी नहीं होते हैं – पत्या, पत्ये, पत्युः, पत्यौ आदि ।

रूपसिद्धि

हरयः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से हरि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
	बहुत्व सङ्ख्या होने से बहु हरि शब्दों की प्राप्ति	हरि हरि हरि
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ	एक हरि शब्द का शेष हुआ	हरि
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में जस् प्रत्यय का विधान हुआ	हरि + जस्
हलन्त्यम्	सकार की इत् सञ्ज्ञा प्राप्त	

न विभक्तौ तुस्माः	सकार की इत्सञ्ज्ञा का निषेध	
चुटू	जकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	जकार का लोप हुआ	हरि + अस्
जसि च	इकार के स्थान पर गुण आदेश हुआ	हरे+ अस्
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश हुआ	हर् अय् + अस् हरयस् **हरयः** (रुत्व-विसर्ग)

हरये-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से हरि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङे प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	चतुर्थी विभक्ति-ए.व. में ङे प्रत्यय का विधान हुआ	हरि + ङे
लशक्वतद्धिते	ङकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	ङकार का लोप हुआ	हरि + ए
शेषो घ्यसखि	हरि शब्द की घि सञ्ज्ञा हुई	
घेर्ङिति	इकार के स्थान पर गुण आदेश हुआ	हरे+ ए
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश हुआ	हर् अय् + ए **हरये**

हरौ-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से हरि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङि प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	

स्वौजसमौट्.....	सप्तमी विभक्ति-ए.व. में ङि प्रत्यय का विधान हुआ	हरि + ङि
शेषो घ्यसखि	हरि शब्द की घि सञ्ज्ञा हुई	
घेर्ङिति	इकार के स्थान पर गुण आदेश प्राप्त हुआ	
अच्च घेः	इकार को अकार तथा ङि को अकार आदेश हुआ	हर + औ
वृद्धिरेचि	अकार तथा औकार के स्थान पर वृद्धि औकार आदेश हुआ	**हरौ**

इसी प्रकार अन्य ह्रस्व इकारान्त शब्दों के रूप होंगे। घि सञ्ज्ञा सूत्र में असखि कहने से सखि शब्द की घि सञ्ज्ञा नहीं होती। अतः सखि शब्द की प्रक्रिया तथा रूप भिन्न होगी।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. घि, उपधा, अपृक्त - इन संज्ञाओं के सूत्र लिखो।

ख. हरये यहाँ गुण किस सूत्र से होता है ?

ग. घि सञ्ज्ञा किन शब्दों की होती है ?

घ. पति, भूपति, गणपति- इनमें घि सञ्ज्ञा किस शब्द की नहीं होती है ?

6.4. सखि शब्द

सखि शब्द ह्रस्व इकारान्त है इसलिए इसके रूप हरि की तरह होने चाहिएं। परन्तु इसमें हरि शब्द की प्रक्रिया से भिन्नता होती है जिसके कारण अग्रिम कुछ सूत्र हमें पढने होंगे।

6.4.1. अनङ् आदि कार्य

सूत्र- अनङ् सौ।

सूत्रार्थ- सखि शब्द के अन्त में अनङ् आदेश होता है, यदि सु प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- **सखा-** सखि +स् (सु) - सख् अनङ्- अन्तिम अकार को अनङ् आदेश

सख् अन् + स् – अनुबन्ध लोप

6.4.2. उपधा तथा अपृक्त कार्य

अग्रिम विधियों में कुछ सञ्ज्ञाओं का उपयोग होगा। अतः पहले सञ्ज्ञा तत्पश्चात् विधि सूत्र को पढेंगे। यहाँ पर सखा रूप को सिद्ध करने के लिए हमें दीर्घ आकार की आवश्यकता है। अतः यहाँ दीर्घ विधि को जानना चाहिए जिसके लिए हमें अग्रिम सञ्ज्ञा को समझना होगा–

सूत्र- अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा।

पदच्छेद- अलः अन्त्यात् पूर्व उपधा।

सूत्रार्थ- उपधा सञ्ज्ञा एवं पूर्व सञ्ज्ञी है। किसी भी शब्द के अन्तिम अल्- वर्ण से पूर्व वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- जैसे सख् अन्- अन्तिम नकार से पूर्व वर्ण अकार की उपधा सञ्ज्ञा हुई। उपधा सञ्ज्ञा के प्रयोजन को जानने के लिए हम अगली विधि पढते हैं-

सूत्र- सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ।

पदच्छेद- सर्वनामस्थाने च असम्बुद्धौ

सूत्रार्थ- उपधा को दीर्घ होता है, यदि सम्बुद्धि से भिन्न सर्वनामस्थान सञ्ज्ञक प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- सख् अन् + स् - सर्वनामस्थान प्रत्यय सु परे होने पर उपधा अकार को दीर्घ- सख् आन् + स्

सूत्र- अपृक्त एकाल् प्रत्ययः।

सूत्रार्थ - अपृक्त सञ्ज्ञा तथा एकाल् प्रत्यय सञ्ज्ञी है। जो प्रत्यय एक (अकेला) अल्- वर्ण होता है, उसकी अपृक्त सञ्ज्ञा होती है। अल् प्रत्याहार् में सभी व्यञ्जन आते हैं। अतः अल् का अर्थ वर्ण लिया जाता है। जैसे- सख् आन्+ स् में सु प्रत्यय के एक अल् सकार की अपृक्त सञ्ज्ञा हुई।

सूत्र- हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्।

पदच्छेद- हल्ङ्याभ्यः दीर्घात् सुतिसि अपृक्तं हल्

सूत्रार्थ - हल् वर्ण, ङी- ङीप्-ङीष्-ङीन् प्रत्ययान्त, आप्- टाप्-डाप्-चाप् प्रत्ययान्त तथा दीर्घ वर्ण के बाद सु-ति-सि के अपृक्त हल् वर्ण का लोप होता है।

सख् आन् + स्- हल् वर्ण नकार के बाद् अपृक्त हल् सकार का लोप- सख् + आन्

यहाँ पर सखा को सिद्ध करने के लिए नकार को हटाने की आवश्यकता है।

सूत्र- नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।

सूत्रार्थ - प्रातिपदिकान्त जो पद उसके अन्त में नकार का लोप होता है।

उदाहरण- सख् आन् - प्रातिपदिकान्त पद के अन्त में नकार का लोप- सखा।

6.4.3. वृद्धि कार्य

सखायौ - सखा + औ यहाँ पर द्वितीयैकवचन में हमें इष्ट रूप में आय् को प्राप्त करने की आवश्यकता है. जो अयादि सन्धि में ऐ के स्थान पर होता है। ऐ एक वृद्धि वर्ण है। अतः हमें वृद्धि विधि को जानना चाहिए –

सूत्र- अचो ञ्णिति।

सूत्रार्थ - अच् वर्ण के स्थान पर वृद्धि होती है यदि ञित् एवं णित् प्रत्यय पर में हो।

सखि + औ यहाँ औ प्रत्यय पर में है जो णित् नहीं है। अतः वृद्धि करने के लिए हमें औ प्रत्यय को णित् बनाना चाहिए।

सूत्र- सख्युरसम्बुद्धौ।

पदच्छेद- सख्युः असम्बुद्धौ।

सूत्रार्थ - सखि शब्द के पर में सम्बुद्धि से भिन्न सर्वनामस्थान प्रत्यय णिद्वत् होता है।

सखि + औ - सर्वनामस्थान प्रत्यय औ को णिद्वद्भाव

सखै + औ- णिद्वद्भाव प्रत्यय औ के परे होने पर वृद्धि- सख् आय् + औ- अयादि सन्धि

सखायौ।

उसी प्रकार सखायः, सखायम्।

तृतीयैकवचन में सखि + आ (टा)- घि सञ्ज्ञा न होने से टा को ना आदेश, तथा सखि + ए(ङे)- गुण नहीं हुआ। अतः यण् सन्धि करने पर – सख्या, सख्ये।

6.4.4. पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्ति

सख्युः - पञ्चम्येकवचन में सखि + ङसि- सखि + अस् - सख् य् + अस् - यण् सन्धि यहाँ पर इष्ट रूप में हमें उकार प्राप्त होता है। अतः उकार के लिए अग्रिम विधि-

सूत्र- ख्यतात् परस्य।

सूत्रार्थ - खि, ति या खी, ती शब्दों से पर में यण् आदेश होने पर ङसि तथा ङस् प्रत्यय के अकार के स्थान पर उकार होता है।

सख् य् + अस् - यण् सन्धि- अकार के स्थान पर उकार- सख् य् + उस्- सख्युस्

सख्युः।

सख्यौ- सप्तम्येकवचन में सखि + ङि-

यहाँ पर रूप में हमे औकार प्राप्त होता है। अतः औकार के लिए अग्र विधि-

सूत्र- औत्।

सूत्रार्थ - इकारान्त तथा उकारान्त शब्द से परे ङि प्रत्यय के स्थान पर औकार आदेश होता है।

उदाहरण- सखि + ङि- ङि के स्थान पर औकार - सखि + औ - सख् य् + औ- यण् सन्धि - सख्यौ।

रूप सिद्धि-

सखा-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से सखि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में सु प्रत्यय का विधान हुआ	सखि + सु
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	सखि + स्
अनङ् सौ	इकार के स्थान पर अनङ् आदेश हुआ	सख् अनङ् + स्
तस्य लोपः	अनुबन्ध लोप	सख् अन् + स्
अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा	अन्तिम से पूर्व अकार की उपधा सञ्ज्ञा हुई	
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ	उपधा अकार को दीर्घ आदेश हुआ	सख् आन् + स्
अपृक्त एकाल् प्रत्ययः	सकार की अपृक्त सञ्ज्ञा हुई	
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त सकार का लोप हुआ	सख् आन्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप हुआ	**सखा**

सखायौ-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से सखि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में औ प्रत्यय का विधान हुआ	सखि + औ

सख्युरसम्बुद्धौ	औ प्रत्यय को णिद्वद्भाव हुआ	
अचो ञ्णिति	इकार को वृद्धि ऐकार आदेश हुआ	सखै + औ
एचो यवायावः	ऐकार को आय् आदेश हुआ	सख् आय् + औ- **सखायौ**

सख्युः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से सखि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङसि प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	पञ्चमी विभक्ति- ए.व. में ङसि प्रत्यय का विधान हुआ	सखि + ङसि
तस्य लोपः	अनुबन्ध इकार तथा ङकार का लोप हुआ	सखि + अस्
इको यणचि	इकार के स्थान पर यकार आदेश हुआ	सख् य्+ अस्
ख्यत्यात् परस्य	अकार को उकार आदेश हुआ	सख् य् + उस् सख्युस् **सख्युः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

  क. अचो ञ्णिति सूत्र का क्या अर्थ है ?

  ख. सख अन् यहाँ उपधा सञ्ज्ञा किस वर्ण की होती है ?

  ग. सख् अन् + स् यहाँ अपृक्त सञ्ज्ञा किस वर्ण की होती है ?

6.5. कति- द्वि – त्रि शब्द

यहाँ हम ह्रस्व इकारान्त शब्द पढेंगे जो संख्यावाचक हैं। जैसे कति, द्वि , त्रि।

पहला इकारान्त शब्द है- कति । का सङ्ख्या परिमाण् एषाम् अर्थात् सङ्ख्या के परिमाण को पूछने के लिए संस्कृत में कति का प्रयोग होता है जिसका हिन्दी में अर्थ होता है- कितने । कति में किम् शब्द से तद्धित डति प्रत्यय प्रयुक्त है । यह शब्द नित्य बहुवचन में प्रयुक्त होता है । जैसे- कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु ।

6.5.1. संख्या तथा षट् सञ्ज्ञा

कति- प्रथमा के बहुवचन में- कति + जस्

यहाँ देखने पर पता चलता है कि कति इस इष्ट रूप की सिद्धि के लिए हमें जस् का लोप करने की आवश्यकता है । अतः लोप विधि मुख्य रूप से यहाँ द्रष्टव्य है । तथापि लोप के निमित्त कुछ सञ्ज्ञाएं भी अपेक्षित हैं-

सूत्र- बहुगणवतुडति सङ्ख्या ।

सूत्रार्थ- सङ्ख्या सञ्ज्ञा तथा बहु गण वतु डति शब्द सञ्ज्ञी हैं । वतु से वतुप् प्रत्ययान्त तथा डति से डति प्रत्ययान्त शब्द लिए जाते हैं । अतः बहु, गण, वतुप् प्रत्ययान्त तथा डति प्रत्ययान्त शब्दों की सङ्ख्या सञ्ज्ञा होती है । वतुप् प्रत्ययान्त जैसे- इयत्, तावत्, यावत्, एतावत् ।

डति प्रत्ययान्त जैसे- कति । सङ्ख्या सञ्ज्ञा का प्रयोजन-

सूत्र- डति च ।

सूत्रार्थ - इस सूत्र में षट् तथा सङ्ख्या इन पदों की अनुवृत्ति होती है । षट् सञ्ज्ञा तथा डति सञ्ज्ञी है । डति प्रत्ययान्त सङ्ख्या की षट् सञ्ज्ञा होती है ।

जैसे कति शब्द डति प्रत्ययान्त सङ्ख्या है । अतः कति की षट् सञ्ज्ञा होती है ।

षट् सञ्ज्ञा का प्रयोजन-

6.5.2. लुक् कार्य

सूत्र- षड्भ्यो लुक् ।

सूत्रार्थ - षट् सञ्ज्ञक शब्द से पर में जस् तथा शस् प्रत्यय का लुक् होता है ।

उदाहरण- कति + जस्- षट् सञ्ज्ञा होने से जस् का लुक्- **कति** ।

यहाँ पर लुक् शब्द का श्रवण हुआ है , जो एक सञ्ज्ञा है-

सूत्र- प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ।

सूत्रार्थ - यहाँ पर अदर्शनम् इस पद की अनुवृत्ति होती है जिसका अन्वय प्रत्यय के साथ है । प्रत्यय के अदर्शन की लुक्, श्लु, लुप् ये तीन सञ्ज्ञाएं होती हैं । अतः पूर्व सूत्र में जस् के लुक् का अर्थ जस् का अदर्शन(लोप) करना है ।

यद्यपि यह रूप सिद्ध हो गया है, तथापि यहाँ अग्रिम प्रक्रिया प्राप्त होती है –

सूत्र- प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ।

सूत्रार्थ - प्रत्यय का लोप होने पर प्रत्यय को मानकर अङ्ग कार्य होता है ।

जैसे कति + जस्- कति यहाँ जस् प्रत्यय का लुक् होने पर भी जस् को मान कर अङ्ग कार्य प्राप्त होता है । यहाँ स्मरणीय है कि ह्रस्व इकारान्त शब्दों में जस् परे होने पर(जसि च) गुण होता है । अतः कति में भी गुण प्राप्त-

सूत्र- न लुमताङ्गस्य ।

सूत्रार्थ - लुमान् शब्द द्वारा प्रत्यय का अदर्शन(लोप) होने पर लुप्त प्रत्यय को मानकर अङ्ग कार्य नहीं होता है ।

जैसे कति में (षड्भ्यो लुक्) लुमान्- लुक् शब्द द्वारा जस् का लोप हुआ है । अतः यहाँ लुप्त जस् को मान कर गुण कार्य नहीं होता है ।

रूपसिद्धि-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से कति शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
बहुषु बहुवचनम्	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में जस् प्रत्यय का विधान हुआ	कति + जस्
बहुगणवतुडति सङ्ख्या	कति की सङ्ख्या सञ्ज्ञा हुई	
डति च	कति की षट् सञ्ज्ञा हुई	कति +जस्
षड्भ्यो लुक्	जस् के स्थान पर लुक् आदेश हुआ	
प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्	इस सूत्र से प्रत्यय लक्षण द्वारा	
जसि च	इकार को गुण प्राप्त हुआ	
न लुमताङ्गस्य	प्रत्यय लक्षण का निषेध होने से गुण नहीं हुआ	**कति**

6.5.3. त्यदादि शब्दों का कार्य

जिस प्रकार कति शब्द नित्य बहुवचनान्त है उसी प्रकार द्वि नित्य द्विवचनान्त है तथा त्रि नित्य बहुवचनान्त है ।

द्वौ, द्वौ, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वयोः, द्वयोः ।यहां पर कुछ स्थानों पर विशेष प्रक्रिया होती है।

द्वौ- द्वि + औ-

सूत्र- त्यदादीनामः।

पदच्छेद- त्यदादीनाम् अः ।

सूत्रार्थ - त्यद् आदि शब्दों को अकारान्तादेश होता है यदि विभक्ति परे हो। त्यदादि शब्द- त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम् । उक्त सूत्र से अकारान्तादेश करने के लिए द्वि तक शब्दों का ग्रहण किया जाता है।

उदाहरण- द्वि + औ- द्वि के इकार के स्थान पर अकारादेश- द्व + औ- वृद्धि- द्वौ

उसी प्रकार द्वाभ्याम् तथा द्वयोः में यही प्रक्रिया समझना चाहिए।

6.5.4. त्रय आदेश

त्रि शब्द नित्य बहवचन में प्रयुक्त होता है - त्रयः, त्रयः, त्रिभिः, त्रिभ्यः, त्रिभ्यः, त्रयाणाम्, त्रिषु

त्रयाणाम्- त्रि + आम्-

सूत्र- त्रेस्त्रयः ।

सूत्रार्थ - त्रि शब्द के स्थान पर त्रय आदेश होता है यदि आम् प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- त्रि + आम्- त्रय आदेश- त्रय + आम्- त्रय + न् (नुट्) + आम् - त्रय + नाम्
दीर्घ - त्रया + नाम्- णत्व- **त्रयाणाम्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. कति शब्द की संख्या सञ्ज्ञा का सूत्र लिखो।

ख. कति यहाँ किन प्रत्ययों का लुक् होता है ?

ग. त्रि + आम् यहाँ त्रि के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

घ. किन त्यदादि शब्दों में अकार आदेश होता है ?

6.6. सारांश

इस पाठ में हमने अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में इकारान्त शब्दों के साधुत्व की प्रक्रिया का परिचय प्राप्त किया। ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त शब्दों जैसे हरि, भानु आदि की प्रक्रिया को

समझने के लिए घि सञ्ज्ञा अवलोकनीय है । घि सञ्ज्ञा के अपवाद स्थल सखि शब्द में उपधा तथा अपृक्त सञ्ज्ञा प्रतिपाद्य है ।

6.7. कठिन शब्दावली

पूर्व विप्रतिषेध- विप्रतिषेध का सामान्य अर्थ विरोध है । जब एक स्थान पर दो सूत्र प्राप्त होते हैं तथा पहला सूत्र प्रबल होता है, तब उस अवस्था को पूर्व-विप्रतिषेध कहते हैं ।

तृज्वद्भाव- किसी शब्द का ऋकारान्त बन जाना तृज्वद्भाव है । जैसे उकारान्त क्रोष्टु शब्द तृज्वद्भाव से ऋकारान्त क्रोष्टृ बन जाता है ।

णिद्वद्भाव- यदि किसी प्रत्यय में णकार की इत् सञ्ज्ञा न हो, तथापि हम वहाँ णकार की इत् सञ्ज्ञा मान लें, तब इस अवस्था को णिद्वद्भाव कहते हैं । जैसे सखि शब्द से परे औ प्रत्यय को णिद्वद्भाव होता है ।

ङित्- जिस शब्द में ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, उसे ङित् कहते हैं । जैसे ङे, ङसि, ङस्, ङि इस प्रत्ययों में ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, अतः ये ङित् हैं ।

6.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

झ. शेषो घ्यसखि, अलोऽन्त्यात् उपधा, अपृक्त एकाल् प्रत्ययः ।

ञ. घेर्ङिति ।

ट. ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त शब्दों की घि सञ्ज्ञा होती है ।

ठ. पति

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है यदि ञित् या णित् प्रत्यय बाद में हो ।

ख. नकार से पूर्व अकार

ग. सकार

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. बहुगणवतुडति संख्या

ख. जस् तथा शस्

ग. त्रय

घ. त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक द्वि

6.9. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी।

6.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

ङ. शेषो ध्यसखि- इस सूत्र की व्याख्या करो।

च. हरये, सखा, त्रयाणाम् – इन रूपों की सिद्धि करो।

छ. घि, उपधा, संख्या सञ्ज्ञाओं के सूत्र लिख कर उदाहरण सहित व्याख्या करो।

ज. हरि- चतुर्थी, पति- पञ्चमी, सखि- प्रथमा- इन शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों में शब्द-रूप लिखो।

इकाई-7
ईकारान्त-ऊकारान्त- ऋकारान्त-ओकारान्त-ऐकारान्त शब्द
(अजन्त पुंल्लिग प्रकरण)

संरचना

7.1. पाठ का परिचय

7.2. पाठ का उद्देश्य

7.3. दीर्घ ईकारान्त शब्द

 7.3.1. बहुश्रेयसी

 7.3.2. सुधी

 - स्वयं आकलन प्रश्न-1

7.4. ऋकारान्त शब्दों की प्रक्रिया

 7.4.1. क्रोष्टृ(क्रोष्टु)

 7.4.2. नृ

 - स्वयं आकलन प्रश्न-2

7.5. अवशिष्ट शब्द

 7.5.1. खलपू

 7.5.2. वर्षाभू

 7.5.3. गो

 7.5.4. रै

 - स्वयं-आकलन प्रश्न-3

7.6. सारांश

7.7. कठिन शब्दावली

7.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

7.9. सहायक-ग्रन्थ

7.10. अभ्यासात्मक-प्रश्न

7.1. पाठ का परिचय

इस पाठ में हम उन अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के विषय में जानेंगे जिनके अन्त में दीर्घ ईकार होता है । जैसे- बहुश्रेयसी, सुधी आदि । इन सभी शब्दों की सामान्य प्रक्रिया वही होगी जो हमने पिछले पाठ में राम शब्द को पढते समय समझी है । इसके अतिरिक्त ऋकारान्त, ओकारान्त तथा ऐकारान्त शब्दों की सिद्धि-प्रक्रिया भी इस पाठ में हम जानेंगे ।

7.2. पाठ का उद्देश्य

- दीर्घ ईकारान्त शब्दों की सिद्धि-प्रक्रिया का ज्ञान
- ऋकारान्त शब्दों की सिद्धि की प्रक्रिया का ज्ञान
- ओकारान्त तथा ऐकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान
- नदी सञ्ज्ञा का ज्ञान
- इयङ्- यण् आदि में बाध्य-बाधक भाव का ज्ञान

7.3. दीर्घ ईकारान्त शब्द

इस भाग में हम दीर्घ ईकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे जिनमें बहुश्रेयसी, सुधी आदि शब्द प्रमुख हैं । यहाँ हमें ह्रस्व इकारान्त तथा दीर्घ ईकारान्त शब्दों की प्रक्रिया में अन्तर स्पष्ट होगा ।

7.3.1. बहुश्रेयसी शब्द

बहुश्रेयसी शब्द दीर्घ ईकारान्त है । बह्व्यः श्रेयस्यः यस्य स बहुश्रेयसी ।

दीर्घ ईकारान्त शब्दों में विशेष प्रक्रिया के लिए हमें अग्रिम सञ्ज्ञा को जानना चाहिए ।

सूत्र- यू स्त्र्याख्यौ नदी ।

सूत्रार्थ - यहाँ पर नदी सञ्ज्ञा तथा यू स्त्र्याख्यौ सञ्ज्ञी है । यू- ई + ऊ । स्त्र्याख्यौ – नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द । अतः दीर्घ ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द की नदी सञ्ज्ञा होती है ।

दीर्घ ईकारान्त शब्द- देवी, कुमारी, लक्ष्मी आदि ।

दीर्घ ऊकारान्त शब्द- वधू, तनू आदि ।

विशेष- यहाँ पर प्रश्न होता है कि बहुश्रेयसी शब्द पुँल्लिङ्ग है । नदी सञ्ज्ञा नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की होती है । तब किस प्रकार बहुश्रेयसी की नदी सञ्ज्ञा होगी । इस समस्या का समाधान करने के लिए हम अग्रिम वार्तिक को पढेंगे ।

वार्तिक- प्रथमलिङ्गग्रहणं च ।

अर्थ- नदी सञ्ज्ञा में प्राथमिक लिङ्ग का ग्रहण होता है । जैसे- बह्व्यः श्रेयस्यः यस्य स बहुश्रेयसी, यहाँ पर बहुव्रीहि समास से पूर्वावस्था में श्रेयसी शब्द स्त्रीलिङ्ग है । उसी स्त्रीलिङ्ग को स्वीकार कर बहुश्रेयसी शब्द की नदी सञ्ज्ञा होती है । अब नदी सञ्ज्ञा के क्या प्रयोजन हैं यह जानने के लिए हम अग्रिम प्रक्रिया को जानेंगे ।

सूत्र- अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ।

सूत्रार्थ - अम्बा अर्थ के वाचक तथा नदी सञ्ज्ञक शब्द को ह्रस्व होता है, यदि सम्बुद्धि प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- अम्बा - हे अम्ब ।

हे बहुश्रेयसि- बहुश्रेयसी + स्(सु)- नदी सञ्ज्ञा होने से ह्रस्व- बहुश्रेयसि + स्

बहुश्रेयसि - ह्रस्व के पर में सम्बुद्धि सकार लोप- एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः

सूत्र- आण्नद्याः ।

पदच्छेद- आट् नद्याः

सूत्रार्थ - नदी सञ्ज्ञक शब्दों से पर में ङित् प्रत्यय को आट् आगम होता है ।

उदाहरण- **बहुश्रेयस्यै-** बहुश्रेयसी + ङे(ङित्)- ङे के आदि में आट् आगम-

बहुश्रेयसी + आट् ङे

बहुश्रेयसी + आ + ए - अनुबन्ध लोप

सूत्र- आटश्च ।

सूत्रार्थ - आट् के परे यदि अच् हो तब वृद्धि एकादेश होता है ।

उदाहरण- बहुश्रेयसी + आ + ए- (आट्)आ + ए(अच्)- वृद्धि ऐकार - बहुश्रेयसी + ऐ

बहुश्रेयस् य् + ऐ – यण् सन्धि- **बहुश्रेयस्यै** ।

उसी प्रकार ङित् प्रत्यय- ङे ङसि ङस् ङि इन स्थानों पर आट् आगम होता है ।

पञ्चमी- षष्ठी एकवचन- बहुश्रेयसी + अस् (ङसि ङस्)- बहुश्रेयसी + आ + अस्- बहुश्रेयसी + आस् -बहुश्रेयस्यास् – बहुश्रेयस्याः

बहुश्रेयस्याम्- सप्तमी एकवचन- बहुश्रेयसी + ङि- बहुश्रेयसी + आट् + ङि –

सूत्र – ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ।

पदच्छेद- ङेः आम् नद्याम्नीभ्यः

सूत्रार्थ - नदी सञ्ज्ञक, आबन्त तथा नी शब्द से पर में ङि प्रत्यय को आम् आदेश होता है।

उदाहरण- बहुश्रेयसी + आ + ङि-

नदी सञ्ज्ञा होने से ङि को आम् - बहुश्रेयसी + आ + आम्

बहुश्रेयसी + आम्- वृद्धि - आटश्च

बहुश्रेयस्याम्- यण् सन्धि।

- **रूप सिद्धि-**

बहुश्रेयस्यै-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङे प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	चतुर्थी विभक्ति-ए.व. में ङे प्रत्यय का विधान हुआ	बहुश्रेयसी + ङे
लशक्वतद्धिते	ङकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	ङकार का लोप हुआ	बहुश्रेयसी + ए
यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी सञ्ज्ञा हुई	
आण्नद्याः	ङे प्रत्यय के आदि में आट् आगम हुआ	बहुश्रेयसी + आट् + ए
आटश्च	आकार तथा एकार को ऐकार वृद्धि आदेश हुआ	बहुश्रेयसी + ऐ
इको यणचि	ईकार के स्थान पर यकार आदेश हुआ	बहुश्रेयस् य् + ऐ- **बहुश्रेयस्यै**

बहुश्रेयस्याम्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङि प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सप्तमी विभक्ति-ए. व. में ङि प्रत्यय का	बहुश्रेयसी + ङि

	विधान हुआ	
यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी सञ्ज्ञा हुई	
आण्नद्याः	ङे प्रत्यय के आदि में आट् आगम हुआ	बहुश्रेयसी + आट् + ङि
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः	ङि के स्थान पर आम् आदेश हुआ	बहुश्रेयसी + आट् +आम्
आटश्च	दोनो आकारों को ऐकार वृद्धि आदेश हुआ	बहुश्रेयसी +आम्
इको यणचि	ईकार के स्थान पर यकार आदेश हुआ	बहुश्रेयस् य् + आम् **बहुश्रेयस्याम्**

हे बहुश्रेयसि-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति में सु प्रत्यय का विधान हुआ	बहुश्रेयसी + सु
उपदेशे जनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	बहुश्रेयसी + स्
एकवचनं सम्बुद्धिः	सु प्रत्यय की सम्बुद्धि सञ्ज्ञा हुई	
यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी सञ्ज्ञा हुई	
अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः	ईकार को ऐकार ह्रस्व आदेश हुआ	बहुश्रेयसि + स्
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सम्बुद्धि सकार के स्थान पर लोप आदेश हुआ	**हे बहुश्रेयसि**

7.3.2. सुधी-शब्द

दीर्घ ईकारान्त शब्दों में सर्वत्र इसी प्रक्रार की प्रक्रिया होगी । तथापि सुधी शब्द की प्रक्रिया यहाँ द्रष्टव्य है ।

सुधियौ- सुधी + औ - ईकार के स्थान पर यण् यकार प्राप्त-

सूत्र- अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ।

पदच्छेद- अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोः इयङुवङौ

सूत्रार्थ - श्नु प्रत्ययान्त, इकारान्त या उकारान्त धातु तथा भ्रू इन अङ्गों के इकार के स्थान पर इयङ् एवं उकार के स्थान पर उवङ् आदेश होते हैं यदि अजादि प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- सुष्ठु ध्यायति- सुधीः, यहाँ पर धातु का ईकार है ।

सुधी + औ - (ईकारान्त धातु का अङ्ग) सुधी+ औ (अजादि प्रत्यय) - ईकार को इयङ् प्राप्त

सूत्र- एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ।

पदच्छेद- एः अनेकाचः असंयोगपूर्वस्य

सूत्रार्थ - धातु के इकार के स्थान पर यण् होता है, यदि इकार से पूर्व धातु में संयुक्त वर्ण न हो, तथा अनेकाच् – एक से अधिक अच् वाला अङ्ग हो ।

उदाहरण- सुधी +औ- धातु के इकार से पूर्व संयुक्त वर्ण नहीं है, तथा सुधी में अनेक अच् हैं । अतः ईकार को यण् प्राप्त-

सूत्र- न भूसुधियोः ।

सूत्रार्थ - भू तथा सुधी शब्द को यण् नहीं होता है, यदि अजादि सुप् प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- सुधी + औ- अजादि सुप् – औ प्रत्यय पर में होने से यण् का निषेध

अतः पूर्व प्राप्त इकार को इयङ् आदेश- सु ध् इयङ् + औ-

सु ध् इय् + औ- **सुधियौ**

इसी प्रकार अजादि प्रत्यय पर में होने पर सर्वत्र इयङ्- सुधियः (जस्), सुधियम् (अम्), सुधियः (शस्), सुधिया (टा), सुधिये (ङे), सुधियः (ङसि-ङस्), सुधियोः (ओस्), सुधियाम्(आम्), सुधियि (ङि) ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. किन शब्दों की नदी सञ्ज्ञा होती है ?

ख. आट् आगम किन विभक्तियों में होता है?

ग. सुधी + औ यहाँ ईकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

7.4. ऋकारान्त शब्द

इस भाग में हम ऋकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे । जैसे- क्रोष्टृ, नृ । यद्यपि यहाँ हम मुख्य रूप से उकारान्त क्रोष्टु शब्द की प्रक्रिया देखेंगे तथा तथापि क्रोष्टु में ऋकार आदेश होने

से यह शब्द ऋकारान्त क्रोष्टृ बन जाता है । अतः यहाँ हम ऋकारान्त शब्दों की प्रक्रिया को समझेंगे ।

7.4.1. क्रोष्टु शब्द

ह्रस्व उकारान्त शब्दों की घि सञ्ज्ञा होती है । अतः भानु शब्द की तरह सभी शब्दों के रूप होंगे । तथापि क्रोष्टु शब्द की प्रक्रिया भिन्न होने से तत्सम्बद्ध कार्यों का ज्ञान आवश्यक है । क्रोष्टु शब्द की प्रक्रिया द्विविध है । कहीं पर भानु शब्द की तरह तथा कहीं पर ऋकारान्त शब्दों कर्तृ आदि की तरह इसके रूप हैं । अतः ऋकारान्त प्रक्रिया के लिए हम पहले उकारान्त क्रोष्टु को ऋकारान्त बनाते हैं ।

सूत्र- तृज्वत् क्रोष्टुः ।

सूत्रार्थ- क्रोष्टु शब्द तृजवत् होता है यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- **क्रोष्टा-** क्रोष्टु + स्(सु) –

सर्वनामस्थान सु प्रत्यय परे होने पर तृज्वद्भाव- क्रोष्टृ + स्

सूत्र- ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ।

सूत्रार्थ- ऋकारान्त अङ्ग को गुण होता है यदि ङि तथा सर्वनामस्थान प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- क्रोष्टृ + स् - सर्वनामस्थान सु प्रत्यय परे होने पर ऋकार को गुण प्राप्त

सूत्र- ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ।

सूत्रार्थ- ऋकारान्त शब्द, उशनस्, पुरुदंस् तथा अनेहस् इन शब्दों को अनङ् आदेश होता है यदि सम्बुद्धि से भिन्न सु प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- क्रोष्टृ + स् – सम्बुद्धि भिन्न सु प्रत्यय परे होने पर गुण को बाध कर ऋकार को अनङ् आदेश- क्रोष्ट् + अनङ्+ स्- क्रोष्ट् + अन् + स् - अनुबन्ध लोप

क्रोष्टा सिद्ध करने के लिए हमें दीर्घ आकार को प्राप्त करने की आवश्यकता है । अतः-

सूत्र- अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम् ।

सूत्रार्थ- अप्, तृन्, तृच्, स्वसृ, नप्तृ, नेष्टृ, त्वष्टृ, क्षत्तृ, होतृ, पोतृ, प्रशास्तृ इन शब्दों की उपधा को दीर्घ होता है यदि सम्बुद्धि से भिन्न सर्वनामस्थान प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- क्रोष्ट् अन् + स्- सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान सु प्रत्यय परे होने पर उपधा अकार को दीर्घ- क्रोष्ट् आन् + स्

हल् वर्ण नकार के बाद अपृक्त सकार का लोप- क्रोष्ट् आन्

प्रातिपदिकान्त पद के अन्त में नकार का लोप- **क्रोष्टा** ।

क्रोष्टारौ- क्रोष्टु + औ - तृज्वद्भाव- क्रोष्टृ + औ

ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः- ऋकार के स्थान पर अर् गुण क्रोष्ट् अर् + औ

उपधा अकार को दीर्घ क्रोष्ट् आर् + औ **क्रोष्टारौ**

इसी प्रकार क्रोष्टारः, क्रोष्टारम् इत्यादि प्रयोग समझने चाहिए।

क्रोष्टून्- द्वितीया बहुवचन में सर्वनामस्थान प्रत्यय न होने से तृज्वद्भाव नहीं होता। तत्पश्चात् तृतीयादि विभक्तियों में वैकल्पिक दो- दो रूप सिद्ध होते हैं। एक पक्ष में घि सञ्ज्ञा होने पर भानु के समान रूप होंगे तथा दूसरे पक्ष में तृज्वद्भाव होने से ऋकारान्त के समान।

सूत्र- विभाषा तृतीयादिष्वचि।

सूत्रार्थ- तृतीया आदि विभक्तियों में यदि अच् वर्ण आरम्भ में हो तब विकल्प से तृज्वद्भाव होता है।

उदाहरण- **क्रोष्ट्रा-** क्रोष्टु + आ (टा)-

विभक्ति के आरम्भ में अच् होने से विकल्प से तृज्वद्भाव- क्रोष्टृ + आ

ऋकार के स्थान पर यण् रेफ- क्रोष्ट् र् + आ-

क्रोष्ट्रा

तृज्वद्भाव न होने पर– क्रोष्टु+ टा- घि सञ्ज्ञा होने से टा को ना- **क्रोष्टुना**

इसी प्रकार चतुर्थी एकवचन में- क्रोष्ट्रे क्रोष्टवे।

पञ्चमी एकवचन में-

क्रोष्टु + अस् (ङसि)- विभक्ति के आरम्भ में अच् होने से विकल्प से तृज्वद्भाव- क्रोष्टृ + अस्

यहाँ पर प्रयोग में हमे उकार प्राप्त होता है, अतः उकार के लिए प्रक्रिया-

सूत्र- ऋत उत्।

सूत्रार्थ- ऋकारान्त शब्द से परे ङसि या ङस् प्रत्यय होने पर उत् एकादेश होता है।

उदाहरण- क्रोष्टृ + अस्-

ऋकार तथा अकार के स्थान पर रपर उर् एकादेश- क्रोष्ट् उर् + स्

सूत्र- रात् सस्य।

सूत्रार्थ- रेफ के बाद संयोगान्त सकार का लोप होता है।

उदाहरण- क्रोष्ट् उर् + स्- रेफ के बाद संयोगान्त सकार का लोप- क्रोष्ट् + उर्

क्रोष्टुः- रेफ के स्थान पर विसर्ग

➢ **रूप सिद्धि-**

क्रोष्टा-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति-ए. व. में सु प्रत्यय का विधान हुआ	क्रोष्टु + सु
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	क्रोष्टु + स्
तृज्वत् क्रोष्टुः	सर्वनामस्थान सु प्रत्यय परे होने पर तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ + स्
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	सर्वनामस्थान सु प्रत्यय परे होने पर ऋकार को गुण प्राप्त	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	ऋकार के स्थान पर अनङ् आदेश हुआ	क्रोष्ट् अनङ् + स्
तस्य लोपः	अनुबन्ध लोप	क्रोष्ट् अन् + स्
अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा	अन्तिम से पूर्व अकार की उपधा सञ्ज्ञा हुई	
अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्	उपधा अकार को दीर्घ आदेश हुआ	क्रोष्ट् आन् + स्
अपृक्त एकाल् प्रत्ययः	सकार की अपृक्त सञ्ज्ञा हुई	
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त सकार का लोप हुआ	क्रोष्ट् आन्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप हुआ	**क्रोष्टा**

क्रोष्टुः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङसि प्रत्यय की एकवचन	

	सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	पञ्चमी विभक्ति-ए.व. में ङसि प्रत्यय का विधान हुआ	क्रोष्टु + ङसि
तस्य लोपः	अनुबन्ध ङकार तथा इकार का लोप हुआ	क्रोष्टु + अस्
विभाषा तृतीयादिष्वचि	अजादि ङसि प्रत्यय परे होने पर विकल्प से तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ + अस्
ऋत उत्	ऋकार तथा अकार को उकार एकादेश हुआ	
उरण् रपरः	ऋकार के स्थान पर उकार रपर- उर् हुआ	क्रोष्ट् उर् + स्
रात् सस्य	रेफ के बाद सकार का लोप	क्रोष्ट् उर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ के स्थान पर विसर्ग आदेश हुआ	**क्रोष्टुः**

7.4.2. नृ-शब्द

यद्यपि ऋकारान्त शब्दों की प्रक्रिया हम क्रोष्टु शब्द में देख चुके हैं तथापि नृ शब्द में एक विशेष कार्य यहाँ द्रष्टव्य है।

ना, नरौ, नरः आदि रूप क्रोष्टु की तरह होते हैं।

नृणाम्- नृणाम्- नृ + आम् - तुट् आगम- नृ + न् (तुट्) + आम्

ऋकार को दीर्घ प्राप्त- (नामि)

सूत्र- नृ च।

सूत्रार्थ- नृ के ऋकार को विकल्प से दीर्घ होता है यदि नाम् पर में हो।

उदाहरण- नृ + नाम्- ऋकार को विकल्प से दीर्घ- नृ + नाम्- नकार को णकार होने से- **नृणाम्**

दीर्घ न होने से- **नृणाम्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. क्रोष्टु शब्द में तृज्वद्भाव किन विभक्तियों में होता है?

ख. क्रोष्टा में दीर्घ किस सूत्र से होता है?

ग. क्रोष्टृ + अस् (ङस्) यहां ऋकार तथा अकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

घ. नृ च इस सूत्र का कार्य लिखो।

7.5. अवशिष्ट शब्द

यहाँ हम ऊकारान्त, ओकारान्त तथा ऐकारान्त शब्दों को जानेंगे। दीर्घ ऊकारान्त शब्दों में खलपू, वर्षाभू, स्वयम्भू आदि आते हैं। यहाँ पर पूर्ववत् यण् सन्धि पुनः उवङ् आदि कार्यों की प्राप्ति होती है।

7.5.1. खलपू शब्द

खलप्वौ- खलपू + औ- ऊकार के स्थान पर यण् प्राप्त
यण् को बाध कर ऊकार को उवङ् आदेश प्राप्त

सूत्र- ओः सुपि।

सूत्रार्थ- इस सूत्र में एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य इस सूत्र से अनेकाचः असंयोगपूर्वस्य की अनुवृत्ति होती है। अतः इस सूत्र का भी पूर्ववत् अर्थ है-

धातु के उकार के स्थान पर यण् होता है, यदि इकार से पूर्व धातु में संयुक्त वर्ण न हो, तथा अनेकाच् – एक से अधिक अच् वाला अङ्ग हो, एवं अजादि सुप् प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- खलपू + औ- (उवर्णान्त अङ्ग)खलपू + औ (अजादि सुप् प्रत्यय)-
ऊकार को यण् वकार - खलप् व्+ औ- **खलप्वौ**।

इसी प्रकार खलप्वौ, खलप्वः आदि।

7.5.2. वर्षाभू शब्द

वर्षाभ्वौ- वर्षाभू + औ- ऊकार के स्थान पर यण् प्राप्त
यण् को बाध कर ऊकार को उवङ् आदेश प्राप्त
यण् का निषेध प्राप्त

सूत्र- वर्षाभ्वश्च।

सूत्रार्थ - वर्षाभू शब्द को यण् होता है, यदि अजादि सुप् पर में हो।

उदाहरण- वर्षाभू + औ- ऊकार के स्थान पर यण् वकार- वर्षाभ् व् + औ- **वर्षाभ्वौ**

ओकारान्त शब्दों में हम गो शब्द की प्रक्रिया को जानेंगे।

7.5.3. गो-शब्द

गौः- गो + स्(सु)-

इस शब्द में हमें वृद्धि वर्ण औकार प्राप्त होता है । वृद्धि के लिए ञित् या णित् प्रत्यय पर में होना आवश्यक है । यहाँ सु प्रत्यय ञित् या णित् नहीं है । अतः अगले सूत्र से सु को णित् बनाया जाता है-

सूत्र- गोतो णित् ।

सूत्रार्थ- गो शब्द के बाद सर्वनामस्थान प्रत्यय णिद्वत् होता है ।

उदाहरण- गो + स् (सु)- सर्वनामस्थान सु प्रत्यय णित् होता है ।

गौ + स्- ओकार को औकार वृद्धि(अचो ञ्णिति) - **गौः**

इसी तरह- गो + औ – णित् होने से वृद्धि- गौ+ औ-

औ को आव्- ग्+ आव्- गावौ

गाम्- गो + अम्- अम् परे होने से पूर्वरूप प्राप्त (अमि पूर्वः)-

सूत्र- औतोऽम्शसोः ।

पदच्छेद- आ ओतः अम्शसोः ।

सूत्रार्थ- ओकार के स्थान पर आकार आदेश होता है यदि अम् तथा शस् प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- गो + अम्- अम् परे होने से ओ को अम् आदेश- गा + अम्

अम् परे होने से पूर्वरूप आदेश- **गाम्** ।

इसी प्रकार शस् प्रत्यय में समान प्रक्रिया होने से - **गाः** ।

7.5.4. रै-शब्द

राः- रै + स् (सु)-

सूत्र- रायो हलि ।

सूत्रार्थ- रै शब्द को आकार अन्तादेश होता है, यदि हलादि विभक्ति पर में हो ।

उदाहरण- रै + स् – हलादि विभक्ति स् (सु) पर में होने से ऐ के स्थान में आकार आदेश-

रा + स् - राः

अजादि विभक्ति में आय् आदेश होता है । अतः रायौ, रायः, रायम् , रायौ, रायः इत्यादि रूप होते हैं ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-3**

झ. खलपू + औ यहाँ यण् आदेश का सूत्र लिखो ।

ञ. वर्षाभ्वश्च इस सूत्र का उदाहरण लिखो।

ट. गो + सु यहाँ गोतो णित् इस सूत्र के क्या कार्य होता है ?

ठ. गो शब्द की द्वितीया विभक्ति के रूप लिखो।

7.6. सारांश

इस पाठ में हमने अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में ईकारान्त, ऊकारान्त, ऋकारान्त, ओकारान्त तथा ऐकारान्त शब्दों के साधुत्व की प्रक्रिया का परिचय प्राप्त किया। जिस प्रकार ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त शब्दों जैसे हरि, भानु आदि की प्रक्रिया को समझने के लिए घि सञ्ज्ञा अवलोकनीय है उसी प्रकार में नदी सञ्ज्ञा के उदाहरण के रूप में हम दीर्घ ईकारान्त शब्द बहुश्रेयसी को पढते हैं। ह्रस्व उकारान्त होने पर भी क्रोष्टु शब्द की प्रक्रिया विशेषतया द्रष्टव्य है, जिसमें हमे ऋकारान्त शब्दों की सिद्धि का भी बोध होता है।

7.7. कठिन शब्दावली

पूर्व विप्रतिषेध- विप्रतिषेध का सामान्य अर्थ विरोध है। जब एक स्थान पर दो सूत्र प्राप्त होते हैं तथा पहला सूत्र प्रबल होता है, तब उस अवस्था को पूर्व-विप्रतिषेध कहते हैं।

तृज्वद्भाव- किसी शब्द का ऋकारान्त बन जाना तृज्वद्भाव है। जैसे उकारान्त क्रोष्टु शब्द तृज्वद्भाव से ऋकारान्त क्रोष्टृ बन जाता है।

णिद्वद्भाव- यदि किसी प्रत्यय में णकार की इत् सञ्ज्ञा न हो, तथापि हम वहाँ णकार की इत् सञ्ज्ञा मान लें, तब इस अवस्था को णिद्वद्भाव कहते हैं। जैसे सखि शब्द से परे औ प्रत्यय को णिद्वद्भाव होता है।

ङित्- जिस शब्द में ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, उसे ङित् कहते हैं। जैसे ङे, ङसि, ङस्, ङि इस प्रत्ययों में ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, अतः ये ङित् हैं।

7.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी सञ्ज्ञा होती है।

ख. ङित् विभक्तियों- ङे – ङसि-ङस-ङि में आट् आगम होता है।

ग. इयङ्

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. सर्वनामस्थान (सु औ जस् अम औट्) तथा तृतीया से सप्तमी तक जहाँ विभक्ति के आदि में अच् हो, वहाँ तृज्वद्भाव होता है।

ख. अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षतृहोतृपोतृप्रशास्तृणाम्

ग. उकार आदेश

घ. नृ शब्द के ऋकार के स्थान पर विकल्प से दीर्घ होता है यदि नाम् पर में हो।

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. ओः सुपि

ख. वर्षाभ्वौ

ग. णिद्वद्भाव

घ. गां गावौ गाः

7.9. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

7.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

झ. बहुश्रेयस्यै, क्रोष्टा, गाम् – इन रूपों की सिद्धि करो ।

ञ. नदी सञ्ज्ञा का सूत्र लिख कर उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

ट. बहुश्रेयसी- सप्तमी, सुधी- प्रथमा, गो- द्वितीया, क्रोष्टु- पञ्चमी- इन शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों में शब्दरूप लिखो ।

इकाई-8
अजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरण

संरचना

8.1. पाठ का परिचय
8.2. पाठ का उद्देश्य
8.3. दीर्घ आकारान्त शब्द
  8.3.1. रमा शब्द
  8.3.2. सर्वा शब्द
  - स्वयं आकलन प्रश्न-1
8.4. ह्रस्व इकारान्त शब्द
  8.4.1. मति शब्द
  8.4.2. त्रि शब्द
  - स्वयं आकलन प्रश्न-2
8.5. दीर्घ ईकारान्त शब्द
  8.5.1. स्त्री शब्द
  8.5.2. श्री शब्द
  8.5.3. स्वयं आकलन प्रश्न-3
8.6. ह्रस्व उकारान्त शब्द
  8.6.1. क्रोष्टु शब्द
  - स्वयं आकलन प्रश्न-4
8.7. सारांश
8.8. कठिन शब्दावली
8.9. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर
8.10. सहायक ग्रन्थ

8.11.अभ्यासात्मक-प्रश्न

8.1. पाठ का परिचय

पिछले पाठ में हमने अजन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों का अध्ययन किया । इस पाठ में हम अजन्त स्त्रीलिङ्ग तथा अजन्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया को समझेंगे । सभी शब्दों की प्रक्रिया के लिए उपयोगी आधारभूत नियम हम अजन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण में जान चुके हैं । यहाँ स्त्रीलिङ्ग शब्दों में जो विशेष कार्य होते हैं उनका प्रतिपादन किया जाएगा ।

8.2. पाठ का उद्देश्य

- अजन्त स्त्रीलिङ्ग सुबन्त पदों का सामान्य ज्ञान
- सुबन्त पदों की प्रकृति(प्रातिपदिक) का ज्ञान
- स्त्रीलिङ्ग शब्दों में सर्वनाम, घि तथा नदी आदि सञ्ज्ञाओं के प्रयोग का ज्ञान
- अजन्तों में स्त्रीलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान

8.3. दीर्घ आकारान्त शब्द-

दीर्घ आकारान्त शब्दों में रमा, लता, बालिका आदि शब्द हैं ।

8.3.1. रमा शब्द

रमा- रमा + स् (सु) - सकार लोप- रमा ।

रमे - रमा + औ-

यहां पर इष्ट रूप में एकार दिखाई देता है । एत्व को प्राप्त करने के लिए अग्रिम विधि-

सूत्र- औङ आपः ।

आबन्त शब्द मे आकार के बाद औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश होता है ।

रमा + औ- (आबन्त शब्द) रमा + औ (प्रत्यय)-

रमा + शी- अनुबन्ध लोप-

रमा + ई- गुण-

रमे ।

हे रमे- सम्बोधन की प्रथमा के एकवचन में- रमा + स् (सु)

सूत्र- सम्बुद्धौ च ।

आबन्त शब्द मे आकार के स्थान पर एकार होता है, यदि सम्बुद्धि प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- रमा + स् (सु सम्बुद्धि प्रत्यय)-

रमे + स्- सम्बुद्धि लोप-

रमे

रमया- रमा + आ (टा

इस रूप में अय् प्राप्त होता है, जो अयादि सन्धि में एकार के स्थान पर होता है। अतः एत्व विधि-

सूत्र- आङि चापः। आङि च आपः।

आबन्त शब्द मे आकार के स्थान पर एकार होता है, यदि टा प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- रमा + आ(टा)- (आबन्त शब्द) रमा +आ (टाप्रत्यय)- रमे + आ- एकार को अय् आदेश- रम् अय् + आ- **रमया**।

रमायै- रमा + ए (ङे)-

यहाँ पर यै- या + ए उपलब्ध होता है। एकार ङे प्रत्यय से प्राप्त होगा। अतः या के लिए विधि-

सूत्र- याडापः। याट् आपः।

आबन्त शब्द के बाद में ङित् प्रत्यय के आदि में याट् आगम होता है।

रमा + ए (ङे)- (आबन्त शब्द) रमा + ए (ङे ङित्प्रत्यय)-

रमा + याट् + ए- रमा + या + ए- वृद्धि- रमायै।

उसी प्रकार अन्य ङित् प्रत्ययों में भी याट् आगम होता है-

रमायाः- रमा + याट् + अस् (ङसि ङस्)

रमायाम्- रमा + ङि- रमा + याट् + ङि- ङि को आम् आदेश- रमा + या + आम्- **रमायाम्**

- **रूप सिद्धि-**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से रमा शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में औ प्रत्यय का विधान हुआ	रमा + औ
औङ आपः	औ प्रत्यय को शी आदेश हुआ	रमा + शी
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	शकार का लोप	रमा+ ई
आद् गुणः	अकार तथा ईकार के स्थान पर गुण आदेश हुआ	**रमे**

रमया-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से रमा शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से टा प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	तृतीया विभक्ति में टा प्रत्यय का विधान हुआ	रमा + टा
चुटू	प्रत्यय के आदि टकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	टकार का लोप	रमा+ आ
आङि चापः	आकार को एकार आदेश हुआ	रमे + आ
एचोऽयवायावः	एकार के स्थान पर अय् आदेश हुआ	रम् अय् + आ **रमया**

रमायै-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से रमा शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङे प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	चतुर्थी विभक्ति में ङे प्रत्यय का विधान हुआ	रमा + ङे
लशक्वतद्धिते	प्रत्यय के आदि ङकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	ङकार का लोप	रमा+ ए
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
याडापः	ङे प्रत्यय के आदि में याट् आगम हुआ	रमा + याट् + ए रमा + या + ए
वृद्धिरेचि	आकार तथा एकार के स्थान पर वृद्धि आदेश हुआ	रमा + यै- **रमायै**

8.3.2. सर्वा शब्द

सर्वा शब्द के रूप रमा के समान होते हैं। तथापि सर्वनाम सञ्ज्ञा होने से कुछ विशेष कार्य होते हैं।

सर्वस्यै- सर्व + ए (ङे)-

सूत्र- सर्वनाम्नः स्याट् ह्रस्वश्च।

सर्वनाम शब्द से परे ङित् प्रत्यय को स्याट् आगम होता है तथा सर्वनाम शब्द को ह्रस्व आदेश होता है।

उदाहरण-

सर्वा + ए (ङे ङित् प्रत्यय)-

स्याट् आगम एवं आकार को ह्रस्व- सर्व + स्याट् + ए

सर्व + स्या + ए- वृद्धि- सर्वस्यै

उसी प्रकार पञ्चमी- षष्ठी के एकवचन में -सर्वस्याः तथा सप्तमी एकवचन में- सर्वस्याम् रूप होते हैं।

- **रूप सिद्धि-**

सर्वस्यै-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से सर्वा शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सर्वादीनि सर्वनामानि	इस सूत्र से सर्वा शब्द की सर्वनाम सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङे प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	चतुर्थी विभक्ति में ङे प्रत्यय का विधान हुआ	सर्वा + ङे
लशक्वतद्धिते	प्रत्यय के आदि ङकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	ङकार का लोप	सर्वा + ए
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
सर्वनाम्नः स्याट् ह्रस्वश्च	ङे प्रत्यय के आदि में स्याट् आगम तथा आकार को ह्रस्व हुआ	सर्व + स्याट् + ए सर्व + स्या + ए
वृद्धिरेचि	आकार तथा एकार के स्थान पर वृद्धि आदेश हुआ	सर्व + स्यै **सर्वस्यै**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. रमा इस प्रयोग में सु प्रत्यय के सकार का लोप किस सूत्र से होता है ?

ख. रमायै इस प्रयोग में क्या आगम होता है ?

ग. सर्वस्यै यहाँ स्याट् आगम किस सूत्र से होता है ?

8.4. ह्रस्व इकारान्त शब्द-

ह्रस्व इकारान्त शब्दों में मति, बुद्धि, गति आदि शब्द आते हैं ।

8.4.1. मति शब्द

मति शब्द ह्रस्व इकारान्त है । अतः इसकी घि सञ्ज्ञा होने पर रूप हरि के समान होंगे । दूसरी तरफ बहुश्रेयसी के समान रूप भी होते हैं जिसके लिए हमें इसकी नदी सञ्ज्ञा करनी होगी । किन्तु दीर्घ ईकारान्त की नदी सञ्ज्ञा होती है- यू स्त्र्याख्यौ नदी । अतः ह्रस्व इकारान्त की नदी सञ्ज्ञा के लिए हम अग्रिम विधि पढेंगे –

सूत्र- ङिति ह्रस्वश्च ।

स्त्री शब्द से भिन्न दीर्घ ईकारान्त एवं ऊकारान्त शब्द जिनके स्थान पर इयङ् तथा उवङ् प्राप्त हों, तथा ह्रस्व इकारान्त एवं ह्रस्व उकारान्त शब्द की स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से नदी सञ्ज्ञा होती है यदि ङित् प्रत्यय पर में हो ।

उदाहरण- **मत्यै- मतये-** मति + ए (ङे)- ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग मति + ङित् प्रत्यय- विकल्प से नदी सञ्ज्ञा-

नदी सञ्ज्ञा होने से आट् आगम- मति + आ(आट्)+ ए- वृद्धि- मति + ऐ

यण् सन्धि - मत् य् + ऐ- मत्यै

घि सञ्ज्ञा पक्ष में गुण तथा अयादि सन्धि- मतये ।

उसी प्रकार ङसि- ङस्- मत्याः मतेः । सप्तमी एकवचन ङि में-

मत्याम्- मति + ङि- नदी सञ्ज्ञा होने से आट् आगम- मति + आ (आट्) + ङि

सूत्र- इदुद्भ्याम् ।

इकारान्त तथा उकारान्त नदीसञ्ज्ञक शब्दों से परे ङि प्रत्यय के स्थान पर आम् होता है ।

उदाहरण- मति + आ + ङि- मति + आ + आम्-

आट् से परे अच् को वृद्धि (आटश्च)- मति + आम्

यण् सन्धि- मत्याम् ।

घि सञ्ज्ञा होने पर हरौ के समान मतौ रूप होगा ।

- **रूप सिद्धि-**

मत्यै-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से मति शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से ङे प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	चतुर्थी विभक्ति में ङे प्रत्यय का विधान हुआ	मति + ङे
लशक्वतद्धिते	प्रत्यय के आदि ङकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	ङकार का लोप	मति+ ए
आद्यन्तौ टकितौ	इस सूत्र की सहायता से	
ङिति ह्रस्वश्च	इस सूत्र से मति शब्द की विकल्प से नदी सञ्ज्ञा हुई	मति + आट् + ए मति + या + ए
आण्नद्याः	ङे प्रत्यय के आदि में आट् आगम हुआ	
वृद्धिरेचि	आकार तथा एकार के स्थान पर वृद्धि आदेश हुआ	मति + यै
इको यणचि	इकार के स्थान पर यकार आदेश हुआ	मत् य् +ऐ **मत्यै**
	नदी सञ्ज्ञा के अभाव में	
शेषो घ्यसखि	इस सूत्र से मति शब्द की घि सञ्ज्ञा हुई	
घेर्ङिति	इकार के स्थान पर गुण एकार आदेश हुआ	मते + ए
एचोऽयवायावः	एकार के स्थान पर अय् आदेश हुआ	मत् अय् + ए **मतये**

8.4.2. त्रि शब्द

त्रि शब्द नित्य बहुवचनान्त है । इस के रूप इस प्रकार होते हैं- तिस्रः, तिस्रः, तिसृभिः, तिसृभ्यः, तिसृभ्यः, तिसृणाम्, तिसृषु ।

सूत्र- त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ।

स्त्रीलिङ्ग में त्रि को तिसृ तथा चतुर् शब्द को विभक्ति परे होने पर चतसृ आदेश होता है।

तिस्रः- त्रि + अस् (जस्)- तिसृ + अस्- ऋ + अ- यण् सन्धि प्राप्त

ऋ+ सर्वनामस्थान प्रत्यय- यण् को बाध कर ऋ को गुण प्राप्त-

ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः

सूत्र- अचि र ऋतः।

तिसृ- चतसृ के ऋकार को रेफ आदेश होता है यदि अच् परे हो।

तिसृ + अस्- ऋ + अ- तिस् र् + अस्- तिस्रस्- तिस्रः

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. मत्यै यहाँ विकल्प से नदी सञ्ज्ञा किस सूत्र से होती है ?

ख. कवि, पति, कृति- इन में घि सञ्ज्ञा किस शब्द की होगी ?

ग. त्रि + जस् यहाँ त्रि के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

8.5. दीर्घ ईकारान्त शब्द

इस भाग में हम दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे जिनमें स्त्री, श्री आदि शब्द प्रमुख हैं।

8.5.1. स्त्री शब्द

स्त्री शब्द दीर्घ ईकरान्त शब्द है। अतः नदी सञ्ज्ञा होने से आट् आगम आदि कार्य होंगे। तथापि कुछ विशेष कार्यों के लिए हम इस शब्द का अध्ययन करेंगे।

स्त्रियौ- स्त्री + औ-

सूत्र- स्त्रियाः।

स्त्री शब्द को इयङ् आदेश होता है यदि अजादि प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- स्त्री + औ- अजादि प्रत्यय औ परे होने पर ईकार के स्थान पर इयङ् आदेश-

स्त्र् + इयङ् + औ

स्त्र् + इय् + औ- स्त्रियौ

स्त्रियम्- स्त्रीम्- स्त्री + अम्- यहाँ पर (अमि पूर्वः) पूर्वरूप प्राप्त

अजादि प्रत्यय अम् होने से (स्त्रियाः) इयङ् आदेश प्राप्त

सूत्र- वाम्शसोः।

अम् या शस् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से स्त्री शब्द को इयङ् आदेश होता है।

उदाहरण- स्त्री + अम्- अम् प्रत्यय होने से ईकार को विकल्प से इयङ् आदेश-

स्त्र् + इयङ् + अम्

स्त्र् + इय् + अम्- स्त्रियम्

इयङ् न होने पर पूर्वरूप आदेश-

स्त्री + अम्- स्त्रीम्

उसी प्रकार द्वितीया-बहुवचन में भी इयङ् – पूर्वरूप कार्य- स्त्रियः-स्त्रीः

अन्यत्र ङसि- ङस् इन ङित् प्रत्ययों में नदी सञ्ज्ञा होने से आट् आगम होगा। अतः स्त्रियाः- ङसि ङस्, ङि- स्त्रियाम्।

- **रूप सिद्धि-**

स्त्रियौ-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से स्त्री शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से अम् प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	द्वितीया विभक्ति में अम् प्रत्यय का विधान हुआ	स्त्री + अम्
वाम्शसोः	इस सूत्र से ईकार के स्थान पर विकल्प से इयङ् आदेश हुआ	स्त्र् इयङ् + अम् स्त्र् इय् + अम् **स्त्रियम्**
अमि पूर्वः	इयङ् आदेश न होने पर पूर्वरूप	स्त्री + अम् **स्त्रीम्**

8.5.2. श्री शब्द

श्री शब्द के दीर्घ ईकारान्त होने से नदी प्राप्त होती है। तथापि यहाँ विशेष यह है कि कुछ स्थलों पर नदी सञ्ज्ञा होती है तथा कुछ स्थलों पर नहीं।

प्रथमा विभक्ति- श्रीः श्रियौ श्रियः। यहाँ हम देखते हैं कि अजादि प्रत्यय- औ, जस् में इय् भाग प्राप्त हो रहा है जो इयङ् आदेश से सिद्ध होता है। इयङ् विधि हम अजन्त पुँल्लिङ्ग में जान चुके हैं – अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ।

हे श्रीः – सम्बोधन की प्रथमा के एकवचन में - श्री + स्(सु)- नदी सञ्ज्ञा प्राप्त- यू स्त्र्याख्यौ नदी

सूत्र- नेयङुवङ्स्थानावस्त्री । न इयङुवङ्स्थानौ अस्त्री ।

स्त्री शब्द को छोड कर उन दीर्घ ईकारान्त एवं ऊकारान्त शब्दों की नदी सञ्ज्ञा नहीं होती है, जिन में इयङ् तथा उवङ् आदेश प्राप्त हों ।

उदाहरण- श्री+ स् (सु)-

दीर्घ ईकारान्त श्री शब्द की नदी सञ्ज्ञा का निषेध-

नदी सञ्ज्ञा न होने से ह्रस्व आदेश का अभाव- अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः- हे श्रीः ।

श्रियै-श्रिये- चतुर्थी एकवचन- श्री + ए (ङे)-

विकल्प से नदी सञ्ज्ञा – ङिति ह्रस्वश्च

आट् आगम तथा वृद्धि- श्री + आ (आट्)+ए- श्री+ ऐ

इयङ्- श्र् इय्(इयङ्)+ ऐ- श्रियै

नदी सञ्ज्ञा न होने पर आट् आगम के अभाव में इयङ्-

श्री + ए(ङे)- श्र् इय् + ए- श्रिये

इसी प्रकार ङसि- ङस् में भी विकल्प से नदी सञ्ज्ञा होने से- श्रियाः- श्रियः

श्रीणाम्-श्रियाम्- श्री+ आम्- नदी सञ्ज्ञा प्राप्त- यू स्त्र्याख्यौ नदी

नदी सञ्ज्ञा का निषेध प्राप्त- नेयङुवङ्स्थानावस्त्री

सूत्र- वामि ।

स्त्री शब्द को छोड कर उन दीर्घ ईकारान्त एवं ऊकारान्त शब्दों की नदी सञ्ज्ञा आम् प्रत्यय परे होने पर विकल्प से होती है, जिन में इयङ् तथा उवङ् आदेश प्राप्त हों ।

उदाहरण- श्री + आम् - विकल्प से नदी सञ्ज्ञा होने से नुट् आगम-

श्री + न् (नुट्)+ आम्-

श्री+ नाम्- नकार के स्थान पर णकार-

श्री+ ण्+ आम्- श्रीणाम्

नदी सञ्ज्ञा न होने पर इयङ्-

श्र्+ इय्(इयङ्) + आम्- श्रियाम्

- **रूप सिद्धि-**

श्रीणाम् –श्रियाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से श्री शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	

सुपः	इस सूत्र से आम्प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	षष्ठी विभक्ति में आम् प्रत्यय का विधान हुआ	श्री + आम्
वामि	इस सूत्र से श्री शब्द की विकल्प से नदी सञ्ज्ञा हुई	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् प्रत्यय के आदि में नुट् आगम हुआ अनुबन्ध लोप	श्री + नुट् + आम् श्री + न् + आम्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार के स्थान पर णकार आदेश हुआ	श्री + ण् + आम्- **श्रीणाम्**
	नदी सञ्ज्ञा के अभाव में	
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इकार के स्थान पर इयङ् आदेश हुआ	श्र् इयङ् + आम् श्र् इय् + आम् **श्रियाम्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. स्त्रियौ यहाँ ईकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ख. स्त्री शब्द की द्वितीया विभक्ति का एकवचन रूप लिखो ।

ग. श्री + आम् यहाँ विकल्प से नदी सञ्ज्ञा सूत्र लिखो ।

8.6. ऋकारान्त शब्द

यहाँ पर ह्रस्व उकारान्त शब्दों में हम क्रोष्टु शब्द पढेंगे ।

8.6.1. क्रोष्टु शब्द

क्रोष्टु शब्द यद्यपि उकारान्त है तथापि यहाँ तृज्वद्भाव होता है, तथा यहा ऋकारान्त बन जाता है । यह हम पुँल्लिङ्ग प्रकरण में पढ चुके हैं । यही विधि स्त्रीलिङ्ग में भी होती है –

क्रोष्ट्री-

सूत्र- स्त्रियां च ।

क्रोष्टु शब्द को स्त्रीलिङ्ग में तृज्वद्भाव होता है ।

उदाहरण- क्रोष्टु - तृज्वद्भाव होने पर- क्रोष्टृ

सूत्र- ऋन्नेभ्यो ङीप् ।

ऋकारान्त तथा नकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय होता है ।

(ऋकारान्त)क्रोष्टृ + ङीप्- क्रोष्टृ + ई- यण् सन्धि करने पर- क्रोष्ट् र् + ई- क्रोष्ट्री

इसी प्रकार अन्य ऋकारान्त शब्दों में भी स्त्रीलिङ्ग में यही प्रक्रिया होती है ।

जैसे धातृ- धात्री, अभिनेतृ- अभिनेत्री, कर्तृ- कर्त्री आदि ।

मातृ शब्द के ऋकारान्त होने से यहाँ भी ङीप् प्रत्यय प्राप्त होता है ।

सूत्र- न षट्स्वस्रादिभ्यः ।

जिन शब्दों की षट् सञ्ज्ञा होती है तथा जो शब्द स्वसृ आदि हैं, उनसे स्त्रीलिङ्ग में ङीप् तथा टाप् प्रत्यय नहीं होते हैं ।

स्वसृ तिसृ चतसृ ननान्दृ दुहितृ यातृ मातृ आदि सात शब्दों मे ङीप् निषेध के कारण मातृ शब्द में भी ङीप् प्रत्यय नहीं होता है ।

स्वसा तिस्रश्चतस्रश्च ननान्दा दुहिता तथा ।

याता मातेति सप्तैते स्वस्रादय उदाहृताः ।।

दीर्घ ऊकारान्त शब्दों में वधू, तनू, पङ्गूः आदि शब्द आते हैं । इन सभी शब्दों की नदी सञ्ज्ञा होने से आट् आगम आदि कार्य पूर्ववत् होंगे ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-4**

क. न षट्स्वस्रादिभ्यः इस सूत्र से किन शब्दों में ङीप् प्रत्यय का निषेध होता है ?

ख. ऋन्नेभ्यो ङीप इस सूत्र से ङीप् किन शब्दों में होता है ?

ग. पञ्चन् शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् होता है अथवा नहीं ?

8.7. सारांश

इस पाठ में हमने अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के साधुत्व की प्रक्रिया का परिचय प्राप्त किया । इस अध्याय में हम दीर्घ आकारान्त शब्दों में रमा तथा सर्वा शब्द की प्रक्रिया में याट् तथा स्याट् आगम के भेद को समझते हैं । स्त्रीलिङ्ग शब्दों में मति शब्द की वैकल्पिक नदी सञ्ज्ञा का विधान विशेष रूप से पठनीय है, जो मति शब्द के दो-दो रूपों की सिद्धि में उपयोगी है ।

8.8. कठिन शब्दावली

ङित्- जिस शब्द में ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, उसे ङित् कहते हैं । जैसे ङे, ङसि, ङस्, ङि इस प्रत्ययों में ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, अतः ये ङित् हैं ।

8.9. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्

ख. याट्

ग. सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. ङिति ह्रस्वश्च

ख. कृति

ग. तिसृ

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. इयङ्

ख. स्त्रीम्/स्त्रियम्

ग. वामि

स्वयं आकलन प्रश्न-4

क. स्वसृ, तिसृ, चतसृ, ननान्दृ, दुहतृ, यातृ, मातृ ।

ख. ऋकारान्त तथा नकारान्त शब्दों से

ग. नहीं

8.10. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

8.11. अभ्यासात्मक-प्रश्न

क. ङिति ह्रस्वश्च सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

ख. रमे, मत्यै, स्त्रियौ- इन रूपों की सिद्धि करो ।

ग. याडापः सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

इकाई-9

अजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण

संरचना

9.1. पाठ का परिचय
9.2. पाठ का उद्देश्य
9.3. अकारान्त तथा आकारान्त शब्द
 9.3.1. ज्ञान शब्द
 9.3.2. कतर शब्द
 9.3.3. श्रीपा शब्द
- स्वयं आकलन प्रश्न-1
9.4. ह्रस्व इकारान्त तथा अन्य शब्द
 9.4.1. वारि शब्द
 9.4.2. दधि शब्द
 9.4.3. प्रद्यो शब्द
 9.4.4. प्ररै शब्द
- स्वयं-आकलन प्रश्न-2
9.5. सारांश
9.6. कठिन शब्दावली
9.7. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर
9.8. सहायक ग्रन्थ
9.9. अभ्यासात्मक-प्रश्न

9.1. पाठ का परिचय

पिछली इकाई में हमने अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का अध्ययन किया । यहाँ हम अजन्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया को समझेंगे । सभी शब्दों की प्रक्रिया के लिए उपयोगी आधारभूत नियम हम अजन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण में जान चुके हैं । यहाँ नपुंसकलिङ्ग शब्दों में जो विशेष कार्य होते हैं उनका प्रतिपादन किया जाएगा ।

9.2. पाठ का उद्देश्य

- अजन्त नपुंसकलिङ्ग सुबन्त पदों का सामान्य ज्ञान
- सुबन्त पदों की प्रकृति(प्रातिपदिक) का ज्ञान
- नपुंसकलिङ्ग शब्दों में सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा के प्रयोग का ज्ञान
- अजन्तों में नपुंसकलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान

9.3. अकारान्त तथा आकारान्त शब्द

यहाँ हम ह्रस्व अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों को जानेंगे जिनमें ज्ञान तथा कतर शब्द प्रमुख हैं । इन शब्दों की प्रक्रिया ह्रस्व अकारान्त राम शब्द के समान होती है तथापि कुछ स्थलों पर प्रक्रिया में भेद प्राप्त होता है । यही यहाँ प्रतिपाद्य विषय है ।

9.3.1. ज्ञान शब्द

ह्रस्व अकारान्त शब्दों की प्रक्रिया तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक ह्रस्व अकारान्त पुँल्लिङ्ग- राम के समान होती है । अतः प्रथमा तथा द्वितीया की प्रक्रिया द्रष्टव्य है ।

ज्ञानम्- ज्ञान + सु

यहाँ पर हमें पुँल्लिङ्ग के समान विसर्ग नहीं प्राप्त होता है, अपितु अन्त में अम् का श्रवण होता है ।

सूत्र- अतोऽम् । अतः अम् ।

ह्रस्व-अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द से परे सु तथा अम् प्रत्यय के स्थान पर अम् आदेश होता है।

उदाहरण- ज्ञान + सु-   सु के स्थान पर अम् आदेश-

ज्ञान + अम् -   पूर्वरूप-

ज्ञानम् ।

ज्ञाने- प्रथमा-द्विवचन में ज्ञान + औ-

यहाँ रूप के अन्त में एकार प्राप्त होता है जो अ + ई- ए गुण सन्धि से प्राप्य है। अतः गुण सन्धि के लिए ईकार की अपेक्षा है-

सूत्र- नपुंसकाच्च।

नपुंसक लिङ्ग शब्द से परो औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश होता है।

उदाहरण- ज्ञान + औ- औ प्रत्यय को शी आदेश करने पर-

ज्ञान + शी- ज्ञान + ई- गुण-

ज्ञाने

ज्ञानानि- प्रथमा-बहुवचन में ज्ञान + जस्-

यहाँ पर तीन नवीन वर्ण प्राप्त हो रहे हैं- अन्त में इकार, नकार तथा दीर्घ आकार। अतः सर्वप्रथम इकार के लिए विधि को जानेंगे-

सूत्र- जश्शसोः शि।

नपुंसक लिङ्ग से परे जस् तथा शस् प्रत्यय के स्थान पर शि आदेश होता है।

ज्ञान + जस्- जस् को शि आदेश करने पर- ज्ञान+ शि- ज्ञान + इ

पुनः नकार प्राप्त करने के लिए विधि के लिए एक सञ्ज्ञा अपेक्षित है-

सूत्र- शि सर्वनामस्थानम् .

शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है।

सूत्र- नपुंसकस्य झलचः।

अजन्त या झलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द को नुम् आगम होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- (अजन्त शब्द) ज्ञान+ शि (सर्वनामस्थान प्रत्यय)- नुम् आगम प्राप्त

जैसे हम पहले जान चुके हैं कि टित् आगम आदि तथा कित् अन्त में होता है। उसी प्रकार नुम् आगम मित् है। अतः यह कहाँ होगा. ऐसी आकाङ्क्षा में हम अग्र सूत्र पढेंगे-

सूत्र- मिदचोऽन्त्यात् परः। मित् अचः अन्त्यात् परः।

मित् आगम शब्द के अन्तिम अच् वर्ण के बाद होता है।

जैसे- ज्ञान + इ- ज्ञान शब्द के अन्तिम अच् अकार से पर में नुम् आगम-

ज्ञान नुम् + इ- ज्ञान न् + इ

सर्वनामस्थान प्रत्यय होने से उपधा को दीर्घ-

ज्ञाना न् + इ-   ज्ञानानि ।

द्वितीया विभक्ति में भी सु- अम्, औ- शी, शस्- शि कार्य पूर्ववत् होने से समान रूप होंगे ।

- **रूप सिद्धि-**

ज्ञानम्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से ज्ञान शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में सु प्रत्यय का विधान हुआ	ज्ञान + सु
अतोऽम्	इस सूत्र से सु प्रत्यय के स्थान पर अम् आदेश हुआ	ज्ञान + अम्
अमि पूर्वः	पूर्वरूप	**ज्ञानम्**

ज्ञाने-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से ज्ञान शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में औ प्रत्यय का विधान हुआ	ज्ञान + औ
औङ आपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश हुआ	ज्ञान + शी
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	शकार का लोप	ज्ञान + ई
आद् गुणः	अकार तथा ईकार के स्थान पर एकार गुण	**ज्ञाने**

ज्ञानानि-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से ज्ञान शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में जस् प्रत्यय का विधान हुआ	ज्ञान + जस्
जश्शसोः शिः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय के स्थान पर शि आदेश हुआ	ज्ञान + शि
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	शकार का लोप	ज्ञान + इ
शि सर्वनामस्थानम्	शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा हुई	
मिदचोऽन्त्यात् परः	इस सूत्र की सहायता से	
नपुंसकस्य झलचः	अजन्त ज्ञान शब्द के अन्तिम अच् अकार से परे नुम् आगम हुआ	ज्ञान + नुम् + इ ज्ञान न् + इ
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ	उपधा अकार को दीर्घ हुआ	ज्ञाना न् + इ **ज्ञानानि**

9.3.2. कतर शब्द

कतर शब्द की प्रक्रिया ह्रस्व अकारान्त होने से यद्यपि ज्ञान की तरह होगी, तथापि प्रथमा-एकवचन में विशेष प्रक्रिया द्रष्टव्य है।

कतरत्- प्रथमा के एकवचन में कतर + सु-

सूत्र- अद्ड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः।

डतर आदि शब्दों के बाद सु तथा अम् प्रत्यय के स्थान पर अद्ड् आदेश होता है।

डतर आदि से डतर, डतम, अन्य, अन्यतर, इतर इन शब्दों का ग्रहण होता है। डतर से डतरच् प्रत्ययान्त तथा डतम से डतमच् प्रत्ययान्त लिया जाता है।

उदाहरण- (डतर प्रत्ययान्त)कतर + सु- सु के स्थान पर अद्ड् आदेश-

कतर + अद्ड्- कतर + अद्

सूत्र- टेः।

डित् प्रत्यय पर में होने पर भ-सञ्ज्ञक के टि भाग का लोप होता है।

(भसञ्ज्ञक)कतर + अद् (डित् प्रत्यय)- कतर के टि भाग अन्तिम अकार का लोप- कतर् +अद्- कतरद् ।

उसी प्रकार कतम- कतमद्, अन्य- अन्यद्, अन्यतर- अन्यतरद्, इतर- इतरद् समझने चाहिएं ।

➢ **रूप सिद्धि-**

कतरद्-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से कतर शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में सु प्रत्यय का विधान हुआ	कतर + सु
अतोऽम्	इस सूत्र से सु प्रत्यय के स्थान पर अम् आदेश प्राप्त हुआ	
अद्ड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः	इस सूत्र से सु प्रत्यय के स्थान पर अद्ड् आदेश	कतर + अद्ड्
टेः	इस सूत्र से टि-अकार के स्थान पर लोप आदेश	कतर् + अद् **कतरद्**

9.3.3. श्रीपा शब्द

दीर्घ आकारान्त शब्दों में श्रीपा आदि शब्द आते हैं । इन शब्दों के रूप ह्रस्व अकारान्त के समान होते हैं, क्योंकि नपुंसक लिङ्ग शब्दों में दीर्घ वर्ण को ह्रस्व होता है ।

सूत्र- ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ।

नपुंसक लिङग अजन्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होता है ।

उदाहरण- नपुंसक लिङ्ग प्रातिपदिक श्रीपा- ह्रस्व करने पर- श्रीप

श्रीप + सु- ज्ञान शब्द के समान सु को अम्- श्रीप + अम्- श्रीपम् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. ज्ञाने इस प्रयोग में किस प्रत्यय के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ख. ज्ञानानि यहाँ नुम् आगम किस सूत्र से होता है ?

ग. नपुंसकलिङ्ग शब्दों में शि की कौन सी सञ्ज्ञा होती है ?

घ. डतर आदि पाँच शब्द लिखो ।

9.4. ह्रस्व इकारान्त तथा अन्य शब्द

ह्रस्व इकारान्त शब्दों में वारि, दधि, अक्षि, सक्थि आदि शब्द आते हैं।

9.4.1. वारि शब्द

वारि शब्दों में भी पूर्ववत् प्रथमा तथा द्वितीया में समान रूप होते हैं। तथापि ह्रस्व अकारान्त शब्दों से भिन्न प्रक्रिया यहाँ द्रष्टव्य है।

वारि - प्रथमा-एकवचन में- वारि + सु

यहाँ इष्ट रूप में हमें रामः के समान विसर्ग या ज्ञानम् के समान अम् प्राप्त नहीं होता है। अतः सु प्रत्यय के लोप के लिए अपेक्षित विधि-

सूत्र- स्वमोर्नपुंसकात्।

नपुंसक लिङ्ग प्रातिपदिक से परे सु तथा अम् प्रत्यय का लोप होता है।

उदाहरण- (नपुंसक लिङ्ग प्रातिपदिक) वारि + सु- सु प्रत्यय का लोप- वारि।

इसी प्रकार- वारि+ अम्-अम् प्रत्यय का लोप- वारि।

वारिणी- प्रथमा-द्विवचन में- वारि + औ-

यहाँ पर हम दो वर्ण नए देख सकते हैं- अन्त में ईकार तथा णकार। ईकार ज्ञाने रूप के समान शी से प्राप्त होगा।

वारि + औ- औ के स्थान पर शी आदेश करने पर-

वारि + शी-

वारि + ई-

णकार नकार के स्थान पर होता है, यह हम पहले जान चुके हैं। अतः नकार के लिए विधि-

सूत्र- इकोऽचि विभक्तौ। इकः अचि विभक्तौ।

नपुंसक लिङ्ग में इगन्त अङ्ग को नुम् आगम होता है यदि अजादि विभक्ति परे हो।

उदाहरण- (नपुंसकलिङ्ग)वारि + ई (अजादि विभक्ति)-

वारि को नुम् आगम- वारि + न् (नुम्)+ ई

नकार को णकार- वारि + ण् + ई- वारिणी।

वारीणि- प्रथमा- बहुवचन में- वारि +जस्-

वारि+ शि- वारि + इ-

वारि + न् (नुम्)+ इ

णत्व एवं दीर्घ- वारीणि

इसी प्रकार सर्वत्र अजादि विभक्ति परे होने पर नुम् आगम तथा णत्व-

वारिणे- ङे, वारिणः- ङसि ङस्, वारिणि- ङि ।

वारिणा-

वारि + टा- ह्रस्व इकारान्त की घि सञ्ज्ञा होने से टा को ना प्राप्त- घेर्ङिति

अजादि विभक्ति परे होने से नुम् आगम प्राप्त- इको चि विभक्तौ

विप्रतिषेध होने पर पर कार्य ना आदेश- वारि + ना- वारिणा

वारिणे-

वारि + ए (ङे)- ह्रस्व इकारान्त की घि सञ्ज्ञा होने से गुण प्राप्त- घेर्ङिति

अजादि विभक्ति परे होने से नुम् आगम प्राप्त- इको चि विभक्तौ

वार्तिक- वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन ।

वृद्धि, औत्व, तृज्वद्भाव, गुण इन कार्यों के साथ नुम् की प्राप्ति होने पर नुम् आगम पूर्वविप्रतिषेध से होता है ।

नुम् आगम करने पर- वारि न्(नुम्)+ ए- वारि ण् + ए- वारिणे ।

वारीणाम्- वारि + आम् -

ह्रस्व इकारान्त को नुट् आगम प्राप्त- ह्रस्वनद्यापो नुट्

अजादि विभक्ति परे होने से नुम् आगम प्राप्त- इको चि विभक्तौ

पूर्वविप्रतिषेध से नुट् आगम - नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन-

वारि + न्(नुट्)+ आम्

णत्व एवं दीर्घ- वारीणाम् ।

- **रूप सिद्धि-**

वारि-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से वारि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	

स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में सु प्रत्यय का विधान हुआ	वारि+ सु
स्वमोर्नपुंसकात्	इस सूत्र से सु प्रत्यय के स्थान पर लुक् आदेश हुआ	**वारि**

वारिणी-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से वारि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में औ प्रत्यय का विधान हुआ	वारि + औ
औङ आपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश हुआ	वारि + शी
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	शकार का लोप	वारि + ई
मिदचोऽन्त्यात् परः	इस सूत्र की सहायता से	
इको चि विभक्तौ	इगन्त वारि शब्द के अन्तिम अच् इकार से परे नुम् आगम हुआ	वारि + नुम् + इ- वारि न् + इ
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये पि	नकार के स्थान पर णकार आदेश हुआ	वारि + ण् + ई- **वारिणी**

9.4.2. दधि शब्द

दधि शब्द ह्रस्व इकारान्त होने से वारि के समान है । तथापि कुछ स्थलों पर विशेष प्रक्रिया द्रष्टव्य है ।

दध्ना – तृतीया एकवचन में दधि + आ (टा)-

सूत्र- अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः । अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् अनङ् उदात्तः ।

अस्थि, दधि, सक्थि, अक्षि शब्दों को अनङ् आदेश होता है, यदि टा आदि अजादि प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- दधि + आ (टा)- इकार के स्थान पर अनङ् आदेश-

दध् अनङ् + आ-   दध् अन् + आ

दध्ना इस रूप में हमें धवर्ण के बाद अकार प्राप्त नहीं होता है । अतः अकार के लोप के लिए विधि-

सूत्र- अल्लोपोऽनः । अल्लोपः अनः ।

भ-सञ्ज्ञक अङ्ग के अन् भाग के अकार का लोप होता है ।

(भसञ्ज्ञक अङ्ग) दध् + अन् + आ-   अकार का लोप-

दध् + न् + आ-   दध्ना ।

इसी प्रकार सर्वत्र भ सञ्ज्ञा होने पर अकार का लोप होगा ।

दध्ने- ङे, दध्नः- ङसि ङस्, दध्नाम्- आम्

दध्नि-दधनि- सप्तमी एकवचन में दधि + ङि-   दध् + अन् + इ

यहाँ पर हम देख सकते हैं कि अकार का लोप विकल्प से हुआ है –

सूत्र- विभाषा ङिश्योः ।

भ-सञ्ज्ञक अङ्ग के अन् भाग के अकार का लोप विकल्प से होता है, यदि ङि प्रत्यय या शी परे हो ।

(भसञ्ज्ञक अङ्ग) दध् + अन् + इ(ङि)-   विकल्प से अकार का लोप-

दध् न् + इ -   दध्नि

अकार के लोप के अभाव में-   दध् अन् + इ- दधनि

ह्रस्व इकारान्त के समान ही ह्रस्व उकारान्त शब्दों- मधू, सुनु, बहु, मृदु आदि की प्रक्रिया होती है।

- **रूप सिद्धि-**

दध्ना-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से दधि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से टा प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	तृतीया विभक्ति में टा प्रत्यय का विधान हुआ	दधि + टा

		दधि + आ
अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः	इस सूत्र से दधि के इकार के स्थान पर अनङ् आदेश हुआ	दध् अनङ् + आ दध् अन् + आ
अल्लोपो नः	अन् के अकार का लोप हुआ	दध् न् + आ **दध्ना**

9.4.3. **प्रद्यो शब्द**

ओकारान्त शब्दों में प्रद्यो यहाँ द्रष्टव्य है ।

प्रद्यु- प्रद्यो प्रातिपदिक को नपुंसक लिङ्ग होने से ह्रस्व प्राप्त- ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य

सूत्र- एच इग्घ्रस्वादेशे ।

एच् वर्णों को ह्रस्व प्राप्त होने पर इक् वर्ण ही होते हैं । (एच्) ए ओ ऐ औ के स्थान पर क्रमशः (इक्) इ उ ऋ लृ वर्ण आदेश होते हैं ।

प्रद्यो शब्द में ओकार के स्थान पर ह्रस्व उकार आदेश- प्रद्यु- प्रद्यु + सु- सु लुक्- प्रद्यु ।

इसके बाद ह्रस्व उकारान्त के समान प्रक्रिया होता है - प्रद्यु प्रद्युनी प्रद्यूनि ।

9.4.4. प्ररै शब्द

प्रकृष्टः राः- धनं यस्य तत् , यहाँ पर बहुव्रीहि समाम में प्ररै प्रातिपदिक को नपुंसक लिङ्ग में करने पर ह्रस्व इकार होता है- प्ररि । तत्पश्चात् वारि के समान रूप होते हैं- प्ररि प्ररिणी प्ररीणि रै शब्द में हलादि विभक्ति में आत्व विधि हम पुंल्लिङ्ग में पढ चुके हैं ।

जैसे- **प्रराभ्याम्-** प्ररै शब्द को ह्रस्व करने पर -

प्ररि + भ्याम् (हलादि विभक्ति)- इकार के स्थान पर आकार आदेश- रायो हलि **प्रराभ्याम्** ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-2**

घ. वारि इस पद में सु प्रत्यय का लुक् किस सूत्र से होता है ?

ङ. दध्ना यहाँ इकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

च. मधु- तृतीया, दधि- पञ्चमी, निर्दिष्ट विभक्तियों में शब्द-रूप लिखो ।

9.5. सारांश

इस पाठ में हमने अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के साधुत्व की प्रक्रिया का परिचय प्राप्त किया। अजन्त नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति में होने वाले समान रूपों की प्रक्रिया प्रतिपाद्य है। इस प्रकार इस पाठ में सभी सुबन्तों की प्रक्रिया का ज्ञान होता है तथा बहुत सी सञ्ज्ञाओं का परिचय भी मिलता है, जो अग्रिम पाठों के विषयों के प्रतिपादन में भी उपयोगी है।

9.6. कठिन शब्दावली

सर्वनामस्थान- यह एक सञ्ज्ञा है जो नपुंसकलिङ्ग शब्दों में जस् के स्थान पर हुए शि आदेश की होती है।

मित्- म इत् यस्य अर्थात् जिसका मकार इत् हो। जैसे नुम् में मकार की इत् सञ्ज्ञा होती है। अतः नुम् मित् है।

9.7. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

घ. औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश।

ङ. ह्रस्वो नपुंसकस्य झलचः

च. सर्वनामस्थान

छ. डतर डतम अन्य अन्यतर इतर

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. स्वमोर्नपुंसकात्

ख. अनङ्

ग. मधु- तृतीया- मधुना मधुभ्याम् मधुभिः, दधि- पञ्चमी- दध्नः दधिभ्याम् दधिभ्यः।

9.8. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी।

9.9. अभ्यासात्मक-प्रश्न

घ. ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

ङ. ज्ञानानि, वारि, दध्ना- इन रूपों की सिद्धि करो।

च. अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

इकाई-10

हकारान्त-वकारान्त-रेफान्त-मकारान्त शब्द

(हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)

संरचना

10.1. पाठ का परिचय

10.2. पाठ का उद्देश्य

10.3. हकारान्त शब्द

- 10.3.1. लिह्-शब्द
- 10.3.2. दुह् शब्द
- 10.3.3. द्रुह् शब्द
- 10.3.4. विश्ववाह् शब्द
- 10.3.5. अनडुह् शब्द
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

10.4. वकारान्त तथा रेफान्त शब्द

- 10.4.1. सुदिव् शब्द
- 10.4.2. चतुर् शब्द
- स्वयं आकलन प्रश्न-2

10.5. मकारान्त शब्द

- 10.5.1. प्रशाम् शब्द
- 10.5.2. किम् शब्द
- 10.5.3. इदम् शब्द
- स्वयं आकलन प्रश्न-2

10.6. सारांश

10.7. कठिन शब्दावली

10.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

10.9. सहायक ग्रन्थ

10.10. अभ्यासात्मक-प्रश्न

10.1. पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में हलन्त शब्दों में कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन होगा। हलन्त- जिन शब्दों के अन्त में हल्- व्यञ्जन वर्ण हों। इस अध्याय के कई विभाग किए गये हैं। जैसे- हकारान्त शब्द, वकारान्त शब्द आदि। प्रत्येक विभाग में आने वाले विभिन्न शब्दों की सिद्धि में उपयोगी प्रक्रिया तथा रूप सिद्धि प्रदर्शित की गई है।

10.2. पाठ का उद्देश्य

- हलन्त शब्दों का सामान्य परिचय
- हकारान्त-वकारान्त-मकारान्त-रेफान्त शब्दों की प्रक्रिया का बोध कराना
- समान हलन्त शब्दों की प्रक्रिया में समानता का बोध कराना
- समान हलन्त शब्दों की प्रक्रिया में भेद का बोध कराना
- पूर्व पाठों में पढी गई सञ्ज्ञाओं (भ, पद, सर्वनामस्थान आदि) का हलन्त शब्दों में प्रयोग बताना

10.3. हकारान्त शब्द

हकारान्त शब्दों में लिह्, दुह्, ष्णुह्, विश्ववाह् आदि शब्दों की प्रक्रिया का अवलोकन किया जाएगा।

10.3.1. लिह्-शब्द-

लेढि – चाटता है, इस अर्थ में लिह् धातु से क्विप् (कृत् प्रत्यय) करने पर लिह् प्रातिपदिक बनता है। इस के रूपों में हलादि विभक्ति परे होने पर विशेष प्रक्रिया होती है।

लिट्-लिड्- लिह् प्रातिपदिक से प्रथमा एकवचन में – लिह्+ स्(सु)-

अपृक्त प्रत्यय सकार का लोप- लिह्

सूत्र- हो ढः।

हकार के स्थान पर ढकार आदेश होता है, यदि हकार पद के अन्त में हो या झल् वर्ण पर में हो।

उदाहरण- लिह् - पदान्त में होने से हकार के स्थान पर ढकार- लिढ्

पद के अन्त में होने से ढकार को जश् डकार- लिड्

अवसान होने से विकल्प से डकार को चर् टकार- लिट् ।

अजादि प्रत्यय परे होने पर हकार को ढकार नहीं होता है । अतः लिहौ- औ, लिहः-जस्, लिहम्- अम्, लिहा- टा, लिहे- ङे, लिहः- ङसि ङस्, लिहोः- ओस्, लिहाम्- आम्, लिहि- ङि ।
दूसरी तरफ हलादि प्रत्यय में ढकार होने से- लिड्भ्याम्- भ्याम्, लिड्भिः- भिस्, लिड्भ्यः- भ्यस्, लिट्त्सु- सुप् ।

- **रूप सिद्धि-**

लिट्- ड्-

सूत्र	कार्य	स्थिति
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से लिह् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	लिह् + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	लिह् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार का लोप हुआ	लिह्
हो ढः	पद के अन्त में हकार को ढकार आदेश हुआ	लिढ्
झलां जशोऽन्ते	पद के अन्त में ढकार को जश् वर्ण डकार आदेश हुआ	लिड्
वावसाने	अवसान होने से डकार को विकल्प से चर् वर्ण टकार आदेश हुआ	**लिट्**
	चर् के अभाव में जश् वर्ण डकार	**लिड्**

10.3.2. दुह् शब्द

धुक्-धुग्- दुह् प्रातिपदिक से प्रथमा एकवचन में- दुह् + स्(सु)-
अपृक्त प्रत्यय सकार का लोप- दुह्
दुह् हकारान्त होने से पूर्व सूत्र से हकार को ढकार प्राप्त-

सूत्र- दादेर्धातोर्घः ।
उपदेश अवस्था में जो धातु दकारादि होती है, उसके हकार के स्थान पर घकार होता है, यदि हकार पदान्त में हो या झल् वर्ण परे हो ।

उदाहरण- (दकारादि धातु) दुह् - ढकार को बाध कर पदान्त हकार को घकार आदेश- दुघ्

सूत्र- एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ।
धातु का अवयव यदि एकाच् झषन्त हो तो उसके बश् वर्ण के स्थान पर भष् आदेश होता है, यदि बश् पदान्त में हो अथवा सकार या ध्व शब्द परे हो । बश- ब, ग, ड, द को भष्- भ, घ, ढ, ध क्रमशः आदेश होते हैं । सामान्यतः वर्ग का चतुर्थ वर्ण यदि अन्त में हो, तथा आदि वर्ण वर्ग का तृतीय हो, तब तृतीय के स्थान पर चतुर्थ वर्ण होता है ।

उदाहरण- दुघ्- पदान्त में झष् होने से बश्- दकार को भष्- धकार आदेश- धुघ्

पद के अन्त में होने से घकार को जश् गकार- धुग्

अवसान होने से विकल्प से गकार को चर् ककार- धुक् ।

उक्त दोनों कार्य (हकार को घकार तथा बश् को भष्) पदान्त या झल् वर्ण परे होने पर ही होंगे ।
अतः- धुग्भ्याम्- भ्याम्, धुग्भिः-भिस्, धुग्भ्यः-भ्यस्
धुक्षु- दुह् + सु (सुप्)- घत्व- दुघ् + सु- भष्- धुघ+ सु- चर् - धुक् + सु-
षत्व- धुक् + षु- धुक्षु ।

10.3.3. द्रुह्-शब्द

ध्रुक्-ग् ध्रुट्-ड् - द्रुह् + स्- अपृक्त सकार का लोप- द्रुह्
द्रुह् शब्द में दकारादि धातु होने से हकार को घकार प्राप्त-

सूत्र- वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ।
द्रुह्, मुह्, ष्णुह्, ष्णिह् इन धातुओं के हकार को विकल्प से घकार आदेश होता है ।

उदाहरण- द्रुह्- हकार को विकल्प से घकार आदेश- द्रुघ-

बश् दकार को भष् धकार आदेश- ध्रुध्-

जश् तथा चर् सन्धि के विकल्प से- ध्रुक् ध्रुग् ।

जिस पक्ष में हकार को घकार नहीं होगा, उस पक्ष में पूर्व प्राप्त ढकार- ध्रुट् ध्रुड् ।

इसी प्रकार मुह् आदि शब्दों में हकार को घ तथा ढ होने से- मुक् मुग् तथा मुट् मुड् ।

- **रूप सिद्धि-**

धुक्- ग्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से दुह् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	दुह् + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	दुह्+ स्
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार का लोप हुआ	दुह्
हो ढः	पद के अन्त में हकार को ढकार प्राप्त आदेश हुआ	
दादेर्धातोर्घः	पद के अन्त में हकार को घकार आदेश हुआ	दुघ्
एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः	अन्त में झष् वर्ण होने से बश् वर्ण दकार को भष् वर्ण धकार हुआ	धुघ्
झलां जशोऽन्ते	पद के अन्त में घकार को जश् वर्ण गकार आदेश हुआ	धुग्
वावसाने	अवसान होने से गकार को विकल्प से चर् वर्ण ककार आदेश हुआ	**धुक्**
	चर् के अभाव में जश् वर्ण गकार	**धुग्**

10.3.4. विश्ववाह्-शब्द

विश्ववाह् शब्द में भी हकारान्त होने से पूर्ववत् कार्य प्राप्त होते हैं ।

विश्ववाट्-ड्- प्रथमा एकवचन में विश्ववाह् + स् (सु)- विश्ववाह् -

पूर्ववत् हकार के स्थान पर ढकार - विश्ववाढ्-

विश्ववाड्-विश्ववाट्

कुछ रूपों में विशेष प्रक्रिया यहाँ द्रष्टव्य है जहाँ हमें औकार का श्रवण होता है।

विश्वौहः – द्वितीया बहुवचन में विश्ववाह् + अस्(शस्)-

यहाँ पर इष्ट रूप सिद्ध करने के लिए हम एक सञ्ज्ञा को पहले जानेंगे।

सूत्र- इग्यणः सम्प्रसारणम्।

यण् वर्ण के स्थान में प्रयुक्त होने वाले इक् वर्ण की सम्प्रसारण सञ्ज्ञा होती है।

जैसे यदि य, व, र, ल को क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ वर्ण आदेश होते हैं , तब इ, उ, ऋ, लृ वर्णों की सम्प्रसारण सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण के लिए हम यहाँ अग्रिम विधि पढेंगे-

सूत्र- वाह ऊठ्।

भसञ्ज्ञक वाह् शब्द को ऊठ् सम्प्रसारण होता है।

उदाहरण- विश्ववाह् + अस् (शस्)- यहाँ पर असर्वनामस्थान अजादि प्रत्यय शस् परे होने से विश्ववाह् की भ सञ्ज्ञा- यचि भम्

वाह् शब्द के वकार के स्थान पर सम्प्रसारण ऊठ्- विश्व ऊठ् आह् + अस्

सम्प्रसारण होने पर यहाँ एक सार्वत्रिक नियम जानना अपेक्षित है।

सूत्र- सम्प्रसारणाच्च।

सम्प्रसारण वर्ण के बाद में अच् वर्ण होने पर पूर्वरूप होता है।

उदाहरण- विश्व ऊ + आ ह् + अस्-

सम्प्रसारण वर्ण ऊ तथा अच् वर्ण आ के स्थान पर पूर्वरूप ऊ- विश्व + ऊह् + अस्

ऊठ् (ऊ) परे होने पर वृद्धि सन्धि औ – एत्येधत्यूठ्सु- विश्वौह् + अस्

विश्वौहस्- विश्वौहः।

इसी प्रकार भ सञ्ज्ञा (अजादि प्रत्यय) होने पर सर्वत्र सम्प्रसारण, पूर्वरूप तथा वृद्धि कार्य होते हैं । जैसे- विश्वौहा- टा, विश्वौहे- ङे, विश्वौहः- ङसि ङस्, विश्वौहोः- ओस्, विश्वौहाम्- आम्, विश्वौहि- ङि ।

- **रूप सिद्धि-**

विश्वौहः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से विश्ववाह् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	विश्ववाह् + शस्
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	शकार का लोप हुआ	विश्ववाह् + अस्
इग्यणः सम्प्रसारणम्	यण् वकार के स्थान पर भावी ऊकार की सम्प्रसारण सञ्ज्ञा हुई	
वाह ऊठ्	यण् वर्ण के स्थान पर सम्प्रसारण इक् वर्ण ऊठ् हुआ	विश्व ऊठ् आह् + अस् विश्व ऊ आह् + अस्
सम्प्रसारणाच्च	सम्प्रसारण ऊकार तथा आकार को पूर्वरूप हुआ	विश्व ऊह् + अस्
एत्येधत्यूठसु	अकार तथा ऊकार के स्थान पर वृद्धि आदेश हुआ	विश्वौह् + अस् विश्वौहस्
	सकार को रुत्व विसर्ग	विश्वौहः

10.3.5. अनडुह्-शब्द

अनड्वान्- अनडुह् प्रातिपदिक से प्रथमा एकवचन में- अनडुह् + स्(सु)-

यहाँ इष्ट रूप में हमे दो नवीन वर्ण प्राप्त हो रहे हैं- आ तथा न । अतः इन के निमित्त अग्रिम विधि जाननी चाहिए-

सूत्र- चतुरनडुहोरामुदात्तः । चतुरनडुहोः आम् उदात्तः ।

चतुर् तथा अनडुह् शब्द को उदात्त आम् आगम होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- अनडुह् + स् (सर्वनामस्थान प्रत्यय सु)- अन्तिम अच् उकार से परे आम् आगम- अनडु आम् ह् + स्-

सूत्र- सावनडुहः - सौ अनडुहः ।

सु प्रत्यय परे होने पर अनडुह् शब्द को नुम् आगम होता है ।

उदाहरण- अनडु आ ह् + स्- सु प्रत्यय परे होने पर अन्तिम अच् आकार के बाद नुम् आगम- अनडु आ न् (नुम्) ह् + स्

अपृक्त प्रत्यय सकार का लोप- अनडु आन् ह्

संयोगान्त हकार का लोप- अनडु आन्

उकार के स्थान पर यण् वकार- अनड् व् आन्- अनड्वान् ।

इस प्रकार सर्वनामस्थान प्रत्यय(सु औ जस् अम् औट्) परे होने पर आम् आगम होगा । जैसे- अनड्वाहौ- औ, अनड्वाहः- जस्, अनड्वाहम्- अम्, अनड्वाहौ- औट् । अन्यत्र असर्वनामस्थान में सामान्य वर्ण सम्मेलन ही होगा । जैसे - अनडुहः- शस्, अनडुहा- टा आदि ।

अनडुद्भ्याम्- तृतीया द्विवचन में अनडुह् + भ्याम्-

सूत्र- वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ।

वसु, स्रंसु, ध्वंसु तथा अनडुह् शब्दों के अन्त में दकार आदेश होता है, पदान्त होने पर ।

उदाहरण- अनडुह् + भ्याम्- हलादि असर्वनामस्थान प्रत्यय भ्याम परे होने से पद सञ्ज्ञा

अतःपद के अन्त में होने से हकार के स्थान पर दकार आदेश- अनडुद् + भ्याम्- अनडुद्भ्याम् ।

इसी प्रकार पदान्त (हलादि प्रत्यय) होने पर दकार होगा । जैसे- अनडुद्भिः, अनडुद्भ्यः, अनडुत्सु

हे अनड्वन्- सम्बोधन की प्रथमा में अनडुह् + स् (सु सम्बुद्धि प्रत्यय)-

सूत्र- अम् सम्बुद्धौ ।

चतुर् तथा अनडुह् शब्द को अम् आगम होता है, यदि सम्बुद्धि प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण-

अनडुह् + स् (सम्बुद्धि प्रत्यय)-   अन्तिम अच् उकार के बाद अम् आगम-   अनडु अम् ह् + स्

अन्तिम अच् अकार के बाद नुम् आगम-   अनडु अ न्(नुम्) ह् + स्

अपृक्त प्रत्यय सकार का लोप-   अनडु अन् ह्

संयोगान्त हकार का लोप-   अनडु अन्

उकार के स्थान पर यण् वकार-   अनड् व् अन्-   **अनड्वन्** ।

- **रूप सिद्धि**

अनड्वान्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से अनडुह् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	अनडुह् + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	अनडुह्+ स्
चतुरनडुहोरामुदात्तः	अनडुह् शब्द को आम् आगम हुआ	अनडु आम् ह्

		+स् अनडु आ ह् + स्
सावनडुहः	सु प्रत्यय परे होने पर अनडुह् शब्द को नुम् आगम हुआ	अनडु आ नुम् ह् + स् अनडु आ न् ह् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार का लोप हुआ	अनडु आ न् ह्
संयोगान्तस्य लोपः	पद के अन्त में संयोगान्त हकार को लोप आदेश हुआ	अनडु आ न्
इको यणचि	उकार को यण् वकार आदेश हुआ	अनड् व् आन् **अनड्वान्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. हकार के स्थान पर ढकार आदेश कब होता है ?

ख. किन धातुओं में हकार के स्थान पर घकार आदेश होता है ?

ग. सम्प्रसारण सञ्ज्ञा किन वर्णों की होती है ?

घ. लिट्, धुक्, विश्वौहः, अनड्वान्- इन पदों के प्रातिपदिक बताएं।

10.4. वकारान्त शब्द तथा रेफान्त शब्द

यहाँ वकारान्त शब्दों में हम सुदिव् शब्द की प्रक्रिया को जानेंगे।

10.4.1. सुदिव् शब्द

सुद्यौः- प्रथमा एकवचन में सुदिव् + स् (सु)-

सूत्र- दिव औत्।

दिव् शब्द में औकार आदेश होता है, यदि सु प्रत्यय परे हो।

उदाहरण-

सुदिव् + स् (सु) - अन्तिम वर्ण वकार के स्थान पर औकार आदेश- सुदि औ + स्

यण् सन्धि करने पर इकार को यकार आदेश- सुद् य् औ + स्- सुद्यौस्- **सुद्यौः**।

अन्यत्र सामान्य वर्णसम्मेलन होने पर- सुदिवौ, सुदिवः आदि रूप होते हैं।

सुद्युभ्याम्- तृतीया द्विवचन में सुदिव् + भ्याम् –

सूत्र- दिव उत्।

दिव् शब्द को उकार अन्तादेश होता है।

उदाहरण- सुदिव् + भ्याम् -

हलादि प्रत्यय परे होने पर अन्तिम वकार को उकार आदेश- सुदि उ + भ्याम्

यण् सन्धि से इकार को यकार- सुद् य् उ + भ्याम्- सुद्युभ्याम्।

- **रूप सिद्धि-**

सुद्यौः-

सूत्र	कार्य	स्थिति
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से सुदिव् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	सुदिव् + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	सुदिव् + स्
दिव औत्	दिव् के अन्त में वकार को औकार हुआ	सुदि औ + स्
इको यणचि	इकार को यण् यकार आदेश हुआ	सुद् य् औ + स्
	सकार को रुत्व विसर्ग	**सुद्यौः**

10.4.2. चतुर् शब्द

रेफान्त शब्दों में उदाहरण के रूप में चतुर् शब्द की प्रक्रिया द्रष्टव्य है।

चत्वारः- प्रथमा बहुवचन में- चतुर् + अस् (जस्)- सर्वनामस्थान प्रत्यय जस् परे होने से आम् आगम- चतु आम् र् + अस्

यण् सन्धि- चत् व् आ र्+ अस्- चत्वारः

चतुर्णाम् – षष्ठी बहुवचन में चतुर् + आम् –

यहाँ पर रूप में णकार प्राप्त हो रहा है जो नकार के स्थान पर होता है। अतः नकार की प्राप्ति के लिए विधि-

सूत्र- षट्चतुर्भ्यश्च।

षट् सञ्ज्ञक शब्दों तथा चतुर् शब्द से परे आम् प्रत्यय को नुट् आगम होता है।

उदाहरण-

चतुर् + आम् - टित् होने से आम् प्रत्यय के आदि में नुट् आगम- चतुर् + न् (नुट्) + आम्

रेफ के बाद नकार होने से नकार को णकार- रषाभ्यां नो णः समानपदे- चतुर् ण्+ आम्

रेफ के बाद णकार को द्वित् व- अचो रहाभ्यां द्वे- चतुर्ण्णाम्।

चतुर्षु- सप्तमी बहुवचन में चतुर् + सुप्- रेफ के बाद खर् सकार होने से रेफ को विसर्ग प्राप्त- खरवसानयोर्विसर्जनीयः

सूत्र- रोः सुपि।

सुप् परे होने पर रु के रेफ को ही विसर्ग होता है, अन्य के रेफ को नहीं।

चतुर् + सुप्- रु का रेफ न होने से विसर्ग आदेश का निषेध- चतुर् + सु-

सकार को षकार आदेश- चतुर् + षु

रेफ के बाद षकार को द्वित्व प्राप्त- अचो रहाभ्यां द्वे-

सूत्र- शरोऽचि । शरः अचि ।

शर् वर्ण को द्वित्व नहीं होता है, यदि अच् वर्ण परे हो ।

चतुर् + षु-   अच् उकार परे होने से शर् वर्ण षकार को द्वित्व का निषेध- चतुर्षु ।

- **रूप सिद्धि-**

चत्वारः-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से चतुर् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	जस् प्रत्यय का विधान हुआ	चतुर् + जस्
चुटू	जकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	जकार का लोप हुआ	चतुर् + अस्
चतुरनडुहोरामुदात्तः	अनडुह् शब्द को आम् आगम हुआ	चतु आम् र्+ अस् चतु आ र्+ अस्
इको यणचि	इक् वर्ण उकार को यण् वर्ण वकार आदेश हुआ	चत् व् आ र् + अस् चत्वारस्
	सकार को रुत्व विसर्ग/	चत्वारः

चतुर्षु-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से चतुर् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सुप् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	

स्वौजसमौट्.....	सप्तमी विभक्ति में सुप् प्रत्यय का विधान हुआ	चतुर् + सुप्
हलन्त्यम्	पकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	पकार का लोप हुआ	चतुर् + सु
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग प्राप्त हुआ	
रोः सुपि	रु का रेफ न होने से रेफ को विसर्ग आदेश का निषेध हुआ	चतुर् + सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	चतुर् + षु
अचो रहाभ्यां द्वे	रेफ के बाद षकार को द्वित्व प्राप्त हुआ	
शरोऽचि	शर् वर्ण षकार के द्वित्व का निषेध हुआ	**चतुर्षु**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क.दिव औत् इस सूत्र का कार्य लिखो।

ख. सुदिव् + भ्याम् यहाँ वकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ग. चतुर् + आम् यहाँ आगम तथा आगम विधायक सूत्र लिखो।

घ. चतुर्षु षकार के द्वित्व का निषेध किस सूत्र से होता है?

10.5. मकारान्त शब्द

मकारान्त शब्दों में प्रशाम्, किम्, इदम् शब्दों की प्रक्रिया अवलोकनीय है।

10.5.1. प्रशाम् शब्द

प्रशान्- प्रथमा एकवचन में- प्रशाम् + स्(सु)-

अपृक्त सकार का लोप- प्रशाम्

सूत्र- मो नो धातोः।

पदान्त में धातु के मकार के स्थान पर नकार आदेश होता है।

उदाहरण- प्रशाम् + स्- पदान्त मकार के स्थान पर नकार आदेश- प्रशान्।

अन्यत्र पदान्त न होने पर- प्रशामौ-औ, प्रशामः आदि रूप होंगे । भ्याम् आदि में पद सञ्ज्ञा होती है । अतः पदान्त मकार होने से नकार होता है - प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः आदि ।

10.5.2. किम् शब्द

किम् शब्द सर्वनाम है । अतः पहले पढे हुए सर्वनाम कार्य यहाँ होते हैं ।

कः- प्रथमा एकवचन में किम् + स् (सु)-

सूत्र- किमः कः ।

किम् शब्द के स्थान पर क आदेश होता है यदि विभक्ति परे हो ।

उदाहरण- किम्+ स् (सु)- सु विभक्ति परे होने से किम् के स्थान पर क आदेश- क + स्- कः ।

इसी प्रकार सभी विभक्तियों में क आदेश होता है । जैसे- कौ- क + औ, के- क+ ई(शी) आदि । चतुर्थी में स्मै, पञ्चमी में स्मात्, सप्तमी में स्मिन् आदेश तथा षष्ठी में सुट् आगम होने से कस्मै, कस्मात्, कस्मिन् तथा केषाम् रूप होते हैं ।

10.5.3. इदम्-शब्द

इदम् शब्द भी सर्वनाम शब्द है । अतःयहाँ स्मै, शी, स्मात् आदि कार्य पूर्ववत् होते हैं । तथापि कुछ कार्य विशेष हैं-

अयम्- प्रथमा एकवचन में इदम् + स् (सु)-

हम पहले पढ चुके हैं- त्यद् आदि शब्दों में अकार अन्त आदेश होता है । त्यदादि शब्दों में इदम् भी आता है । अतः-

इदम् शब्द के मकार के स्थान पर अकार आदेश प्राप्त-

सूत्र- इदमो मः ।

इदम् शब्द के मकार के स्थान पर मकार ही आदेश होता है ।

उदाहरण- इदम् + स् (सु)- मकार के स्थान पर मकार आदेश- इदम् + स्

सूत्र- इदोऽय् पुंसि ।

पुंल्लिङ्ग में इदम् शब्द के इद् भाग के स्थान पर अय् आदेश होता है यदि सु प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- इदम् + स् (सु)- इद् भाग के स्थान पर अय् आदेश- अय् + अम् + स्

अपृक्त सकार का लोप- इदम्।

इमौ- प्रथमा द्विवचन में इदम् + औ- इदम् शब्द के मकार के स्थान पर अकार आदेश-

इद अ + औ

पूर्व तथा उत्तर अकार के स्थान पर पररूप- अतो गुणे- इद + औ-

सूत्र- दश्च।
इदम् शब्द के दकार के स्थान पर मकार आदेश होता है।
उदाहरण- इद + औ- दकार के स्थान पर मकार- इम + औ- इमौ।

इसी प्रकार इदम्+ जस्- इदम् + ई (शी)- इद अ + ई- इद+ई-

इम+ ई- इमे।

अनेन- तृतीया एकवचन में इदम् + टा-

इदम् शब्द के मकार के स्थान पर अकार आदेश- इद अ + टा- इद + टा

अनेन इस रूप में यदि अन + इन इस प्रकार से विभाग करें, तो रूप सिद्ध होता है। इन आदेश टा के स्थान पर होता है यह हम रामेण रूप में देख चुके हैं। अतः अन भाग के लिए अग्रिम विधि-

सूत्र- अनाप्यकः। अन् आपि अकः।
ककार से रहित इदम् शब्द के इद् भाग के स्थान पर अन आदेश होता है, यदि टा प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- इद +टा- इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश- अन् अ + टा

टा के स्थान पर इन आदेश- अन् अ + इन

गुण सन्धि- अनेन।

आभ्याम् – तृतीया द्विवचन में इदम् + भ्याम्-

इदम् शब्द के मकार के स्थान पर अकार आदेश- इद अ + भ्याम्-   इद + भ्याम्-

सूत्र- हलि लोपः ।
ककार से रहित इदम् के इद् भाग का लोप होता है, यदि हलादि विभक्ति परे हो ।

उदाहरण- इद + भ्याम् – हलादि विभक्ति भ्याम् परे होने से इद् का लोप-   अ + भ्याम्

अकार को दीर्घ- सुपि च - आभ्याम् ।

इसी प्रकार हलादि प्रत्यय होने पर सर्वत्र इद् का लोप होगा । जैसे- एभिः- भिस्, अस्मै- स्मै (ङे), अस्मात् – स्मात् (ङसि), एभ्यः- भ्यस्, अस्य – स्य (ङस्), एषाम्- साम् (आम्), अस्मिन्- स्मिन् (ङि) , आसु- सुप् ।

➢ **रूप सिद्धि-**

अयम्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से इदम् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	इदम् + सु
उपदेशेऽजनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	इदम् + स्
त्यदादीनामः	इदम् के अन्त में मकार को अकार प्राप्त हुआ	
इदमो मः	मकार को मकार आदेश हुआ	इदम् + स्
इदोऽय् पुंसि	इदम् के इद् भाग को अय् आदेश हुआ	अयम्+स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	**अयम्**

इमौ-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से इदम् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	औ प्रत्यय का विधान हुआ	इदम् + औ
त्यदादीनामः	इदम् के अन्त में मकार को अकार हुआ	इद अ + औ
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप आदेश हुआ	इद + औ
दश्च	दकार को मकार आदेश हुआ	इम + औ
वृद्धिरेचि	अकार तथा औकार को वृद्धि आदेश हुआ	**इमौ**

अनेन-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से इदम् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से टा प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	टा प्रत्यय का विधान हुआ	इदम् + टा
त्यदादीनामः	इदम् के अन्त में मकार को अकार हुआ	इद अ + टा
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप आदेश हुआ	इद + टा
अनाप्यकः	इदम् के इद् को अन् आदेश हुआ	अन+ टा
टाङसिङसामिनात्स्याः	टा को इन आदेश हुआ	अन+ इन
आद् गुणः	अकार तथा इकार को गुण एकार आदेश हुआ	**अनेन**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

  क. कः यहाँ किम् शब्द के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

  ख. इदमो मः इस सूत्र का उदाहरण लिखो ।

ग. इदम् + टा यहाँ इद् के स्थान पर क्या आदेश होगा ?

घ. इदम् शब्द की तृतीया विभक्ति को रूप लिखो।

10.6. सारांश

हलन्त प्रकरण में हम उन पुंल्लिङ्गशब्दों के साधन की प्रक्रिया समझते हैं जिनके अन्त में हल् (व्यञ्जन) वर्ण होते हैं। हल् वर्ण हकार से आरम्भ होते हैं। अतः सर्वप्रथम हकारान्त लिह्, दुह्, विश्ववाह्, तथा अनडुह् आदि शब्दों की प्रक्रिया आती है। हकारान्त शब्दों के हकार के स्थान पर सामान्यतः ढकार आदेश होता है। जैसे लिह्- लिट्। किन्तु इसके अपवाद के रूप में दकारादि धातुओं के हकार को घकार आदेश होता है। जैसे- दुह् – धुक्। इसके अतिरिक्त सम्प्रसारण सञ्ज्ञा विशेष रूप से ज्ञातव्य है, जिसके अनुसार हम यण् वर्णों के स्थान पर इक् वर्णों को आदेश रूप में प्राप्त करते हैं। वकारान्त शब्दों में सुदिव् शब्द के वकार के स्थान में यथास्थान औकार तथा उकार आदेश होने से सुद्यौः एवं सुद्युभ्याम् आदि रूप द्रष्टव्य है।

10.7. कठिन शब्दावली

दादि धातु- जिन धातुओं के आदि में दकार आए वे दादि धातु हैं। जैसे- दुह्, द्रुह् आदि।

सम्प्रसारण- यह एक सञ्ज्ञा है जो इक् वर्णों की होती है यदि हम इक् वर्णों का प्रयोग यण् वर्णों के स्थान पर करते हैं।

10.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. झल् वर्ण बाद में होने पर या पदान्त में हकार के स्थान पर ढकार होता है।

ख. दकारादि धातुओं में हकार के स्थान पर घकार होता है।

ग. यण्- य् व् र् ल् वर्णों के स्थान में प्रयुक्त इक्- इ उ ऋ लृ वर्ण।

घ. लिह्, दुह्, विश्ववाह्, अनडुह्।

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. सु पर में होने पर दिव् शब्द के वकार के स्थान पर औकार आदेश होता है।

ख. उकार

ग. चतुरनडुहोरामुदात्तः- आम् आगम

घ. शरोऽचि

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. क

ख. अयम्

ग. अन्

घ. अनेन आभ्याम् एभिः

10.9. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी ।

10.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

क. इग्यणः सम्प्रसारणम् सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

ख. धुक्, विश्वौहः, अनड्वान्, अनेन- रूप सिद्धि करो ।

ग. दादेर्धातोर्घः, वाह ऊठ- सूत्रों की व्याख्या करो ।

इकाई-11
नकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)

संरचना

11.1. पाठ का परिचय

11.2. पाठ का उद्देश्य

11.3. राजन्-यज्वन्- वृत्रहन् शब्द

- 11.3.1. नलोप निषेध
- 11.3.2. नलोप का असिद्धत्व
- 11.3.3. अकारलोप निषेध
- 11.3.4. वृत्रहन् में उपधा दीर्घ
- 11.3.5. कुत्व कार्य
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

11.4. मघवन्- युवन्-पथिन् शब्द

- 11.4.1. मघवन् में तृ आदेश
- 11.4.2. नुम् आगम
- 11.4.3. सम्प्रसारण कार्य
- 11.4.4. युवन् में सम्प्रसारण निषेध
- 11.4.5. पथिन् में आत्व-न्थ आदि कार्य
- 11.4.6. टिलोप
- स्वयं आकलन प्रश्न-2

11.5. पञ्चन्- अष्टन् शब्द

- 11.5.1. पञ्चन् आदि में संख्या सञ्ज्ञा
- 11.5.2. उपधादीर्घ
- 11.5.3. अष्टन् में आत्व तथा औत्व कार्य
- स्वयं-आकलन प्रश्न-3

11.6. सारांश

11.7. कठिन शब्दावली

11.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

11.9. सहायक ग्रन्थ

11.10. अभ्यासात्मक-प्रश्न

11.1. पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में हलन्त शब्दों में कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन होगा। हलन्त- जिन शब्दों के अन्त में हल्- व्यञ्जन वर्ण हों। इस अध्याय में शब्दों के मुख्य रूप से नकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का प्रतिपादन होगा। नकारान्त शब्द, जैसे- राजन्, वृत्रह्न, मघवन्, पथिन् आदि। यहाँ प्रत्येक शब्द की सिद्धि में उपयोगी प्रक्रिया तथा रूप सिद्धि प्रदर्शित की गई है।

11.2. पाठ का उद्देश्य

- समान हलन्त शब्दों की प्रक्रिया में समानता का बोध कराना
- समान हलन्त शब्दों की प्रक्रिया में भेद का बोध कराना
- नकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- दकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- पूर्व पाठों में पढी गई सञ्ज्ञाओं (भ, पद, सर्वनामस्थान, सङ्ख्या आदि) का हलन्त शब्दों में प्रयोग बताना

नकारान्त शब्दों में राजन्, वृत्रहन्, मघवन्, युवन् आदि शब्दों की प्रक्रिया अवलोकनीय है।

11.3. राजन्-यज्वन्-वृत्रहन् शब्द

नकारान्त शब्दों की प्रक्रिया हम पुंल्लिङ्ग प्रकरण में सखि शब्द में पढ चुके हैं। इन शब्दों में प्रायः प्रथमा एकवचन में दीर्घ आकार का श्रवण होता है। जैसे- राजन्- राजा, आत्मन्- आत्मा। इस प्रकार के रूपों के लिए हमें उपधा-दीर्घ तथा नकार का लोप करना होता है।

11.3.1. नलोप निषेध

हे राजन् – सम्बोधन की प्रथमा-एकवचन में राजन् + स् (सु)- अपृक्त सकार का लोप- राजन्-

यहाँ प्रातिपदिक के अन्तिम नकार का लोप प्राप्त होता है- नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य।

सूत्र- न ङिसम्बुद्ध्योः।

ङि तथा सम्बुद्धि प्रत्यय परे होने पर नकार का लोप नहीं होता है।

उदाहरण- राजन्- प्रातिपदिकान्त के नकार का लोप नहीं हुआ- हे राजन्।

अन्यत्र- राजानौ, राजानः, राजानम्।

हम पहले पढ चुके हैं कि भसञ्ज्ञा (अजादि प्रत्यय)होने पर अन् के अकार का लोप होता है- अल्लोपो नः । अतः-

राजन् + अस् (शस्)-

अजादि प्रत्यय में भसञ्ज्ञा होने से अन् के अकार का लोप- राज् न् + अस्

श्चुत्व सन्धि द्वारा नकार को ञकार- राज् ञ् + अस्- राज्ञस्- राज्ञः

इसी प्रकार सर्वत्र भसञ्ज्ञा होने पर - राज्ञा- टा, राज्ञे- ङे, राज्ञः- ङसि ङस्, राज्ञाम्- आम्

राजन् + ङि- यहाँ पर विकल्प से अकार का लोप होने से- विभाषा ङिश्योः- राज्ञि- राजनि ।

अन्यत्र भसञ्ज्ञा न होने पर हलादि प्रत्यय परे रहते पद सञ्ज्ञा होती है तथा पद सञ्ज्ञा होने से नलोप होता है ।

11.3.2. नलोप का असिद्धत्व

राजन् + भ्याम्- पद सञ्ज्ञा होने से नकार का लोप- राज + भ्याम्

इस स्थिति में रामाभ्याम् के समान अकार को दीर्घ प्राप्त- सुपि च ।

सूत्र- नलोपः सुप्स्वरसञ्ज्ञातुग्विधिषु कृति ।

सुप् (विभक्ति), स्वर, सञ्ज्ञा तथा कृत् प्रत्यय में तुक् आगम- इन कार्यों की प्राप्ति में नकार का लोप असिद्ध होता है ।

उदाहरण- राज + भ्याम्- यहाँ पर अकार को दीर्घ (सुप् विधि) की प्राप्ति में नकार का लोप असिद्ध हुआ-

अतः दीर्घ न होने से – राजभ्याम् ।

इसी प्रकार सभी स्थानों पर हलादि प्रत्यय जब परे होगा, तब नकार का लोप असिद्ध होगा तथा वहाँ प्राप्त सुप् विधियाँ नहीं होंगी ।

जैसे- राजभिः- भिस् को ऐस्, राजभ्यः- अकार को एकार, राजसु- अकार को एकार- ये विभक्ति कार्य नहीं होते ।

11.3.3. अल्लोप निषेध

यज्वन् नकारान्त होने से राजन् के समान होता है – यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः, यज्वानम्, यज्वानौ ।

यज्वनः- द्वितीया बहुवचन में यज्वन् +अस् (शस्)- अजादि प्रत्यय होने से भ सञ्ज्ञा तथा भसञ्ज्ञा होने से अन् के अकार का लोप प्राप्त-

सूत्र- न संयोगाद् वमन्तात् ।

वकार या मकार जहाँ संयोग के अन्त में हो, वहाँ अन् के अकार का लोप नहीं होता है ।

उदाहरण- यज्वन् + अस्- यहाँ जकार तथा वकार का संयोग है जिसके अन्त में वकार होने से अकार के लोप का निषेध- यज्वनः ।

11.3.4. वृत्रहन् में उपधा दीर्घ

हम जान चुके हैं कि नकारान्त शब्दों में प्रथमा-एकवचन में उपधा-दीर्घ होने से शब्द के अन्त में दीर्घ आकार प्राप्त होता है । अतः वृत्रहन् में भी वही प्रक्रिया प्राप्त है । तथापि विशेष कार्य के निमित्त अग्रिम विधि जाननी आवश्यक है -

वृत्रहा- प्रथमा-एकवचन में वृत्रहन् + स् (सु)-

सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने से उपधा को दीर्घ प्राप्त- सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ

सूत्र- इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ।

इन् शब्दान्त, हन् शब्दान्त, पूषन् तथा अर्यमन् शब्दों की उपधा को शि परे होने पर ही दीर्घ होता है, अन्यत्र नहीं ।

वृत्रहन् + स् (सु)- शि परे न होने से उपधा दीर्घ का निषेध प्राप्त –

सूत्र- सौ च ।

इन् शब्दान्त, हन् शब्दान्त, पूषन् तथा अर्यमन् शब्दों की उपधा को सम्बुद्धि से भिन्न सु प्रत्यय परे होने पर भी दीर्घ होता है ।

वृत्रहन् + स् (सु)- सम्बुद्धि से भिन्न सु प्रत्यय होने से उपधा को दीर्घ- वृत्रहान्+ स्

अपृक्त सकार तथा नकार का लोप करने पर- वृत्रहा ।

सम्बोधन में सम्बुद्धि सञ्ज्ञक सु होने से उपधा को दीर्घ नहीं होगा- हे वृत्रहन् ।

11.3.5. कुत्व कार्य

वृत्रघ्नः- द्वितीया बहुवचन में वृत्रहन् + अस् (शस्)-

भसञ्ज्ञा होने से अन् के अकार का लोप- वृत्रह् न् + अस्

यहाँ इष्ट रूप में घकार प्राप्त हो रहा है । अतः घकार के लिए विधि-

सूत्र- हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ।

हन् धातु के हकार के स्थान पर कुत्व-कवर्ग आदेश होता है, यदि ञित् या णित् प्रत्यय अथवा नकार परे हो ।

वृत्रह् न् + अस् - हकार के बाद नकार होने से हकार के स्थान पर कुत्व- घकार आदेश-

वृत्रघ् न् + अस्- वृत्रघ्नः ।

इस तरह जहाँ अन् के अकार का लोप होगा , वहाँ हकार से परे नकार होने के कारण हकार को घकार होगा ।

जैसे- वृत्रघ्ना- टा, वृत्रघ्ने- ङे, वृत्रघ्नः- ङसि ङस्, वृत्रघ्नोः- ओस्, वृत्रघ्नाम्- आम्, वृत्रघ्नि- ङि ।

- **रूपसिद्धि**

वृत्रहा-

सूत्र	कार्य	स्थिति
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से वृत्रहन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	वृत्रहन् + सु वृत्रहन् + स्
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ	उपधा में अकार को दीर्घ प्राप्त हुआ	
इन्हन्पूषार्यम्णां शौ	उपधा में अकार को दीर्घ का निषेध प्राप्त हुआ	इद + औ
सौ च	सु प्रत्यय परे उपधा में अकार को दीर्घ हुआ	वृत्रहान् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	वृत्रहान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	प्रातपदिक के अन्त में नकार का लोप हुआ	**वृत्रहा**

वृत्रघ्नः-

सूत्र	कार्य	स्थिति
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से वृत्रहन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	वृत्रहन् + शस वृत्रहन् + अस्
यचि भम्	असर्वनामस्थान अजादि प्रत्यय शस् में वृत्रहन् की भ सञ्ज्ञा हुई	
अल्लोपोऽनः	भसञ्ज्ञा होने से अन् के अकार का लोप हुआ	वृत्रह् न् + अस्
हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु	हकार को कवर्ग घकार हुआ	वृत्रघ् न् + अस्
	सकार को रुत्व तथा विसर्ग आदेश	**वृत्रघ्नः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. हे राजन् यहाँ नकार के लोप का निषेध-सूत्र लिखो ।

ख. सौ च इस सूत्र का कार्य लिखो ।

ग. वृत्रह् न् + शस् यहाँ हकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

घ. राजन् शब्द की सप्तमी विभक्ति के रूप लिखो ।

11.4. मघवन् तथा युवन् शब्द

मघवन् शब्द के रूप दो प्रकार से होते हैं – मघवा मघवानौ मघवानः अथवा मघवान् मघवन्तौ मघवन्तः । अतः इसकी प्रक्रिया भी दो प्रकार से होगी ।

11.4.1. मघवन् में तृ आदेश

मघवान्- प्रथमा-एकवचन में मघवन् + स् (सु)-

सूत्र- मघवा बहुलम् ।

मघवन् शब्द के अन्तिम वर्ण को विकल्प से तृ आदेश होता है ।

उदाहरण- मघवन् + स् (सु)- मघवन् के अन्तिम वर्ण नकार को विकल्प से तृ आदेश- मघवतृ + स्- मघवत् + स्

11.4.2. नुम् आगम

सूत्र- उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ।

धातु से भिन्न उगित् तथा अञ्चु धातु (जिसमें नकार का लोप हो) को नुम् आगम होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो । जिसमें उक्- उ ऋ लृ वर्णों की इत् सञ्ज्ञा हो, वह उगित होता है । जैसे यहाँ मघवत् शब्द ऋकार की इत् सञ्ज्ञा होने से उगित् है ।

मघवत् + स् (सु)- उगित् के बाद सर्वनामस्थान सु परे रहते नुम् आगम- मघव न्(नुम्) + त् + स्

अपृक्त सकार का लोप- मघवन् त्

संयोगान्त तकार का लोप- मघवन् उपधा दीर्घ- मघवान् ।

इसी प्रकार मघवन्तौ, मघवन्तः मघवन्तम्, मघवन्तौ ।

द्वितीया-बहुवचन तथा उसके बाद सर्वनामस्थान प्रत्यय न होने से नुम् आगम नहीं होगा। जैसे- मघवतः-शस्, मघवता-टा, मघवद्भ्याम् आदि।

जिस पक्ष में तृ आदेश नहीं होगा, वहाँ पूर्ववत् मघवा मघवानौ मघवानः रूप होंगे।

11.4.3. सम्प्रसारण कार्य

मघोनः- द्वितीया बहुवचन में मघवन् + अस् (शस्)-

सूत्र- श्वयुवमघोनामतद्धिते।

जिनके अन्त में अन् हो, ऐसे श्वन्, युवन् तथा मघवन् शब्दों की भसञ्ज्ञा होने पर सम्प्रसारण होता है, यदि तद्धित प्रत्यय परे न हो।

उदाहरण- मघवन् + अस् (शस्)-

अजादि प्रत्यय परे होने से भ सञ्ज्ञा तथा भसञ्ज्ञा होने से वकार के स्थान पर सम्प्रसारण उकार- मघ उ अ न् + स् –

सम्प्रसारण उकार तथा अकार को पूर्वरूप उकार- सम्प्रसारणाच्च- मघ उ न् +स्

गुण सन्धि में अकार तथा उकार को ओकार- मघोनस्- मघोनः।

अतः अजादि प्रत्ययों में सभी जगह सम्प्रसारण तथा गुण होने से ओकार का श्रवण होता है। जैसे- मघोना- टा, मघोने- ङे, मघोनः- ङसि ङस्, मघोनोः- ओस्, मघोनाम्- आम्, मघोनि- ङि।

उसी प्रकार श्वन् तथा युवन् शब्दों में भी सम्प्रसारण होगा।

- **रूपसिद्धि**

मघवान्-मघवा

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से मघवन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	

द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	मघवन् + सु मघवन् + स्
मघवा बहुलम्	मघवन् शब्द के अन्तिम वर्ण नकार को विकल्प से तृ आदेश	मघवतृ+ स् मघवत् + स्
उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः	उगित् होने से नुम् आगम हुआ	मघव नुम् त् + स् मघव न् त् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	मघव न् त्
संयागान्तस्य लोपः	संयोगान्त पद के अन्त में तकार को लोप हुआ	मघव न्
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ	उपधा में अकार को दीर्घ हुआ	**मघवान्**
	तृ आदेश के अभाव में	**मघवा**

मघोनः-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से मघवन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	मघवन् + शस् मघवन् + अस्
श्वयुवमघोनामतद्धिते	मघवन् शब्द के यण् वर्ण वकार को सम्प्रसारण उकार आदेश	मघव उ अ न्+ अस्
सम्प्रसारणाच्च	सम्प्रसारण वर्ण उकार तथा अकार को पूर्वरूप आदेश हुआ	मघ उन् + अस्
आद् गुणः	अकार तथा उकार को गुण एकार आदेश	मघो न् + अस्

		मघोनः

11.4.4. युवन् में सम्प्रसारण निषेध

➢ **युवन्-शब्द**

युवा युवानौ युवानः युवानम्, युवानौ –

यूनः- द्वितीया बहुवचन में - युवन् + अस् (शस्)-

युवन् के वकार को सम्प्रसारण उकार- यु उ अन् + स्

पूर्वरूप तथा दीर्घ होने से- यूनस्

पुनः यकार को सम्प्रसारण प्राप्त-

सूत्र- न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् ।

सम्प्रसारण वर्ण परे होने पर पूर्व वर्ण को सम्प्रसारण नहीं होता है ।

यूनस्- यहाँ सम्प्रसारण वर्ण उकार के परे होने पर पूर्व यकार को सम्प्रसारण का निषेध- यूनः ।

इसी प्रकार सर्वत्र भ सञ्ज्ञा होने पर समान प्रक्रिया- यूना- टा, यूने- ङे, यूनः - ङसि ङस्, यूनोः- ओस्, यूनाम्- आम्, यूनि- ङि ।

➢ **रूपसिद्धि-**

यूनः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से युवन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	युवन् + शस्

		युवन् + अस्
श्वयुवमघोनामतद्धिते	मघवन् शब्द के यण् वर्ण वकार को सम्प्रसारण उकार आदेश	यु उ अ न्+ अस्
सम्प्रसारणाच्च	सम्प्रसारण वर्ण उकार तथा अकार को पूर्वरूप आदेश हुआ	यु उन् + अस्
अकः सवर्णे दीर्घः	उकार तथा उकार को दीर्घ ऊकार आदेश	यू न् + अस्
श्वयुवमघोनामतद्धिते	युवन् शब्द के यण् वर्ण यकार को सम्प्रसारण इकार आदेश प्राप्त	
न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्	सम्प्रसारण वर्ण उकार परे होने से सम्प्रसारण का निषेध हुआ	यू न् + अस् **यूनः**

11.4.5. पथिन् में आत्व-न्थ आदि कार्य

पन्थाः- प्रथमा-एकवचन में पथिन् + स् (सु)

सूत्र- पथिमथ्यृभुक्षामात् ।

पथिन्, मथिन् तथा ऋभुक्षिन् शब्दों के अन्त में आकार आदेश होता है, यदि सु प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- पथिन् + स् (सु)- पथिन् के अन्त में नकार को आकार आदेश- पथि आ + स्

सूत्र- इतोऽत् सर्वनामस्थाने ।

पथिन्, मथिन् तथा ऋभुक्षिन् शब्दों के इकार को अकार आदेश होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो ।

पथि आ + स्- सर्वनामस्थान सु होने से इकार को अकार आदेश- पथ आ + स्

सूत्र- थो न्थः ।

पथिन्, मथिन् शब्दों के थ को न्थ आदेश होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो ।

पथ आ + स्- थ के स्थान पर न्थ आदेश- पन्थ आ + स्- पन्थास्- पन्थाः ।

पन्थानौ, पन्थानः आदि स्थलों पर भी समान प्रक्रिया होती है । सु प्रत्यय न होने से केवल आकार आदेश नहीं होगा ।

11.4.6. पथिन् में टिलोप

पथः- द्वितीया-बहुवचन में पथिन् + अस्(शस्)-

सूत्र- भस्य टेर्लोपः ।

पथिन्, मथिन् तथा ऋभुक्षिन् शब्दों की भ सञ्ज्ञा होने पर टि भाग का लोप होता है ।

उदाहरण- पथिन् + अस् (शस्) -

अजादि प्रत्यय होने से भ सञ्ज्ञा तथा भ सञ्ज्ञा होने से टि- इन् का लोप- पथ् + अस्-

पथस्- पथः

इसी प्रकार सभी जगह भ सञ्ज्ञा में टि लोप होगा । जैसे- पथा- टा, पथे- ङे, पथः - ङसि ङस्, पथोः- ओस्, पथाम्- आम्, पथि- ङि ।

- **रूपसिद्धि-**

पन्थाः-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से पथिन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	पथिन् + सु पथिन् + स्
पथिमथ्यृभुक्षामात् ।	पथिन् शब्द के अन्त में नकार को आकार आदेश	पथि आ+ स्
इतोऽत् सर्वनामस्थाने	पथिन् शब्द के इकार को अकार आदेश हुआ	पथ आ+ स्
थो न्थः	पथिन् शब्द के थ को न्थ आदेश हुआ	प न्थ आ+ स्
अकः सवर्णे दीर्घः	अकार तथा आकार को दीर्घ हुआ	प न्था+ स्
	सकार को रुत्व विसर्ग	**पन्थाः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. मघोनः यहाँ किस सूत्र से सम्प्रसारण आदेश होता है ?

ख. मघवा, यूनः- इन पदों के प्रकृति- प्रत्यय बताएं।

ग. यूनः- यहाँ यकार को सम्प्रसारण आदेश का निषेध किस सूत्र से होता है ?

घ. पथिन् + सु यहाँ नकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

11.5. पञ्चन् तथा अष्टन् शब्द

पञ्चन् शब्द नित्य बहुवचनान्त है। यह सङ्ख्यावाचक है। अतः इसकी प्रक्रिया अन्य नकारान्तों से भिन्न होती है।

11.5.1. पञ्चन् आदि में षट् सञ्ज्ञा

पञ्च- प्रथमा-बहुवचन में पञ्चन् + जस्

सूत्र- ष्णान्ता षट्।

इसमें षट् सञ्ज्ञा तथा ष्णान्ता सञ्ज्ञी शब्द है। षकारान्त सङ्ख्या तथा नकारान्त सङ्ख्या की षट् सञ्ज्ञा होती है। षकारान्त सङ्ख्या – षष्। नकारान्त सङ्ख्या- पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्।

पञ्चन् + जस्- नकारान्त सङ्ख्या होने से पञ्चन् की षट् सञ्ज्ञा

षट् सञ्ज्ञा होने से जस् प्रत्यय का लुक्- षड्भ्यो लुक् - पञ्चन्

प्रातिपदिकान्त नकार का लोप - पञ्च।

इसी प्रकार शस् प्रत्यय में भी समान प्रक्रिया होने से यही रूप होता है- पञ्च। अन्यत्र- पञ्चभिः, पञ्चभ्यः, पञ्चभ्यः, पञ्चानाम्, पञ्चसु।

पञ्चन् + आम्- षट् सञ्ज्ञा होने से नुट् आगम- षट्चतुर्भ्यश्च - पञ्चन् + न्(नुट्) + आम्- पञ्चन् + नाम्-

11.5.2. उपधा दीर्घ

सूत्र- नोपधायाः।

नकारान्त सङ्ख्या की उपधा को दीर्घ होता है, यदि नाम् परे हो।

उदाहरण- पञ्चन् + नाम् - नकारान्त पञ्चन् की उपधा अकार को दीर्घ- पञ्चान् + नाम्

पदान्त होने से नकार का लोप- पञ्चानाम्।

11.5.3. अष्टन् में आत्व तथा औत्व कार्य

अष्टौ- प्रथमा बहुवचन में अष्टन् + जस्-

सूत्र- अष्टन आ विभक्तौ।

अष्टन् शब्द के अन्त में विकल्प से आकार आदेश होता है, यदि विभक्ति परे हो।

उदाहरण- अष्टन् + जस्- जस् विभक्ति परे होने पर अन्तिम वर्ण नकार को आकार आदेश-

अष्ट आ + जस् - अष्टा + जस्

सूत्र- अष्टाभ्य औश्।

आकार आदेश करने के बाद अष्टन् शब्द से परे जस् तथा शस् प्रत्यय के स्थान पर औश् आदेश होता है।

अष्टा + जस्- आकार आदेश के बाद जस् को औश् आदेश- अष्टा + औश्- अष्टा + औ- अष्टौ।

इसी प्रकार शस् में भी समान प्रक्रिया- अष्टौ। आकार आदेश के अभाव में- अष्ट।

अन्यत्र आकार आदेश के विकल्प में- अष्टाभिः-अष्टभिः, अष्टाभ्यः- अष्टभ्यः, अष्टासु- अष्टसु।

- **रूपसिद्धि**

अष्टौ-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से अष्टन् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	जस् प्रत्यय का विधान हुआ	अष्टन् + जस्

अष्टन आ विभक्तौ	अष्टन् शब्द के अन्त में विकल्प से आकार आदेश हुआ	अष्ट आ+ जस्
अकः सवर्णे दीर्घः	उकार तथा उकार को दीर्घ ऊकार आदेश	अष्टा + जस्
अष्टाभ्य औश्	आकार आदेश करने के बाद अष्टन् शब्द से परे जस् प्रत्यय के स्थान पर औश् आदेश हुआ	अष्टा + औश् अष्टा + औ
वृद्धिरेचि	आकार तथा औकार को वृद्धि औकार आदेश	**अष्टौ**

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-3**

क. पञ्चन् शब्द की नकारान्त संख्या होने के कारण कौन सी सञ्ज्ञा होती है ?

ख. अष्टन् शब्द की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन का रूप लिखो ।

ग. अष्टन् शब्द में औकार आदेश किस के स्थान पर होता है ?

11.6. सारांश

हलन्त प्रकरण के इस भाग में हम ने उन शब्दों के साधन की प्रक्रिया समझी जिनके अन्त में नकार होता है । इस अध्याय में नकारान्त राजन्, वृत्रहन्, मघवन्, युवन् आदि प्रमुख शब्द प्रतिपादित किए गए हैं । हमने जाना कि यद्यपि सभी शब्दों के रूपों में समानताएं हैं, परन्तु कुछ स्थानों पर भेद प्राप्त होता है । जैसे राजानौ में उपधा दीर्घ तथा वृत्रहणौ में दीर्घ का अभाव, वृत्रघ्नः में हकार के स्थान पर कवर्ग घकार आदेश, मघोनः, यूनः में सम्प्रसारण, पन्थाः में आकार आदि विभिन्न कार्य । इसके अतिरिक्त सङ्ख्यावाचक शब्द जैसे पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् आदि शब्दों की प्रक्रिया में समानता प्रतिपादित है ।

11.7. कठिन शब्दावली

षट्- षट् एक सञ्ज्ञा है जो षकारान्त संख्या षष् तथा नकारान्त संख्याओं पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन् तथा दशन् शब्दों की होती है ।

11.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

ङ. न ङि सम्बुद्ध्योः

च. इन् शब्दान्त, हन् शब्दान्त, पूषन् तथा अर्यमन् शब्दों की उपधा को सम्बुद्धि से भिन्न सु प्रत्यय परे होने पर भी दीर्घ होता है।

छ. घकार

ज. राज्ञि/राजनि राज्ञोः राजसु

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. श्वयुवमघोनामतद्धिते

ख. मघवन्+ सु, युवन्+ शस्, वृत्रहन् + शस्।

ग. न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्

घ. आकार आदेश

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. षट् सञ्ज्ञा

ख. अष्ट / अष्टौ

ग. जस् तथा शस्

11.9. **सहायक ग्रन्थ**

लघुसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी।

11.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

घ. श्वयुवमघोनामतद्धिते सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

ङ. मघोनः, वृत्रघ्नः - रूप सिद्धि करो।

च. पन्थाः, अष्टौ - रूप सिद्धि करो।

इकाई-12
दकारान्त, जकारान्त तथा चकारान्त शब्द
(हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)

संरचना

12.1. पाठ का परिचय

12.2. पाठ का उद्देश्य

12.3. जकारान्त शब्द

- 12.3.1. ऋत्विज् शब्द
- 12.3.2. युज् शब्द
- 12.3.3. राज् शब्द

- स्वयं आकलन प्रश्न-1

12.4. दकारान्त शब्द

- 12.4.1. तद् शब्द
- 12.4.2. युष्मद्-अस्मद् शब्द
- 12.4.3. युष्मान्-अस्मान् आदि में विशेष आदेश
- 12.4.4. सुपाद् शब्द

- स्वयं आकलन प्रश्न-2

12.5. चकारान्त शब्द

- 12.5.1. प्राञ्च् शब्द
- 12.5.2. उदच् शब्द तथा सम्यच् शब्द

- स्वयं-आकलन प्रश्न-3

12.6. सारांश

12.7. कठिन शब्दावली

12.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

12.9. सहायक ग्रन्थ

12.10. अभ्यासात्मक-प्रश्न

12.1. पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में हम हलन्त शब्दों में कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे। हलन्त- जिन शब्दों के अन्त में हल्- व्यञ्जन वर्ण हों। इस अध्याय में शब्दों के मुख्य रूप से तीन विभाग किए गये हैं -दकारान्त, जकारान्त तथा चकारान्त शब्द। दकारान्त शब्द, जैसे- तद्, अस्मद्, युष्मद्, सुपाद् आदि। जकारान्त, जैसे- ऋत्विज्, युज् आदि तथा चकारान्त प्राच्, सम्यच् आदि। प्रत्येक विभाग में आने वाले विभिन्न शब्दों की सिद्धि में उपयोगी प्रक्रिया तथा रूप सिद्धि प्रदर्शित की गई है।

12.2. पाठ का उद्देश्य

- समान हलन्त शब्दों की प्रक्रिया में समानता का बोध कराना
- समान हलन्त शब्दों की प्रक्रिया में भेद का बोध कराना
- दकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- जकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- चकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- पूर्व पाठों में पढी गई सञ्ज्ञाओं (भ, पद, सर्वनामस्थान, सङ्ख्या आदि) का हलन्त शब्दों में प्रयोग बताना

12.3.जकारान्त शब्द

जकारान्त शब्दों में ऋत्विज्, युज्, सुयुज्, राज्, भृस्ज् आदि शब्द अवलोकनीय हैं।

12.3.1. ऋत्विज् शब्द

ऋत्विक्-ग्- ऋतु + यज् (धातु)-

सूत्र- ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च।

सूत्र में उक्त धातुओं से क्विन् प्रत्यय होता है। ऋत्विक्- ऋतु उपपद यज् धातु, दधृक्- धृष् धातु, स्रक्- सृज् धातु, दिक्- दिश् धातु, उष्णिक्- स्निह् धातु, अञ्चु धातु, युज् धातु तथा क्रुञ्च् धातु।

उदाहरण- **ऋत्विग्-** ऋतु + यज् +व् (क्विन्) –

सूत्र- कृदतिङ्। कृत् अतिङ्।

कृत् सञ्ज्ञा तथा अतिङ् सञ्ज्ञी है। धातु से विहित तिङ् से भिन्न प्रत्यय की कृत् सञ्ज्ञा होती है।

ऋत्‌ु + यज् + व् (क्विन्) - यज् धातु से विहित तिङ् से भिन्न क्विन् प्रत्यय की कृत् सञ्ज्ञा

सूत्र- वेरपृक्तस्य ।

अपृक्त वकार का लोप होता है ।

ऋत्‌ु + यज् + व् (क्विन्)- अपृक्त वकार का लोप-   ऋत्‌ु + यज्

यहाँ क्विन् प्रत्यय कित् है, अतः धातु के यकार को सम्प्रसारण होता है । इस विधि को हम भ्वादि गण (तिङन्त प्रकरण) में पढेंगे ।

यकार को सम्प्रसारण इकार -   ऋत्‌ु + इज्-   यण् सन्धि-   ऋत्विज्

ऋत्विज् + स् (सु)-   अपृक्त सकार का लोप-   ऋत्विज्

सूत्र- चोः कुः ।

चवर्ग को कवर्ग आदेश होता है, यदि चवर्ग पद के अन्त में हो या झल् वर्ण परे हो ।

ऋत्विज्- यहाँ पद के अन्त में चवर्ग जकार को कवर्ग गकार आदेश-   ऋत्विग्

अवसान परे होने से विकल्प से चर् – वावसाने-   ऋत्विक् ।

- **रूपसिद्धि**

ऋत्विग्- क् -

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च	ऋत्‌ु शब्द पूर्वक यज् धातु से क्विन् प्रत्यय	ऋत्‌ु यज् + क्विन्
कृदतिङ्	इस सूत्र से क्विन् प्रत्यय की कृत् सञ्ज्ञा हुई	
	अनुबन्ध लोप	ऋत्‌ु यज् + व्
वेरपृक्तस्य	अपृक्त वकार का लोप हुआ	ऋत्‌ु यज्
वचिस्वपियजादीनां किति	यकार को सम्प्रसारण इकार	ऋत्‌ु इज्
इको यणचि	उकार को यण् वकार आदेश हुआ	ऋत्विज्
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से ऋत्विज् शब्द की	

	प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	ऋत्विज् + सु ऋत्विज् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	ऋत्विज्
चोः कुः	पद के अन्त में चवर्ग जकार को कवर्ग गकार हुआ	ऋत्विग्
वावसाने	अवसान होने पर गकार को विकल्प से ककार हुआ	**ऋत्विक्**
	गकार को ककार न होने पर	**ऋत्विग्**

12.3.2. युज् शब्द

युङ् - पूर्ववत् युज् धातु से क्विन् प्रत्यय - युज् + क्विन्- युज् + व्- युज्

युज् + स् (सु)-

सूत्र- युजेरसमासे ।

युज् से सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर नुम् आगम होता है ।

युज् + स् (सु)- सर्वनामस्थान सु प्रत्यय होने से नुम् आगम- यु न्(नुम्) ज् + स्

अपृक्त सकार का लोप- यु न् ज्

संयोगान्त जकार का लोप- युन्

सूत्र- क्विन्प्रत्ययस्य कुः ।

जिससे क्विन् प्रत्यय हुआ है, उसके अन्त में कवर्ग आदेश होता है, यदि पदान्त हो ।

यु न् -   पद के अन्त में होने से नकार के स्थान पर कवर्ग ङकार आदेश- युङ् ।

- **रूपसिद्धि-**

युङ् -

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च	युज् धातु से क्विन् प्रत्यय	युज् + क्विन्
कृदतिङ्	इस सूत्र से क्विन् प्रत्यय की कृत् सञ्ज्ञा हुई	
	अनुबन्ध लोप	युज् + व्
वेरपृक्तस्य	अपृक्त वकार का लोप हुआ	युज्
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से युज् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	युज् + सु युज् + स्
युजेरसमासे	युज् से सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर नुम् आगम हुआ	यु नुम् ज् + स् यु न् ज् + स्
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	यु न् ज्
संयोगान्तस्य लोपः	संयोगान्त जकार को लोप हुआ	यु न्
क्विन्प्रत्ययस्य कुः	क्विन्प्रत्ययान्त के नकार को कवर्ग ङकार हुआ	**युङ्**

जब औ आदि प्रत्ययों में संयोगान्त पद नहीं होगा, तब यु न् ज् + औ-

जकार के लोप के अभाव में-

श्चुत्व सन्धि से नकार को ञकार आदेश-   यु ञ् ज् + औ -   युञ्जौ ।

इसी प्रकार युञ्जः आदि में भी समझना चाहिए। जब सर्वनामस्थान प्रत्यय परे नहीं होगा , तब युज् + भ्याम्-

नुम् आगम के अभाव में जकार को कवर्ग गकार- युग्भ्याम्।

12.3.3. राज् शब्द

राड्-ट् – राज् + स् (सु)- अपृक्त सकार का लोप- राज्

सूत्र- व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः।

व्रश्च्,भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज् धातुओं तथा छकारान्त या शकारान्त शब्दों के अन्त में षकार आदेश होता है, पद के अन्त में या झल् वर्ण परे होने पर।

उदाहरण- राज्- पद के अन्त में जकार के स्थान पर षकार आदेश- राष्

पद के अन्त में जश् सन्धि द्वारा षकार को डकार- झलां जशोन्ते- राड्

अवसान परे होने पर विकल्प से चर् टकार आदेश- वावसाने- राट्।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. ऋत्विज् यहाँ जकार के स्थान पर क्या कार्य होता है ?

ख. युङ् इसका प्रतिपदिक तथा प्रत्यय लिखो।

ग. राज् + सु यहाँ क्या शब्दरूप निष्पन्न होता है ?

12.4. दकारान्त शब्द

यहाँ हम तद्, युष्मद्, अस्मद्, महद् आदि शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेगे।

12.4.1. तद्-शब्द

तद् शब्द सर्वनाम है जिसका प्रयोग दूरवर्ती पदार्थ के लिए किया जाता है।

सः- प्रथमा-एकवचन में तद् + स् (सु)-

हम पहले जान चुके हैं कि त्यद् आदि शब्दों से विभक्ति परे रहते अन्त में एकार आदेश होता है- त्यदादीनामः।

अतः तद् के दकार को अकार आदेश- त अ + स् (सु)

दोनों अकारों को पररूप आदेश- अतो गुणे- त + स्

सूत्र- तदो सः सावनन्त्ययोः।

सु प्रत्यय परे रहते त्यद् आदि शब्दों को तकार तथा दकार के स्थान पर सकार आदेश होता है, यदि तकार- दकार शब्द अन्त में न हो।

त + स्- सु प्रत्यय परे होने पर तकार को सकार आदेश- स + स्- सः

अन्यत्र औ आदि प्रत्ययों में सकार आदेश न होने से तकार का ही श्रवण होता है। जैसे – तौ, ते आदि।

सर्वनाम सञ्ज्ञा होने से पूर्व पठित सर्वनाम कार्य होते हैं। यथा- ते- जस् को शी, तस्मै- ङे को स्मै, तस्मात्- ङसि को स्मात्, तेषाम्- सुट् आगम, तस्मिन्- ङि को स्मिन् आदेश।

इसी प्रकार एतद् शब्द में भी समान प्रक्रिया होने से - एषः, एतौ, एते आदि रूप होते हैं।

- **रूपसिद्धि-**

सः -

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से तद् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	तद् + सु तद् + स्
त्यदादीनामः	तद् के अन्त में दकार को अकार आदेश हुआ	त अ + स्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	त + स्
तदो सः सावनन्त्ययोः	तद् शब्द के तकार को सकार आदेश हुआ	स + स्
	सकार को रुत्व विसर्ग	**सः**

12.4.2. युष्मद्-अस्मद् शब्द

युष्मद् शब्द का प्रयोग मध्यम पुरुष तथा अस्मद् का प्रयोग उत्तम पुरुष के कर्ता के रूप में होता है । इन दोनों शब्दों की प्रक्रिया के लिए समान सूत्रों का प्रयोग होता है । अतः हम समानान्तर ही इन शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे । हम यहाँ पर इन रूपों की सिद्धि में सुगमता के लिए शब्दों का इस प्रकार विभाग करेंगे- अस्म् + अद्, युष्म् + अद् ।

अहम्-त्वम्- प्रथमा-एकवचन में- अस्मद् + सु युष्मद् + सु-
यहाँ अन्त में अम् तथा आदि में क्रमशः अह् एवं त्व् प्राप्त हो रहे हैं । अतः इनके लिए अग्रिम विधि-

सूत्र- ङेप्रथमयोरम् ।
ङे प्रत्यय तथा प्रथमा- द्वितीया विभक्ति के स्थान पर अम् आदेश होता है ।

उदाहरण- अस्मद् + सु युष्मद् + सु-

प्रथमा विभक्ति में सु के स्थान पर अम् आदेश- अस्मद् + अम् युष्मद् + अम्

सूत्र- त्वाहौ सौ ।

अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः अह एवं त्व आदेश होते हैं, यदि सु प्रत्यय परे हो ।

अस्मद् + सु युष्मद् + सु- अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः अह एवं त्व आदेश-

अह + अद् + अम् त्व + अद् + अम्

अब यहाँ अद् भाग को यदि हटा दिया जाए, तो इष्ट रूप सिद्ध होगा ।

सूत्र- शेषे लोपः ।

शेष में अन्तिम वर्ण का लोप होता है । शेष का अर्थ वे विभक्तियां हैं, जिनके परे रहते आकार तथा यकार आदेश नहीं है ।

अह् + अद् + अम्   त्व् + अद् + अम्- अन्तिम वर्ण दकार का लोप-

अह + अ + अम्   त्व + अ + अम्

दोनों अकारों को पररूप आदेश- अतो गुणे-

अह + अम्   त्व + अम्

अम् परे होने पर पूर्वरूप आदेश- अमि पूर्वः-

अहम्   त्वम्।

आवाम्- युवाम्-   प्रथमा-द्विवचन में-   अस्मद् + औ   युष्मद् + औ

औ के स्थान पर अम्-   अस्मद् + अम्   युष्मद् + अम्

यहाँ आदि में क्रमशः आव एवं युव प्राप्त हो रहे हैं। अतः इनके लिए अग्रिम विधि-

सूत्र- युवावौ द्विवचने।

द्विवचन प्रत्यय परे होने पर अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः आव एवं युव आदेश होते हैं।

अस्मद् + अम्   युष्मद् + अम्-   अस्म एवं युष्म के स्थान पर आव एवं युव आदेश-

आव + अद् + अम्   युव + अद् + अम्

सूत्र- प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्।

औ प्रत्यय होने पर युष्मद् तथा अस्मद् के अन्त में आकार आदेश होता है।

आव + अद् + अम्   युव + अद् + अम्-   अन्त में दकार को आकार आदेश-

आव + अ आ + अम्   युव + अ आ

दोनों अकारों को पररूप तथा आकार के साथ दीर्घ सन्धि -

आवा + अम्   युवा + अम्

अम् परे होने से पूर्वरूप-

आवाम्   युवाम्

वयम्- यूयम्- प्रथमा-बहुवचन में अस्मद् + जस्   युष्मद् + जस्

जस् के स्थान पर अम् आदेश- अस्मद् + अम्   युष्मद् + अम्

यहाँ हमे वय तथा यूय आदि में प्राप्त होते हैं। अतः-

सूत्र- यूयवयौ जसि।

जस् प्रत्यय होने पर युष्म् एवं अस्म् को यूय तथा वय आदेश होते हैं।

अस्मद् + जस्   युष्मद् + जस्-   युष्म् एवं अस्म् को यूय तथा वय आदेश-

वय अद् + जस्   यूय अद् + जस्

जस् के स्थान पर अम् आदेश-

वय अद् + अम्   यूय अद् + अम्

पूर्ववत् अन्त में दकार का लोप- शेषे लोपः-

वय अ + अम्   यूय अ + अम्

पूर्ववत् पररूप तथा पूर्वरूप आदेश-

वयम्   यूयम्।

त्वाम्-माम्- द्वितीया-एकवचन में युष्मद् + अम्   अस्मद् + अम्-

यहाँ आदि में त्व तथा म प्राप्त होते हैं। अतः-

सूत्र- त्वमावेकवचने।

एकवचन प्रत्यय परे होने पर युष्म् अस्म् के स्थान पर क्रमशः त्व म आदेश होते हैं।

युष्मद् + अम्   अस्मद् + अम्-   युष्म् अस्म् के स्थान पर क्रमशः त्व म आदेश-

त्व अद् + अम्   म अद् + अम्

अन्यत्र एकवचनों में भी त्व तथा म आदेश होते हैं - त्वया मया, त्वत् मत्, त्वयि मयि ।

सूत्र- द्वितीयायाञ्च ।

प्रथमा द्विवचन के समान द्वितीया विभक्ति में भी अन्त में आकार आदेश होता है ।

त्व अद् + अम्   म अद् + अम्- अन्त में दकार को आकार आदेश-

त्व अ आ + अम्   म अ आ + अम्

पूर्ववत् अकारों को पररूप आकार को दीर्घ तथा अम् को पूर्वरूप आदेश-

त्वाम्   माम् ।

युष्मान्- अस्मान्-   युष्मद् + अस् (शस्)   अस्मद् + अस् (शस्)-

पूर्व सूत्र से अन्तिम दकार को आकार- युष्म आ + अस्   अस्म आ + अस्

सूत्र- शसो नः ।

शस् प्रत्यय को नकार आदेश होता है । यहाँ (शस्) अस् प्रत्यय के आदि अकार को नकार होगा – आदेः परस्य ।

युष्म आ + अस्   अस्म आ + अस्-   शस् प्रत्यय के अकार के स्थान पर नकार आदेश-

युष्म आ + न् स्   अस्म आ + न् स् - संयोगान्त पद के अन्त में सकार का लोप आदेश-

युष्म आ + न्   अस्म आ + न्-   दीर्घ करने पर

युष्मान्   अस्मान् ।

त्वया-मया- तृतीया-एकवचन में युष्मद् + आ (टा)   अस्मद् + आ (टा)-

एकवचन टा प्रत्यय होने पर युष्म अस्म को त्व म आदेश-   त्व अद् + आ   म अद् + आ

सूत्र- योऽचि ।

युष्मद् अस्मद् में अन्त में दकार को यकार आदेश होता है, यदि अजादि प्रत्यय परे हो ।

त्व अद् + आ   म अद् + आ- अजादि प्रत्यय होने पर दकार को यकार आदेश-

त्व अय् + आ   म अय् + आ   पूर्ववत् दोनों अकारों को पररूप आदेश-

त्वया   मया।

युवाभ्याम्-आवाभ्याम्-   युष्मद् + भ्याम्   अस्मद् + भ्याम्-

पूर्ववत् युष्म अस्म को युव आव आदेश-   युव अद् + भ्याम्   आव अद् + भ्याम्

सूत्र- युष्मदस्मदोरनादेशे।

युष्मद् अस्मद् के अन्त में आकार आदेश होता है, यदि वह हलादि प्रत्यय परे हो, जिसके स्थान पर कोई आदेश न हुआ हो।

युव अद् +भ्याम्   आव अद्+भ्याम्- हलादि भ्याम् प्रत्यय परे होने पर दकार को आकार

युव अ आ + भ्याम्   आव अ आ + भ्याम्-   पररूप तथा दीर्घ-

युवाभ्याम्   आवाभ्याम्।

इसी प्रकार हलादि प्रत्यय भिस् में आकार आदेश होने से युष्माभिः अस्माभिः रूप होते हैं।

तुभ्यम्-मह्यम्- चतुर्थी एकवचन में युष्मद् + ङे   अस्मद् + ङे

यहाँ हमें आदि में तुभ्य तथा मह्य प्राप्त हो रहे हैं। अतः-

सूत्र- तुभ्यमह्यौ ङयि।

ङे प्रत्यय परे होने पर युष्म् अस्म् के स्थान पर क्रमशः तुभ्य मह्य आदेश होते हैं।

युष्मद् + ङे   अस्मद् + ङे-   युष्म् अस्म् के स्थान पर क्रमशः तुभ्य मह्य आदेश-

तुभ्य अद् + ङे   मह्य अद् + ङे-   ङे प्रत्यय को अम्-   ङेप्रथमयोरम्-

तुभ्य अद् + अम्   मह्य अद् + अम्-   दकार का लोप-   शेषे विभाषा-

तुभ्य अ + अम्   मह्य अ + अम् -   पररूप-

तुभ्यम्   मह्यम् ।

युष्मभ्यम्-अस्मभ्यम्- चतुर्थी एकवचन में युष्मद् + भ्यस् अस्मद् + भ्यस्-

सूत्र- भ्यसो भ्यम् ।

भ्यस् प्रत्यय को भ्यम् आदेश होता है ।

युष्मद् + भ्यस् अस्मद् + भ्यस्- भ्यस् प्रत्यय को अभ्यम् आदेश-

युष्मद् + भ्यम् अस्मद् + भ्यम् - दकार का लोप-

युष्मभ्यम् अस्मभ्यम्

त्वत्-मत्- - पञ्चमी एकवचन में युष्मद् + ङसि अस्मद् + ङसि

सूत्र- एकवचनस्य च ।

युष्मद् अस्मद् के बाद पञ्चमी के एकवचन प्रत्यय के स्थान पर अत् आदेश होता है ।

युष्मद् + ङसि अस्मद् + ङसि- ङसि प्रत्यय को अत् आदेश-

युष्मद् + ङसि अस्मद् + अत् - पूर्ववत् एकवचन प्रत्यय होने से युष्म अस्म को त्व म आदेश-
त्व अद् + अत् म अद् + अत्- अन्त में दकार का लोप-

त्व अ+अत् म अ+ अत् पररूप-

त्वत् मत् ।

युष्मत्-अस्मत्- पञ्चमी एकवचन में- युष्मद् + भ्यस् अस्मद् + भ्यस्

सूत्र- पञ्चम्या अत् ।

युष्मद् अस्मद् के बाद पञ्चमी के विभक्ति के प्रत्यय के स्थान पर अत् आदेश होता है ।

युष्मद् + भ्यस् अस्मद् + भ्यस्- भ्यस् को अत् आदेश-

युष्मद् + अत् अस्मद् + अत् - पूर्ववत् दकार का लोप तथा पररूप-

युष्मत् अस्मत् ।

तव-मम- षष्ठी एकवचन में- युष्मद् + ङस् अस्मद् + ङस्-

यहाँ हमे आदि में तव-मम तथा अन्त में अकार का श्रवण होता है। अतः-

सूत्र-तवममौ ङसि- युष्मद् अस्मद् के बाद ङस् प्रत्यय के परे होने पर युष्म- अस्म के स्थान पर तव-मम आदेश होते हैं।

युष्मद् + ङस् अस्मद् + ङस्- युष्म-अस्म को तव-मम आदेश-

तव अद् + ङस् मम अद् + ङस्

सूत्र- युष्मस्मद्भ्याम् ङसोश्।

युष्मद् अस्मद् के बाद ङस् प्रत्यय के स्थान पर अश्आदेश होता है।

तव अद् + ङस् मम अद् + ङस्- ङस् को अश् आदेश-

तव अद् + अश् मम अद् + अश्- पूर्ववत् दकार का लोप तथा पररूप-

तव मम।

युवयोः-आवयोः- षष्ठी द्विवचन में- युष्मद् + ओस् अस्मद् + ओस्-

पूर्ववत् युष्म-अस्म को युव-आव आदेश- युव अद्+ ओस् आव अद् + ओस्

पूर्ववत् दकार का लोप तथा पररूप- युव + ओस् आव + ओस्

रामयोः के समान अकार को एकार- ओसि च- युवे + ओस् आवे ओस्

अयादि सन्धि में एकार को अय् - युवयोः आवयोः।

युष्माकम्-अस्माकम्- षष्ठी बहुवचन में- युष्मद् + आम् अस्मद् + आम्-

सूत्र- साम आकम्।

युष्मद् अस्मद् के बाद साम को आकम् आदेश होता है। सर्वनाम शब्दों में आम् प्रत्यय को सुट् आगम होने से स्+आम्- साम् होता है।

युष्मद् + आम्   अस्मद् + आम्-   यद्यपि यहाँ सुट् न होने से साम् नहीं है। तथापि दकार लोप होने के बाद सुट् प्राप्त होगा। उसका श्रवण न हो, इसके लिए सूत्र में सामः ऐसा कहा गया है। अतः यहाँ आम् को आकम् होगा-   युष्मद् + आकम्   अस्मद् + आकम्

दकार लोप तथा दीर्घ-   युष्माकम्   अस्माकम्।

त्वयि-मयि- सप्तमी एकवचन में-   युष्मद् + इ (ङि)   अस्मद् + इ (ङि)-

पूर्ववत् एकवचन में युष्म-अस्म को त्व-म आदेश-   त्व अद् इ   म अद् + इ

पूर्ववत् अजादि प्रत्यय होने से अन्त में दकार को यकार-   त्व अय् + इ   म अय् + इ

पररूप-   त्वयि   मयि।

युष्मासु-अस्मासु- सप्तमी बहुवचन में-   युष्मद् + सु (सुप्)   अस्मद् + सु (सुप्)-

पूर्ववत् दकार को आकार आदेश- युष्मदस्मदोरनादेशे-   युष्म आ + सु   अस्म आ + सु

दीर्घ सन्धि करने पर-   युष्मासु   अस्मासु।

➢ **रूपसिद्धि-**

त्वम्- अहम्

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति(युष्मद्)**	**स्थिति(अस्मद्)**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से युष्मद्- अस्मद् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई		
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई		
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-		
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	युष्मद् + सु युष्मद् + स्	अस्मद् + सु अस्मद् + स्
ङेप्रथमयोरम्	प्रथमा विभक्ति सु के स्थान पर अम् आदेश	युष्मद् + अम्	अस्मद् + अम्
त्वाहौ सौ	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः अह	त्व अद् + अम्	अह अद् + अम्

	एवं त्व आदेश हुए		
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	त्व द् + अम्	अह द् + अम्
शेषे लोपः	अन्तिम वर्ण दकार का लोप	त्व + अम्	अह + अम्
अमि पूर्वः	अ के बाद अम् होने पर पूर्वरूप अकार हुआ	**त्वम्**	**अहम्**

युवाम्- आवाम्

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति(युष्मद्)**	**स्थिति(अस्मद्)**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से युष्मद्- अस्मद् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई		
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई		
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-		
स्वौजसमौट्.....	औ प्रत्यय का विधान हुआ	युष्मद् + औ	अस्मद् + औ
ङेप्रथमयोरम्	प्रथमा विभक्ति औ के स्थान पर अम् आदेश	युष्मद् + अम्	अस्मद् + अम्
युवावौ द्विवचने	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः युव एवं आव आदेश हुए	युव अद् + अम्	आव अद् + अम्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	युवद् + अम्	आवद् + अम्
प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्	औ प्रत्यय होने पर युष्मद् तथा अस्मद् के अन्त में आकार आदेश हुआ	युवा + अम्	आवा + अम्
अमि पूर्वः	आ के बाद अम् होने पर पूर्वरूप आकार हुआ	**युवाम्**	**आवाम्**

यूयम्- वयम्

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा प्रथमा बहुवचन में जस् प्रत्यय	युष्मद् + जस्	अस्मद् + जस्
ङेप्रथमयोरम्	प्रथमा विभक्ति जस् के स्थान पर अम् आदेश	युष्मद् + अम्	अस्मद् + अम्
यूयवयौ जसि	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः यूय एवं वय आदेश हुए	यूय अद् + अम्	वय अद् + अम्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	यूयद् + अम्	वयद् + अम्
शेषे लोपः	अन्तिम वर्ण दकार का लोप	यूय + अम्	वय + अम्
अमि पूर्वः	अ के बाद अम् होने पर पूर्वरूप आकार हुआ	**यूयम्**	**वयम्**

त्वाम्- माम्

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा द्वितीया एकवचन में अम् प्रत्यय	युष्मद् + अम्	अस्मद् + अम्
ङेप्रथमयोरम्	प्रथमा विभक्ति अम के स्थान पर अम् आदेश	युष्मद् + अम्	अस्मद् + अम्
त्वमावेकवचने	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः त्व एवं म आदेश हुए	त्व अद् + अम्	म अद् + अम्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	त्वद् + अम्	मद् + अम्
द्वितीयायाञ्च	द्वितीया विभक्ति में अन्त में दकार को आकार आदेश हुआ	त्व आ + अम्	म आ + अम्
अकः सवर्णे दीर्घः	अकार तथा आकार को दीर्घ हुआ	त्वा + अम्	मा+ अम्
अमि पूर्वः	अ के बाद अम् होने पर पूर्वरूप आकार हुआ	**त्वाम्**	**माम्**

त्वया- मया

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा द्वितीया एकवचन में अम् प्रत्यय	युष्मद् + टा	अस्मद् + टा
त्वमावेकवचने	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः त्व एवं म आदेश हुए	त्व अद् + आ	म अद् + आ
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	त्वद् + आ	मद् + आ
योऽचि	अच् आकार परे होने से दकार को यकार आदेश हुआ	त्व य् + अम् **त्वया**	म य्+ आ **मया**

तुभ्यम्- मह्यम्

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा चतुर्थी एकवचन में ङे प्रत्यय	युष्मद् + ङे	अस्मद् + ङे
ङेप्रथमयोरम्	चतुर्थी विभक्ति ङे के स्थान पर अम् आदेश	युष्मद् + अम्	अस्मद् + अम्
तुभ्यमह्यौ ङयि	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः तुभ्य एवं मह्य आदेश हुए	तुभ्य अद् + अम्	मह्य अद् + अम्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप हुआ	तुभ्यद् + अम्	मह्यद् + अम्
शेषे विभाषा	अन्त में दकार को लोप आदेश हुआ	तुभ्य + अम्	मह्य + अम्
अमि पूर्वः	अ के बाद अम् होने पर पूर्वरूप आकार हुआ	**तुभ्यम्**	**मह्यम्**

युष्मभ्यम्- अस्मभ्यम्

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा चतुर्थी बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	युष्मद् + भ्यस्	अस्मद् + भ्यस्
भ्यसो भ्यम्	चतुर्थी विभक्ति भ्यस् के स्थान पर भ्यम् आदेश	युष्मद् + भ्यम्	अस्मद् + भ्यम्
शेषे विभाषा	अन्त में दकार को लोप आदेश हुआ	**युष्मभ्यम्**	**अस्मभ्यम्**

त्वत्- मत्

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा पञ्चमी एकवचन में भ्यस् प्रत्यय	युष्मद् + ङसि	अस्मद् + ङसि
एकवचनस्य च	पञ्चमी विभक्ति ङसि के स्थान पर अत् आदेश	युष्मद् + अत्	अस्मद् + अत्
त्वमावेकवचने	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः त्व एवं म आदेश हुए	त्व अद् + अत्	म अद् + अत्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप	त्वद् + अत्	मद् + अत्
शेषे विभाषा	अन्त में दकार को लोप आदेश हुआ	त्व +अत्	म + अत्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप	**त्वत्**	**मत्**

तव- मम

सूत्र	कार्य	स्थिति(युष्मद्)	स्थिति(अस्मद्)
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा षष्ठी एकवचन में ङस् प्रत्यय	युष्मद् + ङस्	अस्मद् + ङस्
तवममौ ङसि	अस्मद् तथा युष्मद् में अस्म् एवं युष्म् के स्थान पर क्रमशः तव एवं मम आदेश हुए	तव अद् + ङस्	मम अद् + ङस्

युष्मस्मद्भ्याम् ङसोश्	षष्ठी विभक्ति ङस् के स्थान पर अश् आदेश	तव अद् + अश्	मम अद् + अश्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप	तव द् + अ	ममद् + अ
शेषे विभाषा	अन्त में दकार को लोप आदेश हुआ	तव + अ	मम + अ
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप	**तव**	**मम**

युष्माकम्- अस्माकम्

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति(युष्मद्)**	**स्थिति(अस्मद्)**
	पूर्ववत् प्रातिपदिक सञ्ज्ञा तथा षष्ठी बहुवचन में ङस् प्रत्यय	युष्मद् + आम्	अस्मद् + आम्
साम आकम्	षष्ठी विभक्ति आम् के स्थान पर आकम् आदेश	युष्मद् + आकम्	अस्मद् + आकम्
शेषे विभाषा	अन्त में दकार को लोप आदेश हुआ	युष्म + आकम्	अस्म + आकम्
अकः सवर्णे दीर्घः	अकार तथा आकार को दीर्घ	**युष्माकम्**	**अस्माकम्**

12.4.3. युष्मान्-अस्मान् आदि में विशेष आदेश

युष्मद् तथा अस्मद् शब्दों के रूपों में कुछ स्थानों पर विशेष शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे – नमस्ते – नमः ते (तुभ्यम्), एतत् मे (मम) गृहम्। इन शब्दों के प्रयोग के लिए हम यहाँ अग्रिम प्रक्रिया पढेंगे –

सूत्र- युष्मदस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयास्थयोर्वांनावौ।

पद से परे षष्ठी, द्वितीया एवं चतुर्थी विभक्तियों में बनने वाले युष्मद्-अस्मद् के रूपों के स्थान पर क्रमशः वां तथा नौ आदेश होते हैं।

जैसे युष्मद् के द्वितीया-युवां, चतुर्थी- युवाभ्याम्, षष्ठी- युवयोः के स्थान पर वाम् आदेश होगा। अस्मद् के द्वितीया-आवां, चतुर्थी-आवाभ्याम्, षष्ठी- आवयोः के स्थान पर नौ आदेश होगा। ये आदेश द्विवचन में ही होते हैं क्योंकि एकवचन तथा बहुवचन में अन्य आदेश होंगे।

सूत्र- बहुवचनस्य वस्-नसौ।

पद से परे षष्ठी, द्वितीया एवं चतुर्थी विभक्तियों में बनने वाले युष्मद्-अस्मद् के बहुवचन रूपों के स्थान पर क्रमशः वस् तथा नस् आदेश होते हैं। जैसे युष्मद् के द्वितीया-युष्मान्, चतुर्थी-युष्मभ्यम्, षष्ठी- युष्माकम् के स्थान पर वस् आदेश होगा। अस्मद् के द्वितीया-अस्मान्, चतुर्थी-अस्मभ्यम्, षष्ठी- अस्माकम् के स्थान पर नस् आदेश होगा।

सूत्र- तेमयावेकवचनस्य।

पद से परे षष्ठी एवं चतुर्थी विभक्तियों में बनने वाले युष्मद्-अस्मद् के एकवचन रूपों के स्थान पर क्रमशः ते तथा मे आदेश होते हैं। जैसे युष्मद् के चतुर्थी- तुभ्यम्, षष्ठी- तव के स्थान पर ते आदेश होगा। अस्मद् के चतुर्थी-मह्यम्, षष्ठी- मम के स्थान पर मे आदेश होगा।

सूत्र- त्वामौ द्वितीयायाः।

पद से परे द्वितीया विभक्ति में बनने वाले युष्मद्-अस्मद् के एकवचन रूपों के स्थान पर क्रमशः त्वा तथा मा आदेश होते हैं। जैसे युष्मद् द्वितीया- त्वाम् के स्थान पर त्वा आदेश होगा। अस्मद् के द्वितीया- माम् के स्थान पर मा आदेश होगा।

इन सभी रूपों के उदाहरणों को प्रदर्शित करने के लिए अग्रिम रूप दिए गये हैं –

श्रीशस्त्वावतु मापीह दत्तात् ते मेपि शर्म सः - श्रीशः **त्वा-त्वाम्** अवतु। श्रीशः **मा- माम्** अपि अवतु। श्रीशः **ते- तुभ्यं** शर्म दत्तात्। श्रीशः **मे- मह्यम्** शर्म दत्तात्।

स्वामी **ते मे**ऽपि स हरिः- स हरिः **ते- तव**, **मे- मम** अपि स्वामी।

पातु **वाम**पि **नौ** विभुः- विभुः **वाम्- युवां** पातु। विभुः **नौ – आवाम्** पातु।

सुखं वां **नौ** ददात्वीशः- ईशः **वां – युवाभ्याम्** सुखं ददातु। ईशः **नौ – आवाभ्याम्** सुखं ददातु।

पति**र्वाम**पि **नौ** हरिः- हरिः **वां- युवयो**ः पतिः। हरिः **नौ – आवयो**ः पतिः।

सो व्याद् **वो नः-** सः **वः- युष्मान्** अव्यात् । सः **नः- अस्मान्** अव्यात् ।

शिवं **वो नो** दद्यात्- सः **वः – युष्मभ्यम्** शिवं दद्यात् । सः **नः – अस्मभ्यम्** शिवं दद्यात् ।

सेव्योत्र वः स **नः-** सः अत्र **वः – युष्माकं** सेव्यः । सः अत्र **नः – अस्माकं** सेव्यः

12.4.4. सुपाद् शब्द

सुपात्, सुपादौ, सुपादः, सुपादम्, सुपादौ ।

सुपदः- द्वितीया-बहुवचन में सुपाद् + अस् (शस्)-

यहाँ शब्द के अन्त में पद् शब्द का श्रवण हो रहा है ।

सूत्र- पादः पत् ।

यदि भसञ्ज्ञक शब्द के अन्त में पाद् हो, तब पाद् को पद् आदेश होता है ।

सुपाद् + अस् (शस्)- भसञ्ज्ञा होने पर पाद् को पद् आदेश- सुपद् + अस्- सुपदस् - सुपदः

इसी प्रकार भ सञ्ज्ञा में सभी जगह पद् आदेश होता है । जैसे- सुपदा- टा, सुपदे- ङे, सुपदः- ङसि ङस्, सुपदोः- ओस्, सुपदि- ङि ।

अन्यत्र भ सञ्ज्ञा के न होने पर पद् आदेश नहीं होगा । जैसे- सुपाद्भ्याम्- भ्याम्, सुपाद्भिः-भिस्, सुपाद्भ्यः- भ्यस् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. युष्मद् तथा अस्मद् शब्दों में युव तथा आव आदेश किन- किन विभक्तियों में होते हैं?

ख. ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र का कार्य क्या है ?

ग. युष्मान्, अस्माकम्, तुभ्यम्- इन पदों के स्थान पर क्या आदेश होते हैं ?

घ. तद् शब्द की तृतीया विभक्ति के रूप लिखो ।

12.5.चकारान्त शब्द

चकारान्त शब्दों में प्राञ्च्, उदच् आदि शब्द अवलोकनीय है।

12.5.1. प्राञ्च्-शब्द

प्राङ्- प्र उपसर्ग पूर्वक अञ्चु धातु से क्विन् प्रत्यय होता है, जिसे हम पहले पढ चुके हैं, तथा क्विन् का सर्वापहारी लोप होता है।

प्र अञ्च् + क्विन्- क्विन् का सर्वापहारी लोप - प्र अञ्च्

सूत्र- अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति।

हलन्त अङ्ग की उपधा नकार का लोप होता है, यदि कित् या ङित् प्रत्यय परे हो तथा हलन्त अङ्ग इदित् न हो। इदित्- जिसमें ह्रस्व इकार की इत् सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- प्राङ् - प्र अञ्च् - कित् क्विन् प्रत्यय होने से उपधा नकार (ञकार) का लोप- प्र अच्- प्राच्

प्राच् + स् (सु)- पूर्ववत् सर्वनामस्थान प्रत्यय होने से नुम् आगम- उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः- प्रा न् (नुम्) च् + स्

अपृक्त सकार तथा संयोगान्त चकार का लोप- प्रान्

पद के अन्त में नकार को कवर्ग ङकार- क्विन्प्रत्ययस्य कुः- प्राङ्।

अन्यत्र- प्राञ्चौ, प्राञ्चः, प्राञ्चम्, प्राञ्चौ

प्राचः- प्र अञ्च्- नकार का लोप - प्र अच्- प्र अच् + अस् (शस्)-

सूत्र- अचः।

भसञ्ज्ञक अञ्च् के अकार का लोप होता है, यदि अञ्चु धातु के नकार का लोप हुआ हो।

प्र अच् + अस्(शस्)- नकार का लोप तथा भसञ्ज्ञा होने से अञ्च् के अकार का लोप-

प्र च् + अस्

सूत्र- चौ।

जहाँ पर अकार का लोप हुआ हो, ऐसी अञ्चु धातु यदि परे हो, तब पूर्व अण् वर्ण को दीर्घ होता है।

प्र च् + अस्-   नकार का लोप होने से चकार से पूर्व अण् वर्ण अकार को दीर्घ-

प्रा च् + अस्-   प्राचस्-   प्राचः ।

- **रूपसिद्धि-**

प्राङ् -

सूत्र	कार्य	स्थिति
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च	प्र उपसर्ग पूर्वक अञ्चु धातु से क्विन् प्रत्यय	प्र अञ्च् + क्विन्
कृदतिङ्	इस सूत्र से क्विन् प्रत्यय की कृत् सञ्ज्ञा हुई	
	अनुबन्ध लोप	प्र अञ्च् + व्
वेरपृक्तस्य	अपृक्त वकार का लोप हुआ	प्र अञ्च् प्राञ्च्
अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति	हलन्त अङ्ग की उपधा नकार का लोप हुआ	प्राच्
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से प्राच् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	प्राच् + सु प्राच् + स्
उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः	सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर नुम् आगम हुआ	प्रा नुम् च् + स् प्रा न् च् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	प्रा न् च्
संयोगान्तस्य लोपः	संयोगान्त जकार को लोप हुआ	प्रा न्
क्विन्प्रत्ययस्य कुः	क्विन्प्रत्ययान्त के नकार को कवर्ग ङकार हुआ	**प्राङ्**

प्राचः -

सूत्र	कार्य	स्थिति
ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च	प्र उपसर्ग पूर्वक अञ्चु धातु से क्विन् प्रत्यय	प्र अञ्च् + क्विन्
कृदतिङ्	इस सूत्र से क्विन् प्रत्यय की कृत् सञ्ज्ञा हुई	
	अनुबन्ध लोप	प्र अञ्च् + व्
वेरपृक्तस्य	अपृक्त वकार का लोप हुआ	प्र अञ्च् प्राञ्च्
अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति	हलन्त अङ्ग की उपधा नकार का लोप हुआ	प्र अच्
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से प्र अच् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	प्र अच् + शस् प्र अच् + अस्
अचः	भसञ्ज्ञक अञ्च् के अकार का लोप हुआ	प्र च् + अस्
चौ	अकार का लोप होने से पूर्व अण् वर्ण अकार को दीर्घ हुआ	प्रा च् + अस् **प्राचः**

इसी प्रकार सर्वत्र भ सञ्ज्ञा होने पर यही प्रक्रिया होगी। जैसे- प्राचा- टा, प्राचे- ङे, प्राचः- ङसि ङस्, प्राचोः- ओस्, प्राचाम्- आम्, प्राचि- ङि। अन्यत्र- भ सञ्ज्ञा न होने पर चकार को कुत्व होता है- प्राग्भ्याम्- भ्याम्, प्राग्भिः- भिस्, प्राग्भ्यः- भ्यस्, प्राक्षु- सुप्।

अञ्च् से पूर्व में प्र के समान प्रति, उत्, सम् आदि विविध शब्दों को जोडा जा सकता है। सभी जगह यही प्रक्रिया समझनी चाहिए।

जैसे प्रति अञ्च्- यण् सन्धि होने पर- प्रत्यङ्- (नकार-लोप, कुत्व), प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः, प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ। प्रतीचः (नलोप, अकार-लोप, पूर्व अण् इकार को दीर्घ)।

12.5.2. उदच् शब्द तथा सम्यच् शब्द

उद् अञ्च्- उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः।

उदीचः- उद् अञ्च् - नलोप- उद् अच् +अस्(शस्)-

सूत्र- उद ईत्।

उत् से परे भसञ्ज्ञक अञ्च् के अकार को ईकार आदेश होता है, यदि अञ्चु के नकार (ञकार) का लोप हुआ हो।

उद् + अच् + अस्- भ सञ्ज्ञा तथा ञकार का लोप होने से अकार को ईकार आदेश - उदीचः

- **सम्यच् शब्द**

सम्यङ्- सम् + अञ्च्-

सूत्र- समः समिः।

अञ्चु परे होने पर सम् के स्थान पर समि आदेश होता है।

उदाहरण- सम् + अञ्च्- समि + अञ्च्- सम्यञ्च् + स् (सु)- सम्यङ्

तथैव- सम्यञ्चौ सम्यञ्चः सम्यञ्चम्, सम्यञ्चौ, समीचः।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-3**

ङ. अचः इस सूत्र का कार्य लिखो।

च. उद ईत् इस सूत्र का उदाहरण लिखो।

छ. प्राङ् यहाँ कुत्व किस सूत्र से होता है ?

12.6.सारांश

इस अध्याय में हमने दकारान्त, जकारान्त, चकारान्त शब्दों की प्रक्रिया को जाना। विशेष रूप से युष्मद् तथा अस्मद् में समान सूत्रों का प्रयोग द्रष्टव्य है। यहाँ प्रकृति भाग में युष्म् तथा अस्म्

भाग के स्थान पर यथा स्थान त्व- अह, युव्- आव्, यूय्-वय्, त्व-म, तुभ्य-मह्य, तव-मम आदि आदेश होते हैं । उसी प्रकार प्रत्ययों में सु, औ, जस्, अम्, औट्, ङे के स्थान पर अम्, भ्यस् को भ्यम्, ङसि तथा भ्यस् (पञ्चमी) को अत्, ङस् को अश्, आम् को आकम् आदि आदेश होते हैं । इसके अतिरिक्त जकारान्त शब्द ऋत्विज्, युज् तथा चकारान्त शब्द प्राच् , उदच् आदि को सूत्र सहित पढा । इनमें हमने देखा कि स्वादि प्रत्यय जोडने से पहले हम इनमें धातुओं से कृत् सञ्ज्ञक प्रत्यय होता है । इन शब्दों में कुत्व का विधान विशेष रूप से द्रष्टव्य है ।

12.7.कठिन शब्दावली

षट्- षट् एक सञ्ज्ञा है जो षकारान्त संख्या षष् तथा नकारान्त संख्याओं पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन् तथा दशन् शब्दों की होती है ।

12.8.स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

झ. कुत्व

ञ. युज् + सु

ट. राट्

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. औ, औट्, भ्याम्, भ्याम्, भ्याम्, ओस्, ओस् ।

ख. युष्मद्-अस्मद् के बाद ङे तथा प्रथमा –द्वितीया विभक्ति के स्थान पर अम् आदेश होता है ।

ग. युष्मान्- वस्, अस्माकम्- नस्, तुभ्यम्- ते

घ. तेन ताभ्यां तैः

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. भसञ्ज्ञक अञ्च् के अकार का लोप होता है, यदि अञ्चु धातु के नकार का लोप हुआ हो ।

ख. उदीचः

ग. क्विन्प्रत्ययस्य कुः

12.9.सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी।

12.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

छ. त्वाहौ सौ सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

ज. सः,युष्माकम्, ऋत्विग्- रूप सिद्धि करो।

झ. तद्- सप्तमी, अस्मद्- चतुर्थी, प्राच्- द्वितीया, उदच्- प्रथमा- रूप लिखो।

इकाई-13
तकारान्त, शकारान्त, षकारान्त, सकारान्त शब्द
(हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)

संरचना

13.1. पाठ का परिचय

13.2. पाठ का उद्देश्य

13.3. तकारान्त शब्द

- 13.3.1. महत् शब्द
- 13.3.2. धीमत् शब्द
- 13.3.3. ददत् शब्द
- 13.3.4. जक्षत् शब्द
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

13.4. शकारान्त- षकारान्त-सकारान्त शब्द

- 13.4.1. तादृश् शब्द
- 13.4.2. पिपठिष् शब्द
- 13.4.3. विद्वस् शब्द
- 13.4.4. पुंस् शब्द
- 13.4.5. अदस् शब्द
- स्वयं-आकलन प्रश्न-2

13.5. सारांश

13.6. कठिन शब्दावली

13.7. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

13.8. सहायक ग्रन्थ

13.9. अभ्यासात्मक-प्रश्न

13.1. पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में हम हलन्त शब्दों में कुछ पुल्लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे। हलन्त- जिन शब्दों के अन्त में हल्- व्यञ्जन वर्ण हों। इस अध्याय में शब्दों के मुख्य रूप से ये शब्द प्रतिपादित किए जाएंगे -तकारान्त, शकारान्त, षकारान्त तथा सकारान्त शब्द। तकारान्त शब्द, जैसे- महत्, धीमत्, ददत्, जक्षत् आदि, शकारान्त जैसे- तादृश् आदि तथा षकारान्त पिपठिष् आदि। प्रत्येक विभाग में आने वाले विभिन्न शब्दों की सिद्धि में उपयोगी प्रक्रिया तथा रूप सिद्धि प्रदर्शित की गई है।

13.2. पाठ का उद्देश्य

- तकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- शकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- षकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- सकारान्त शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- पूर्व पाठों में पढी गई सञ्ज्ञाओं (भ, पद, सर्वनामस्थान, सङ्ख्या आदि) का हलन्त शब्दों में प्रयोग बताना

13.3.तकारान्त शब्द

तकारान्त शब्दों में महत्, धीमत्, ददत् आदि शब्द अध्ययन के लिए सङ्गृहीत किए गए हैं।

13.3.1. महत्-शब्द

महान्- प्रथमा-एकवचन में महत् + स् (सु)-

महत् शब्द उगित् है। अतः नुम् आगम होता है- उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः-

मह न् (नुम्) त् + स्

अपृक्त सकार तथा संयोगान्त तकार का लोप- मह न्-

सूत्र- सान्तमहतः संयोगस्य।

जहाँ संयोग के अन्त में सकार हो, ऐसे सकारान्त शब्द तथा महत् शब्द के नकार की उपधा को दीर्घ होता है, यदि सम्बुद्धि से भिन्न सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो।

महन्- सम्बुद्धि से भिन्न सर्वनामस्थान सु प्रत्यय होने पर महत् की उपधा को दीर्घ- महान्।

➢ **रूपसिद्धि-**

महान् -

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से महत् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	महत् + सु महत् + स्
उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः	सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर नुम् आगम हुआ	मह नुम् त् + स् मह न् त् + स्
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	मह न् त्
संयोगान्तस्य लोपः	संयोगान्त जकार को लोप हुआ	मह न्
सान्तमहतः संयोगस्य	महत् शब्द के नकार की उपधा को दीर्घ	**महान्**

13.3.2. धीमत्-शब्द

धीमान्- प्रथमा-एकवचन में धीमत् + स् (सु)-

धीमत् शब्द उगित् है । अतः नुम् आगम होता है- उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः-

धीम न् (नुम्) त् + स्

अपृक्त सकार तथा संयोगान्त तकार का लोप-   धीम न्-

सूत्र- अत्वसन्तस्य चाधातोः ।

जिस शब्द के अन्त में अत् हो, या धातु से भिन्न शब्द जिसके अन्त में अस् हो, उसकी उपधा को दीर्घ होता है, यदि असम्बुद्धि सु प्रत्यय परे हो ।

धीम न्-   सम्बुद्धि से भिन्न सु प्रत्यय तथा अत् अन्त में होने पर उपधा अकार को दीर्घ-

धीमान्

इस प्रकार सु प्रत्यय में उपधा को दीर्घ का श्रवण होता है। सम्बुद्धि का सु प्रत्यय होने पर दीर्घ नहीं होगा- हे धीमन्।

सु से भिन्न स्थलों पर ह्रस्व अकार ही होता है। जैसे- धीमन्तौ, धीमन्तौ, धीमन्तः। शस् से सुप् प्रत्यय तक सर्वनामस्थान से भिन्न प्रत्यय परे होने के कारण नुम् आगम नहीं होगा। जैसे- धीमतः, धीमता आदि।

13.3.3. ददत् शब्द

ददत्- प्रथमा-एकवचन में ददत् + स् (सु)-

ददत् शब्द में शतृ प्रत्यय है जिसमें ऋकार की इत् सञ्ज्ञा होने से यह उगित् होता है। उगित् होने से यहाँ पर नुम् प्राप्त है- उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः .

सूत्र- उभे अभ्यस्तम्।

षष्ठाध्याय में विहित जो द्वित्व होता है, उसमें दोनों के समुदाय की अभ्यस्त सञ्ज्ञा होती है।

ददत् + स् (सु)- यहाँ शतृ प्रत्यय होने पर दा धातु को द्वित्व होता है। अतः दद् इस समुदाय की अभ्यस्त सञ्ज्ञा होती है।

सूत्र- नाभ्यस्ताच्छतुः।

अभ्यस्त सञ्ज्ञक से परे शतृ प्रत्यय को नुम् नहीं होता है।

ददत् + स् - अभ्यस्त दद् से परे शतृ- अत् को नुम् का निषेध-

अपृक्त सकार का लोप- ददत्।

- **रूपसिद्धि-**

ददत् -

सूत्र	कार्य	स्थिति
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से ददत् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	ददत् + सु ददत् + स्

उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः	सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर नुम् आगम प्राप्त हुआ	
उभे अभ्यस्तम्	दद इस समुदाय की अभ्यस्त सञ्ज्ञा हुई	
नाभ्यस्ताच्छतुः	अभ्यस्त सञ्ज्ञक से परे शतृ प्रत्यय को नुम् का निषेध हुआ	
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	**ददत्**

13.3.4. जक्षत् शब्द

जक्षत्- जक्षत्+ स् (सु)

जक्षत् शब्द में भी शतृ प्रत्यय है जिसमें ऋकार की इत् सञ्ज्ञा होने से यह उगित् होता है। उगित् होने से यहाँ पर नुम् प्राप्त है- उगिदचां सर्वनामस्थानेधातोः .

सूत्र- जक्षित्यादयः षट्।

जक्ष् धातु तथा अन्य छह धातुओं की अभ्यस्त सञ्ज्ञा होती है। यहाँ पर छह धातुओं में जागृ, दरिद्रा, शास्, चकास्, दीधीङ्, वेवीङ् आती हैं।

जक्षत् + स् (सु)- जक्ष् धातु की अभ्यस्त सञ्ज्ञा होने से पूर्ववत् नुम् का निषेध-

जक्षत् + स्- जक्षत्।

इसी प्रकार अन्य धातुओं की भी अभ्यस्त सञ्ज्ञा होने से- जाग्रत्, शासत्, चकासत्, दीध्यत्, वेव्यत्।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. महान् यहाँ दीर्घ किस सूत्र से होता है ?

ख. अत्वसन्तस्य धातोः इस सूत्र का कार्य तथा उदाहरण लिखो।

ग. ददत् यहाँ नुम् आगम का निषेध-सूत्र लिखो।

घ. किन धातुओं की षट् सञ्ज्ञा होती है ?

13.4.शकारान्त- षकारान्त- सकारान्त शब्द

शकारान्त शब्दों में तादृश्, नश्, घृतस्पृश् शब्द अवलोकनीय है ।

13.4.1. तादृश् शब्द

तादृक्-तादृशः- तद् शब्द पूर्वक दृश् धातु होने पर तद् + दृश्-

सूत्र- त्यदादिषु दृशोनालोचने कञ्च ।

त्यद् आदि शब्दों के पूर्व में होने पर दृश् धातु से कञ् प्रत्यय होता है । सूत्र में चकार से क्विन् प्रत्यय की अनुवृत्ति होती है ।

अतः पक्ष में क्विन् प्रत्ययः होगा ।

उदाहरण- तद् + दृश् + कञ्- तद् + दृश्+ अ-

सूत्र- आ सर्वनाम्नः ।

सर्वनाम के अन्त में आकार आदेश होता है, यदि दृक्, दृश् या वतुप् प्रत्यय परे हो ।

तद् + दृश् + अ- दृश् परे होने से सर्वनाम तद् के दकार को आकार आदेश- ता +दृश्+ अ- तादृश + स् (सु)- **तादृशः** ।

पक्ष में क्विन् प्रत्यय होने पर- तद् + दृश्+ क्विन्- तद्+दृश्- तादृश् + स् (सु)

शकार अन्त में होने से शकार को षकार- व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः - तादृष्

पद के अन्त में जश् सन्धि से षकार को डकार- तादृड्

क्विन् प्रत्यय होने से कुत्व गकार- क्विन्प्रत्ययस्य कुः- तादृग्

अवसान होने से विकल्प से गकार को ककार- तादृक् ।

रूपसिद्धि-

तादृशः-तादृक्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
त्यदादिषु दृशोनालोचने कञ्च	तद् शब्द के पूर्व में होने पर दृश् धातु से कञ् प्रत्यय हुआ	तद् दृश् + कञ् तद् दृश् + अ
आ सर्वनाम्नः	सर्वनाम के अन्त में दकार को आकार आदेश हुआ	तादृश् + अ तादृश
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से तादृश शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	तादृश + सु तादृश + स्
	सकार को रुत्व विसर्ग	**तादृशः**
	पक्ष में क्विन् प्रत्यय होने पर पूर्ववत् क्विन् का सर्वापहारी लोप कुत्व आदि हुआ	**तादृक्**

13.4.2. पिपठिष् शब्द

यहाँ पर हम पिपठिष् शब्द की प्रक्रिया का अवलोकन करेंगे।

पिपठीः- प्रथमा-एकवचन में पिपठिष् + स् (सु)-

सूत्र- र्वोरुपधाया दीर्घ इकः।

रेफान्त या वकारान्त धातु की उपधा इक् को पद के अन्त में दीर्घ होता है।

पिपठिष् - यहां सकार के स्थान पर षकार हुआ है। पूर्वावस्था के सकार को मानकर षकार के स्थान पर रु होता है-

पिपठिष्- पिपठिरु- पिपठिर्- रेफान्त पिपठिर् की उपधा इकार को दीर्घ-

पिपठीर्- पिपठीः।

अन्यत्र औ आदि प्रत्ययों में षकार पदान्त में नहीं होता है । अतः षकार को रु तथा उपधा को दीर्घ नहीं होता है- पिपठिषौ, पिपठिषः ।

सकारान्त शब्दों में विद्वस्,पुंस्, तथा अदस् शब्द द्रष्टव्य है ।

13.4.3. विद्वस् शब्द

विद्वस् शब्द शतृ प्रत्ययान्त है जहाँ शतृ को वसु आदेश हुआ है । इसमें पूर्ववत् नुम्, उपधा-दीर्घ आदि कार्य होते हैं- विद्वान्, विद्वांसौ, विद्वांसः, विद्वांसम्, विद्वांसौ ।

विदुषः- द्वितीया-बहुवचन में विद्वस् + अस् (शस्)-

यहाँ रूप में उकार प्राप्त होता है। अतः उकार के लिए हम अग्रिम विधि पढेंगे-

सूत्र- वसोः सम्प्रसारणम् ।

जिसके अन्त में वस् हो, ऐसे भ-सञ्ज्ञक को सम्प्रसारण होता है ।

उदाहरण- विद्वस् + अस् (शस्)- भसञ्ज्ञा होने से वकार को सम्प्रसारण उकार-

विद् उ अस् + अस्

सम्प्रसारण वर्ण उकार तथा अकार को पूर्वरूप- सम्प्रसारणाच्च

विदुस् + अस्

उकार के बाद सकार को षकार- आदेशप्रत्यययोः-

विदुष्+ अस्-

विदुषस्- विदुषः ।

इस प्रकार भसञ्ज्ञा होने पर सर्वत्र सम्प्रसारण से उकार होगा । जैसे- विदुषा- टा, विदुषे- ङे, विदुषः- ङसि ङस्, विदुषोः- ओस्, विदुषाम्- आम्, विदुषि- ङि ।

भ्याम् आदि प्रत्यय होने पर भ सञ्ज्ञा के अभाव में सम्प्रसारण नहीं होता है । इन स्थलों पर सकार को दकार आदेश होने से- विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भिः, विद्वद्भ्यः, विद्वत्सु ।

विदुषः -

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से विद्वस् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से शस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	शस् प्रत्यय का विधान हुआ	विद्वस् + शस् विद्वस् + अस्
यचि भम्	अजादि सर्वनामस्थान प्रत्यय होने पर विद्वस् भसञ्ज्ञा हुई	
वसोः सम्प्रसारणम्	अन्त में वस् होनो से भ-सञ्ज्ञक के वकार को सम्प्रसारण उकार हुआ	विद उ अस् + अस्
सम्प्रसारणाच्च	सम्प्रसारण वर्ण उकार तथा अकार को पूर्वरूप	विदुस् + अस्
आदेशप्रत्यययोः	उकार के बाद सकार को षकार आदेश हुआ	विदुष् + अस् विदुषस्
	सकार को रुत्व विसर्ग होने से	**विदुषः**

13.4.4. पुंस्-शब्द

पुमान्- प्रथमा-एकवचन में पुंस् + स् (सु)-

सूत्र- पुंसोऽसुङ् ।

पुंस् शब्द के अन्त में असुङ् आदेश होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- **पुमान्**

पुंस् + स् (सु)- सर्वनामस्थान प्रत्यय सु परे होने से अन्त में सकार को असुङ् आदेश-

पुम् + अस् (असुङ) + स् (सु)

पूर्ववत् उगित् होने से नुम् आगम- पुम् + अ न् (नुम्) स् + स्

सकारान्त संयोग होने से उपधा अकार को दीर्घ- सान्तमहतः संयोगस्य - पुम् + आन् स् + स्

अपृक्त हल् वर्ण सकार तथा संयोगान्त सकार का लोप- पुम् + आन् - पुमान् ।

इस प्रकार सर्वनामस्थान प्रत्यय औ आदि परे होने पर भी यही प्रक्रिया- असुङ्, दीर्घ) होगी – पुम् आन् स् + औ

नकार तो अनुस्वार – नश्चापदान्तस्य झलि - पुम् + आं + स् + औ- पुमांसौ ।

सर्वनामस्थान प्रत्यय न होने पर शस् आदि में असुङ् आदेश भी नहीं होगा । अतः- पुंसः, पुंसा इत्यादि रूप होते हैं ।

- **रूपसिद्धि-**

पुमान् -

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से पुंस् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	पुंस् + सु पुंस् + स्
पुंसोऽसुङ्	सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर पुंस् शब्द के अन्त में सकार को असुङ् आदेश हुआ	पुम् असुङ् + स् पुम् अस् + स्
उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः	सर्वनामस्थान प्रत्यय परे होने पर नुम् आगम हुआ	पुम् अ नुम् स् + स् पुम् अ न् स् + स्
सान्तमहतः संयोगस्य	सकारान्त संयोग होने से उपधा अकार को दीर्घ हुआ	पुम् आन् स् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	पुम् आन् स्
संयोगान्तस्य लोपः	संयोगान्त सकार को लोप हुआ	पुम् आन् **पुमान्**

13.4.5. अदस् शब्द

अदस् शब्द का प्रयोग तद् शब्द के अर्थ- वह में होता है । यह भी तद् आदि के समान सर्वनाम शब्द है ।

असौ- प्रथमा- एकवचन में अदस् + स् (सु)-

यहाँ अन्त में हम औकार की प्राप्ति तथा विसर्ग का अभाव देख सकते हैं । अतः इन कार्यों के लिए विधि-

सूत्र- अदस औ सुलोपश्च ।

अदस् में औकार अन्तादेश तथा सु प्रत्यय का लोप होता है ।

उदाहरण- **असौ**

अदस् + स् (सु)- अन्त में सकार को औकार तथा सु प्रत्यय का लोप- अद औ

हम पहले पढ चुके हैं कि त्यद् आदि शब्दों के दकार के स्थान पर सकार होता है । जैसे- तद् शब्द में सः यह रूप होता है । अतः-

अद औ - दकार को सकार आदेश- तदोः सः सावनन्त्ययोः - अस औ- असौ ।

अमू- प्रथमा-द्विवचन में अदस् + औ-

हम पहले पढ चुके हैं कि त्यद् आदि शब्दों के अन्त में अकार होता है । जैसे- तद् शब्द में सः में अकार है । अतः-

अदस् + औ – अन्त में सकार को अकार आदेश- त्यदादीनामः- अद अ + औ

पररूप तथा वृद्धि करने पर- अदौ

इष्ट रूप में स्पष्ट है कि अन्त में ऊकार एवं पूर्व में मकार प्राप्त है । अतः-

सूत्र- अदसोऽसेर्दादुदोमः ।

अदस् शब्द में दकार के बाद उकार या ऊकार तथा दकार को मकार आदेश होता है, यदि अदस् शब्द सकारान्त न हो ।

उदाहरण- अदौ- यहाँ असकारान्त होने से दकार के बाद औ के स्थान पर ऊकार तथा दकार को मकार आदेश- अमू ।

अमी- प्रथमा-बहुवचन में अदस् + जस्- पूर्ववत् सकार को अकार पररूप- अद + जस्

सर्वनामस्थान होने से जस् को शी- अद + शी- अद + ई- अदे

सूत्र- एत ईद् बहुवचने ।

अदस् शब्द में दकार से परे एकार को ईकार तथा दकार को मकार होता है, यदि बहुवचन प्रत्यय हो ।

उदाहरण- अदे- यहाँ बहुवचन जस् प्रत्यय होने से एकार को ईकार तथा दकार को मकार आदेश- अमी ।

इसी प्रकार अन्यत्र भी उत्व तथा मत्व आदेश होंगे । जैसे अमुम्, अमू, अमून् ।

अमुना- अदस् + टा- अद अ + टा- अद + टा- अमु + टा-

यहाँ ह्रस्व उकारान्त होने से विष्णु के समान अमु की घि सञ्ज्ञा- शेषो घ्यसखि

घि सञ्ज्ञा होने से टा को ना आदेश- आङो नास्त्रियाम् - अमु + ना- अमुना ।

यहाँ नादेश (सपादसप्ताध्यायी) की दृष्टि में मकारादेश एवं उकारादेश (त्रिपादी) असिद्ध है- पूर्वत्रासिद्धम् । अतः मु-शब्द के अभाव में घि-सञ्ज्ञा प्राप्त नहीं होती है तथा घि-सञ्ज्ञा के अभाव में टा को नादेश नहीं होता है । अतः इस दोष के समाधान के लिए हम अग्रिम विधि का अध्ययन करेंगे –

सूत्र- न मु ने ।

ना आदेश यदि कर्तव्य हो, तब मु आदेश (मकार एवं उकार आदेश) असिद्ध नहीं होता है ।

उदाहरण- अमु- इस अवस्था में उकारान्त होने से घि सञ्ज्ञा के कारण टा को ना आदेश कर्तव्य है । अतः यहाँ मु आदेश असिद्ध नहीं होगा । अतः मु को मानकर घि सञ्ज्ञा तथा घि सञ्ज्ञा होने से टा को ना आदेश होता है ।

- **रूपसिद्धि**

असौ -

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से अदस् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	अदस् + सु अदस् + स्
अदस औ सुलोपश्च	अदस् में औकार अन्तादेश तथा सु प्रत्यय का लोप हुआ	अद औ
तदोः सः सावनन्त्ययोः	अदस् के दकार को सकार आदेश	अस औ
वृद्धिरेचि	अकार तथा औकार को वृद्धि हुई	**असौ**

अमू -

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से अदस् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	औ प्रत्यय का विधान हुआ	अदस् + औ
त्यदादीनामः	अन्त में सकार को अकार आदेश हुआ	अद अ + औ
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप आदेस हुआ	अद औ
वृद्धिरेचि	अकार तथा औकार को वृद्धि हुई	अदौ
अदसोऽसेर्दादुदोमः	अदस् शब्द में दकार के बाद औकार को ऊकार तथा दकार को मकार आदेश हुआ	**अमू**

अमी -

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से अदस् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	जस् प्रत्यय का विधान हुआ	अदस् + जस्
त्यदादीनामः	अन्त में सकार को अकार आदेश हुआ	अद अ +जस्
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप आदेस हुआ	अद + जस्
जसः शी	जस् को शी आदेश हुआ	अद + शी अद + ई
आद् गुणः	अकार तथा ईकार को गुण आदेश हुआ	अदे
एत ईद् बहुवचने	अदस् शब्द में दकार को मकार तथा एकार को ईकार आदेश हुआ	**अमी**

अमुना-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से अदस् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से टा प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	टा प्रत्यय का विधान हुआ	अदस् + टा
त्यदादीनामः	अन्त में सकार को अकार आदेश हुआ	अद अ + टा
अतो गुणे	दोनों अकारों को पररूप आदेस हुआ	अद + टा
अदसोसेर्दादुदोमः	अदस् शब्द में दकार के बाद अकार को उकार तथा दकार को मकार आदेश हुआ	अमु + टा
शेषो घ्यसखि	उकारान्त अमु की घि सञ्ज्ञा हुई	
आङो नास्त्रियाम्	टा को ना आदेश प्राप्त हुआ	
पूर्वत्रासिद्धम्	ना आदेश की दृष्टि में मकार तथा उकार असिद्ध हुए	

न मु ने	ना आदेश विधेय होने पर मु आदेश (म् तथा उकार) असिद्ध नहीं हुए	
आङो नास्त्रियाम्	टा को ना आदेश हुआ	**अमुना**

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-2**

ज. विदुषः यहाँ सम्प्रसारण किस सूत्र से होता है ?

झ. अदस औ सुलोपश्च इस सूत्र का कार्य क्या है ?

ञ. अमू यहाँ ऊकार तथा मकार किस सूत्र से होते हैं ?

ट. विद्वस्- द्वितीया, अदस्- प्रथमा- निर्दिष्ट विभक्तियों में शब्द-रूप लिखो।

13.5.सारांश

हमने इस अध्याय में तकारान्त, शकारान्त, षकारान्त तथा सकारान्त शब्दों की प्रक्रिया को समझा। इसमें महत् , धीमत् , तादृश्, विद्वस्, पुंस् तथा अदस् की प्रक्रिया को देखा। महत् तथा धीमत् में उपधा दीर्घ, ददत्, जक्षत् में नुम् आगम का निषेध, तादृशः-तादृक् में क्विन् तथा कञ् प्रत्यय, विद्वस् शब्द में सम्प्रसारण इत्यादि इस अध्याय के प्रमुख विषय प्रतिपादित हुए।

13.6.कठिन शब्दावली

अभ्यस्त- अभ्यस्त एक सञ्ज्ञा है जो जक्ष् आदि सात धातुओं की होती है।

13.7.स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

ठ. सान्तमहतः संयोगस्य

ड. जिस शब्द के अन्त में अत् हो, या धातु से भिन्न शब्द जिसके अन्त में अस् हो, उसकी उपधा को दीर्घ होता है, यदि असम्बुद्धि सु प्रत्यय परे हो। उदाहरण- धीमान्

ढ. नाभ्यस्ताच्छतुः

ण. जक्ष्,जागृ, दरिद्रा, शास्, चकास्, दीधीङ्, वेवीङ्

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. वसोः सम्प्रसारणम्

ख. अदस् में औकार अन्तादेश तथा सु प्रत्यय का लोप होता है ।

ग. अदसोऽसेर्दादुदोमः

घ. विद्वांसम् विद्वांसौ विदुषः, असौ अमू अमी

13.8.सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी ।

13.9.अभ्यासात्मक प्रश्न

ञ. वसोः सम्प्रसारणम् सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

ट. महान्, तादृक्, असौ- रूप सिद्धि करो ।

ठ. अदसोऽसेर्दादुदोमः इस सूत्र की व्याख्या करो ।

इकाई-14

हलन्त स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग शब्द

संरचना

14.1. पाठ का परिचय
14.2. पाठ का उद्देश्य
14.3. हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द
- 14.3.1. हकारान्त उपानह् शब्द
- 14.3.2. मकारान्त इदम् शब्द
- 14.3.3. पकारान्त अप् शब्द
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

14.4. हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द
- 14.4.1. नकारान्त अहन् शब्द
- 14.4.2. तकारान्त शब्द
- स्वयं-आकलन प्रश्न-2

14.5. सारांश
14.6. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर
14.7. सहायक ग्रन्थ
14.8. अभ्यासात्मक-प्रश्न

14.1. पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में हम हलन्त स्त्रीलिङ्ग तथा हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे । हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में हकारान्त उपानह्, मकारान्त इदम् तथा पकारान्त शब्द अप् होंगे । उसी प्रकार हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों में तकारान्त शब्द जैसे- ददत्, तुदत् आदि, नकारान्त शब्द अहन् होंगे । इस अध्याय में हम इन शब्दों की मुख्य प्रक्रिया को ही समझेंगे क्योंकि कुछ प्रक्रिया हम अजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण में जान चुके हैं ।

14.2. पाठ का उद्देश्य

- हकारान्त स्त्रीलिङ्ग उपानह् शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- मकारान्त स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द की प्रक्रिया का ज्ञान करना
- पकारान्त स्त्रीलिङ्ग अप् शब्द की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- तकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का ज्ञान कराना
- नकारान्त अहन् शब्द की प्रक्रिया का ज्ञान कराना

14.3. हकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इस भाग में हम स्त्रीलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे जिनके अन्त में हल् (व्यञ्जन) वर्ण होता है । यद्यपि इन शब्दों की अधिकांश प्रक्रिया हलन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के समान होती है तथापि कुछ स्थलों पर भेद होता है ।

14.3.1. हकारान्त उपानह् शब्द

यहाँ हम उपानह् शब्द का अवलोकन करेंगे ।

उपानद्-त्-

यहाँ शब्द के अन्त में हमे दकार या तकार प्राप्त हो रहा है । अतः-

सूत्र- नहो धः ।

नह् के हकार को धकार होता है, यदि हकार पदान्त में हो या झल् वर्ण परे हो ।

उदाहरण- उपानह् + स् (सु)- अपृक्त सकार का लोप- उपानह्

पदान्त में हकार को धकार आदेश- उपानध्

पदान्त में धकार को जश् गकार तथा अवसान में गकार को विकल्प से ककार-

उपानद् उपानत्

14.3.2. मकारान्त इदम् शब्द

यहाँ हम सर्वनाम शब्द इदम् का अवलोकन करेंगे ।

इयम्- प्रथमा-एकवचन में इदम् + स् (सु)

सूत्र- यः सौ ।

इदम् के दकार को यकार आदेश होता है, यदि सु प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- **इयम्**

इदम् + स्- सु प्रत्यय परे होने से दकार को यकार आदेश-

इयम् + स्

हलन्त पुँल्लिङ्ग प्रकरण में हम जान चुके हैं कि इदम् के मकार को मकार आदेश होता है- इयम्+ स्- अपृक्त सकार का लोप-

इयम् ।

इमे- इदम् + औ- इद अ + औ- इद + औ

यहाँ स्त्रीलिङ्ग में टाप् प्रत्यय होता है जो स्त्रीप्रत्यय प्रकरण में हम पढेंगे – इद + टाप् + औ- इद + आ + औ-

इदा + औ- यहाँ रमा के समान औ को शी आदेश- औङ आपः-

इदा+ शी- इदा + ई- इदे

इमौ के समान दकार को मकार आदेश- दश्च-

इमे ।

14.3.3. पकारान्त अप् शब्द-

यहाँ हम अप् शब्द का अवलोकन करेंगे ।

अप् शब्द नित्य बहुवचन में प्रयुक्त होता है ।

अप् + जस्- अप् + अस्- अप् की उपधा को दीर्घ- अप्तृन्तृच्------ आप् + अस्- आपः ।

अद्भिः- अप् + भिस्-

सूत्र- अपो भि ।

अप् शब्द के पकार को तकार आदेश होता है, यदि भकारादि प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- अप् + भिस्- भकारादि प्रत्यय भिस् होने से पकार को तकार-

अत् + भिस्- जश् सन्धि से तकार को दकार-

अद् + भिस्- अद्भिः ।

इसी प्रकार अद्भ्यः भी समझना चाहिए ।

- **रूप सिद्धि-**

उपानद्-त्

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से उपानह् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	उपानह् + सु
उपदेशे जनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	

तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	उपानह् + स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार का लोप हुआ	उपानह्
नहो धः	पद के अन्त में हकार को धकार आदेश हुआ	उपानध्
झलां जशोऽन्ते	पद के अन्त में धकार को जश् वर्ण दकार आदेश हुआ	उपानद्
वावसाने	अवसान होने से दकार को विकल्प से चर् वर्ण तकार आदेश हुआ	**उपानत्**
	चर् के अभाव में जश् वर्ण दकार	**उपानद्**

➢ **रूप सिद्धि-**

इयम्-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से इदम् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से सु प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से एकवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	सु प्रत्यय का विधान हुआ	इदम् + सु
उपदेशे जनुनासिक इत्	उकार की इत् सञ्ज्ञा हुई	
तस्य लोपः	उकार का लोप हुआ	इदम् + स्
त्यदादीनामः	इदम् के अन्त में मकार को अकार प्राप्त हुआ	
इदमो मः	मकार को मकार आदेश हुआ	इदम् + स्
यः सौ	इदम् के दकार को य आदेश हुआ	इयम्+स्
हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त हल् वर्ण सकार को लोप आदेश	**इयम्**

➢ **रूप सिद्धि-**

अद्भिः-

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	इस सूत्र से अप् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से भिस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	तृतीया विभक्ति में भिस् प्रत्यय का विधान हुआ	अप्+ भिस्
अपो भि	पकार को तकार आदेश हुआ	अत् + भिस्
झलां जश् झशि	तकार के स्थान पर जश् दकार आदेश हुआ	अद् + भिस्
	सकार को रुत्व विसर्ग	**अद्भिः**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. उपानद्- यहाँ किस वर्ण के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ख. इमे- इस रूप में प्रकृति- प्रत्यय बताएं ।

ग. अप् शब्द की तृतीया विभक्ति के रूप लिखो ।

14.4. हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

यहाँ हम नपुंसकलिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया को समझेंगे जिनके अन्त में हल् वर्ण होता है । इस प्रक्रिया में बहुत से कार्य अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के समान होते हैं । जैसे औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश, जस्-शस् के स्थान पर शि, नुम् आगम इत्यादि । तथापि कुछ हलन्त शब्दों में किन्ही स्थलों पर प्रक्रिया में भेद होता है । इस दृष्टि से हम यहाँ अहन्- ददत्- तुदत् इत्यादि शब्दों की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे ।

14.4.1. नकारान्त अहन् शब्द

हलन्त नपुंसक शब्दों की अधिकांश प्रक्रिया अजन्त पुंल्लिङ्ग के समान होती है । जैसे सु –अम् का लुक्, औ को शी जस् को शि, नुम् आगम आदि । कुछ विशेष कार्य ही यहाँ अवलोकनीय हैं ।

- **अहन् शब्द**

नकारान्त शब्दों में अहन् की प्रक्रिया द्रष्टव्य है ।

अहः, अह्नी, अहानि । अहः अह्नी अहानि । अह्ना

अहोभ्याम्- तृतीया-द्विवचन में- अहन् + भ्याम्-

सूत्र- अहन् ।

पद के अन्त में अहन् के नकार को रु आदेश होता है ।

उदाहरण- अहन् + भ्याम्-

हलादि भ्याम् प्रत्यय होने से अहन् की पद सञ्ज्ञा तथा पद के अन्त में नकार को रु-

अह रु + भ्याम्- रु को उकार आदेश- हशि च -

अह उ + भ्याम्- अहोभ्याम् ।

14.4.2. तकारान्त शब्द

यहाँ ददत्, तुदत्, पचत्, दीव्यत् इत्यादि शब्द हैं ।

- **ददत्-शब्द**

उक्त सभी रूप शतृ-प्रत्ययान्त हैं । इनमें ददत् शब्द में दा धातु से शतृ प्रत्यय होने पर दा को द्वित्व हुआ है । अतः यहाँ द्वित्व भाग की अभ्यस्त सञ्ज्ञा होती है, तथा अभ्यस्त सञ्ज्ञा होने से नुम् आगम का निषेध होता है । इस प्रक्रिया को हम हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण में पढ चुके हैं । ददत् के रूप प्रथमा विभक्ति में इस प्रकार होंगे- ददत्, ददती ।

ददन्ति- प्रथमा-बहुवचन में- ददत् + जस्

जस् प्रत्यय को शि आदेश- जश्शसोः शि - ददत् + शि

शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा- शि सर्वनामस्थानम्

सूत्र- वा नपुंसकस्य ।

अभ्यस्त सञ्ज्ञक से परे शतृ प्रत्यय हो, तब शतृ प्रत्ययान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द को विकल्प से नुम् आगम होता है, यदि सर्वनामस्थान प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- ददत् + इ (शि)- सर्वनामस्थान शि परे होने पर शतृ प्रत्ययान्त ददत् को विकल्प से नुम्- दद न् (नुम्)त् + इ- ददन्ति

नुम् न होने पर- ददति

- **रूप सिद्धि-**

ददन्ति-ददति

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से ददत् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय की बहुवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से बहुवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में जस् प्रत्यय का विधान हुआ	ददत् + जस्
जश्शसोः शिः	इस सूत्र से जस् प्रत्यय के स्थान पर शि आदेश हुआ	ददत्+ शि
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	शकार का लोप	ददत् + इ
शि सर्वनामस्थानम्	शि की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा हुई	
मिदचोऽन्त्यात् परः	इस सूत्र की सहायता से	
नपुंसकस्य झलचः	झलन्त ददत् शब्द के अन्तिम अच् अकार से परे नुम् आगम प्राप्त हुआ	
वा नपुंसकस्य	विकल्प से नुम् आगम हुआ	दद नुम् त् + इ दद न् त् + इ **ददन्ति**
	नुम् आगम न होने पर	**ददति**

- **तुदत् शब्द**

तुदन्ती- प्रथमा-द्विवचन में तुदत् + औ-

पूर्ववत् औ को शी आदेश- तुदत् + शी

सूत्र- आच्छीनद्योर्नुम् ।

अकारान्त अङ्ग से परे यदि शतृ प्रत्यय हो,तब शतृ प्रत्ययान्त को विकल्प से नुम् होता है, यदि शी प्रत्यय या नदी सञ्ज्ञक शब्द परे हो ।

उदाहरण- तुदत् + शी – शी परे होने पर विकल्प से नुम् आगम- तुद न् (नुम्) त् + ई- तुदन्ती

नुम् न होने पर- तुदती ।

- **रूप सिद्धि-**

तुदन्ती-तुदती

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से तुदत् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में औ प्रत्यय का विधान हुआ	तुदत् + औ
औङ आपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश हुआ	तुदत् + शी
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	शकार का लोप	तुदत् + ई
मिदचोऽन्त्यात् परः	इस सूत्र की सहायता से	
आच्छीनद्योर्नुम्	शी होने से तुदत् शब्द के अन्तिम अच् अकार से परे नुम् आगम हुआ	तुद + नुम् त् + इ तुद न् त्+ इ **तुदन्ती**
	नुम् आगम न होने पर	**तुदती**

- **पचत् शब्द**

पचन्ती- प्रथमा-द्विवचन में-   पचत् + औ-

पूर्ववत् औ को शी आदेश-   पचत् + शी

सूत्र- शप्श्यनोर्नित्यम् ।

अकारान्त अङ्ग से परे यदि शतृ प्रत्यय हो तथा शप् या श्यन् प्रत्यय हुआ हो, तब शतृ प्रत्ययान्त को नित्य नुम् होता है, यदि शी प्रत्यय या नदी सञ्ज्ञक शब्द परे हो ।

उदाहरण-   पचत् + ई (शी)- शप् प्रत्यय होने से शतृप्रत्ययान्त को नुम् आगम-

पच न् (नुम्)त् + ई- पचन्ती ।

इसी प्रकार श्यन् प्रत्यय होने पर दीव्यत् शब्द को नुम् – दीव्यन्ती ।

- **रूप सिद्धि-**

पचन्ती-

सूत्र	कार्य	स्थिति
कृत्तद्धितसमासाश्च	इस सूत्र से पचत् शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा हुई	
सुपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय की द्विवचन सञ्ज्ञा हुई	
द्वेकयोर्द्विवचनैकवचने	इस सूत्र की सहायता से द्विवचन सञ्ज्ञक-	
स्वौजसमौट्.....	प्रथमा विभक्ति में औ प्रत्यय का विधान हुआ	पचत् + औ
औङ आपः	इस सूत्र से औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश हुआ	पचत् + शी
लशक्वतद्धिते	शकार की इत् सञ्ज्ञा	
तस्य लोपः	शकार का लोप	पचत् + ई
मिदचो न्त्यात् परः	इस सूत्र की सहायता से	
आच्छीनद्योर्नुम्	शी होने से पचत् शब्द के अन्तिम अच् अकार से परे विकल्प से नुम् आगम प्राप्त हुआ	
शप्श्यनोर्नित्यम्	पच् से शप् प्रत्यय होने पर नित्य नुम् आगम हुआ	पच + नुम् त् + इ पच न् त्+ इ **पचन्ती**

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-2**

  ठ. अहोभ्याम्- इस रूप में किस वर्ण के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

  ड. ददत् शब्द के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में क्या रूप होते हैं ?

  ढ. पचन्ती – यहाँ नुम् आगम किस सूत्र से होता है ?

  ण. यशस्- प्रथमा, अहन्- तृतीया, जगत्- प्रथमा, निर्दिष्ट विभक्तियों में शब्द-रूप लिखो ।

14.5. सारांश

इस अध्याय में हमने हलन्त स्त्रीलिङ्ग तथा हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों को पढा । स्त्रीलिङ्ग शब्दों में हकारान्त शब्द उपानह् तथा तकारान्त शब्द अप् की प्रक्रिया को जाना । हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण के आदि में हम हकारान्त शब्दों लिह् आदि में हकार के स्थान पर ढकार आदेश पढ चुके हैं । उसी का अपवाद नह् धातु के हकार के स्थान पर धकार आदेश हमने यहाँ समझा । इसके अतिरिक्त पुंल्लिग इदम् शब्द की प्रक्रिया हम जान चुके हैं । स्त्रीलिङ्ग इदम् में इद् के स्थान पर अय् आदेश का अपवाद इय् होता है । हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों में हमने ददत्, पचत्, तुदत् आदि शब्दों की प्रक्रिया को देखा । यहाँ नुम् आगम का विधान मुख्य रूप से प्रतिपाद्य विषय है । सामान्य रूप से शतृ-प्रत्यय लगाने पर नुम् आगम होता है । जैसे- पचन्, गच्छन्, पठन् इत्यादि । तथापि कहीं पर नुम् आगम का विधान विकल्प से होता है । जैसे– ददत् शब्द से जस् प्रत्यय जोडने पर विकल्प से नुम् होने पर ददति-ददन्ति दो रूप होते हैं । कहीं नुम् नित्य होता है । जैसे – पचत् से पचन्, दीव्यत् से दीव्यन् । हलन्त पुंल्लिङ्ग शब्दों की प्रक्रिया का हलन्त स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग शब्दों की अधिकांश प्रक्रिया में उपयोग होता है । अतः अग्रिम भागों में अधिक प्रक्रिया प्रतिपाद्य नहीं है ।

14.6. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

त. हकार के स्थान पर धकार।

थ. इदम् + जस्।

द. अद्भिः।

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. नकार के स्थान पर रु।

ख. ददन्ति ।

ग. शप्श्यनोर्नित्यम्।

घ. यशः यशसी यशांसि, अह्ना अहोभ्याम् अहोभिः, जगत् जगती जगन्ती।

14.7. **सहायक ग्रन्थ**

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी।

14.8. अभ्यासात्मक प्रश्न

ङ. शप्श्यनोर्नित्यम् सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

ढ. उपानद्, इयम्, अद्भिः - रूप सिद्धि करो।

इकाई-15
भ्वादि गण – भू धातु

संरचना

15.1. पाठ का परिचय
15.2. पाठ का उद्देश्य
15.3. लट् लकार
- 15.3.1. लकार के अर्थ
- 15.3.2. तिप् आदि प्रत्यय
- 15.3.3. आत्मनेपद तथा परस्मैपद प्रयोग
- 15.3.4. पुरुष तथा वचन विधान
- 15.3.5. सार्वधातुक कार्य
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

15.4. लिट् लकार
- 15.4.1. काल
- 15.4.2. णलादि आदेश
- 15.4.3. आगम विधान
- 15.4.4. द्वित्व तथा अभ्यास कार्य
- 15.4.5. इट् आगम
- स्वयं आकलन प्रश्न- 2

15.5. लुट् तथा लृट् लकार
- 15.5.1. काल
- 15.5.2. स्य-तासि प्रत्यय
- 15.5.3. आर्धधातुक सञ्ज्ञा
- 15.5.4. डा आदि आदेश
- 15.5.5. सकार लोप
- 15.5.6. लृट् लकार का विधान
- स्वयं आकलन प्रश्न-3

15.6. लोट्

15.6.1. लकार का अर्थ

15.6.2. उकार आदेश तथा ताम् आदि आदेश

15.6.3. मध्यम पुरुष के कार्य

15.6.4. उत्तम पुरुष के कार्य

15.6.5. आशीः अर्थ में होने वाले कार्य

- स्वयं आकलन प्रश्न-4

15.7. लङ्

15.7.1. काल

15.7.2. अट् आगम

15.7.3. इकार लोप

- स्वयं आकलन प्रश्न-5

15.8. लिङ् लकार

15.8.1. विधि आदि अर्थ

15.8.2. यासुट् आगम तथा अन्य कार्य

15.8.3. आशीर्लिङ्

- स्वयं आकलन प्रश्न-6

15.9. लुङ् तथा लृङ् लकार

15.9.1. काल तथा अन्य अर्थ

15.9.2. च्लि आदि कार्य

15.9.3. लृङ् लकार का अर्थ

- स्वयं-आकलन प्रश्न-7

15.10. सारांश

15.11. कठिन शब्दावली

15.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

15.13. सहायक ग्रन्थ

15.14. अभ्यासात्मक प्रश्न

15.1. पाठ का परिचय

जैसा कि पहले हम पढ चुके हैं कि पद दो प्रकार के होते हैं- सुबन्त तथा तिङन्त । पिछले पाठ में हमनें सुबन्त शब्दों को जाना । इस पाठ में हम तिङन्त शब्दों को जानेंगे । तिङन्त पदों से उस क्रिया का बोध होता है, जिससे वाक्य की समाप्ति होती है । जैसे- रामः ग्रामं गच्छति यहाँ गच्छति तिङन्त पद है तथा इस पद से वाक्य की समाप्ति हो रही है । जिस प्रकार सुबन्त पदों मे प्रातिपदिक से सुप् प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, उसी प्रकार इन में धातु से तिङ् प्रत्यय लगाए जाते हैं, इसलिए इन पदों को तिङन्त इसलिए कहा जाता है । यद्यपि यह प्रक्रिया सभी तिङन्तों में समान है, तथापि इन पदों के मध्य में होने वाली प्रक्रिया में भेद होने के कारण इन्हें दस गणों में विभक्त किया गया है- भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, रुधादि, तुदादि, तनादि, क्र्यादि, तथा चुरादि । इस भाग में हम भ्वादि गण की प्रथम भू धातु की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे ।

15.2. पाठ का उद्देश्य-

- तिङन्त पदों का ज्ञान करना
- तिङ् प्रत्ययों का ज्ञान तथा प्रयोग करना
- परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं तथा प्रक्रिया का परिचय
- तीन वाच्यों- कर्तृवाच्य, कर्म वाच्य तथा भाववाच्य का ज्ञान
- लकारों तथा उनके अर्थों का ज्ञान
- सार्वधातुक तथा आर्धधातुक संज्ञा का परिचय
- इट् आगम की व्यवस्था का ज्ञान

15.3. लट् लकार

यद्यपि सर्वप्रथम भू धातु द्रष्टव्य है, तथापि भू धातु के अध्ययन से पूर्व सभी धातुओं की आधारभूत प्रक्रिया जाननी आवश्यक है । अतः सर्वप्रथम हम कुछ आधारभूत नियमों का ज्ञान प्राप्त करेंगे ।

➢ **लकारों का विधान-**

लकार का अर्थ प्रत्यय है, जो धातु के साथ जोडा जाता है । सबसे पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि तिङन्त शब्दों में दस लकारों का प्रयोग होता है – लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् । इनमें पाँचवां लेट् लकार केवल वेदों में प्रयुक्त होता है ।

15.3.1. लकार के अर्थ

लकारों के अर्थ दो प्रकार के होते हैं – सामान्य तथा विशेष। सामान्य अर्थ, जो सभी लकारों का समान होता है तथा विशेष अर्थ, जो प्रत्येक लकार का भिन्न-भिन्न होता है। सबसे पहले हम लकारों का सामान्य अर्थ जानेंगे।

- **लकारों के कर्ता आदि अर्थ-**

सूत्र- लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः।

इस सूत्र में कर्तरि यह पद अनुवृत्ति से प्राप्त होता है। लः का अर्थ लकार है। सकर्मक धातुओं से लकार कर्ता तथा कर्म अर्थ में होते हैं एवं अकर्मक धातुओं से भाव तथा कर्ता अर्थ में होते हैं। यह सूत्र बताता है कि तिङन्त शब्दों में तीन वाच्य हैं- कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य तथा भाव वाच्य। यदि सकर्मक धातु है, तब लकार का अर्थ कर्ता होगा अर्थात् कर्तृ वाच्य। जैसे- गच्छति, पठति आदि। अथवा लकार का अर्थ कर्म होगा अर्थात् कर्म वाच्य। जैसे- गम्यते, पठ्यते। यदि अकर्मक धातु है, तब लकार का अर्थ कर्ता होगा अर्थात् कर्तृ वाच्य। जैसे- भवति, हसति आदि। या लकार का अर्थ भाव (क्रिया) होगा अर्थात् भाव वाच्य। जैसे- भूयते, हस्यते आदि।

- **काल**

लकारों के विशेष अर्थ को जानने के लिए प्रत्येक लकार में भिन्न सूत्र होता है। जैसे लट् लकार के विषय में अग्रिम सूत्र-

सूत्र- वर्तमाने लट्।

धातु से विहित लट् लकार वर्तमान काल में होता है।

उदाहरण- भू धातु से वर्तमान काल में लट् लकार - भू + लट्- भू + ल्।

यहाँ हमे यह समझना आवश्यक है कि जैसे सु आदि प्रत्यय प्रातिपदिक से होते हैं क्योंकि उन प्रत्ययों में प्रातिपदिक का अधिकार है। उसी प्रकार लट् आदि सभी लकार धातु से होते हैं क्योंकि यहाँ **धातोः** इस सूत्र का अधिकार है - ।

15.3.2. तिबादि प्रत्यय-

तिङन्त शब्दों में लकार का श्रवण नहीं होता है अपितु ति तः आदि शब्द अन्त में होते हैं। अतः अब हम लकार के स्थान पर होने वाले तिप् आदि लादेशों को जानेंगे।

सूत्र – तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-मस्-त-आतां-झ-थास्-आथां-ध्वम्-इट्-वहि-महिङ्।

लकार के स्थान में तिप् आदि अठारह आदेश होते हैं।

15.3.3. आत्मनेपद तथा परस्मैपद प्रयोग

इन अठारह तिप् आदि प्रत्ययों को हम दो भागों में बाँटते हैं- परस्मैपद तथा आत्मनेपद।

सूत्र- लः परस्मैपदम्।

लकार के स्थान पर होने वाले तिप् आदि आदेशों की परस्मैपद सञ्ज्ञा होती है।

सूत्र- तङानावात्मनेपदम्।

तङ् प्रत्याहार तथा आन की आत्मनेपद सञ्ज्ञा होती है। आन शब्द से हम शानच् तथा कानच् प्रत्ययों का ग्रहण करते हैं। तङ् प्रत्याहार में त, आतां, झ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इट्, वहि, महिङ् ये नौ प्रत्यय आते हैं। यह सूत्र परस्मैपद सञ्ज्ञा का अपवाद है। अतः तिप् तस् झि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस् इन नौ प्रत्ययों की परस्मैपद सञ्ज्ञा तथा त आताम् झ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इट्, वहि, महिङ् इन नौ प्रत्ययों की आत्मनेपद सञ्ज्ञा होती है।

अब हमें यह जानना है कि किस धातु से परस्मैपद प्रत्यय होंगे तथा किस से आत्मनेपद।

सूत्र- अनुदात्तङित आत्मनेपदम्।

जिस धातु में अनुदात्त स्वर की या ङकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, उस धातु से आत्मनेपद का प्रयोग होता है।

उदाहरण- एध वृद्धौ- यहाँ एध धातु में अनुदात्त स्वर अकार की इत् सञ्ज्ञा होने से आत्मनेपद होता है- एधते।

शीङ् स्वप्ने- यहाँ ङकार की इत् सञ्ज्ञा होने से आत्मनेपद होता है- शेते।

सूत्र- स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।

जिस धातु में स्वरित स्वर की या ञकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, उस धातु से आत्मनेपद का प्रयोग होता है, यदि क्रिया काल फल कर्ता को प्राप्त हो। यदि क्रिया का फल कर्ता से भिन्न को प्राप्त हो, तब परस्मैपद होता है। इससे स्पष्ट है कि यहाँ उभयपद होगा।

उदाहरण- डुपचष् पाके- यहाँ धातु में स्वरित स्वर चकारोत्तर अकार की इत् सञ्ज्ञा होने से आत्मनेपद होता है, यदि क्रिया का फल कर्ता को प्राप्त हो- सीता ओदनं पचते। यदि क्रिया का फल कर्ता को प्राप्त न हो, तब परस्मैपद होगा। जैसे- पाचकः रामाय ओदनं पचति।

डुकृञ् करणे - यहाँ ञकार की इत् सञ्ज्ञा होने से आत्मनेपद होता है, यदि क्रिया का फल कर्ता को प्राप्त हो – रामः घटं कुरुते।

यदि क्रिया का फल कर्ता को प्राप्त न हो, तब परस्मैपद होगा- कुम्भकारः घटं करोति।

सूत्र- शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्।

शेष धातुओं से परस्मैपद होता है। अर्थात् उपर्युक्त अवस्थाओं को छोडकर अन्यत्र परस्मैपद होता है।

उदाहरण- भू धातु- यहाँ अनुदात्त स्वर, ङकार, स्वरित स्वर या ञकार किसी की इत् सञ्ज्ञा नहीं होती है। अतः यहाँ परस्मैपद का प्रयोग होगा।

15.3.4. पुरुष तथा वचन विधान

यहाँ पर यह स्पष्ट हो गया है, कि भू धातु से तिप् आदि नौ प्रत्ययों का प्रयोग होगा। अब हमें यह जानना है, कि तिप् आदि नौ प्रत्ययों में कहां कौन सा प्रत्यय होगा।

सूत्र- तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः।

तिङ् प्रत्ययों में क्रमशः तीन-तीन प्रत्ययों की क्रमशः प्रथम, मध्यम तथा उत्तम पुरुष सञ्ज्ञा होती है। जैसे- तिप्, तस्, झि की प्रथम पुरुष सञ्ज्ञा, सिप्, थस्, थ की मध्यम पुरुष सञ्ज्ञा, मिप्, वस्, मस् की उत्तम पुरुष सञ्ज्ञा, पुनः, त, आताम्, झ की प्रथम पुरुष सञ्ज्ञा, थास्, आथाम्, ध्वम् की मध्यम पुरुष सञ्ज्ञा, इट्, वहि, महिङ् की उत्तम पुरुष सञ्ज्ञा होती है।

सूत्र- तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः।

जिन प्रत्ययों की प्रथम पुरुषादि सञ्ज्ञाएं हुई हैं, उन की एक- एक कर एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन सञ्ज्ञाएं होती हैं। जैसे प्रथम पुरुष में तिप्, तस्, झि की क्रमशः एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन सञ्ज्ञाएं होती हैं। इसी प्रकार अन्य पुरुषों में भी समझना चाहिए।

सूत्र- युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः।

युष्मद् का लकार के साथ सामानाधिकरण्य हो, तब मध्यम पुरुष का प्रयोग होता है। सामानाधिकरण्य का अभिप्राय यह है, कि जहाँ लकार तथा युष्मद् दोनों का अर्थ समान हो। जैसे यदि लकार कर्ता अर्थ में हो तथा युष्मद् – त्वं युवां यूयम् भी कर्ता हो , तब मध्यम पुरुष होता है। त्वं पठसि, युवां पठथः, यूयं पठथ।

सूत्र- अस्मद्युत्तमः।

अस्मद् का लकार के साथ सामानाधिकरण्य हो, तब उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है। सामानाधिकरण्य का अभिप्राय यह है, कि जहाँ लकार तथा अस्मद् दोनों का अर्थ समान हो। जैसे यदि लकार कर्ता अर्थ में हो तथा अस्मद् – अहम्, आवां, वयम् भी कर्ता हो , तब उत्तम पुरुष होता है। अहं पठामि, आवां पठावः, वयं पठामः।

सूत्र- शेषे प्रथमः।

शेष अर्थात् युष्मद्-अस्मद् से भिन्न का लकार के साथ सामानाधिकरण्य हो, तब प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है। जैसे- बालकः पठति, बालकः पठतः, बालकाः पठन्ति।

यहाँ यह स्पष्ट है कि भू धातु से वर्तमान काल की क्रिया होने पर लट् लकार, तत्पश्चात् उसके स्थान में परस्मैपद में प्रथम पुरुष के एकवचन सञ्ज्ञक तिप् प्रत्यय का विधान होगा-

भू + लट्- भू + ल्- भू + तिप्-

15.3.5. सार्वधातुक कार्य

भवति इस रूप में हमें अन्त मे ति तिप् प्रत्यय से प्राप्त होता है। उससे पूर्व में भव् + अ इसमें अकार तथा अव् अपेक्षित है। इसके लिए हम अग्रिम प्रक्रिया का अवलोकन करेंगे-

- **सार्वधातुक सञ्ज्ञा**

सूत्र- तिङ् शित् सार्वधातुकम्।

यहाँ सार्वधातुक सञ्ज्ञा तथा तिङ् , शित् सञ्ज्ञी है। तिङ् प्रत्याहार के तिप् आदि प्रत्ययों तथा शित्- जिसमें श् की इत् सञ्ज्ञा हो की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- भू + ति (तिप्)- यहाँ तिङ् प्रत्यय तिप् की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होती है।

- **शप् प्रत्यय**

सूत्र- कर्तरि शप्।

कर्तृ वाच्य में शप् प्रत्यय हो, यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- भू + ति- सार्वधातुक तिप् प्रत्यय परे होने पर भू धातु से शप् प्रत्यय-

भू + शप् + ति- भू + अ + ति

शित् होने से शप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा

- **गुण विधान**

सूत्र- सार्वधातुकार्धधातुकयोः

जिस अङ्ग के अन्त में इक् हो, उस को गुण आदेश होता है, यदि सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- भू + अ + ति-

सार्वधातुक शप् प्रत्यय परे होने से इगन्त अङ्ग भू के इक् वर्ण ऊकार को गुण ओकार-

भो+अ+ति- अयादि सन्धि में ओकार को अव् आदेश-

भ् अव्+अ+ति - भवति।

लट् लकार में सभी रूपों में आदि में भव् का श्रवण होता है। अतः सर्वत्र यही प्रक्रिया होगी।

भवन्ति- भू धातु से लट् लकार – भू + लट् - भू + ल्

लकार के स्थान पर परस्मैपद-प्रथम पुरुष-बहुवचन में झि प्रत्यय – भू + झि

पूर्वोक्त प्रक्रिया द्वारा - भव् + अ + झि

यहाँ रूप में हमें अन्ति का श्रवण होता है । अतः-

सूत्र- झोन्तः ।

झकार के स्थान पर अन्त आदेश होता है ।

उदाहरण- भव् + अ + झि- झकार को अन्त आदेश- भव् + अ + अन्ति

दोनों अकारों को पररूप- अतो गुणे- भवन्ति ।

भवामि- भू धातु से लट् लकार – भू + लट् - भू + ल्

लकार के स्थान पर परस्मैपद-मध्यम पुरुष-एकवचन में मिप् प्रत्यय – भू + मिप्

पूर्वोक्त प्रक्रिया द्वारा - भव् + अ + मि

सूत्र- अतो दीर्घो यञि ।

अकारान्त अङ्ग को दीर्घ होता है, यदि वह प्रत्यय परे हो, जिसके आदि में यञ् प्रत्याहार का वर्ण हो ।

भव्+ अ + मि- यहाँ मिप् प्रत्यय के आदि में यञ् वर्ण मकार होने से अकारान्त अङ्ग भव्+ अ के अकार को दीर्घ- भव् +आ + मि- भवामि ।

इसी प्रकार यञादि प्रत्यय वस् तथा मस् में भी दीर्घ- भवावः, भवामः ।

- **रूप सिद्धि-**

भवति-

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	भू + लट् भू + ल्
लः परस्मैपदम्	इस सूत्र से तिप् आदि प्रत्ययों की परस्मैपद सञ्ज्ञा हुई	
शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्	इस सूत्र से परस्मैपद प्रत्ययों का विधान हुआ	
तिङस्त्रीणि-त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः	इस सूत्र से तिप् तस् झि प्रत्ययों की प्रथमपुरुष सञ्ज्ञा हुई	
शेषे प्रथमः	इस सूत्र से प्रथम पुरुष प्रत्ययों का विधान हुआ	

तान्येकवचनद्विवचनबहु-वचनान्येकशः	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	भू + शप् + ति
	अनुबन्ध लोपः	भू + अ + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	शित् होने से शप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	सार्वधातुक प्रत्यय शप् परे होने से भू के इक् वर्ण ऊकार को गुण ओकार हुआ	भो +अ +ति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से ऊकार को अव् आदेश हुआ	भ् अव् + अ+ ति- **भवति**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

  क. लकारों के कौन-कौन वाच्य होते हैं ?

  ख. आत्मनेपद सञ्ज्ञा किन प्रत्ययों की होती है ?

  ग. सार्वधातुक सञ्ज्ञा किन प्रत्ययों की होती है ?

  घ. किस लकार का प्रयोग केवल वेद में होता है ?

  ङ. युष्मद् उपपद होने पर किस पुरुष का प्रयोग होता है ?

15.4. लिट् लकार-

लिट् लकार में आधारभूत प्रक्रिया पूर्वोक्त होती है । अतः यहाँ हम विशेष कार्यों का अध्ययन करेंगे ।

15.4.1. काल

बभूव- भू धातु से लकार की आकाङ्क्षा में-

सूत्र- परोक्षे लिट् ।

परोक्ष भूतकाल की क्रिया में लिट् लकार का प्रयोग होता है ।

उदाहरण- भू + लिट्- भू + ल्

परस्मैपद- प्रथमपुरुष-एकवचन में लकार के स्थान पर तिप् आदेश- भू + तिप्

15.4.2. णलादि आदेश तथा वुक् आगम

सूत्र- परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः ।

लिट् लकार में परस्मैपद तिप् आदि प्रत्ययों के स्थान पर क्रमशः णल् अतुस् उस्, थल् अथुस् अ, णल् व म आदेश होते हैं ।

उदाहरण- भू + तिप् - तिप् प्रत्यय को णल् आदेश- भू + णल्- भू + अ

सूत्र- भुवो वुक् लुङ्लिटोः ।

भू धातु को वुक् आगम होता है, यदि अजादि लुङ् या लिट् लकार परे हो ।

उदाहरण- भू + अ- यहाँ लिट् लकार के अजादि प्रत्यय होने से भू धातु को वुक् आगम-

वुक् आगम कित् होने से भू के अन्त में होगा- आद्यन्तौ टकितौ -

भू वुक् + अ- भू व् + अ

15.4.3. द्वित्व तथा अभ्यास कार्य

सूत्र- लिटि धातोरनभ्यासस्य

लिट् लकार में धातु के अनभ्यास अवयव एकाच् को द्वित्व होता है ।

उदाहरण- भू व् + अ- धातु के एकाच् भूव् को द्वित्व- भूव् +भूव् + अ

सूत्र- पूर्वोऽभ्यासः ।

धातु को द्वित्व करने पर पूर्व भाग की अभ्यास सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- भूव् + भूव् + अ- यहाँ पूर्व भाग भूव् की अभ्यास सञ्ज्ञा

सूत्र- हलादि शेषः ।

अभ्यास का आदि हल् शेष रहता है तथा अन्य हल् का लोप होता है ।

उदाहरण- भूव् + भूव् + अ - अभ्यास भूव् के आदि हल् भ तथा अच् ऊकार का शेष-

भू + भूव् + अ

सूत्र- ह्रस्वः ।

अभ्यास को ह्रस्व होता है ।

उदाहरण- भू + भूव् + अ- अभ्यास में दीर्घ ऊकार को ह्रस्व उकार-

भु+ भूव् + अ

सूत्र- भवतेरः ।
अभ्यास में भू धातु के उकार को अकार होता है ।
उदाहरण- भु + भूव् + अ-   अभ्यास में उकार को अकार-
भ भूव् + थ
सूत्र- अभ्यासे चर्च ।
अभ्यास में झल् को जश् तथा खय् वर्ण को चर् आदेश होता है ।
उदाहरण- भ + भूव् + अ-   अभ्यास में झल् भकार को जश् बकार आदेश-
ब + भूव् + अ-   बभूव ।
इसी प्रकार तस् आदि प्रत्ययों में अतुस् आदि आदेश होने पर - बभूवतुः, बभूवुः ।

बभूविथ- पूर्ववत् भू + लिट्- भू + सिप्-   भू + थल्-   भू वुक् + थ-   भूव् + थ-
भूव् भूव् + थ-   भू भूव् + थ-   भु भूव् + थ
भ भूव् + थ- ब भूव् + थ

15.4.4. इट् आगम

यहाँ रूप में हमें इकार का श्रवण होता है । अतः-
सूत्र- लिट् च ।
लिट् लकार के स्थान में होने वाले तिप् आदि आदेशों की आर्धधातुक सञ्ज्ञा होती है ।
उदाहरण-   ब भूव् + थ-   थल् प्रत्यय की आर्धधातुक सञ्ज्ञा
सूत्र- आर्धधातुकस्येड् वलादेः ।
आर्धधातुक सञ्ज्ञक प्रत्यय को इट् आगम होता है, यदि प्रत्यय के आदि में वल् प्रत्याहार का वर्ण हो ।
उदाहरण- ब भूव् + थ- वलादि आर्धधातुक थल् प्रत्यय के आदि में इट् आगम-
ब भूव् + इट् + थ-   बभूविथ ।
इसी प्रकार वलादि वस् तथा मस् प्रत्ययों में भी इट् आगम होने से – बभूविव, बभूविम ।

रूप सिद्धि- बभूव

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ	भू + लिट् भू + ल्

	अनुबन्ध लोप	
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू + ति
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुस-णल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ अनुबन्ध लोप	भू+ णल् भू+ अ
भुवो वुक् लुङ् लिटोः	इस सूत्र से भू धातु को वुक् आगम हुआ अनुबन्ध लोप	भू वुक् + अ भू व् + अ
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से भूव् भाग को द्वित्व हुआ	भूव् भूव् + अ
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- भूव् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास भूव् के वकार का लोप हुआ	भू + भूव् + अ
ह्रस्वः	इस सूत्र से अभ्यास में दीर्घ ऊकार के स्थान पर ह्रस्व उकार हुआ	भु + भूव् + अ
भवतेरः	इस सूत्र से अभ्यास में उकार को अकार आदेश हुआ	भ + भूव् + अ
अभ्यासे चर्च	इस सूत्र से अभ्यास में भकार के स्थान पर बकार हुआ	ब + भूव् + अ- **बभूव**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. बभूव यहाँ कौन सा आगम होता है ?

ख. लिट् लकार में तिप् आदि के स्थान पर क्या आदेश होते हैं ?

ग. भू + भू+ अ यहाँ प्रथम भू की क्या सञ्ज्ञा होती है ?

घ. किस प्रकार का प्रत्यय परे होने पर इट् आगम होता है ?

15.5. लुट् तथा लृट् लकार-

भू धातु से लकार की विवक्षा में-

15.5.1. काल

सूत्र- अनद्यतने लुट् ।

अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार होता है । भविष्यत् काल अद्यतन- आज तथा अनद्यतन- आज से भिन्न के भेद से दो प्रकार का होता है । अनद्यतन- आज से भिन्न भविष्यत् में लुट् लकार होता है ।

उदाहरण- भू धातु से अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार- भू + लुट्- भू + ल्

परस्मैपद के प्रथम पुरुष के एकवचन में तिप् प्रत्यय- भू+ तिप्- भू + ति

15.5.2. स्य-तासि प्रत्यय

तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- स्यतासी लृलुटोः ।

लृ से यहाँ लृट् तथा लृङ् लकारों को समझना चाहिए । अतः लृट्- लृङ् लकारों में धातु से स्य तथा लुट् में तासि प्रत्यय होता है ।

उदाहरण- भू + तास् + ति

15.5.3. आर्धधातुक सञ्ज्ञा

सूत्र- आर्धधातुकं शेषः ।

शेष अर्थात् तिङ् एवं शित् प्रत्यय से भिन्न की आर्धधातुक सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- भू + तास् + ति - तिङ्- शित् से भिन्न तास् की आर्धधातुक सञ्ज्ञा हुई ।

आर्धधातुक सञ्ज्ञा का प्रयोजन-

यहाँ भविता रूप में हमें इकार दिखाई देता है, जो इट् आगम से प्राप्त होता है तथा इट् के लिए आर्धधातुक सञ्ज्ञा अपेक्षित है ।

भू + तास् + ति- वलादि आर्धधातुक तास् प्रत्यय के आदि में इट् आगम-

भू + इ (इट्) +तास् + ति

15.5.4. डा आदि आदेश

सूत्र- लुटः प्रथमस्य डारौरसः ।

लुट् लकार में प्रथम पुरुष के स्थान पर डा रौ रस् आदेश होते हैं। अतः तिप् तस् झि को क्रमशः डा रौ रस् आदेश होते हैं।

उदाहरण- भू + इ + तास् + ति- प्रथम पुरुष ति के स्थान पर डा आदेश-

भू + इ + तास् + डा- भू + इ + तास् + आ

डा प्रत्यय के डित् होने से तास् की टि- आस् का लोप- टेः-

भू + इ + त् + आ

पूर्ववत् भू के ऊकार को गुण तथा अवादेश-

भो + इ + त् + आ- भव् + इ + त् + आ- भविता।

15.5.5. सलोप

इसी प्रकार तस् प्रत्यय में पूर्ववत् प्रक्रिया-

भू + तस्- भू + तास् + तस्- भू +इ (इट्) तास् + तस्- भू + इ + तास् + रौ

सूत्र- रि च।

रेफादौ प्रत्यय परे होने पर तास् के सकार का लोप होता है।

उदाहरण- भू + इ + तास् + रौ- रेफादि प्रत्यय रौ परे होने पर तास् के सकार का लोप-

भू + इ + ता + रौ

पूर्ववत् गुण ओकार तथा अवादेश करने पर-

भवितारौ।

एवं झि में रस् आदेश होने पर- भवितारः।

भवितासि- सिप् प्रत्यय होने पर- भू + इ + तास् + सिप्-

सूत्र- तासस्त्योर्लोपः।

तास् तथा अस् धातु के सकार का लोप होता है, यदि सकारादि प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- भू + इ + तास् + सि- सकारादि प्रत्यय सिप् परे होने से तास् के सकार का लोप-

भू + इ +ता + सि- पूर्ववत् गुण ओकार तथा अवादेश करने पर-

भवितासि।

अन्यत्र रेफादि या सकारादि प्रत्यय न होने से तास् के सकार का लोप नहीं होगा- भवितास्थः, भवितास्थ, भवितास्मि, भवितास्वः, भवितास्मः।

- **रूप सिद्धि- भविता**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	

अनद्यतनो लुट्	इस सूत्र से अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार हुआ	भू + लुट्- भू + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू + ति
स्यतासीलृलुटोः	इस सूत्र से तासि प्रत्यय हुआ	भू+ तासि + ति
लुटः प्रथमस्य डा-रौ-रसः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर डा आदेश हुआ अनुबन्ध लोप	भू+ तास् + डा भू + तास्+ आ
टेः	डा प्रत्यय के डित् होने से टि भाग आस् का लोप	भू + त्+ आ
आर्धधातुकं शेषः	इस सूत्र से तास् प्रत्यय की आर्धधातुक सञ्ज्ञा हुई	
आर्धधातुकस्येड् वलादेः	इस सूत्र से आर्धधातुक तास् प्रत्यय को इट् आगम हुआ	भू + इ (इट्)+ त्+ आ
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से भू के ऊकार को गुण ओकार हुआ	भो + इ + त्+ आ
एचोयवायावः	इस सूत्र से ओकार के स्थान पर अव् आदेश हुआ	भ् अव्+इ +त्+ आ- **भविता**

15.5.6. लृट् लकार का विधान

भू धातु से लकार की विवक्षा में-

सूत्र- लृट् शेषे च ।

भविष्यत् काल में होने वाली क्रिया का बोध कराने के लिए धातु से लृट् लकार होता है । यहाँ अद्यतन-अनद्यतन इस प्रकार कुछ निर्दिष्ट नहीं है , अतः सामान्य भविष्यत् – अद्यतन तथा अनद्यतन में प्राप्त होता है तथापि अनद्यतन भविष्यत् काल में लुट् लकार इसका अपवाद है । इसलिए अनद्यतन भविष्यत् में लुट् लकार होगा । जैसे वृष्टिः श्वः भविता । अन्यत्र भविष्यत् में लृट् । जैसे- भोजनं सायं भविष्यति ।

भू + लृट् -   पूर्ववत् परस्मैपद के प्रथमपुरुष-एकवचन में तिप् प्रत्यय-   भू + तिप्
लृट् लकार में धातु से स्य प्रत्यय -   भू + स्य +ति
वलादि आर्धधातुक प्रत्यय स्य के आदि में इट् आगम- भू + इ + स्य + ति
ऊकार को गुण तथा ओकार को अव् आदेश- भव् + इ + स्य + ति
इण् वर्ण इकार के बाद सकार को षकार आदेश- आदेशप्रत्यययोः-   भविष्यति ।

इसी प्रकार भविष्यतः भविष्यन्ति आदि रूप होते हैं ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. अनद्यतन भूतकाल का बोध कराने के लिए किस लकार का प्रयोग होता है ?

ख. किन लकारों में स्य प्रत्यय होता है ?

ग. लुट् लकार में डा-रौ-रस् किन प्रत्ययों के स्थान पर होते हैं ?

घ. भवितासि यहाँ तास् के सकार का लोप किस सूत्र से होता है ?

15.6. लोट् लकार

भू धातु से लकार की विवक्षा में –

15.6.1.   लोट् लकार का अर्थ

सूत्र- लोट् च ।

इस सूत्र में विधि-निमन्त्रणा-आमन्त्रणा-अधीष्ट-सम्प्रश्न-प्रार्थन ये शब्द अनुवृत्ति से लभ्य हैं । अतः इन अर्थों का बोध कराने के लिये लोट् लकार का प्रयोग होता है ।

उदाहरण- **भवतु**

भू धातु से विधि आदि अर्थ में लोट् लकार- भू + लोट्

पूर्ववत् परस्मैपद के प्रथमपुरुष-एकवचन में तिप् प्रत्यय-   भू + तिप्

तिप् की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय-   भू + शप् + ति -   भू + अ + ति

15.6.2.   उकार तथा ताम् आदि आदेश

सूत्र- एरुः ।

लोट् लकार में इकार को उकार आदेश होता है ।

उदाहरण- भू + अ + ति- लोट् लकार में ति के इकार को उकार-   भू + अ + तु
पूर्ववत् ऊकार को गुण ओकार तथा अव्-   भ् अव् + अ+ तु-   भवतु ।

भवताम्-   भू + तस्-   भू + अ (शप्) तस्

यहाँ रूप में हमे आम् प्राप्त होता है । अतः-

सूत्र- लोटो लङ्वत् ।

लोट् लकार में लङ्वत् कार्य होते हैं ।

सूत्र- तस्-थस्-थ-मिपां ताम्-तम्-तामः ।

ङित् लकार में तस् को ताम्, थस् को तम्, थ को त तथा मिप् को अम् आदेश होते हैं ।

यहाँ लोट् लकार यद्यपि टित् है, तथापि पूर्व सूत्र से लोट् में लङ् के समान कार्य होंगे ।

अतः भू + अ + तस्- तस् के स्थान पर ताम् आदेश- भू + अ + ताम्

पूर्ववत् ऊकार को गुण ओकार तथा ओकार को अव्- भवताम् ।

भवन्तु- भू + झि- भू + अ + झि - भू + अ + अन्ति- भू + अ + अन्तु-

भो + अ + अन्तु- भव् + अ + अन्तु- भवन्तु ।

15.6.3. मध्यम पुरुष के कार्य

भव- भू + सिप् - भू + अ + सि-

सूत्र- सेर्ह्यपिच्च ।

लोट् लकार में सि के स्थान पर हि आदेश होता है तथा वह अपित् होता है ।

उदाहरण- भू + अ + सि- सि के स्थान पर हि आदेश- भू + अ + हि

पूर्ववत् ऊकार को गुण तथा ओकार को अव् आदेश- भव् + अ + हि

भव इस रूप में हमें अन्त में केवल अकार का श्रवण होता है । अतः-

सूत्र- अतो हेः ।

अकारान्त अङ्ग के बाद में हि को लुक् होता है ।

उदाहरण- भव् + अ + हि- अकारान्त अङ्ग भव् + अ के बाद हि को लुक् - भव्+ अ - भव ।

थस् को तम् आदेश- भवतम् । थ को त- भवत ।

15.6.4. उत्तम पुरुष के कार्य

भवानि- भू + मिप्- भू + अ (शप्) + मि-

यहाँ रूप में हमें आकार प्राप्त होता है । अतः-

सूत्र- आडुत्तमस्य पिच्च ।

लोट् लकार के उत्तम पुरुष को आट् आगम होता है तथा वह पित् है ।

उदाहरण- भू + अ + मि- उत्तम पुरुष मिप् के आदि में आट् आगम-

भू + अ +आट्+ मि- भू + अ +आ+ मि- भू + आ+ मि-

मिप् के स्थान पर अम् आदेश प्राप्त-

सूत्र- मेर्निः ।

लोट् लकार में मि को नि आदेश होता है।
उदाहरण- भू + आ+ मि- मि को नि आदेश- भू + आ+ नि- भो+ आ+ नि-
भव्+ आ+ नि- भवानि।
वस् मस् प्रत्ययों में पूर्ववत् प्रक्रिया होने पर- भवावस्, भवामस्-
सूत्र- नित्यं ङितः।
ङित् लकार के उत्तम पुरुष के अन्तिम वर्ण का नित्य लोप होता है।
उदाहरण-भवावस्, भवामस्- यहाँ ङित् लङ् के समान लोट् के उत्तम पुरुष में वस् तथा मस् के अन्तिम सकार का लोप- भवाव, भवाम।

15.6.5. आशीः अर्थ में होने वाले कार्य

भवतात्- भू धातु से लकार की विवक्षा में-
सूत्र- आशिषि लिङ्लोटौ।
लिङ् तथा लोट् लकार आशिष् अर्थ में होते हैं। अतः लोट् लकार दो प्रकार का होता है। एक विधि आदि अर्थों में तथा दूसरा आशिष् अर्थ में।
अतः भू + लोट्- भू+ तिप्- भू + अ (शप्) + ति- भू + अ + तु
सूत्र- तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम्।
आशिष् अर्थ में लोट् लकार में तु तथा हि को तातङ् आदेश विकल्प से होता है।
उदाहरण- भू + अ + तु- आशिष् अर्थ में लोट् के तु के स्थान पर विकल्प से तातङ् आदेश-
भू + अ + तातङ्- भू + अ + तात्
गुण तथा अव् आदेश- भवतात्।
तातङ् न होने पर - भवतु।
इसी प्रकार मध्यम पुरुष में सिप् को हि होने पर भी विकल्प से तातङ आदेश से-
भवतात् तथा भव।

- **रूपसिद्धि- भव**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	भू + लोट् भू + ल्

लः परस्मैपदम्	इस सूत्र से सिप् आदि प्रत्ययों की परस्मैपद सञ्ज्ञा हुई	
शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्	इस सूत्र से परस्मैपद प्रत्ययों का विधान हुआ	
तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः	इस सूत्र से तिप् तस् झि प्रत्ययों की प्रथमपुरुष सञ्ज्ञा हुई	
युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः	इस सूत्र से मध्यम पुरुष प्रत्ययों का विधान हुआ	
तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः	इस सूत्र से सिप् प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + सिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू + सि
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	सिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	भू + शप् + सि
	अनुबन्ध लोपः	भू + अ + सि
सेर्ह्यपिच्च	इस सूत्र से सि के स्थान पर हि आदेश हुआ	भू+ अ + हि
अतो हेः	इस सूत्र से हि का लुक् हुआ	भू + अ
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	शित् होने से शप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	सार्वधातुक प्रत्यय शप् परे होने से भू के इक् वर्ण ऊकार को गुण ओकार हुआ	भो +अ
एचोयवायावः	इस सूत्र से ऊकार को अव् आदेश हुआ	भ् अव् + अ **भव**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

क. लोट् लकार किन अर्थों में होता है ?

ख. ङित् लकारों में तस्-थस्-थ-मिप् के स्थान पर क्या आदेश होते हैं ?

ग. भव् + अ + हि इस अवस्था में क्या कार्य होगा ? सूत्र लिखो ।

घ. आशीर्वाद अर्थ में लोट् लकार में तु तथा हि के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

15.7. लङ् लकार-

अभवत्- भू धातु से लकार की विवक्षा में-

15.7.1. काल

सूत्र- अनद्यतने लङ् ।

अनद्यतन भूतकाल में लङ् लकार होता है । अनद्यतन- आज से भिन्न भूतकाल में इस लकार का प्रयोग होता है ।

भू + लङ्- भू + तिप् - तिप् की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय-

भू + अ (शप्) + ति

अभवत् के आदि में अकार प्राप्त होता है । अतः-

15.7.2. अट् आगम

सूत्र- लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः ।

लुङ्, लङ् तथा लृङ् लकारों में धातु को अट् आगम होता है तथा वह उदात्त होता है ।

उदाहरण- भू + अ + ति- भू धातु के आदि में अट् आगम- अट् + भू +अ + ति

अभवत् के अन्त में इकार प्राप्त नहीं होता है । अतः इकार के लोप के लिए-

15.7.3. इकार का लोप

सूत्र- इतश्च ।

ङित् लकार में परस्मैपद के अन्त में इकार का लोप होता है ।

उदाहरण- अ + भू + अ +ति – ङित् लङ् लकार के परस्मैपद के अन्त में इकार का लोप -

अ + भू + अ + त्- पूर्ववत् ऊकार को गुण तथा ओकार को अव् आदेश-

अभवत्

अ + भव् + अ + तस्- तस् के स्थान पर ताम् आदेश- अभवताम्।

अ + भव् + अ + झि- झ को अन्त आदेश- अ + भव् + अ + अन्ति

पूर्ववत् इकार का लोप- अ + भव् + अ + अन्त्

संयोगान्त तकार का लोप- अ + भव् + अ +अन्

पररूप सन्धि- अभवन्।

अ + भव् + अ + सिप्- अ + भव् + अ +सि- अ + भव् + अ + स्-

सकार को रुत्व तथा रेफ को विसर्ग करने पर- अभवः।

इसी प्रकार थस् को तम्- अभवतम्। थ को त- अभवत। मिप् को अम्- अभवम्।

अ + भव् + अ + वस्- सकार का लोप करने पर- नित्यं ङित् - अ + भव् + अ +व

अकार को दीर्घ करने पर- अतो दीर्घो यञि- अभवाव

इसी प्रक्रिया से मस् प्रत्यय में- अभवाम।

- **रूपसिद्धि- अभवत्**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
अनद्यतने लङ्	इस सूत्र से अनद्यतन भूत काल में लङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	भू + लङ् भू + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	भू + शप् + ति
	अनुबन्ध लोपः	भू + अ + ति
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	इस सूत्र से भू धातु के आदि में अट् आगम हुआ	अट् + भू + अ + ति अ+ भू + उ + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	शित् होने से शप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	

सार्वधातुकार्धधातुकयोः	सार्वधातुक प्रत्यय शप् परे होने से भू के इक् वर्ण ऊकार को गुण ओकार हुआ	अ+ भो + उ + ति
एचोयवायावः	इस सूत्र से ऊकार को अव् आदेश हुआ	अ+ भव् + अ + ति
इतश्च	इस सूत्र से ति के इकार का लोप हुआ	अ+ भव् + अ + त् **अभवत्**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-5**

  क. किस काल में लङ् लकार होता है ?

  ख. अट् आगम किन लकारों में होता है ?

  ग. इतश्च इस सूत्र का कार्य लिखो ।

15.8. लिङ् लकार-

लिङ् लकार का प्रयोग उन ही विधि आदि तथा आशीर्वाद अर्थ में होता है जिन में हमने लोट् लकार को देखा है। जैसे भवान् वेदं पठतु- यहाँ आज्ञा (विधि) अर्थ है । यहीं हम लिङ् लकार का प्रयोग कर सकते हैं- भवान् वेदं पठेत् । आइए इसे समझते हैं -

भवेत्- भू धातु से लकार की विवक्षा में-

15.8.1. विधि आदि अर्थ

सूत्र- विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ।

विधि आदि अर्थों में लिङ् लकार का प्रयोग होता है । विधि- किसी व्यक्ति को आदेश देना, निमन्त्रण- आवश्यक कार्य जैसे श्राद्ध आदि के लिए किसी व्यक्ति को बुलाना, आमन्त्रण- ऐच्छिक कार्य जैसे विवाह आदि के लिए किसी को बुलाना, अधीष्ट- सत्कारपूर्वक किसी को कार्य में प्रवृत्त करना, सम्प्रश्न- प्रश्न करना तथा प्रार्थन- प्रार्थना करना ।

भू + लिङ्-

परस्मैपद के प्रथम पुरुष एकवचन में लकार के स्थान में तिप् प्रत्यय- भू + तिप्

तिप् की सार्वधातुकसञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय- भू + अ (शप्) + ति

15.8.2. यासुट् आगम तथा अन्य कार्य

सूत्र- यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च ।
परस्मैपद प्रत्ययों को लिङ् लकार में यासुट् आगम होता है तथा वह ङित् है ।
उदाहरण- भू + अ + ति - परस्मैपद प्रत्यय तिप् के आदि में यासुट् आगम -

भू + अ + यास् (यासुट्)+ ति

सूत्र- अतो येयः ।
अकार से परे सार्वधातुक सञ्ज्ञक यास् के स्थान पर इय् आदेश होता है ।
उदाहरण- भू + अ+ यास् + ति- यास् के स्थान पर इय् आदेश-

भू + अ+ इय् + ति

सूत्र- लोपो व्योर्वलि ।
वकार या यकार का लोप होता है, यदि वल् प्रत्याहार का वर्ण परे हो ।
उदाहरण- भू + अ+ इय् + ति- वल् वर्ण तकार परे होने से यकार का लोप-
भू + अ+ इ + ति- ङित् लकार होने से अन्त में इकार का लोप- इतश्च-
भू + अ+ इ + त्- पूर्ववत् ऊकार को गुण तथा ओकार को अव्-
भव् + अ+ इ + त्- अकार तथा इकार को गुण सन्धि-
भवेत् ।
भवे + तस् – तस् को ताम् आदेश- भवेताम् ।
भवेयुः- भू + झि- भू + अ + झि - भू + अ + यास् (यासुट्)+ झि-
भू + अ+ इय् + झि
यहाँ झ को अन्त आदेश प्राप्त है- झोऽन्तः ।

सूत्र- झेर्जुस् ।
लिङ् लकार में झि को जुस् आदेश होता है ।
उदाहरण- भू + अ+ इय् + झि- झि को जुस् आदेश-
भू + अ+ इय् + जुस्- भू + अ+ इय् + उस्
वल् प्रत्याहार का वर्ण परे न होने पर यकार का लोप नहीं होगा । अतः ऊकार को गुण तथा अव्- भव् + अ + इय् + उस्- गुण सन्धि करने पर-

भवेयुः ।

इसी प्रकार भवेः, भवेतम्, भवेत, भवेयम्, भवेव, भवेम ।

- **रूपसिद्धि- भवेत्**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट-सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	भू + लिङ् भू + ल्
यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च	इस सूत्र से लिङ् लकार को यासुट् आगम हुआ	भू + यासुट् + ल् भू + यास् + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + यास् + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू +यास् + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	भू +शप् +यास् + ति
	अनुबन्ध लोपः	भू + अ + यास् + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	शित् होने से शप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	सार्वधातुक प्रत्यय शप् परे होने से भू के इक् वर्ण ऊकार को गुण ओकार हुआ	भो + अ + यास् + ति
एचोयवायावः	इस सूत्र से ऊकार को अव् आदेश हुआ	भव् + अ + यास् + ति
अतो येयः	इस सूत्र से यास् के स्थान पर इय् आदेश हुआ	भव् + अ + इय् + ति
लोपो व्योर्वलि	इस सूत्र से यकार का लोप हुआ	भव् + अ + इ + ति
इतश्च	इस सूत्र से ति के इकार का लोप हुआ	भव् + अ + इ + त्
आद् गुणः	इस सूत्र से अकार तथा इकार के स्थान	**भवेत्**

	पर एकार गुण आदेश हुआ	

15.8.3. आशीर्लिङ् का विधान

भू धातु से लकार की विवक्षा में-

हम पहले जान चुके हैं कि लिङ् तथा लोट् लकार आशिष् अर्थ में भी होते हैं- आशिषि लिङ् लोटौ

अतः- भू + लिङ्- भू + तिप्

यहाँ पूर्ववत् तिप् की सार्वधातुक सञ्ज्ञा प्राप्त है।

सूत्र- लिङाशिषि।

आशिष् अर्थ में लिङ् के स्थान पर तिङ् प्रत्यय की आर्धधातुक सञ्ज्ञा होती है।

उदाहरण- भू + ति- आशिष् अर्थ में तिप् प्रत्यय की आर्धधातुक सञ्ज्ञा

लिङ् लकार में यासुट् आगम - भू + यास् + ति

ङित् लकार होने से अन्त में इकार का लोप- इतश्च- भू + यास् + त्

संयोग के आदि में सकार का लोप- स्कोः संयोगाद्योरन्ते च- भू + या + त्

भू के ऊकार को गुण प्राप्त- सार्वधातुकार्धधातुकयोः

सूत्र- किदाशिषि।

आशिष् अर्थ में लिङ् कित् होता है।

हम यहाँ भूयात् रूप में देखते हैं कि भवेत् के समान ऊकार को गुण नहीं होता है। गुण न होना ही कित् करने का प्रयोजन है। अतः गुण निषेध के लिए हम अग्रिम विधि पढ़ेंगे-

सूत्र- क्ङिति च।

गित् कित् ङित् प्रत्यय को मान कर इक् के स्थान पर होने वाले गुण तथा वृद्धि नहीं होते हैं।

उदाहरण- भू + या + त् - कित् प्रत्यय तिप् होने से इक् वर्ण ऊकार को गुण का निषेध- भूयात्।

तस् को ताम्- भूयास्ताम्। झि को जुस् – भूयासुः।

इसी प्रकार अन्यत्र- भूयास्तम् भूयास्त भूयासम् भूयास्व भूयास्म।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-6**

क. लिङ् लकार किन अर्थों में होता है ?

ख. यासुट् आगम का सूत्र लिखो।

ग. लिङ् लकार में झि के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

घ. भूयात् यहाँ क्ङिति च यह सूत्र क्या कार्य करता है ?

ङ. इनमें से आर्धधातुक लकार कौन सा है- विधि लिङ् अथवा आशीर्लिङ् ?

15.9. लुङ् तथा लृङ् लकार-

लुङ् लकार सामान्य भूत काल में होता है तथा लृङ् भविष्यत् काल में क्रियाओं में हेतुहेतुमद्भाव होने पर होता है। आइए समझते हैं-

अभूत् – भू धातु से लकार की विवक्षा में -

15.9.1. काल

सूत्र- लुङ् ।

सामान्य भूतकाल में होने वाली क्रिया का बोध कराने के लिए लुङ् लकार होता है।

भू + लुङ्- भू + तिप्- लुङ् लकार होने से धातु को अट् आगम- लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः- अ (अट्) + भू + ति

ति प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय प्राप्त-

15.9.2. च्लि आदि कार्य

सूत्र- च्लि लुङि ।

लुङ् लकार में धातु से च्लि प्रत्यय होता है।

उदाहरण- अ + भू + ति - च्लि प्रत्यय होने पर- अ + भू + च्लि + ति

सूत्र- च्लेः सिच् ।

च्लि के स्थान पर सिच् आदेश होता है।

उदाहरण- अ + भू + च्लि + ति- च्लि को सिच् आदेश-

अ + भू + सिच् + ति- अ + भू + स् + ति

सूत्र- गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ।

गा, स्था, घु-सञ्ज्ञक, पा तथा भू धातुओं से परे सिच् का लुक् होता है, यदि परस्मैपद प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- अ + भू + स् + ति-   भू धातु से परे परस्मैपद प्रत्यय तिप् होने से सिच् का लुक्-
अ + भू + ति-   ङित् लकार होने से अन्त में इकार का लोप- इतश्च-
अभूत्।

पूर्ववत् तस् को ताम्- अभूताम्।

अ + भू + झि-   अ + भू + अन्ति-

अजादि प्रत्यय अन्ति परे होने से भू के अन्त में वुक् आगम- भुवो वुक् लुङ्लिटोः –

अ + भू व् (वुक्)+ अन्ति-   अ + भूव् + च्लि+ अन्ति-   अ + भूव् + स् (सिच्)+ अन्ति -
अ+ भू व् + अन्ति-   सिच् का लुक्
अ + भूव् + अन्त्-   संयोगान्त तकार का लोप करने पर-   अभूवन्।
इसी प्रकार अभूः अभूतम् अभूत अभूवम् अभूव अभूम।

- **रूप सिद्धि-   अभूत्**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लुङ्	इस सूत्र से सामान्य भूत काल में लुङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	भू + लुङ् भू + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भू + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	भू + ति
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	इस सूत्र से भू धातु के आदि में अट् आगम हुआ	अट् + भू + ति अ+ भू + ति
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय प्राप्त हुआ	
च्लि लुङि	इस सूत्र से शप् को बाध कर च्लि प्रत्यय हुआ	अ+ भू + च्लि+ ति
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश हुआ	अ + भू + सिच् +ति अ+ भू+ स्+ ति
गातिस्थाघुपाभूभ्यः	इस सूत्र से सिच् प्रत्यय का लोप हुआ	अ+ भू+ स्+ त्

सिचः परस्मैपदेषु		
इतश्च	इस सूत्र से ति के इकार का लोप हुआ	अ+ भू + त् **अभूत्**

15.9.3. लृङ् लकार का अर्थ

सूत्र- लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ।

लिङ् लकार का निमित्त (कारण) जहाँ विद्यमान हो, वहाँ क्रिया की समाप्ति न होने पर भविष्यदर्थक धातु से लृङ् लकार होता है ।

लिङ् लकार के अनेक निमित्त हैं । उन में यहाँ कार्यकारणभाव लिया जाता है ।

जैसे- यदि वृष्टिः अभविष्यत् तर्हि अन्नम् अभविष्यत् । यहाँ वृष्टि होना क्रिया अन्न होना क्रिया का कारण है । तथा दोनों क्रियाओं की समाप्ति नहीं हो रही है । अतः यहाँ लृङ् लकार हुआ है ।

भू + लृङ् - भू + तिप्- अ (अट्) + भू + ति- स्य प्रत्यय- स्यतासी लृलुटोः -

अ + भू + स्य + ति- इट् आगम- आर्धधातुकस्येड् वलादेः -

अ + भू + इ + स्य + ति- सकार को षकार-

अ + भू + इ + ष्य + ति- ङित् लकार होने से अन्त में इकार का लोप-

अ + भू + इ + ष्य + त्- गुण तथा अव् आदेश-

अ + भव् + इ + ष्य + त्-

अभविष्यत् ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-7**

क. लुङ् लकार में शप् प्रत्यय की प्राप्ति में कौन सा प्रत्यय होता है ?

ख. अभू स् त् यहाँ क्या कार्य होता है ?

ग. लृङ् लकार का विधान किस सूत्र से होता है ?

15.10. सारांश

हम यह पहले जान चुके हैं कि पाणिनि व्याकरण में सुबन्त तथा तिङन्त दो पद स्वीकृत किए गए हैं । सुबन्त पदों की प्रक्रिया के लिए हमने अजन्त तथा हलन्त प्रकरण पढे । तिङन्त पदों में हम उन शब्दों की प्रक्रिया को समझते हैं, जिन की प्रकृति धातु तथा अन्त में तिङ् प्रत्यय होते हैं । ये

18 प्रत्यय लट् आदि लकारों के स्थान में विहित होते हैं, जिनकी संख्या दस है। लकार कर्ता, कर्म तथा भाव इन तीन वाच्यों में प्रयुक्त होते हैं। इसके अतिरिक्त लकारों के वर्तमान, भूत, भविष्यत् तथा विधि, प्रार्थना, निमन्त्रण आदि विभिन्न अर्थ होते हैं। तिङ् प्रत्यय परस्मैपद तथा आत्मनेपद दो भागों में विभक्त हैं। प्रत्येक भाग के 9 प्रत्ययों में 3-3 प्रत्ययों के समूह की क्रमशः प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष संज्ञाएं होती हैं। इसके अतिरिक्त किस धातु से परस्मैपद, आत्मनेपद या दोनो प्रत्यय विहित होते हैं, यह जानने के लिए धातुओं में ङकार आदि अनुबन्धों की स्थिति को समझते हैं। यहाँ तिप् आदि प्रत्ययों की सार्वधातुक तथा आर्धधातुक सञ्ज्ञाएं विशेषतया ज्ञातव्य है। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् ये चार सार्वधातुक तथा लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ् तथा लृङ् लकार आर्धधातुक हैं। सार्वधातुक सञ्ज्ञा का प्रमुख प्रयोजन शप्, श्यन्, श्नु आदि प्रत्ययों का विधान करना है, जिनके आधार पर सम्पूर्ण तिङन्त भाग को दस गणों में बाँटा गया है। यह प्रक्रिया सभी लकारों में सामान्य है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक लकार में विशेष प्रक्रिया अवलोकनीय है। जैसे लिट् लकार में तिप् आदि प्रत्ययों के स्थान पर णल् आदि आदेश, आर्धधातुक प्रत्ययों में इट् आगम, लिङ् में यासुट् आगम, लङ्, लुङ् तथा लृङ् लकारों में धातु से पूर्व में अट् आगम। इस प्रकार हम सर्वप्रथम परस्मैपदी धातुओं की प्रक्रिया को समझने के लिए भू धातु का अध्ययन करते हैं।

15.11. कठिन शब्दावली

क. **तिङ्-** तिङ् एक प्रत्याहार है जिसमें तिप् से लेकर मस् तक परस्मैपद प्रत्यय अन्तर्भूत होते हैं।

ख. **तङ्-** तङ् एक प्रत्याहार है जिसमें त से लेकर वहिङ् तक आत्मनेपद प्रत्यय आते हैं।

ग. **शित्-** जिस में शकार की इत् सञ्ज्ञा होती है उसे शित् कहा जाता है। जैसे – शप् प्रत्यय।

घ. **सेट्-** जिन धातुओं में आर्धधातुक प्रत्ययों में इट् आगम होता है उन्हे सेट् कहा जाता है।

ङ. **अनिट्-** जिन धातुओं में आर्धधातुक प्रत्ययों में इट् आगम का निषेध होता है उन्हे अनिट् कहते हैं।

च. **एकाच् धातु-** जिन धातुओं में एक अच्(स्वर) होता है उन्हें एकाच् कहते हैं। जैसे- भू, जि आदि।

छ. **अनुदात्तेत् धातु-** जिन में अनुदात्त स्वर की इत् सञ्ज्ञा होती है वे अनुदात्तेत् धातु होती हैं। जैसे- एध्, वृत् आदि।

ज. **स्वरितेत्-** जिन में स्वरित स्वर की इत् सञ्ज्ञा होती है उन्हे स्वरितेत् कहते हैं। जैसे- भज्, यज् आदि।

झ. **हेतुहेतुमद्भाव-** हेतु- कारण, हेतुमान्- कार्य, अर्थात् कार्यकारणभाव।

ञ. **क्रियातिपत्ति-** क्रिया की निष्पत्ति न होना।

15.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. कर्ता, कर्म तथा भाव।

ख. त आतां झ, थास् आथां ध्वम् , इट् वहि, महिङ् तथा शानच्- कानच् प्रत्यय।

ग. तिङ् तथा शित् प्रत्यय।

घ. लेट् लकार

ङ. मध्यम पुरुष

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. वुक्।

ख. णल् अतुस् उस्, थल् अथुस् अ, णल् व म

ग. अभ्यास सञ्ज्ञा

घ. वलादि आर्धधातुक प्रत्यय

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. डा रौ रस्।

ख. लृट् तथा लृङ्

ग. तिप् तस् झि

घ. तासस्त्योर्लोपः

स्वयं आकलन प्रश्न-4

क. विधि-निमन्त्रण-आमन्त्रण-अधीष्ट-सम्प्रश्न-प्रार्थन

ख. ताम् तम् त अम्

ग. हि का लुक्- अतो हेः

घ. तातङ्

स्वयं आकलन प्रश्न-5

क. अनद्यतन भूत काल

ख. लुङ् –लङ्- लृङ्

ग. ङित् लकारों में अन्तिम इकार का लोप होता है।

स्वयं आकलन प्रश्न-6

क. विधि-निमन्त्रण-आमन्त्रण-अधीष्ट-सम्प्रश्न-प्रार्थन

ख. यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च

ग. जुस्

घ. गुण का निषेध

ङ. आशीर्लिङ्

स्वयं आकलन प्रश्न-7

क. च्लि

ख. सिच् का लुक्

ग. लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ

15.13. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी।

15.14. अभ्यासात्मक-प्रश्न

क. लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः सूत्र की व्याख्या करो।

ख. बभूव, भवेत्, अभूत्- रूप सिद्धि करो।

ग. सार्वधातुकार्धधातुकयोः- सूत्र की सोदाहरण व्याख्या करो।

इकाई-16

भ्वादि गण- अन्य परस्मैपदी धातुएं

संरचना

16.1. पाठ का परिचय

16.2. पाठ का उद्देश्य

16.3. अत् धातु तथा षिध् धातु

- 16.3.1. लिट् लकार के कार्य
- 16.3.2. लङ् आदि लकार के कार्य
- 16.3.3. लुङ् लकार के कार्य
- 16.3.4. लघूपध गुण कार्य
- 16.3.5. लिट् लकार में कित् विधान
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

16.4. गद् धातु

- 16.4.1. णत्व विधान
- 16.4.2. अभ्यास में कुत्व विधान
- 16.4.3. उपधा वृद्धि
- 16.4.4. लुङ् लकार में वृद्धि कार्य
- स्वयं आकलन प्रश्न-2

16.5. णद् तथा टुनदि धातु

- 16.5.1. नत्व कार्य
- 16.5.2. एत्व-अभ्यास लोप
- 16.5.3. नुम् आगम
- स्वयं आकलन प्रश्न-3

16.6. गुप् धातु

- 16.6.1. आय प्रत्यय तथा धातु सञ्ज्ञा
- 16.6.2. आम् प्रत्यय
- 16.6.3. कृ धातु का अनुप्रयोग

16.6.4. इट् आगम का निषेध

- स्वयं आकलन प्रश्न-4

16.7. क्षि धातु

16.7.1. लिट् लकार में क्रादि नियम

16.7.2. भारद्वाज नियम

16.7.3. लिङ् लकार तथा लुङ् लकार

- स्वयं आकलन प्रश्न-5

16.8. पा तथा ग्लै धातु

16.8.1. पा आदि के स्थान पर पिब आदि आदेश

16.8.2. लिट् तथा लकार के कार्य

16.8.3. ग्लै धातु में आत्व कार्य

- स्वयं आकलन प्रश्न-6

16.9. श्रु तथा गम् धातु

16.9.1. श्नु प्रत्यय

16.9.2. उकार लोप

16.9.3. हि लुक्

16.9.4. गम् आदि में छत्व कार्य

16.9.5. उपधा लोप

16.9.6. गम् धातु में इट् आगम

16.9.7. च्लि को अङ् आदेश

- स्वयं-आकलन प्रश्न-7

16.10. सारांश

16.11. कठिन शब्दावली

16.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

16.13. सहायक ग्रन्थ

16.14. अभ्यासात्मक प्रश्न

16.1. पाठ का परिचय

पिछले पाठ में हमनें भू धातु की प्रक्रिया को जाना । इस पाठ में हम भ्वादिगण की अन्य परस्मैपदी धातुओं की प्रक्रिया के नियम जानेंगे । सामान्य नियम, जैसे लकार, तिप् आदि प्रत्यय, परस्मैपद प्रयोग, शप् आदि प्रत्यय, सार्वधातुक-आर्धधातुक सञ्ज्ञा इत्यादि हम पिछले पाठ में पढ चुके हैं । इस पाठ में हम अत्, षिध्, गुप्, क्षि, पा, गम् आदि परस्मैपदी धातुओं में प्रयुक्त होने वाले विशेष नियमों को समझेंगे ।

16.2. पाठ का उद्देश्य-

- अत्, षिध् आदि परस्मैपदी धातुओं के तिङन्त पदों का ज्ञान करना
- इट् आगम के निषेध का ज्ञान
- इट् आगम के विषय में क्रादि नियम का ज्ञान
- वैकल्पिक इट् आगम के विषय में भारद्वाज नियम का ज्ञान
- आय,आम् आदि विशेष प्रत्ययों के प्रयोग का ज्ञान

16.3. अत् तथा षिध् धातु

अत सातत्यगमने । निरन्तर गमन क्रिया अत् धातु का अर्थ है । प्रायेण सभी लकारों में इसकी प्रक्रिया भू धातु के समान है । तथापि कुछ विशेष लकारों में हम इसकी प्रक्रिया का अवलोकन करेंगे ।

16.3.1. लिट् लकार के कार्य

आत – अत् + लिट् - अत् + तिप् - अत् + अ (णल्)- (धातु को द्वित्व)अत् + अत् + अ- (हलादि शेष) अ + अत् + अ

सूत्र- अत आदेः ।

अभ्यास के आदि अकार को दीर्घ होता है ।

उदाहरण- अ + अत् + अ- अभ्यास के आदि अकार को दीर्घ-

आ + अत् + अ - सवर्ण दीर्घ-

आत् + अ-

आत ।

इसी प्रकार आततुः आतुः आदि रूप समझने चाहिए ।

16.3.2. लङ् लकार के कार्य

आतत्- अत + लङ्- अत् + तिप्- लङ् लकार होने से धातु को अट् आगम प्राप्त- लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः

सूत्र- आडजादीनाम् ।

लुङ्, लङ् तथा लृङ् लकारों में अङ्ग को आट् आगम होता है, यदि अङ्ग के आदि में अच् वर्ण होता है ।

उदाहरण- अत् + तिप्- अङ्ग अत् के आदि में अच् अकार होने से अत् के आदि में आट्-

आट् + अत् + ति

आ+ अत् + अ (शप्) + ति- ङित् लकार होने से इकार का लोप-

आ + अत् + अ + त्- आ तथा अ को वृद्धि आकार- आटश्च-

आत् + अ +त्- आतत् ।

16.3.3. लुङ् लकार के कार्य

आतीत्- अत् + लुङ् - अत् + तिप्- आट् + अत् + ति- आ + अत् + च्लि + ति- आ + अत् + सिच् + ति

आ + अत् + स् + त्-

सूत्र- अस्तिसिचोपृक्ते ।

अस् धातु या सिच् से परे यदि अपृक्त प्रत्यय हो, तब उसे ईट् आगम होता है ।

उदाहरण- आ + अत् + स् + त्- सिच् के सकार से परे अपृक्त प्रत्यय तकार के आदि में ईट्

आ + अत् + स् + ईट्+ त्

वलादि आर्धधातुक प्रत्यय सिच् परे होने से सिच् के आदि में इट् आगम-

आ+ अत् + इट् + स् + ईट् + त्

सूत्र- इट ईटि ।

इट् से परे सिच् का लोप होता है, यदि ईट् परे हो ।

उदाहरण- आ+ अत् + इट् + स् + ईट् + त्- इट् से परे सिच् के सकार का लोप-

आ+ अत् + इ + ईट+ त् - इकार तथा ईकार को दीर्घ

आ+ अत् + ई + त्- आट् तथा अकार को वृद्धि-

आतीत् ।

तस् प्रत्यय को पूर्ववत् ताम् आदेश- आ + अत् +इ + स् + ताम्

ताम् के अपृक्त न होने से ईट् नहीं होगा तथा ईट् के न होने से सिच् का लोप नहीं होगा। अतः सकार को षकार तथा ष्टुत्व सन्धि से तकार के टकार- आतिष्टाम्।

आ + अत् + इ + स् + झि-

सूत्र- सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च।

सिच्, अभ्यस्त तथा विद् धातु से परे झि को जुस् आदेश होता है, यदि ङित् लकार हो।

उदाहरण- **आतिषुः**

आ + अत् + इ + स् + झि- ङित् लुङ् लकार में सिच् से परे झि के स्थान पर जुस् आदेश-

आ + अत् + इ + स् + जुस्

आ + अत् + इ + स् + उस्- सकार को षकार करने पर-

आतिषुः।

इसी प्रकार आतीः आतिष्टम् आतिष्ट आतिषम् आतिष्व आतिष्म।

- **रूप सिद्धि- आतीत्**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से अत् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लुङ्	इस सूत्र से सामान्य भूत काल में लुङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	अत् + लुङ् अत् + ल्
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	अत् + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	अत् + ति
आडजादीनाम्	इस सूत्र से अत् धातु के आदि में आट् आगम हुआ	आट् + अत् + ति आ+ अत् + ति
आटश्च	आट् तथा अत् के अकार के स्थान पर वृद्धि हुई	आत् + ति
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय प्राप्त हुआ	
च्लि लुङि	इस सूत्र से शप् को बाध कर च्लि प्रत्यय हुआ	आत् + च्लि + ति
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश	आत् + सिच्+ ति

	हुआ	आत् + स् + ति
इतश्च	इस सूत्र से ति के इकार का लोप हुआ	आत् + स् + त्
अस्तिसिचोपृक्ते	इस सूत्र से तिप् के तकार के आदि में ईट् आगम हुआ	आत् + स् + ईट् + त् आत्+ स् + ई + त्
आर्धधातुकस्येड् वलादेः	इस सूत्र से सिच् के आदि में इट् आगम हुआ	आत्+ इट् +स् + ई + त् आत् + इ +स् + ई + त्
इट ईटि	इस सूत्र से सिच् के सकार का लोप हुआ	आत् + इ + ई + त्
अकः सवर्णे दीर्घः	इस सूत्र से इकार तथा ईकार के स्थान पर दीर्घ आदेश हुआ	**आतीत्**

षिध गत्याम् ।

16.3.4. षिध् में लघूपध गुण

सेधति- षिध् - धातु के आदि षकार को सकार - धात्वादेः षः सः - सिध्

सिध् + लट् - सिध् + तिप् - सिध् + अ (शप्) + ति

सूत्र- ह्रस्वं लघु ।

ह्रस्व स्वर की लघु सञ्ज्ञा होती है ।

उदाहरण- सिध् धातु में ह्रस्व इकार की लघु सञ्ज्ञा

सूत्र- संयोगे गुरु ।

संयोग परे होने पर ह्रस्व स्वर की गुरु सञ्ज्ञा होती है ।

सूत्र- दीर्घं च ।

दीर्घ स्वर की गुरु सञ्ज्ञा होती है ।

सूत्र- पुगन्तलघूपधस्य च ।

पुगन्त तथा लघूपध अङ्ग के इक् वर्ण के स्थान पर गुण होता है, यदि सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय परे हो। पुगन्त – जिसके अन्त में पुक् हो। लघूपध- जिसकी उपधा (अन्तिम से पूर्व वर्ण) लघु हो।

उदाहरण- **सेधति**

सिध् + अ + ति - सिध् की उपधा इकार के लघु होने से सार्वधातुक प्रत्यय तिप् के परे होने पर इक्- इकार को गुण- सेध् +अ+ ति- सेधति।

इसी प्रकार सेधतः सेधन्ति आदि रूप होते हैं।

16.3.5. लिट् लकार में कित् विधान

लिट् लकार में- सिषेध सिषिधतुः सिषिधुः। सिषेधिथ सिषिधथुः सिषिध। सिषेध सिषिधिव सिषिधिम।

यहाँ णल् आदि आदेश, द्वित्व, अभ्यास कार्य इत्यादि प्रक्रिया पूर्ववत् है। तथापि एक कार्य विशेष है कि कुछ स्थलों पर गुण हुआ है- सिषेध तथा कुछ पर नहीं- सिषिधतुः।

सिषिधतुः – षिध्- सिध्+ लिट्- सिध्+ तस्- सिध्+ अतुस् - सिध्+ सिध् + अतुस्-

सि + सिध् + अतुस्

अतुस् से पूर्व सिध् की उपधा इकार को गुण प्राप्त- पुगन्तलघूपधस्य च

सूत्र- असंयोगात् लिट् कित्।

असंयुक्त वर्ण से पूर्व लिट् लकार कित् होता है, यदि वह अपित् हो।

सि + सिध् + अतुस्- अपित् अतुस् प्रत्यय कित् होता है

कित् करने से गुण का निषेध-

सिषिधतुः।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अपित् प्रत्ययों- तस्, झि, थस्, थ, वस्,मस् के कित् होने से वहाँ गुण नहीं होता है। एवं पित् प्रत्ययों- तिप् सिप् मिप् के कित् न होने से वहाँ गुण होगा।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. अजादि धातुओं में लुङ्-लङ्-लृङ् लकारों में धातु को क्या आगम होता है ?

ख. अत आदेः इस सूत्र का कार्य लिखो।

ग. आतीत् यहाँ ईट् आगम किस सूत्र से होता है ?

घ. सिषिधतुः यहाँ असंयोगात् लिट् कित् इस सूत्र से क्या कार्य होता है ?

16.4. गद् धातु

गद व्यक्तायां वाचि ।

16.4.1. णत्व विधान

प्रणिगदति – प्र + नि + गद् + लट्

सूत्र- नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च

नि उपसर्ग के नकार को णकार होता है, यदि गद् आदि धातुएं परे हों ।

उदाहरण- प्र + नि + गद् + लट्- नि उपसर्ग के नकार को णकार-

प्र + णि + गद् + लट्-

प्रणिगदति ।

16.4.2. अभ्यास में कुत्व कार्य

जगाद- गद् + लिट्- गद् + तिप्- गद् + णल्- गद् + अ- गद् + गद् + अ - ग + गद् + अ –

सूत्र- कुहोश्चुः ।

अभ्यास में कवर्ग तथा हकार को चवर्ग आदेश होता है ।

उदाहरण- ग + गद् + अ- अभ्यास में कवर्ग गकार को जकार आदेश- ज + गद् + अ

16.4.3. उपधा वृद्धि

सूत्र- अत उपधायाः ।

उपधा अकार को वृद्धि होती है यदि णित् प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- ज + गद् + अ- णित् प्रत्यय णल् परे होने पर उपधा अकार को वृद्धि आकार-

ज + गाद् + अ-

जगाद ।

इसी प्रकार - जगदतुः जगदुः जगदिथ जगदथुः जगद जगाद जगदिव जगदिम ।

सूत्र- णलुत्तमो वा ।

उत्तम पुरुष में णल् प्रत्यय विकल्प से णित् होता है ।

उदाहरण- ज + गद् + मिप् - ज + गद् + अ (णल्)- विकल्प से णित् होने से विकल्प से उपधा को वृद्धि- जगाद- जगद ।

➢ **रूप सिद्धि- जगाद**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से गद् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	गद् + लिट् गद् + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	गद् + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	गद् + ति
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ अनुबन्ध लोप	गद्+ णल् गद्+ अ
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से गद् भाग को द्वित्व हुआ	गद् गद् + अ
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- गद् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास गद् के दकार का लोप हुआ	ग गद् + अ
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास में गकार के स्थान पर जकार आदेश हुआ	ज गद् + अ
अत उपधायाः	इस सूत्र से उपधा अकार के स्थान पर वृद्धि आकार हुआ	**जगाद**

16.4.4. लुङ् लकार में वृद्धि कार्य

अगादीत्- गद् + लुङ्- गद् + तिप् - अ + गद् + तिप्- अ + गद् + च्लि + तिप्-
अ + गद् + स् (सिच्) + तिप्-
अ + गद् + इ (इट्) स् + ई (ईट्) + त् -

सूत्र- अतो हलादेर्लघोः।

हलादि धातु के लघु अकार को विकल्प से वृद्धि होती है, यदि परस्मैपद में सिच् प्रत्यय परे हो तथा सिच् के आदि में इट् हो ।

अ + गद् + इ (इट्) स् + ई (ईट्) + त्- सिच् के आदि में इट् होने से गद् के अकार को विकल्प से वृद्धि-

अ + गाद् + इ (इट्) स् + ई (ईट्) + त्- सिच् लोप-

अ + गद् + इ (इट्) + ई (ईट्) + त्-

अगादीत् – अगदीत् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. नेर्गदनद........ इस सूत्र को पूर्ण कर लिखो ।

ख. कुहोश्चुः इस सूत्र का कार्य लिखो ।

ग. जगाद यहाँ उपधा वृद्धि का सूत्र लिखो ।

घ. अगादीत् धातु – लकार-पुरुष- वचन लिखो ।

16.5. णद् तथा टुनदि धातु -

णद अव्यक्तायां वाचि । टुनदि समृद्धौ ।

16.5.1. नत्व कार्य

नदति – णद् धातु

सूत्र- णो नः ।

धातु के आदि में णकार को नकार होता है ।

उदाहरण- णद् धातु के आदि में णकार को नकार - नद् - नद्+ लट्- नदति नदतः नदन्ति ।

16.5.2. एत्व तथा अभ्यासलोप

लिट् लकार में ननाद नेदतुः नेदुः ।

नेदतुः – नद् + लिट्- तस् आदेश- तस् को अतुस्, धातु को द्वित्व, अभ्यास सञ्ज्ञा, हलादि शेष-

न + नद् + अतुस्

सूत्र- अत एकहल्मध्येनादेशादेर्लिटि ।

जहाँ पर लिट् को मानकर कोई आदेश न हुआ हो तथा संयुक्त हल् वर्णों के बीच् में अकार न हो, वहाँ अभ्यास का लोप तथा अकार को एकार होता है यदि कित् लिट् लकार परे हो ।

हम जान चुके हैं कि असंयुक्त हल् वाली धातु से परे अपित् लिट् कित् होता है । जैसे यहाँ तस् प्रत्यय ।

उदाहरण- न + नद् + अतुस्-   नद् धातु के अभ्यास का लोप तथा अकार को एकार-
नेद् + अतुस्-   नेदतुः ।
इसी प्रकार सिप् को थल् -   न + नद् + थ (थल्)-   न + नद् + इ (इट्) + थ
सूत्र- थलि च सेटि ।
जहाँ पर लिट् को मानकर कोई आदेश न हुआ हो तथा संयुक्त हल् वर्णों के बीच् में अकार न हो, वहाँ अभ्यास का लोप तथा अकार को एकार होता है यदि थल् प्रत्यय परे हो ।
उदाहरण- न + नद् + इ (इट्) + थ-   नद् धातु के अभ्यास का लोप तथा अकार को एकार- नेद् + इ + थ- नेदिथ ।

16.5.3. नुम् आगम

नन्दति - टुनदि-
सूत्र- आदिर्ञिटुडवः ।
धातु के आदि में ञि, टु तथा डु की इत् सञ्ज्ञा होती है ।
उदाहरण- टुनदि - टु की इत् सञ्ज्ञा तथा लोप- नदि
सूत्र- इदितो नुम् धातोः ।
इदित् धातु को नुम् आगम होता है । इदित्- जिसमें इकार की इत् सञ्ज्ञा हो ।
उदाहरण- नदि (टुनदि) धातु में इकार की इत् सञ्ज्ञा होने से नुम् आगम-
न नुम् द्-   नन्द्
नन्द् + लट्- तिप्-   नन्दति ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. णो नः इस सूत्र का कार्य लिखो ।
ख. नद् + नद् + अतुस् इस अवस्था में क्या कार्य होता है ?
ग. इदित् धातु को कौन सा आगम होता है ?
घ. टुनदि यहाँ किन् वर्णों की इत् सञ्ज्ञा होती है ?

16.6. गुपू धातु

गुपू रक्षणे । सामान्यतः धातु से साक्षात् लकार का विधान होता है । तथापि कुछ धातुओं से लकार विधान से पूर्व प्रत्यय को जोडा जाता है । ऐसी धातुओं में रूप सिद्धि की प्रक्रिया यहाँ द्रष्टव्य है ।

16.6.1. आय प्रत्यय तथा धातु सञ्ज्ञा

गोपायति – गुपू- गुप् धातु-

सूत्र- गुपुधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः ।

गुप्, धूप्, विच्छ्, पण्, पन धातुओं से आय प्रत्यय होता है ।

गुप् + आय- लघु उपधा उकार को गुण-

गोप् + आय- गोपाय

सूत्र- सनाद्यन्ता धातवः ।

सन् आदि प्रत्यय यदि शब्द के अन्त में हों, तब उनकी धातु सञ्ज्ञा होती है । यहाँ 12 प्रत्ययों का ग्रहण किया गया है-

उदाहरण-गोपाय - आय-प्रत्ययान्त की धातु सञ्ज्ञा होती है । धातु सञ्ज्ञा के बाद लट् लकार, तिप्, शप् आदि पूर्ववत् होंगे- गोपायति ।

गोपायाञ्चकार- गुप् धातु- यहाँ पूर्व सूत्र से आय प्रत्यय प्राप्त है ।

सूत्र- आयादय आर्धधातुके वा ।

आर्धधातुक प्रत्यय यदि विधेय हो, तब आय आदि प्रत्यय विकल्प से होते हैं ।

गुप् + आय- गोपाय पुनः धातु सञ्ज्ञा होने से लिट् लकार-

गोपाय + लिट्

सूत्र- अतो लोपः ।

उपदेश अवस्था में जो आर्धधातुक अकारान्त हो, उसके अकार का लोप होता है, यदि आर्धधातुक प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- गोपाय + लिट्- आर्धधातुक अकारान्त गोपाय के अकार का लोप-

गोपाय् + लिट्

16.6.2. आम् प्रत्यय

वार्तिक- कास्यनेकाच आम् वक्तव्यो लिटि ।

कास् धातु तथा अनेकाच् धातु से लिट् लकार में आम् प्रत्यय होता है ।

उदाहरण- गोपाय् + लिट् - अनेकाच् होने से आम् प्रत्यय-

गोपाय् + आम् + लिट्- गोपायाम् + लिट्

सूत्र- आमः ।

आम् प्रत्यय अन्त में होने पर उससे लिट् लकार का लुक् होता है ।

उदाहरण- गोपायाम् + लिट्-   आम् अन्त में होने से लिट् का लुक्-   गोपायाम्

16.6.3.   कृ धातु का अनुप्रयोग

सूत्र- कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ।

लिट् लकार में लिट्परक कृञ् धातु का अनुप्रयोग होता है ।

उदाहरण- गोपायाम् + कृ + लिट्-   पूर्ववत् गोपायाम् + कृ + तिप्-

गोपायाम् + कृ +अ (णल्)

गोपायाम् + कृ + कृ + अ

सूत्र- उरत् ।

अभ्यास के ऋकार को अत् आदेश होता है ।

उदाहरण-

गोपायाम् + कृ + कृ + अ-   अभ्यास में ऋकार को अत् रपर होने से अर्-

गोपायाम् + कर् + कृ + अ

गोपायाम् + क + कृ + अ-   गोपायाम् + च + कृ + अ-

गोपायाम् + च + कार् + अ-

गोपायाम् + चकार-   मकार को अनुस्वार तथा अनुस्वार को परसवर्ण ञकार-

गोपायाञ्चकार

इसी प्रकार- गोपायाम् + च +कृ + अतुस्-   यण् सन्धि-   गोपायाञ्चक्रतुः, गोपायाञ्चक्रुः ।

गोपायाम् + च + कृ + थल् (सिप्) - वलादि आर्धधातुक थल् प्रत्यय परे होने पर इट् आगम प्राप्त-

16.6.4.   इट् आगम का निषेध

सूत्र- एकाच उपदेशेनुदात्तात् ।

उपदेश अवस्था में जो धातु एकाच् तथा अनुदात्त हो, वहाँ इट् आगम नहीं होता है ।

गोपायाम् + च + कृ + थल्- कृ धातु के एकाच् तथा अनुदात्त होने से इट् आगम का निषेध-

कृ के ऋकार को गुण होने पर-

गोपायाम् + च + कर् + थ-   गोपायाञ्चकर्थ ।

आय प्रत्यय न होने पर -   गुप् + लिट्-   गुप् + तिप्-   गुप् +अ (णल्)-   गुप् गुप् + अ

गु गुप् + अ -   जु गुप् + अ-   जुगोप, जुगुपतुः जुगुपुः ।

जुगोपिथ-   जु गोप् + थल् (सिप्) -   इट् आगम प्राप्त-

सूत्र- स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा ।

स्वृ आदि धातुओं तथा ऊदित् धातु से परे वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को विकल्प से इट् आगम होता है।

उदाहरण- जु गोप् + थल्- यहाँ गुपू के ऊदित् होने से विकल्प से इट् आगम-

जु गोप् +इ + थ- जुगोपिथ- जुगोप्थ।

इट् आगम तथा आय प्रत्यय के विकल्प से लुट् लकार में- गोपायिता- गोपिता- गोप्ता।

- **रूप सिद्धि- गोपायाञ्चकार**

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से गुप् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
गुपुधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः	इस सूत्र से गुप् धातु से आय प्रत्यय हुआ	गुप् + आय
पुगन्तलघूपधस्य च	इस सूत्र से उपधा उकार के स्थान पर गुण ओकार हुआ	गोप् + आय
सनाद्यन्ता धातवः	इस सूत्र से गोपाय की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ	गोपाय + लिट्- गोपाय + ल्
कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि	इस सूत्र से गोपाय से आम् प्रत्यय हुआ	गोपाय + आम् + ल्
अतो लोपः	इस सूत्र से गोपाय के अन्त में अकार का लोप हुआ	गोपाय् + आम् + ल्- गोपायाम् + ल्
आमः	इस सूत्र से लिट् का लुक् हुआ	गोपायाम्
कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि	इस सूत्र से लिट् लकार के साथ कृ धातु का अनुप्रयोग हुआ	गोपायाम् + कृ + लिट्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	गोपायाम् + कृ + तिप्
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ	गोपायाम् + कृ + णल्- गोपायाम् + कृ + अ
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से भूव् भाग को द्वित्व हुआ	गोपायाम् + कृ + कृ + अ
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- कृ की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	

उरत्	इस सूत्र से अभ्यास के ऋकार के स्थान पर अ आदेश हुआ	
उरण् रपरः	इस सूत्र से अकार आदेश रपर- अर् हुआ	गोपायाम् +कर्+ कृ + अ
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास कर् के रेफ का लोप हुआ	गोपायाम् +क+ कृ + अ
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास के ककार के स्थान पर चकार हुआ	गोपायाम् +च+ कृ + अ
अचो ञ्णिति	इस सूत्र से कृ के ऋकार के स्थान पर आर् वृद्धि हुई	गोपायाम् +च+ कार् + अ
मोनुस्वारः	इस सूत्र से मकार के स्थान पर अनुस्वार हुआ	गोपायां + चकार
वा पदान्तस्य	इस सूत्र से अनुस्वार को परसवर्ण ञकार हुआ	**गोपायाञ्चकार**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

क. गुप् धातु का अर्थ लिखो।

ख. किन धातुओं से आय प्रत्यय होता है ?

ग. सन् आदि प्रत्यय लिखो जिनके लगने से धातु सञ्ज्ञा होती है।

घ. लिट् लकार में कृ आदि धातुओं का अनुप्रयोग किस सूत्र से होता है ?

16.7. क्षि धातु

क्षि क्षये। लट् - क्षयति क्षयतः क्षयन्ति।

16.7.1. लिट् लकार में क्रादि नियम

लिट्- क्षि + क्षि + अ(णल्)- कि + क्षि + अ- चि + क्षि + अ- चि + क्षै + अ- चि + क्षाय् + अ- चिक्षाय।

क्षि + क्षि + थल् -

आर्धधातुक थल् प्रत्यय होने से इट् प्राप्त

एकाच् तथा अनुदात्त होने से इट् आगम का निषेध प्राप्त- एकाच उपदेशेनुदात्तात्

सूत्र- कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि।

इन धातुओं से परे वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को इट् आगम नहीं होता है । इनमें कृ सृ भृ वृ ये एकाच् तथा अनुदात्त धातुएं हैं । अतः इनमें इट् आगम का निषेध पूर्व सूत्र से सिद्ध है । पुनः इस सूत्र द्वारा इट् का निषेध करने से यही नियम ज्ञात होता है कि लिट् लकार में एकाच् तथा अनुदात्त धातुओं में केवल इन्ही कृ सृ भृ वृ धातुओं में इट् आगम का निषेध होता है अन्य धातुओं में नहीं ।

अतः इस नियम से क्षि धातु में इट् का निषेध नहीं होगा । अतः-

16.7.2. भारद्वाज नियम

क्षि + क्षि + थल्- पूर्वोक्त नियम से इट् प्राप्त-

सूत्र- अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् ।

जो धातु अजन्त हो, तास् प्रत्यय में अनिट् हो, उससे परे थल् प्रत्यय हो, तब इट् आगम नहीं होता है ।

उदाहरण- क्षि + क्षि + थल्- अजन्त क्षि धातु से परे थल् प्रत्यय होने पर इट् आगम का निषेध प्राप्त-

सूत्र- ऋतो भारद्वाजस्य ।

जो धातु ऋकारान्त हो, तास् प्रत्यय में अनिट् हो, उससे परे थल् प्रत्यय हो, तब भारद्वाज के मत में इट् आगम नहीं होता है । यहाँ भी पूर्व सूत्र से इट् का निषेध सिद्ध है, क्योंकि ऋकारान्त धातु अजन्त होती है । पुनः इस सूत्र से इट् का निषेध एक नियम बताता है कि भारद्वाज के मत में केवल ऋकारान्त धातु से ही इट् आगम का निषेध होगा, अन्य में नहीं । अतः भारद्वाज के मत में क्षि धातु में इट् आगम होगा, तथा पाणिनि के मत में नहीं। अतः इस नियम से थल् प्रत्यय में विकल्प से इट् आगम होता है। इस नियम को भारद्वाज नियम कहा जाता है ।

क्षि + क्षि + थल्- थल् प्रत्यय में भारद्वाज नियम से विकल्प से इट्-

क्षि + क्षि + इ + थ- कि + क्षि + इ + थ-

चि + क्षि + इ + थ- चि + क्षे + इ + थ- चि + क्षय् + इ + थ- चिक्षयिथ ।

इट् न होने पर- चिक्षेथ ।

- **रूप सिद्धि- चिक्षाय**

परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	क्षि + लिट् क्षि+ ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय	क्षि + सिप्

	का विधान हुआ	
	अनुबन्ध लोपः	क्षि + सि
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ अनुबन्ध लोप	क्षि + थल् क्षि + थ
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से भूव् भाग को द्वित्व हुआ	क्षि+ क्षि + थ
पूर्वोभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- भूव् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास षकार का लोप हुआ	कि+ क्षि+ थ
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास के ककार के स्थान पर चकार हुआ	चि+ क्षि + थ
आर्धधातुकस्येड् वलादेः	इस सूत्र से आर्धधातुक प्रत्यय थल् को इट् आगम प्राप्त हुआ	
एकाच उपदेशेनुदात्तात्	इस सूत्र से थल् को इट् आगम का निषेध प्राप्त हुआ	
कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि	इस सूत्र से क्रादि नियम से पुनः थल् को इट् आगम प्राप्त हुआ	
अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम्	इस सूत्र से थल् को इट् आगम का निषेध प्राप्त हुआ	
ऋतो भारद्वाजस्य	इस सूत्र से भारद्वाज नियम से थल् को इट् आगम हुआ	चि + क्षि + इट् + थ चि + क्षि + इ + थ
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से क्षि के इकार के स्थान पर गुण- एकार हुआ	चि + क्षे + इ + थ
एचोयवायावः	इस सूत्र से एकार के स्थान पर अय् आदेश हुआ	**चिक्षयिथ**

16.7.3. लिङ् तथा लुङ् लकार

क्षीयात्- क्षि + या (यासुट्) + त् (लिङ्)-

सूत्र- अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः-

यकारादि सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर इकार को दीर्घ- क्षीयात् ।

अक्षैषीत्- (अट्)अ + क्षि + च्लि + त् (लुङ्)- अ + क्षि + स् (सिच्) + त् -

अ + क्षि + इ (इट्)स् +ई (ईट्)+ त्-

सूत्र- सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु-

परस्मैपद सिच् प्रत्यय परे होने पर धातु के इक् को वृद्धि-

अ + क्षै + इ + स् +ई + त्-

सिच् का लोप तथा सकार को षकार- अक्षैषीत् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-5**

क. क्रादि नियम का ज्ञान किन धातुओं से होता है ?

ख. लिट् लकार के मध्यम पुरुष के एकवचन में विकल्प से इट् आगम का नियम किस सूत्र द्वारा प्रतिपादित होता है ?

ग. क्षीयात् यहाँ दीर्घ किस सूत्र से होता है ?

16.8. पा तथा ग्लै धातु-

पा पाने । पा धातु के रूप दो प्रकार के होते हैं । एक, जहाँ पा का श्रवण होता है । जैसे- पास्यति । दूसरा, जहाँ पिब का श्रवण होता है । जैसे- पिबति ।

16.8.1. पा आदि के स्थान पर पिब आदि आदेश

सूत्र- पा-घ्रा-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश्यर्ति-सर्ति-शद-सदां पिब-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-पश्यर्च्छ-धौ-शीय-सीदाः ।

जहाँ शकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, वहाँ क्रमशः ये आदेश होते हैं- पा- पिब, घ्रा – जिघ्र, ध्मा- धम, स्था- तिष्ठ, म्ना- मन, दाण्- यच्छ, दृश्- पश्य, ऋ- ऋच्छ, सृ- धौ, शद्- शीय्, सद्- सीद् ।

उदाहरण- पा + तिप् (लट्)-

पा + अ (शप्) + ति-

शप् में शकार की इत् सञ्ज्ञा होने से पा को पिब आदेश- पिबति ।

16.8.2. लिट् तथा लिङ् लकार के कार्य

पपौ- पा + तिप् (लिट्)- पा + णल्-

सूत्र- आत औ णलः-

आकारान्त धातु से परे णल् को औकार आदेश होता है ।

उदाहरण- पा + औ- पा + पा + औ- प + पा + औ- पपौ ।

सूत्र- आतो लोप इटि च-

आकार का लोप होता है, यदि आर्धधातुक प्रत्यय या इट् परे हो -

पा + पा + अतुस्(आर्धधातुक प्रत्यय)-

प + प् + अतुस्- पपतुः ।

पेयात्- एर्लिङि - आर्धधातुक लिङ् लकार में आकारान्त धातु- पा के आकार को एकार- पा+ या(यासुट्)+ त् (आशीर्लिङ्ग)- पेयात्

16.8.3. ग्लै धातु में आत्व कार्य

ग्लै धातु- ग्लै हर्षक्षये । लट् – ग्लायति ।

सूत्र- आदेच उपदेशेशिति –

उपदेश में एजन्त ग्लै के एच् वर्ण ऐकार को आकार आदेश होता है ।

ग्ला- ग्ला + लिट्- ग्ला + तिप्-

ग्ला + णल्- ग्ला + औ-

ग्ला + ग्ला + औ- ग्ला + ग्ला + औ-

गा + ग्ला + औ- ग + ग्ला + औ-

ज + ग्ला + औ- जग्लौ ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-6**

क. पिबति यहाँ किस धातु के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ख. पपौ- धातु-लकार-पुरुष-वचन लिखो ।

ग. एर्लिङि सूत्र का उदाहरण लिखो ।

घ. ग्लै धातु में आकार आदेश किस सूत्र से होता है ?

16.9. श्रु तथा गम् धातु-

श्रु श्रवणे ।

16.9.1. श्नु प्रत्यय

श्रृणोति- श्रु + लट् - श्रु + तिप्- शप् प्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- श्रुवः श्रृ च-

श्रु धातु से शप् को बाधकर श्नु प्रत्यय तथा श्रु को श्रृ आदेश होता है -

श्रृ + श्नु + ति- श्रृ + नु + ति- श्रृ + नो + ति-

श्रृणोति ।

श्रृण्वन्ति- श्रु + लट् - श्रु + झि- श्रृ + श्नु + झि- श्रृ + नु + झि-
श्रृ + नु + अन्ति- उकार को यण् प्राप्त- इको यणचि
यण् को बाधकर उवङ् प्राप्त- अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ
सूत्र- हुश्नुवोः सार्वधातुके
हु धातु तथा श्नु प्रत्यय के उकार को सार्वधातुक अच् परे होने पर यण् होता है-
श्रृ + न् व् + अन्ति- श्रृण्वन्ति ।

16.9.2. उकार लोप

श्रृण्वः- श्रृणुवः- श्रु + लट् - श्रु + वस्- श्रृ + श्नु + वस्- श्रृ + नु + वस्-
सूत्र- लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः-
मकार या वकार परे होने पर प्रत्यय के उकार का विकल्प से लोप होता है-
श्रृ + न् + वस्- श्रृण्वः- श्रृणुवः ।
श्रृण्मः- श्रृणुमः ।
आर्धधातुक लकारों में श्रु को श्रृ आदेश नहीं होता है- शुश्राव (लिट्), श्रोता (लुट्), श्रोष्यति (लृट्)

16.9.3. हि लुक्

लोट् - श्रृणोतु श्रृणुताम् श्रृण्वन्तु ।
श्रृणु- श्रु + लट्- श्रु + सिप्- श्रृ + नु + सि- श्रृ + नु + हि-
सूत्र- - उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्-
संयुक्त वर्ण पूर्व में न होने पर प्रत्यय के उकार से परे हि का लुक् होता है-
श्रृ + नु- श्रृणु ।

16.9.4. गम् धातु में छत्व कार्य

गम् धातु- गम्लृ गतौ ।
गच्छति- गम्लृ- गम्- गम् + लट्- गम् + तिप्- गम् + अ(शप्) + ति-
सूत्र- - इषुगमियमां छः-
इष्, गम् तथा यम् धातुओं को शित् प्रत्यय परे होने पर छकार अन्तादेश होता है ।
गम् + अ(शप्) + ति- शित् शप् प्रत्यय होने पर गम् के अन्त में मकार को छकार-
ग छ् + अ + त- छ वर्ण परे होने पर तुक् आगम –
ग त्(तुक्) छ् + अ + ति- श्चुत्व सन्धि से तकार को चकार-
गच्छति ।

16.9.5. उपधा लोप

लिट्- जगाम ।

जग्मतुः – गम् + लिट्- गम् + तस्- गम् + अतुस्- गम् + गम् + अतुस्- ग + गम् + अतुस्-

सूत्र- गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि -

गम्, हन्, जन्, खन् , घस् धातुओं की उपधा का लोप होता है, यदि अजादि कित् या ङित् प्रत्यय परे हो-

ग + गम् + अतुस्- अपित् अतुस् प्रत्यय के ङित् होने से गम् की उपधा अकार का लोप-

ग + ग् म् + अतुस्- जग्मतुः । जग्मुः ।

16.9.6. गम् धातु में इट् आगम

लृट् लकार

गमिष्यति- गम् +लृट्- गम् + तिप्- गम् +स्य + तिप्- वलादि आर्धधातुक स्य प्रत्यय में इट् आगम प्राप्त- आर्धधातुकस्येड् वलादेः

इट् आगम का निषेध प्राप्त- एकाच उपदेशेनुदात्तात्

सूत्र- गमेरिट् परस्मैपदेषु-

गम् धातु से परस्मैपद में सकारादि प्रत्यय स्य परे होने पर इट् आगम होता है -

गम् +इ + स्य + ति- गमिष्यति ।

16.9.7. च्लि को अङ् आदेश

अगमत्- गम् +लुङ्- गम् + तिप्-

अ + गम् +च्लि + ति - च्लि को सिच् प्राप्त-

सूत्र- पुषादिद्युताद्य्लृदितः परस्मैपदेषु-

पुष् आदि, द्युत् आदि तथा लृदित्- जिसमें लृ की इत् सञ्ज्ञा हो, से परे च्लि को अङ् आदेश होता है -

अ + गम् +च्लि + ति- गम् धातु में लृकार की इत् सञ्ज्ञा होने से च्लि को अङ् आदेश-

अ + गम् +अङ् + ति-

अ + गम् +अ + त् - अगमत् ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-7**

क. श्रृणोति यहाँ शप् प्रत्यय की प्राप्ति होने पर क्या प्रत्यय होता है ?

ख. श्रृ + नु + वस् इस अवस्था में क्या कार्य होगा ?

ग. श्रु धातु के लोट् लकार-प्र.पु.ए.व. का रूप लिखो ।

घ. गम् धातु में छकार आदेश किन लकारों में होता है ?

16.10. सारांश

हम यह पहले भू धातु की प्रक्रिया में जान चुके हैं कि किसी भी तिङन्त शब्द की सिद्धि में किन आधारभूत नियमों का प्रयोग होता है । जैसे विभिन्न लकारों का प्रयोग, आत्मनेपद-परस्मैपद प्रयोग, पुरुष विधान, सार्वधातुक-आर्धधातुक कार्य आदि । जैसे हमने पिछले पाठ में इगन्त अङ्ग को गुण विधान पढा । यहाँ हमने लघूपधा को गुण का नियम देखा । जैसे- सिध् – सेधति । इसके अतिरिक्त णोपदेश धातुओं में नकार आदेश, इदित् धातुओं में नुम् आगम, गुप् धातु से आय प्रत्यय, बारह विशेष आय आदि प्रत्ययों के लगने पर पुनः धातु सञ्ज्ञा इत्यादि विषयों का ज्ञान प्राप्त किया । पिछले अध्याय में हमने वलादि आर्धधातुक प्रत्यय में इट् का प्रयोग देखा था । यहाँ हमने यह जाना कि एकाच् तथा अनुदात्त धातुओं में उस इट् आगम का निषेध होता है । इसी सन्दर्भ में हमने क्रादि नियम तथा थल् प्रत्यय में वैकल्पिक इट् बताने वाला भरद्वाज नियम जाना। इस के अतिरिक्त श्रु धातु से शप् की प्राप्ति में श्नु प्रत्यय, एजन्त धातुओं में आत्व का विधान इत्यादि कार्य हमने समझे ।

16.11. कठिन शब्दावली

ट. **सेट्-** जिन धातुओं में आर्धधातुक प्रत्ययों में इट् आगम होता है उन्हे सेट् कहा जाता है ।

ठ. **अनिट्-** जिन धातुओं में आर्धधातुक प्रत्ययों में इट् आगम का निषेध होता है उन्हे अनिट् कहते हैं ।

ड. **एकाच् धातु-** जिन धातुओं में एक अच्(स्वर) होता है उन्हें एकाच् कहते हैं । जैसे- भू, जि आदि ।

ढ. **अनुदात्तेत् धातु-** जिन में अनुदात्त स्वर की इत् सञ्ज्ञा होती है वे अनुदात्तेत् धातु होती हैं । जैसे- एध्, वृत् आदि ।

16.12. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

च. आट्

छ. अभ्यास के आदि अकार को दीर्घ होता है ।

ज. अस्तिसिचोऽपृक्ते

झ. किद्वद्भाव

स्वयं आकलन प्रश्न-2

क. नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोति देग्धिषु च

ख. अभ्यास के कवर्ग तथा हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है।

ग. अत उपधायाः

घ. गद्-लुङ्-प्रथम पुरुष-ए.व.

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. धातु के आदि में णकार के स्थान पर नकार आदेश होता है।

ख. एकार आदेश तथा अभ्यास लोप

ग. नुम् आगम

घ. टु तथा इ

स्वयं आकलन प्रश्न-4

क. रक्षा करना

ख. गुप्, धूप्, विच्छ्, पण्, पन्

ग. सन् क्यच् काम्यच् क्यङ् क्यष् णिङ् णिच् क्विप् यङ् यक् आय ईयङ्

घ. कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि

स्वयं आकलन प्रश्न-5

ङ. कृ, सृ, भृ, वृ

च. ऋतो भारद्वाजस्य।

छ. अकृत्सार्वधातुकयोः

स्वयं आकलन प्रश्न-6

क. पिब आदेश।

ख. पा-लिट्-प्रथमपुरुष-ए.व.

ग. पेयात्

घ. आदेच उपदेशेऽशिति

स्वयं आकलन प्रश्न-7

क. श्नु प्रत्यय।

ख. उकार लोप

ग. श्रृणु

घ. लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्

16.13. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी।

16.14. अभ्यासात्मक-प्रश्न

घ. पुगन्तलघूपधस्य च इस सूत्र की व्याख्या करो।

ङ. नन्दति, पिबति, गोपायति, श्रृणोति- रूप सिद्धि करो।

च. एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

छ. चिक्षयिथ, गमिष्यति- रूप सिद्धि करो।

इकाई-17

भ्वादि गण- आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुएं

संरचना

17.1. पाठ का परिचय

17.2. पाठ का उद्देश्य

17.3. एध् धातु

17.3.1. टित् लकार के कार्य

17.3.2. आम् प्रत्यय तथा एश् आदि आदेश

17.3.3. लोट् लकार के कार्य

17.3.4. सीयुट् तथा सुट् आगम

17.3.5. झ को अत् आदेश

- स्वयं आकलन प्रश्न-1

17.4. कम् धातु

17.4.1. णिङ् प्रत्यय

17.4.2. च्लि को चङ् आदेश

17.4.3. सन्वद्भाव

- स्वयं आकलन प्रश्न-2

17.5. द्युत्, वृत् तथा भृ धातु

17.5.1. द्युत् में सम्प्रसारण कार्य

17.5.2. वृत् में विकल्प से आत्मनेपद

17.5.3. इट् आगम का निषेध

17.5.4. भृ धातु में आशीर्लिङ् तथा लुङ् लकार

- स्वयं आकलन प्रश्न-3

17.6. यज् धातु, वह् धातु

17.6.1. अभ्यास को सम्प्रसारण

17.6.2. कित् प्रत्यय होने पर सम्प्रसारण

17.6.3. वह् का लिट् लकार

- स्वयं आकलन प्रश्न-4

17.7. सारांश

17.8. कठिन शब्दावली

17.9. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

17.10. सहायक ग्रन्थ

17.11. अभ्यासात्मक प्रश्न

17.1. पाठ का परिचय

पिछले अध्याय में हमने भू से अन्य परस्मैपदी धातुओं की प्रक्रिया के विशेष नियम समझे ।पिछले पाठ में हमनें भू धातु की प्रक्रिया को जाना । इस पाठ में हम भ्वादिगण की आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं की प्रक्रिया के नियम जानेंगे ।

जिन धातुओं में आत्मनेपद सञ्ज्ञक प्रत्यय होते हैं, वे आत्मनेपदी धातुएं हैं । आत्मनेपद सञ्ज्ञक प्रत्यय तङ- प्रत्याहार में आने वाले प्रत्यय हैं । दो अवस्थाओं में आत्मनेपद प्रत्यय होते हैं- यदि धातु में ङकार की इत् सञ्ज्ञा हो अथवा अनुदात्त स्वर की इत् सञ्ज्ञा हो ।

उसी प्रकार जिन धातुओं में परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों का प्रयोग होता है, वे उभयपदी धातुएं हैं । इन धातुओं में ञकार या स्वरित स्वर की इत् सञ्ज्ञा होती है । जब क्रिया का फल कर्ता को प्राप्त हो, तब आत्मनेपद, यदि अन्य को प्राप्त हो तब परस्मैपद का प्रयोग होता है ।

सामान्य नियम, जैसे लकार, तिप् आदि प्रत्यय, परस्मैपद प्रयोग, शप् आदि प्रत्यय, सार्वधातुक-आर्धधातुक सञ्ज्ञा इत्यादि हम पिछले पाठ में पढ चुके हैं । इस पाठ में हम एध्, कम्, वृत्, भृ, यज्, वह् आदि धातुओं में प्रयुक्त होने वाले विशेष नियमों को समझेंगे ।

17.2. पाठ का उद्देश्य-

- एध् आदि आत्मनेपदी धातुओं के तिङन्त पदों का ज्ञान
- णिङ् प्रत्यय के प्रयोग में लुङ् लकार की प्रक्रिया का ज्ञान
- यज् आदि धातुओं में द्विविध सम्प्रसारण का ज्ञान

17.3. एध धातु-

एध वृद्धौ- यहाँ अनुदात्त स्वर अकार की इत् सञ्ज्ञा होती है, अतः यह आत्मनेपदी है ।

17.3.1. टित् लकार के कार्य

एधते- एध् + लट्- आत्मनेपद के प्रथम पुरुष एकवचन में एध् + त- एध् + अ(शप्) +त

सूत्र- टित आत्मनेपदानां टेरे ।

टित् लकार में आत्मनेपद प्रत्यय की टि को एकार आदेश होता है -

एध् + अ+ त- तप्रत्यय की टि अकार को एकार-

एधते ।

- **रूप सिद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से एध् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	एध् + लट् एध् + ल्
तङानावात्मनेपदम्	इस सूत्र से त आदि प्रत्ययों की आत्मनेपद सञ्ज्ञा हुई	
अनुदात्तङित आत्मनेपदम्	इस सूत्र से आत्मनेपद प्रत्ययों का विधान हुआ	
तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः	इस सूत्र से त आताम् झ प्रत्ययों की प्रथमपुरुष सञ्ज्ञा हुई	
शेषे प्रथमः	इस सूत्र से प्रथम पुरुष प्रत्ययों का विधान हुआ	
तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः	इस सूत्र से त प्रत्यय की एकवचन सञ्ज्ञा हुई	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर त प्रत्यय का विधान हुआ	एध् + त
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	त प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	एध् + शप् + त
	अनुबन्ध लोपः	एध् + अ + त
टित आत्मनेपदानां टेरे	इस सूत्र से त प्रत्यय की टि-अकार के स्थान पर एकार हुआ	एध् + अ + ते **एधते**

एधेते- आत्मनेपद के प्रथम पुरुष द्विवचन में एध् + आताम्- एध् + अ +आताम्- आताम् की टि आम् को एकार- एध्+ अ + आते

सूत्र- आतो ङितः ।

ङित् प्रत्यय के आकार को इय् आदेश होता है - एध् + अ + आते-

ङित् प्रत्यय आताम् के आकार को इय्- एध्+ अ + इय् ते

यकार का लोप- लोपो व्योर्वलि- एध्+ अ + इ ते-

गुण सन्धि- एधेते । झ को अन्त आदेश- एधन्ते ।

एधसे- आत्मनेपद के मध्यम पुरुष एकवचन में एध् + थास्- एध् + अ + थास्-

सूत्र- थासः से ।

टित् लकार में थास् को से आदेश होता है- एध् + अ + थास्- एध् + अ + से- एधसे ।

एध् + आथाम्- आताम् के समान आ को इय् आदेश –यलोप-गुण- एधेथे ।

एध् + ध्वम् - टि को एकार- एधध्वे ।

एध् +अ+ इट्- टि इकार को एत्व- एध् + अ + ए- अकार तथा एकार को पररूप- एधे ।

एध् + अ + वहि- टि को एकार तथा अकार को दीर्घ- अतो दीर्घो यञि- एधावहे । एधामहे ।

17.3.2. आम् प्रत्यय तथा एश् आदि आदेश

एधाञ्चक्रे - एध् + लिट्-

सूत्र- इजादेश्च गुरुमतोनृच्छः ।

जो धातु इजादि- इच् वर्ण आदि में हो, तथा जिसमें गुरु वर्ण हो, उससे लिट् लकार में आम् प्रत्यय होता है ।

एध् + लिट्- धातु के आदि में इच् वर्ण तथा गुरु वर्ण एकार है, अतः- एध् + आम+ लिट्- अकार लोप- एधाम् + लिट्-

लिट् का लुक्- आमः- एधाम्- कृ का अनुप्रयोग- एधाम् + कृ + लिट्- एधाम् + कृ + त-

सूत्र- लिटस्तझयोरेशिरेच् ।

लिट् लकार के त प्रत्यय को एश् तथा झ को इरेच् आदेश होता है - एधाम् + कृ + एश्- एधाम् + कृ कृ+ ए

एधाम् + कर् कृ + ए- एधाम् + क कृ + ए- एधाम् + चकृ + ए-

एधाम् + चक् र् ए- एधाम् + चक्रे- एधां+ चक्रे-

एधाञ्चक्रे ।

एधाम् + चकृ + आताम्-   टि आम् को एकार -   एधाञ्चक्राते।
एधाम् + चकृ + झ-   झ को इरेच्-   एधाम् + चकृ + इरेच्-   एधाम् + चक्रिरे-   एधाञ्चक्रिरे।
थास् - एधाञ्चकृषे। आथाम्- एधाञ्चक्राथे।
एधाम् + च कृ + ध्वम्-

सूत्र- इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोङ्गात्।
इण् वर्ण से परे षीध्वं, लुङ् तथा लिट् के धकार को ढकार होता है-
एधाम् + च कृ + ध्वम्-   इण् वर्ण ऋकार से परे लिट् लकार के धकार को ढकार-
एधाम् + च कृ + ढ्वम्-   एधाञ्चकृढ्वे।
इट्- एधाञ्चक्रे, वहि- एधाञ्चकृवहे, महिङ्- एधाञ्चकृमहे।

- **रूप सिद्धि- एधाञ्चक्रे।**

परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	एध् + लिट् एध् + ल्
इजादेश्च गुरुमतोनृच्छः	इस सूत्र से गोपाय से आम् प्रत्यय हुआ	एध् + आम् + ल्
अतो लोपः	इस सूत्र से गोपाय के अन्त में अकार का लोप हुआ	एध् + आम् + ल् एधाम् + ल्
आमः	इस सूत्र से लिट् का लुक् हुआ	एधाम्
कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि	इस सूत्र से लिट् लकार के साथ कृ धातु का अनुप्रयोग हुआ	एधाम् + कृ + लिट् एधाम् + कृ + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर त प्रत्यय का विधान हुआ	एधाम् + कृ + त
लिटस्तझयोरेशिरेच्	इस सूत्र से त के स्थान पर एश् आदेश हुआ अनुबन्ध लोप	एधाम् + कृ + एश् एधाम् + कृ + ए
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से कृ भाग को द्वित्व हुआ	एधाम् +कृ+ कृ + ए
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- भूव् की अभ्यास	

	सञ्ज्ञा हुई	
उरत्	इस सूत्र से अभ्यास के ऋकार के स्थान पर अ आदेश हुआ	
उरण् रपरः	इस सूत्र से अकार आदेश रपर- अर् हुआ	एधाम् +कर्+ कृ + ए
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास कर् के रेफ का लोप हुआ	एधाम् +क+ कृ + ए
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास के ककार के स्थान पर चकार हुआ	एधाम् +च+ कृ + ए
इको यणचि	इस सूत्र से ऋकार के स्थान पर रेफ हुआ	एधाम् +च+ क् र्+ ए
	पूर्ववत् मकार को अनुस्वार तथा परसवर्ण ञकार	एधाञ्चक्रे

17.3.3. लोट् लकार के कार्य

एधताम्- एध् + लोट्- एध् + त - एध् + अ (शप्) + त- टित् लकार होने से त प्रत्यय की टि को एकार - एध् + अ + ते

सूत्र- आमेतः ।

लोट् लकार में एकार को आम् आदेश होता है- एध् + अ + ताम्- एधताम् ।

एधेताम् । एधन्ताम् ।

एधस्व- एध् + लोट्- एध् + थास् - एध् + अ (शप्) + त- एध् + अ + से-

सूत्र- सवाभ्यां वामौ ।

लोट् लकार में सकार तथा वकार से परे एकार को क्रमशः व तथा अम् आदेश होते हैं-

एध् + अ + स् व्- एधस्व

एध् + लोट्- एध् + ध्वम् - एध् + अ (शप्) + ध्वम्- एध् + अ + ध्वे-

एध् + अ + ध्वम्- एधध्वम्

एधै- एध् + लोट्- एध् + इट् - एध् + अ (शप्) + ए-

सूत्र- एत ऐ ।

लोट् लकार में उत्तम पुरुष के एकार को ऐकार होता है- एध् + अ + ए- एध् + अ + ऐ- एधै ।

इसी प्रकार एध् + लोट्- एध् + वहि - एध् + अ (शप्) +वहि- एध् + अ + वहे-
एध् + आ + वहे- एधावहै। एधामहै।
लङ् लकार में पूर्ववत् कार्य होते हैं- एध् + लङ्- एध् + अ + त-
(आट् आगम)आ + एध् + अ + त- ऐधत।

- **रूपसिद्धि- एधताम् एधस्व**

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	एध्+ लोट् एध् + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर त प्रत्यय का विधान हुआ	एध् + त
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	त प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	एध् +शप् + त
	अनुबन्ध लोपः	एध् + अ + त
टित आत्मनेपदानां टेरे	इस सूत्र से त प्रत्यय की टि- अ के स्थान पर एकार हुआ	एध् + अ + ते
आमेतः	इस सूत्र से एकार के स्थान पर आम् आदेश हुआ	एध् + अ + ताम् **एधताम्**
	इसी प्रकार मध्यम पुरुष के ए.व. में थास् प्रत्यय होने पर	एध् + अ + थास्
थासः से	इस सूत्र से थास् के स्थान पर से आदेश हुआ	एध् + अ + से
सवाभ्यां वामौ	इस सूत्र से एकार को व आदेश हुआ	एध् + अ + स् व **एधस्व**

17.3.4. सीयुट् तथा सुट् आगम

एधेत- एध् + लिङ्- एध् + त - एध् + अ (शप्) + त-

सूत्र- लिङः सीयुट् ।

लिङ् लकार को आत्मनेपद में सीयुट् आगम होता है - एध् + अ + सीयुट् + त-

एध् + अ + सीय् + त

सूत्र- सुट् तिथोः ।

लिङ् लकार में तकार तथा थकार को सुट् आगम होता है - एध् + अ + सीय् + स् (सुट्) + त

सीयुट् के सकार का लोप- लिङः सलोपोनन्त्यस्य - एध् + अ + ईय् + स् (सुट्) + त

सुट् के सकार का लोप- स्कोः संयोगाद्योरन्ते च- एध् + अ + ईय् + त

यकार का लोप- लोपो व्योर्वलि- एध् + अ + ई + त- एधेत । एधेयाताम् ।

एधेरन्- एध् + अ + सीय् + स् (सुट्) + झ-

सूत्र- झस्य रन् ।

लिङ् लकार में झप्रत्यय के स्थान पर रन् आदेश होता है- एध् + अ + सीय् + स् (सुट्) + रन्-

एध् + अ + ई + रन्- एधेरन् ।

एधेथाः एधेध्वम् एधेय एधेवहि एधेमहि ।

एधेय- एध् + अ + सीय् + स् (सुट्) + इट् -

सूत्र- इटोत् ।

लिङ् लकार के इट् को अत् आदेश होता है- एध् + अ + सीय् + स् + अ- एध् + अ + ईय् + अ-

एधेय ।

- **रूप सिद्धि- एधेत**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से एध् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट-सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	एध् + लिङ् एध् + ल्
लिङः सीयुट्	इस सूत्र से लिङ् लकार को सीयुट् आगम हुआ	एध् + सीयुट् + ल् एध् + सीय् + ल्
तिप्-तस्-	इस सूत्र से लकार के स्थान पर त प्रत्यय का	एध् + सीय् + त

झि…….	विधान हुआ	
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	त प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	एध् +अ (शप्) सीय् + त
सुट् तिथोः	इस सूत्र से त प्रत्यय के आदि में सुट् आगम हुआ	एध् + अ + सीय् + स् (सुट्) त
लोपो व्योर्वलि	इस सूत्र से यकार का लोप हुआ	एध् + अ + सी + स् (सुट्) त
लिङः सलोपोनन्त्यस्य	इस सूत्र से सी के सकार का लोप हुआ	एध् + अ + ई + स् (सुट्) त
स्कोः संयोगाद्योरन्ते च	इस सूत्र से सुट् के सकार का लोप हुआ	एध् + अ + ई + त
आद् गुणः	इस सूत्र से अकार तथा इकार के स्थान पर एकार गुण आदेश हुआ	**एधेत**

एध् + लिङ्- एध् + त- एध् + सीयुट् + त- एध् + सीय् + स् + त-
एध् + इ + सीय् + स् + त-
एध् + इ + षीय् + ष् + त- एध् + इ + षीय् + ष् + ट- एधिषीष्ट। एधिषीयास्ताम्। एधिषीरन्। एधिषीष्ठाः। एधिषीयास्थाम्। एधिषीध्वम्। एधिषीय। एधिषीवहि। एधिषीवहि

17.3.5. झ को अत् आदेश

लुङ लकार में- एध् + लुङ्- एध् + त- (आट्)आ + एध् + च्लि + त- आ + एध् + सिच् + त- आ + एध् + स् + त-
आ + एध् +इ + स् + त- ऐधिष्ट। ऐधिषाताम्।
आ + एध् +इ + स् + झ-
सूत्र- आत्मनेपदेष्वनतः।
आत्मनेपद प्रत्ययों में झ के स्थान पर अत आदेश होता है, यदि झ अकार से भिन्न वर्ण से परे हो।
आ + एध् +इ + स् + झ- आ + एध् +इ + स् + अत- एधिषत। ऐधिष्ठाः। ऐधिषाथाम्। ऐधिढ्वम्। ऐधिषि। ऐधिष्वहि। ऐधिष्महि।

लृङ् लकार में- ऐधिष्यत ऐधिष्येताम् ऐधिष्यन्त ऐधिष्यथाः ऐधिष्येथाम् ऐधिष्यध्वम् ऐधिष्ये ऐधिष्यावहि ऐधिष्यामहि ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**

क. आत्मनेपदी धातुओं में प्रत्यय के टि भाग के स्थान पर एकार आदेश किन-किन लकारों में होता है ?

ख. एध् धातु का प्रयोग किस अर्थ का बोध कराने के लिए होता है ?

ग. एधाञ्चक्रे यहाँ एध धातु के साथ किस धातु का अनुप्रयोग हुआ है ?

घ. अजादि धातुओं में लुङ्, लङ् तथा लृङ् लकारों में क्या आगम होता है ?

17.4. कमु धातु-

कमु कान्तौ । गुप् धातु के समान यहाँ भी लकार से पूर्व प्रत्यय का विधान होता है ।

17.4.1. णिङ् प्रत्यय

कामयते- कमु- कम् धातु-

सूत्र- कमेर्णिङ् ।

कम् धातु से णिङ् प्रत्यय होता है- कम् + णिङ्- कम् + इ- उपधा अकार को वृद्धि- कामि

कामि की पुनः धातु सञ्ज्ञा- सनाद्यन्ता धातवः- काम् इ + लट्- काम् इ + त-

काम् इ + अ (शप्) त- काम् ए +अ + त

काम् अय् +अ + त- कामयते ।

कामयाञ्चक्रे- हम पहले गुप् धातु के प्रसङ्ग में पढ चुके हैं, कि आय आदि प्रत्यय आर्धधातुक प्रत्यय में विकल्प से होते हैं ।

अतः- आयादय आर्धधातुके - कम् + णिङ्- काम् + इ- काम् + इ + लिट्-

काम् + इ + आम् + लिट्-

सूत्र- अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ।

आम्, अन्त, आलु, आय्य, इत्नु, इष्णु इन प्रत्ययों में णि को अय् आदेश होता है -

काम् + अय्+ आम् + लिट्- कामयाम् + लिट्-

इसके बाद एधाञ्चक्रे के समान- कामयाञ्चक्रे ।

णिङ् प्रत्यय न होने पर- चकमे चकमाते चकमिरे ।

17.4.2. च्लि को चङ् आदेश

अचीकमत- कम् + णिङ्- कम् + इ काम्+ इ- काम् + इ + लुङ्- अ + काम् +इ + त-
अ + काम् +इ + च्लि + त-

च्लि के स्थान पर सिच् प्राप्त-

सूत्र- णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् ।

णि प्रत्ययान्त, श्रि, द्रु, स्रु धातुओं से परे च्लि को चङ् आदेश कर्तृ वाच्य में होता है-

अ + काम् +इ + चङ् + त- अ + काम् +इ + अ + त-

सूत्र- णेरनिटि ।

णि का लोप होता है, यदि आर्धधातुक प्रत्यय परे हो, जहाँ आदि में इट् न हो -

अ + काम् + अ + त

सूत्र- णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ।

णि से परे यदि चङ् हो, तब अङ्ग की उपधा को ह्रस्व होता है - अ + कम् + अ + त

सूत्र- चङि ।

चङ् प्रत्यय परे होने पर अनभ्यास धातु के प्रथम एकाच् को तथा अजादि धातु के द्वितीय एकाच् को द्वित्व होता है –

अ + कम् कम्+ अ + त- अ + क कम् + अ + त-

अ + च कम् + अ + त

इस स्थिति में-

17.4.3. सन्वद्भाव

सूत्र- सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ।

णि से परे चङ् हो, तब अङ्ग के अभ्यास को सन् प्रत्यय के समान कार्य होता है, यदि अभ्यास के बाद लघु वर्ण हो तथा अक् वर्ण का लोप न हो - अ + च कम् + अ + त- यहाँ णि से परे चङ् होने पर अङ्ग का अभ्यास- च को सन् प्रत्यय के समान कार्य होते हैं। इसे सन्वद्भाव कहते हैं। सन् प्रत्यय होने पर जो कार्य होंगे, वे सन् प्रत्यय के न होने पर भी होंगे यह तात्पर्य है। अतः उन कार्यों को अग्रिम प्रक्रिया में जानेंगे-

सूत्र- सन्यतः ।

सन् प्रत्यय परे होने पर अभ्यास के अकार को इकार आदेश होता है-

अ + च कम् + अ + त- अ + चि कम् + अ + त

सूत्र- दीर्घो लघोः ।

अभ्यास के लघु वर्ण को दीर्घ होता है, यदि सन्वद्भाव हुआ हो-

अ + ची कम् + अ + त- अचीकमत।

जहाँ णिङ् प्रत्यय नहीं होगा- अ + कम् + च्लि + त- च्लि को सिच् प्राप्त-

वार्तिक- कमेश्च्लेश्चङ् वाच्यः।

कम् धातु से परे च्लि को चङ् आदेश होता है- अ + कम् + अ (चङ्) + त- पूर्ववत् कम् को द्वित्व तथा अभ्यास कार्त- अचकमत।

रूप सिद्धि- अचीकमत।

भूवादयो धातवः	इस सूत्र से कम् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
कमेर्णिङ्	इस सूत्र से कम् धातु से णिङ् प्रत्यय हुआ	कम् + णिङ्- कम् + इ
अत उपधायाः	इस सूत्र से उपधा अकार के स्थान पर वृद्धि आकार हुआ	काम् + इ
सनाद्यन्ता धातवः	इस सूत्र से काम् इ की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लुङ्	इस सूत्र से भूत काल में लुङ् लकार हुआ	काम्+ इ + लुङ् काम् + इ + ल्
तिप्तस्झि..........	इस सूत्र से लुङ् के स्थान पर त आदेश हुआ	काम् + इ + त
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	इस सूत्र से धातु के आदि में अट् आगम हुआ	अ + काम् + इ + त
च्लि लुङि	इस सूत्र से धातु से च्लि प्रत्यय हुआ	अ+काम् + इ + च्लि+ त
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश प्राप्त हुआ	
णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर चङ् आदेश हुआ	अ+काम् + इ + चङ् + त अ+काम् + इ + अ+ त
णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः	इस सूत्र से काम् की उपधा आकार के स्थान पर ह्रस्व अकार हुआ	अ+कम् + इ + अ+ त
चङि	इस सूत्र से कम् भाग को द्वित्व हुआ	अ+कम्+ कम् + इ + अ+ त
	अभ्यास सञ्ज्ञा तथा हलादि शेष	अ+क+ कम् + इ + अ+ त
कुहोश्चुः	अभ्यास के क के स्थान पर चकार आदेश हुआ	अ+च+ कम् + इ + अ+ त
णेरनिटि	इस सूत्र से णिङ् के इकार का लोप हुआ	अ+च+ कम् + अ+ त
सन्वल्लघुनि	इस सूत्र से अभ्यास को सन्वद्भाव हुआ	

चङ्परेऽनग्लोपे		
सन्यतः	इस सूत्र से अभ्यास के अकार को इकार हुआ	अ+चि+ कम् + अ+ त
दीर्घो लघोः	इस सूत्र से अभ्यास के इकार को दीर्घ हुआ	अ+ची+ कम् + अ+ त **अचीकमत**

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

  क. कामयते इस प्रयोग में कम् धातु से किस प्रत्यय का विधान होता है ?

  ख. अ + कम् + इ(णिङ्) + च्लि + त यहाँ च्लि के स्थान पर क्या आदेश होगा ?

  ग. सन्वद्भावसूत्र क्या है ?

  घ. सन्यतः इस सूत्र का कार्य क्या है ?

17.5. द्युत् , वृत् तथा भृ धातु-

द्युत दीप्तौ- ।

लट्- लघु उपधा उकार को गुण- द्योतते द्योतेते द्योतन्ते ।

17.5.1. सम्प्रसारण कार्य

दिद्युते- द्युत् + लिट् - द्युत् + त- द्युत् + एश्- द्युत् द्युत् + ए-

सूत्र- द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् -

द्युत् तथा स्वप् धातु के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है –

उदाहरण- द्युत् के यण् वर्ण यकार को सम्प्रसारण इकार-

द् इ उ त् + द्युत् + ए - सम्प्रसारण इकार तथा उकार को पूर्वरूप इकार-

द् इ त् + द्युत् + ए- हलादि शेष-

दिद्युते ।

17.5.2. वृत् धातु में विकल्प से आत्मनेपद

वृतु वर्तने ।

वर्तते वर्तेते वर्तन्ते । यद्यपि यह धातु आत्मनेपदी है तथापि कुछ स्थलों पर यह परस्मैपदी भी हो जाती है । जैसे-

वर्त्स्यति- वर्तिष्यते- वृत् + लृट्- लृट् के स्थान पर आत्मनेपद तप्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- वृद्भ्यः स्यसनोः ।
वृत् आदि धातुओं से स्य या सन् प्रत्यय होने पर विकल्प से परस्मैपद होता है । वृत् आदि धातुओं में वृतु, वृधु, शृधु, स्यन्दू आती हैं ।
अतः विकल्प से लृट् के स्थान पर परस्मैपद तिप् प्रत्यय- वृत् + तिप्- वृत् + स्य + ति-
इट् आगम प्राप्त-

17.5.3. इट् आगम का निषेध

सूत्र- न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ।
वृत् आदि चार धातुओं से परे आर्धधातुक प्रत्यय को इट् आगम नहीं होता है-
वृत् + स्य + ति- गुण- वर्त्स्यति ।
त प्रत्यय होने पर इट् आगम- वर्तिष्यते ।

भृ धातु- भृञ् भरणे
लट्- भरति भरते । लिट्- बभार बभ्रे । लुट्- भर्तासि (सिप्) भर्तासे(थास्) । लृट्- भरिष्यति भरिष्यते । लोट्- भरतु भरताम् । लङ्- अभरत् अभरत । लिङ्- भरेत् भरेत ।

17.5.4. भृ धातु का आशीर्लिङ् तथा लुङ् लकार

आशीर्लिङ् लकार
भ्रियात्- भृ + लिङ् (आशिष्)- भृ + त् (तिप्)- भृ + या (यासुट्) + त्-
सूत्र- रिङ् शयग्लिङ्क्षु ।
ऋकार को रिङ् आदेश होता है , यदि श, यक् या आर्धधातुक लिङ् लकार परे हो-
भ् रिङ् + या + त्- भ् रि + या + त्- भ्रियात्
भृषीष्ट- भृ + लिङ् (आशिष्)- भृ + त- भृ + सी (सीयुट्) +स् (सुट्) त- ऋकार को गुण प्राप्त-
सूत्र- उश्च ।
ऋकार से परे लिङ् तथा सिच् कित् होते हैं, यदि उनके आदि में झल् वर्ण हो तथा आत्मनेपद प्रत्यय हो ।
भृ + सी + स् + त- झलादि त प्रत्यय के कित् होने से गुण का निषेध- क्ङिति च
सकार को षकार तथा तकार को ष्टुत्व सन्धि से टकार- भृषीष्ट ।

लुङ् लकार-
परस्मैपद -अभार्षीत् । आत्मनेपद-
अभृत- भृ + लुङ्- अ + भृ + त- अ + भृ + च्लि + त- अ + भृ + स् (सिच्) त-

सूत्र- ह्रस्वादङ्गात् ।
ह्रस्वान्त अङ्ग से परे सिच् का लोप होता है, यदि झल् वर्ण परे हो - अ + भृ + स् + त- अभृत
हृञ् हरणे, धृञ् धारणे । इन धातुओं के रूप तथा प्रक्रिया भृञ् धातु के समान होगी ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. द्युत् + द्युत् + ए (लिट्) यहाँ अभ्यास में क्या कार्य होता है ?

ख. वृद्भ्यः स्यसनोः इस सूत्र से क्या कार्य होता है ?

ग. भ्रियात् यहाँ ऋकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

घ. भृ धातु के परस्मैपद में लुङ् लकार का प्रथम पुरुष लिखो ।

17.6. यज् तथा वह् धातु-

यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु । यहाँ स्वरित अकार की इत् सञ्ज्ञा होने से उभयपद होता है ।
लट्- यजति यजते।

17.6.1. अभ्यास को सम्प्रसारण कार्य

इयाज- यज् + लिट्- यज् + तिप्- यज् + अ (णल्)- यज् + यज् + अ- य + यज् + अ-
सूत्र- लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ।
वच् आदि तथा ग्रह् आदि दोनों धातुओं के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है, यदि लिट् लकार परे हो ।
य + यज् + अ- अभ्यास के यण् यकार को सम्प्रसारण इकार तथा पूर्वरूप- इ + यज् + अ-
उपधा अकार को वृद्धि- इयाज ।

17.6.2. कित् प्रत्यय होने पर सम्प्रसारण

ईजतुः - यज् + लिट्- यज् + तस्- यज् + अतुस् –

सूत्र- वचि-स्वपि-यजादीनां किति ।
वच्, स्वप् तथा यज् आदि धातुओं को सम्प्रसारण होता है, यदि कित् प्रत्यय परे हो ।
यज् + अतुस्- अपित् अतुस् प्रत्यय कित् है, अतः यकार को सम्प्रसारण इकार तथा पूर्वरूप-
इज् + अतुस्-
इज् + इज् + अतुस्- इ + इज् + अतुस्- ईजतुस्- ईजतुः ।
यहाँ पर ध्यान देना चाहिए कि लिट् लकार में दो प्रकार से सम्प्रसारण होता है । प्रथम- जहाँ कित्- अपित् प्रत्यय है, वहाँ द्वित्व से पूर्व सम्प्रसारण होगा । जैसे- तस्- ईजतुः, झि- ईजुः, थस्-

ईजथुः, थ- ईज, वस् - ईजिव, मस्- ईजिम । द्वितीय- जहाँ पित् प्रत्यय है वहाँ द्वित्व के बाद अभ्यास को सम्प्रसारण होगा । जैसे- तिप्- इयाज, सिप्- इयजिथ इयष्ठ, मिप्- इयाज ययज । इसी प्रक्रिया को आत्मनेपद में भी समझें । आत्मनेपद मे सभी प्रत्यय अपित् होने से कित् हैं । अतः वहाँ सभी रूपों में द्वित्व से पूर्व में सम्प्रसारण होता है । जैसे- त- ईजे, आताम्- ईजाते, झ- ईजिरे , थास्- ईजिषे, आथाम्- ईजाथे, ध्वम्- ईजिध्वे, इट्- ईजे, वहि- ईजिवहे, महिङ्- ईजिमहे

रूप सिद्धि- इयाज ईजतुः

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से यज् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	यज् + लिट् यज् + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	यज् + तिप्
	अनुबन्ध लोपः	यज् + ति
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ अनुबन्ध लोप	यज्+ णल् यज्+ अ
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से यज् भाग को द्वित्व हुआ	यज् यज् + अ
पूर्वोभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- यज् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास यज् के जकार का लोप हुआ	य + यज् + अ
लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्	इस सूत्र से अभ्यास के यकार को सम्प्रसारण इकार हुआ	इ अ + यज् + अ
सम्प्रसारणाच्च	इस सूत्र से इकार तथा अकार को पूर्वरूप इकार हुआ	इ +यज् + अ
अत उपधायाः	इस सूत्र से उपधा अकार को वृद्धि आकार हुआ	इ + याज् + अ **इयाज**
	प्रथम पु. द्वि.व. में तस् तथा तस् के स्थान पर अतुस् आदेश	यज् + अतुस्

असंयोगाल्लिट् कित्	अतुस् प्रत्यय कित् हुआ	
वचिस्वपियजादीनां किति	इस सूत्र से यज् के य को सम्प्रसारण इकार हुआ	इ अ ज्+ अतुस्
सम्प्रसारणाच्च	इस सूत्र से इकार तथा अकार को पूर्वरूप इकार हुआ	इज् + अतुस्
	इज् को द्वित्व तथा द्वित्व आदि अभ्यासकार्य होने पर	इ + इज् + अतुस्- ईजतुस्- **ईजतुः**

लुट्- यष्टा यष्टारौ यष्टारः ।

यक्ष्यति- यज् + लृट्- यज् + तिप्-

यज् + स्य + ति- जकार को षकार- व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः

यष् + स्य + ति-

सूत्र- षढोः कः सि ।

षकार तथा ढकार को ककार आदेश होता है, यदि सकार परे हो-

यक् + स्य + ति- यक् + ष्य + ति- यक्ष्यति ।

17.6.3. वह् धातु का लिट् लकार-

वह प्रापणे ।

लट् – वहति वहते । लिट् – उवाह ऊहतुः ऊहुः(यजु धातुवत् सम्प्रसारण कार्य) । उवहिथ

इट् आगम के अभाव में-

लिट् लकार-

उवोढ- वह् + लिट्- वह् + सिप्- व + वह् + थल्- वह् धातु के हकार को ढकार- हो ढः- व + वढ् + थ

सूत्र- झषस्तथोर्धोधः ।

झष् वर्ण से परे तकार तथा थकार को धकार आदेश होता है -

व + वढ् + ध- ष्टुत्व- व + वढ् + ढ

सूत्र- ढो ढे लोपः ।

ढकार का लोप होता है, यदि ढकार परे हो - व + व + ढ

सूत्र- सहिवहोरोदवर्णस्य ।

सह् तथा वह् धातु के अकार को ओकार आदेश होता है, यदि ढकार का लोप हुआ हो-

व + वो + ढ-

अभ्यास के वकार को यज् धातु के समान सम्प्रसारण उकार-   उवोढ ।

आत्मनेपद में- ऊहे ऊहाते ऊहिरे । लुट् – वोढा वोढारौ वोढारः । लृट् - वक्ष्यति वक्ष्यते । लोट्- वहतु वहताम् । लङ्- अवहत् अवहत । लिङ्- वहेत् वहेत । आशीर्लिङ् - उह्यात् वक्षीष्ट । लुङ्- अवाक्षीत् अवोढ । लृङ्- अवक्ष्यत् अवक्ष्यत ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न-4**

ङ. यज् धातु का प्रयोग किन अर्थों का बोध कराने के लिए होता है ?

च. यज् + अतुस् यहाँ यकार के स्थान पर क्या कार्य होता है ?

छ. वचिस्वपियजादीनां किति इस सूत्र का कार्य तथा उदाहरण लिखो ।

ज. उवोढ यहाँ धातु-लकार-पुरुष-वचन लिखो ।

17.7.सारांश

हम यह पहले भू धातु की प्रक्रिया में जान चुके हैं कि किसी भी तिङन्त शब्द की सिद्धि में किन आधारभूत नियमों का प्रयोग होता है । जैसे विभिन्न लकारों का प्रयोग, आत्मनेपद-परस्मैपद प्रयोग, पुरुष विधान, सार्वधातुक-आर्धधातुक कार्य आदि । इसके बाद आत्मनेपदी धातुओं की प्रक्रिया में एध् धातु द्रष्टव्य है । इसी क्रम में हम आत्मनेपदी कम् धातु में णिङ् प्रत्यय का परिचय प्राप्त करते हैं । उभयपदी धातुओं में वह्, यज् आदि धातुओं में विशेष रूप से सम्प्रसारण कार्य ज्ञातव्य है ।

17.8.कठिन शब्दावली

अनुदात्तेत् धातु- जिन में अनुदात्त स्वर की इत् सञ्ज्ञा होती है वे अनुदात्तेत् धातु होती हैं । जैसे- एध्, वृत् आदि ।

स्वरितेत्- जिन में स्वरित स्वर की इत् सञ्ज्ञा होती है उन्हे स्वरितेत् कहते हैं । जैसे- भज्, यज् आदि ।

सन्वद्भाव- सन् प्रत्यय के समान व्यवहार करना । जैसे – अचीकमत- अ च कम् अ त यहाँ सन् प्रत्यय नहीं हुआ है । फिर भी हम अभ्यास- च में सन् के समान व्यवहार करते हैं जिससे अभ्यास के अकार को इकार आदेश होता है ।

17.9.स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

ञ. लट्, लिट्, लुट्, लृट् तथा लोट् ।

ट. वृद्धि ।

ठ. कृ धातु ।

ड. आट् आगम ।

स्वयं आकलन प्रश्न- 2

क. णिङ् प्रत्यय

ख. चङ्

ग. सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे

घ. अभ्यास में इकार आदेश होता है यदि सन् प्रत्यय परे हो ।

स्वयं आकलन प्रश्न-3

क. सम्प्रसारण

ख. आत्मनेपद

ग. रिङ्

घ. अभार्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्षुः

स्वयं आकलन प्रश्न-4

ङ. देव-पूजा, सङ्गतिकरण तथा दान ।

च. सम्प्रसारण इकार ।

छ. सम्प्रसारण- ईजतुः

ज. लिट्-मध्यम पुरुष- ए.व.

17.10. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

17.11. अभ्यासात्मक-प्रश्न

ज. इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः सूत्र की व्याख्या करो ।

झ. एधाञ्चक्रे, कामयते, दिद्युते, ईजतुः- रूप सिद्धि करो ।

ञ. सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

इकाई-18
अदादि-गण

संरचना

18.1. पाठ का परिचय

18.2. पाठ का उद्देश्य

18.3. अद् धातु

- 18.3.1. शप् लुक्
- 18.3.2. घस्लृ आदेश
- 18.3.3. धि आदेश
- 18.3.4. अट् आगम
- 18.3.5. लुङ् लकार

- स्वयं आकलन प्रश्न-1

18.4. हन् धातु

- 18.4.1. अनुनासिक लोप
- 18.4.2. लिट् लकार
- 18.4.3. लोट् लकार
- 18.4.4. वध आदेश

- स्वयं आकलन प्रश्न-2

18.5. यु तथा विद् धातु

- 18.5.1. उकार को वृद्धि
- 18.5.2. णलादि आदेश (विद्)
- 18.5.3. आम् प्रत्यय
- 18.5.4. लोट् लकार
- 18.5.5. लिङ् लकार

- स्वयं आकलन प्रश्न-3

18.6. अस् तथा इण् धातु

- 18.6.1. अकार लोप
- 18.6.2. अस् को भू आदेश
- 18.6.3. लोट् लकार

18.6.4. इण् को यण् आदेश
18.6.5. इयङ् आदेश
18.6.6. गा आदेश
- स्वयं आकलन प्रश्न-4
18.7. शीङ्, इङ् तथा दुह् धातु
18.7.1. गुण कार्य
18.7.2. रुट् आगम
18.7.3. गाङ् आदेश
18.7.4. क्स आदेश (दुह्)
- स्वयं आकलन प्रश्न-5
18.8. ब्रू धातु
18.8.1. आह् आदेश
18.8.2. ईट् आगम
18.8.3. वच् आदेश
18.8.4. उम् आगम
- स्वयं-आकलन प्रश्न-7
18.9. सारांश
18.10. कठिन शब्दावली
18.11. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर
18.12. सहायक ग्रन्थ
18.13. अभ्यासात्मक प्रश्न

18.1. पाठ का परिचय-

पिछले पाठों में हमनें भ्वादि गण की भू, एध् आदि धातुओं के विषय में जाना। इस पाठ में हम अदादि गण की धातुओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे । हम यह तो जान चुके हैं कि धातुओं को दस गणों में विभक्त करने का कारण उनसे होने वाला शप् आदि विकरण प्रत्यय है । जैसे भू आदि धातुओं से सार्वधातुक लकारों में शप् प्रत्यय होता है, उसी प्रकार इस गण की धातुओं से भी शप् प्रत्यय होता है जिसका का लुक्(लोप) हो जाता है । यही इस पाठ का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है ।

18.2. पाठ का उद्देश्य

- अदादि गण की धातुओं का परिचय
- अदादि गण में शप् के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले लुक्
- इस गण में परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं की प्रक्रिया का बोध

18.3. अद् धातु

इस प्रकरण में हम अद् आदि धातुएं पढेंगे । यहाँ आने वाली सभी धातुओं में शप् प्रत्यय से सम्बन्धित समान कार्य होता है । अतः इस आधार पर अदादि प्रकरण की प्रकल्पना की गई है । शप् प्रत्यय से सम्वन्धित प्रक्रिया को जानने के लिए हमें अग्रिम सूत्र को समझना चाहिए ।

- **अद् धातु-** अद् भक्षणे ।

18.3.1. शप् लुक्

अत्ति- अद् + लट् - अद् + तिप्- सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप्- अद् + अ (शप्) + ति-

सूत्र- अदिप्रभृतिभ्यः शपः ।

अद् आदि धातुओं से विहित शप् प्रत्यय का लुक् होता है-

अद् + ति- चर् सन्धि से दकार को तकार-

अत्ति ।

अत्तः अदन्ति अत्सि अत्थः अत्थ अद्मि अद्वः अद्मः ।

इस प्रकार इस प्रकरण की सभी धातुओं में शप् प्रत्यय का लुक् होगा ।

18.3.2. घस्लृ आदेश

लिट् लकार में णल्, द्वित्व तथा अभ्यास कार्य पूर्ववत् होते हैं । अतः- आद आदतुः आदुः

अद् + सिप् - अद् + थल् - अद् अद् + थ- इट् आगम प्राप्त-

इट् का निषेध प्राप्त- एकाच उपदेशेनुदात्तात्

सूत्र- इडत्यर्तिव्ययतीनाम् ।

अद्, ऋ तथा व्येञ् धातुओं से परे थल् को नित्य इट् आगम होता है- अ + अद् + इ + थ-

अभ्यास के अकार को दीर्घ- अत आदेः- आ + अद् + इ + थ- आदिथ । आदथुः आद आद आदिव आदिम ।

यहाँ लिट् लकार में दूसरे पक्ष में भिन्न प्रक्रिया होती है –

जघास- अद् + लिट्-

सूत्र- लिट्यन्यतरस्याम् ।

लिट् लकार में अद् धातु को विकल्प से घस्लृ आदेश होता है-

घस्लृ + लिट्- घस् + लिट्- घस् + तिप्- घस् + अ (णल्)-

घस् + घस् + अ- घ + घस् + अ- झ + घस् + अ- ज + घस् + अ-

ज + घास् + अ- जघास ।

जक्षतुः- ज + घस् + अतुस्- यहाँ पर जक्षतुः इस रूप में हमें क्ष् प्राप्त हो रहा है, जिसमें क् ष् वर्ण हैं । ज + घस् + अतुस् इस स्थिति में हमारे पास घ् अ स् वर्ण हैं । हमें यहाँ अकार को हटाना है तथा घ एवं स को क्रमशः क एवं ष आदेश करना है-

ज + घस् + अतुस्- घस् की उपधा अकार का लोप- गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि- ज + घ् स् + अतुस्- चर् सन्धि से घ को क- खरि च-

ज + क् स् + अतुस्

सूत्र- शासिवसीघसीनां च ।

इण् तथा कवर्ग से परे शास्, वस् तथा घस् धातुओं के सकार को षकार होता है –

ज + क् ष् + अतुस्- जक्षतुः । जक्षुः जघसिथ जक्षथुः जक्ष जघास- जघस जक्षिव जक्षिम ।

लुट् - अत्ता अत्तारौ अत्तारः । लृट्- अत्स्यति । लोट्- अत्तु अत्ताम् अदन्तु ।

- **रूप सिद्धि- जक्षतुः**

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से अद् की धातु सञ्ज्ञा हुई	

परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	अद् + लिट् अद् + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	अद् + तस्
लिट्यन्यतरस्याम्	इस सूत्र से अद् धातु के स्थान पर घस्लृ आदेश हुआ	घस्लृ+ तस् घस् + ति
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ	घस् + अतुस्
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से घस् भाग को द्वित्व हुआ	घस् घस् + अतुस्
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- घस् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास घस् के सकार का लोप हुआ	घ + घस् + अतुस्
अभ्यासे चर्च	इस सूत्र से अभ्यास में घकार के स्थान पर गकार हुआ	ग + घस् + अतुस्
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास के ग को ज आदेश हुआ	ज + घस् + अतुस्
गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि	इस सूत्र से घस् की उपधा के अकार का लोप हुआ	ज + घ् स्+ अतुस्
खरि च	इस सूत्र से घकार को ककार आदेश हुआ	ज + क् स् + अतुस्
शासिवसिघसीनां च	इस सूत्र से सकार को षकार आदेश हुआ	ज + क् ष्+ अतुस् ज + क्ष् + अतुस् **जक्षतुः**

18.3.3. धि आदेश

अद्धि- अद् + लोट्- अद् + अ (शप्) सिप्- अद् + सि-   अद् + हि –

सूत्र- हुझल्भ्यो हेर्धिः ।

हु धातु तथा झल्-वर्णान्त धातु से परे हि को धि आदेश होता है-

अद् + धि- अद्धि । अत्तम् अत्त अदानि अदाव अदाम ।

- **रूप सिद्धि- अद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से अद् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	अद् + लोट् अद् + ल्
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय का विधान हुआ	अद् + सिप्
	अनुबन्ध लोपः	अद् + सि
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	सिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	अद् + शप् + सि
	अनुबन्ध लोपः	अद् + अ + सि
अदिप्रभृतिभ्यः शपः	इस सूत्र से शप् का लुक् हुआ	अद् + सि
सेर्ह्यपिच्च	इस सूत्र से सि के स्थान पर हि आदेश हुआ	अद् + हि
हुझल्भ्यो हेर्धिः	इस सूत्र से हि को धि आदेश हुआ	अद् + धि **अद्धि**

18.3.4. अट् आगम

आदत्- अद् + लङ्- अद् + अ (शप्) तिप्-   शप्-लुक्- अद् + ति-   आट् आगम- आ अद् + त्-

सूत्र- अदः सर्वेषाम् ।

अद् धातु से परे अपृक्त सार्वधातुक प्रत्यय को अट् आगम होता है-

आ अद् + अ (अट्) + त् (अपृक्त प्रत्यय)-

आट् एवं अ को वृद्धि- आद् अ + त्- आदत् । आत्ताम् आदन् आदः आत्तम् आत्त आदम् आद्व आद्म

लिङ्- अद्यात् अद्याताम् अद्युः । आशीर्लिङ्- अद्यात् अद्यास्ताम् अद्यासुः ।

18.3.5. लुङ् लकार

अघसत्- अद् + लुङ्-

सूत्र- लुङ्सनोर्घस्लृ ।

लुङ् लकार या सन् प्रत्यय परे हो तब अद् को घस्लृ आदेश होता है-

घस्लृ + लुङ्- घस् + ल्- घस् + तिप्- अ + घस् + त्-

अ + घस् + च्लि + त् - च्लि को सिच् प्राप्त-

लृ की इत् सञ्ज्ञा होने से च्लि को अङ् आदेश- पुषादिद्युतादिलृदितः परस्मैपदेषु-

अ + घस् + चङ्+ त्- अ + घस् + अ + त्- अघसत् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-1**
  - क. अदादि धातुओं में शप् प्रत्यय का लुक् किस सूत्र से होता है ?
  - ख. लिट् लकार में अद् धातु के स्थान पर क्या आदेश होता है ?
  - ग. अद् + हि यहाँ हि के स्थान पर क्या आदेश होता है ?
  - घ. लुङ्सनोर्घस्लृ इस सूत्र का उदाहरण लिखो ।

18.4. हन् धातु- हन् हिंसागत्योः ।

लट् लकार- हन्ति ।

हन् + तस्- हन् + अ (शप्) + तस्- शप्-लुक्- हन् + तस्-

18.4.1. अनुनासिक लोप

सूत्र- अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ।

वन् आदि तथा तन् आदि धातुएं यदि उपदेश अवस्था में अनुदात्त हैं, तब उनके अनुनासिक वर्ण का लोप होता है, यदि झलादि कित् या ङित् प्रत्यय परे हो -

हन् + तस्-   तस् प्रत्यय झलादि है तथा अपित् होने से कित् है अतः अनुनासिक नकार का लोप-
हतस्- हतः ।
हन् + झि- हन् + अन्ति- उपधा अकार का लोप- गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि -
ह् न् + अन्ति
नकार परे होने से हकार को कवर्ग घकार- हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु-

घ् न् + अन्ति- घ्नन्ति । हंसि हथः हथ हन्मि हन्वः हन्मः ।

18.4.2. लिट् लकार

हन् + लिट्- हन् + तिप् - हन् + (णल्)-   हन् हन् + अ -   ह हन् + अ-
झ हन् + अ- ज हन् + अ
णित् प्रत्यय परे होने से हकार को कवर्ग घकार- हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु-
ज घन् + अ-   उपधा अकार को वृद्धि-
जघान ।
ज + हन् + अतुस्-   हन् की उपधा अकार का लोप-
ज + ह् न् + अतुस्
नकार परे होने से पूर्ववत् हकार को घकार-
ज + घ् न् + अतुस्- जघ्नतुः । जघ्नुः
ज + हन् + थल् (सिप्)- भारद्वाज नियम से विकल्प से इट् आगम-
ज + हन् + इ + थ -
इस स्थिति में किसी सूत्र से कवर्ग आदेश प्राप्त नहीं है-

सूत्र- अभ्यासाच्च ।
अभ्यास से परे हन् धातु के हकार को कवर्ग होता है- ज + घन् + इ थ- जघनिथ ।
इट् न होने पर- जघन्थ । जघ्नथुः जघन जघान-जघन जघनिव जघनिम ।
लुट् - हन्ता हन्तारौ हन्तारः । लृट्- हनिष्यति । लोट्- हन्तु हताम् घ्नन्तु ।

18.4.3. लोट् लकार

जहि- हन् + लोट् - हन् + सिप्-   हन् + अ (शप्) + सिप्- शप्-लुक्- हन् + सि-
हन् + हि-

सूत्र- हन्तेर्जः ।

लोट् लकार में हि परे होने पर हन् धातु को ज आदेश होता है- ज + हि- जहि

यहाँ अकार के बाद हि आने से हि का लुक् प्राप्त- अतो हेः, जैसे हम भव इस रूप में पढ चुके हैं ।

सूत्र- असिद्धवदत्राभात् ।

इस सूत्र से आगे पाद की समाप्ति तक होने वाले कार्य आभीय कहे जाते हैं । यदि एक ही स्थान पर दो आभीय कार्य प्राप्त हों, तब एक की दृष्टि में दूसरा कार्य असिद्ध होता है ।

जहि- यहाँ एक स्थान पर हन् को ज आदेश - हन्तेर्जः

वहीं पर अकारान्त ज को मानकर हि का लुक् प्राप्त- अतो हेः

अतः अतो हेः की दृष्टि में हन्तेर्जः असिद्ध हुआ, जिससे अकारान्त ज प्राप्त नहीं होता है तथा हि का लुक् नहीं होता है ।

रूप सिद्धि

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से हन् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	हन् + लोट् हन् + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय का विधान हुआ	हन् + सिप्
	अनुबन्ध लोपः	हन् + सि
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	सिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने पर शप् प्रत्यय हुआ	हन् + शप् + सि
	अनुबन्ध लोपः	हन् + अ + सि
अदिप्रभृतिभ्यः शपः	इस सूत्र से शप् का लुक् हुआ	हन् + सि
सेर्ह्यपिच्च	इस सूत्र से सि के स्थान पर हि आदेश हुआ	हन् + हि
हन्तेर्जः	इस सूत्र से हन् को ज आदेश हुआ	ज + हि

अतो हेः	इस सूत्र से हि का लुक् प्राप्त हुआ	
असिद्धवदत्राभात्	इस सूत्र से हन् के स्थान पर हुआ ज आदेश असिद्ध हुआ अतः हि का लुक् नहीं हुआ	**जहि**

लङ्- अहन् अहताम् अघ्नन् । लिङ्- हन्यात् हन्याताम् हन्युः ।

18.4.4. वध आदेश

आशीर्लिङ्

हन् + लिङ्- हन् + तिप्- आर्धधातुक सञ्ज्ञा- लिङाशिषि

सूत्र- हनो वध लिङि ।

आर्धधातुक लिङ् लकार में हन् को वध आदेश होता है- हन् + तिप्- वध + ति-

अकार को लोप- अतो लोपः- वध् + ति

वध् + या(यासुट्)+ त्- वध्यात् । वध्यास्ताम् वध्यासुः ।

लुङ् लकार-

हन् + लुङ् - हन् + तिप्

सूत्र- लुङि च ।

लुङ् लकार में भी हन् को वध आदेश होता है- वध + ति- अकार का लोप-

वध् + त्- अ + वध् + च्लि+ त्-

अ + वध् + स् (सिच्) + त्-

अ + वध् + इ + स् + ई (ईट्) + त्- सिच् का लोप- इट ईटि-

अवधीत् । अवधिष्टाम् अवधिषुः ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-2**

क. हन् धातु के स्थान पर वध आदेश किन लकारों में होता है ?

ख. हन् + तस् यहाँ क्या कार्य होगा ?

ग. अभ्यासाच्च इस सूत्र कार्य तथा उदाहरण लिखो ।

घ. हन् + हि यहाँ हन् के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

ङ. अवधीत् – धातु-लकार-पुरुष-वचन लिखो ।

18.5. यु तथा विद् धातु-

यु मिश्रणामिश्रणयोः ।

18.5.1. उकार को वृद्धि कार्य

यौति- यु + लट् - यु + तिप्- यु + अ (शप्) + ति- शप् का लुक्- यु + ति

सूत्र- उतो वृद्धिर्लुकि हलि ।

लुक् होने पर उकार को वृद्धि होती है, यदि पित् हलादि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो-

यु+ ति- शप् का लुक् होने पर तथा पित् हलादि सार्वधातुक प्रत्यय तिप् परे होने पर उकार को वृद्धि औकार- यौति ।

पित् प्रत्यय न होने से - युतः युवन्ति । यौषि युथः युथः युथ यौमि युवः युमः ।

लिट् – युयाव । लुट्- यविता । लृट्- यविष्यति । लोट्- यौतु । लङ्- अयौत् । लिङ्- युयात् । आशीर्लिङ्- यूयात् । लुङ्- अयौषीत् ।

18.5.2. णलादि आदेश

विद् धातु- विद ज्ञाने ।

वेत्ति वित्तः विदन्ति इस प्रकार सामान्य प्रक्रिया होती है । तथापि दूसरे पक्ष में-

वेद- विद् + लट्- विद् + तिप्

सूत्र- विदो लटो वा ।

विद् धातु से परे लट् लकार के परस्मैपद तिप् आदि प्रत्ययों के स्थान पर णल् आदि आदेश विकल्प से होते हैं-

विद् + अ (णल्)- विद् + अ (शप्) + अ- शप् का लुक्-

विद् + अ- लघु उपधा इकार को गुण-

वेद । विदतुः विदुः । वेत्थ विदथुः विद वेद विद्वः विद्मः ।

18.5.3. आम् प्रत्यय

लिट् लकार में पूर्ववत् द्वित्व तथा अभ्यास कार्य से- विवेद विविदतुः विविदुः । दूसरे पक्ष में-

विदाञ्चकार- विद् + लिट्-

सूत्र- उषविदजागृभ्योन्यतरस्याम् ।

उष्, विद् तथा जागृ धातुओं से परे लिट् लकार में विकल्प से आम् प्रत्यय होता है-

विद् आम + लिट्- अकार लोप- विदाम् + लिट्

तत्पश्चात् पूर्ववत् गोपायाञ्चकार के समान प्रक्रिया- लिट् का लुक्- विदाम्

कृधातु का अनुप्रयोग- विदाम् + कृ + लिट्

विदाम् + कृ + तिप्- विदाम् + कृ + अ (णल्)- विदाम् + कृ कृ+ अ-

विदाम् + कर् कृ + अ- विदाम् + क कृ + अ-

विदाम् + च कृ + अ- विदाम् + च कार् + अ- विदां + चकार- विदाञ्चकार । विदाञ्चक्रतुः विदाञ्चक्रुः ।

18.5.4. **लोट् लकार**

विदाङ्करोतु- विद् + लोट्- यह रूप विदाञ्चकार के समान दिखाई दे रहा है । अतः-

सूत्र- विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ।

विद् धातु से लोट् लकार में निपातन से चार कार्य होते हैं- आम् प्रत्यय, गुण का निषेध, लोट् का लुक्, कृ+ लोट् का अनुप्रयोग ।

निपातन का अर्थ यह है कि जब सूत्र में इष्ट रूप बता दिया जाए, तब हम उस रूप के अनुसार कार्यों का अनुमान करते हैं । जैसे इस सूत्र में विदाङ्कुर्वन्तु यह रूप बताया गया है । अतः हम पूर्वोक्त चार कार्यों का अनुमान करते हैं ।

विद् + लोट्- आम प्रत्यय तथा गुण का निषेध-

विद् + आम् + लोट्- लोट् का लुक्-

विदाम्

कृ धातु का अनुप्रयोग- विदाम् + कृ + लोट्- विदाम् + कृ + तिप्-

तिप् की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्राप्त-

सूत्र- तनादिकृञ्भ्य उः ।

तन् आदि तथा कृ धातु से उ प्रत्यय होता है, यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो-

विदाम् + कृ + उ + ति-

ऋकार को अर् तथा उकार को ओकार गुण- सार्वधातुकार्धधातुकयोः-

विदाम् + कर् + ओ + ति

लोट् लकार होने से ति के इकार को उकार- एरुः - विदाम् + कर् + ओ + तु
पूर्ववत् मकार को अनुस्वार तथा अनुस्वार को परसवर्ण ङकार- विदाङ्करोतु ।

➢ **रूप सिद्धि- विदाङ्करोतु**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से विद् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लोट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	विद्+ लोट् विद् + ल्
विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्	इस सूत्र से निपातन से विद् धातु से आम् प्रत्यय हुआ	विद् + आम् + ल्
पुगन्तलघूपधस्य च	इस सूत्र से विद् के इकार को गुण प्राप्त हुआ	
विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्	इस सूत्र से निपातन से गुण का निषेध हुआ	
विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्	इस सूत्र से निपातन से लोट् का लुक् हुआ	विदाम्
विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्	इस सूत्र से निपातन से लोट् लकार के साथ कृ धातु का अनुप्रयोग हुआ	विदाम् + कृ + लिट् विदाम् + कृ + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	विदाम् + कृ + तिप्
तनादिकृञ्भ्य उः	इस सूत्र से कृ धातु से उ प्रत्यय हुआ	विदाम् + कृ +उ + ति
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से कृ के ऋकार को गुण आदेश हुआ	
उरण् रपरः	इस सूत्र से रपरत्व हुआ	विदाम्+ कर्+ उ + ति
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से उकार को गुण ओकार आदेश हुआ	विदाम्+ कर्+ ओ+ ति
एरुः	इस सूत्र से ति के इकार को उकार आदेश हुआ	विदाम्+ कर्+ ओ+ तु

मोऽनुस्वारः	इस सूत्र से मकार को अनुस्वार हुआ	विदां+ कर्+ ओ + तु
वा पदान्तस्य	इस सूत्र से अनुस्वार को परसवर्ण ङकार हुआ	**विदाङ्करोतु**

विदाङ्कुरुताम् - विदाम् + कृ+ उ + तस्- उकार को मानकर ऋकार को गुण अर्-
विदाम् + कर् + उ + तस्

सूत्र- अत उत् सार्वधातुके ।

जहाँ कृ धातु से उ प्रत्यय हुआ हो, वहाँ कृ के अकार को उकार होता है, यदि कित् या ङित् सार्वधातुक प्रत्यय परे हो ।

विदाम् + कर् + उ + तस्- कित् तथा सार्वधातुक प्रत्यय तस् होने से अकार को उकार-
विदाङ्कुरुताम् । विदाङ्कुर्वन्तु विदाङ्कुरु
विदाङ्कुरुतम् विदाङ्कुरुत विदाङ्करवाणि विदाङ्करवाव विदाङ्करवाम ।
लङ्- अवेत् अवित्ताम् अविदुः । लिङ्- विद्यात् विद्याताम् विद्युः । आशीर्लिङ्- विद्यात् विद्यास्ताम् विद्यासुः ।
लुङ्- अवेदीत् ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-3**

क. उतो वृद्धिर्लुकि हलि इस सूत्र से किन प्रत्ययों में वृद्धि होती है ?
ख. विद् धातु का अर्थ लिखो ।
ग. विदाञ्चकार यहाँ आम् प्रत्यय किस सूत्र से होता है ?
घ. विदाञ्करोतु यहाँ कौन से कार्य निपातन से होते हैं ?

18.6. अस् तथा इण् धातु

अस भुवि ।

18.6.1. अकार-लोप

लट् लकार- अस्ति ।

स्तः- अस् + लट्- अस् + तस्- अस् + अ(शप्) + तस्- शप्-लुक्- अस् + तस्-

सूत्र- श्नसोरल्लोपः ।

श्ना प्रत्यय तथा अस् धातु के अकार का लोप होता है, यदि कित्- ङित् सार्वधातुर प्रत्यय परे हो ।

अस् + तस् - अपित् तस् प्रत्यय के कित् तथा सार्वधातुक होने से अस् के अकार का लोप- स्तस्- स्तः । सन्ति असि स्थः स्थ अस्मि स्वः स्मः ।

18.6.2. अस् को भू आदेश

अस् + लिट्- लिट् की आर्धधातुक सञ्ज्ञा- लिट् च

सूत्र- अस्तेर्भूः ।

अस् धातु को भू आदेश होता है, यदि आर्धधातुक प्रत्यय परे हो- भू + लिट्- पूर्ववत् बभूव ।
इस सूत्र से यह स्पष्ट होता है कि आर्धधातुक लकारों में अस् धातु के रूप भू धातु के समान होंगे ।
जैसे- लिट्- बभूव, लुट्- भविता, लृट्- भविष्यति, आशीर्लिङ्- भूयात्, लुङ्- अभूत्, लृङ्- अभविष्यत् ।

18.6.3. लोट् लकार

अस्तु स्ताम् सन्तु ।

एधि- अस् + लोट्- अस् + सिप्- अस् + अ(शप्) + सि- शप्-लुक्- अस् + सि-
अस् + हि

सूत्र- घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ।

घु-सञ्ज्ञक तथा अस् धातु को एकार आदेश तथा अभ्यास का लोप होता है, यदि हि परे हो ।
अस् + हि- हि परे होने पर अस् के सकार को एकार आदेश - अ ए + हि-
कित् प्रत्यय हि के परे होने से अकार का लोप- श्नसोरल्लोपः- ए + हि
यहाँ स्थानी सकार को मानकर हि को धि आदेश- हुझल्भ्यो हेर्धिः- ए + धि- एधि ।

रूप सिद्धि- एधि

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से अस् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थों में लोट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	अस्+ लोट् अस् + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय का विधान हुआ	अस् + सिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से सिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	

कर्तरि शप्	इस सूत्र से अस् धातु से परे शप् प्रत्यय हुआ	अस् + अ (शप्) + सि
अदिप्रभृतिभ्यः शपः	इस सूत्र से शप् का लुक् हुआ	अस् + सि
सेर्ह्यपिच्च	इस सूत्र से सि के स्थान पर हि आदेश हुआ	अस्+ हि
घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च	इस सूत्र से अस् के सकार को एकार हुआ	अ ए + हि
श्नसोरल्लोपः	इस सूत्र से अकार का लोप हुआ	ए + हि
हुझल्भ्यो हेर्धिः	इस सूत्र से हि के स्थान पर धि आदेश हुआ	**एधि**

लङ् लकार

अस् + लङ्- अस् + तिप्- अस् + अ(शप्) + ति- शप्-लुक्- (आट्)आ +अस् + त्- अपृक्त तकार परे होने से ईट् आगम- अस्तिसिचोऽपृक्ते- आ + अस् + ई + त्- आसीत् ।

18.6.4. इण् को यण् आदेश

इण् धातु

इण् गतौ ।

लट् लकार- एति इतः

यन्ति- इण् + लट्- इ + झि- इ + शप् + झि- शप्-लुक्- इ + झि- इ + अन्ति-

इकार को यण् प्राप्त- इको यणचि

यण् को बाध कर इकार को इयङ् आदेश प्राप्त- अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ

सूत्र- इणो यण् ।

इण् धातु को यण् होता है, यदि प्रत्यय के आदि में अच् हो- इ + अन्ति- य्+ अन्ति- यन्ति ।

18.6.5. इयङ् आदेश

लिट् लकार- इण् + लिट् - इ + तिप्- इ + अ (णल्)- इ इ + अ- इ ऐ + अ- इ आय् + अ

सूत्र- अभ्यासस्यासवर्णे ।

अभ्यास में इकार तथा उकार को क्रमशः इयङ् तथा उवङ् आदेश होते हैं, यदि असवर्ण अच् परे हो ।

इ आय् + अ- असवर्ण अच् आ परे होने से इकार को इयङ् आदेश-

इयङ् + आय् + अ- इय् + आ + अ- इयाय ।

ईयतुः- इ + इ + अतुस् (तस्)-

सूत्र- दीर्घ इणः किति ।

इण् धातु के अभ्यास को दीर्घ होता है, यदि कित् प्रत्यय परे हो ।

इ + इ + अतुस् - यहाँ अपित् अतुस् कित् है, अतः अभ्यास इकार को दीर्घ-

ई + इ +अतुस्-   इकार को यण् -

ईयतुः । ईयुः ।

लुट्- एता । लृट्- एष्यति । लोट्- एतु । लङ्- ऐत् । लिङ्- इयात् ।

18.6.6. इण् को गा आदेश

अगात्- इ + लुङ्-   इ + तिप्-

सूत्र- इणो गा लुङि ।

इण् धातु को लुङ् लकार में गा आदेश होता है - गा + तिप्-   अ + गा + त्-

अ + गा + च्लि + त्-   अ +गा + स् (सिच्) + त्

सिच् का लुक्- गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु-   अगात् । अगाताम् अगुः ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-4**

क. अस् धातु का अर्थ लिखो ।

ख. स्तः यहाँ अकार का लोप किस सूत्र से होता है ?

ग. अस् धातु के स्थान पर आर्धधातुक लकारों में क्या आदेश होता है?

घ. अस् धातु का लोट्-मध्यम पुरुष ए.व. लिखो ।

ङ. इ (इण्) + अन्ति यहाँ क्या कार्य होगा ?

च. इण् धातु के स्थान पर लुङ् लकार में क्या आदेश होगा ?

18.7. शीङ्, इङ् तथा दुह् धातु

शीङ् स्वप्ने ।

यहाँ ङकार की इत् सञ्ज्ञा होने से आत्मनेपद होता है ।

18.7.1. गुण कार्य

शेते - शीङ् + लट्-   शी + त-   शी + शप् + त- शप्-लुक्-

शी+ त

सूत्र- शीङः सार्वधातुके गुणः ।

शीङ् धातु को सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर गुण होता है - शे + त- शेते । शयाते ।

18.7.2. **रुट् आगम**

शेरते- शीङ् + लट्- शी + झ- शी + शप् + झ- शप्-लुक्- शी+ झ- पूर्ववत् गुण-

शे + झ

झ को अत् आदेश- आत्मनेपदेष्वनतः- शे + अत

सूत्र- शीङो रुट् ।

शीङ् धातु से परे झ को हुए अत् आदेश को रुट् आगम होता है- शे + र् (रुट्)+ अत-

टि को एकार- शे + र् +अते- शेरते ।

18.7.3. **इङ् को गाङ् आदेश**

इङ् धातु- इङ् अध्ययने ।

यह सर्वत्र अधि उपसर्ग पूर्वक प्रयुक्त होती है ।

लट्- अधि + इ + त- अधीते अधीयाते अधीयते ।

लिट् लकार

अधिजगे- अधि + इ + लिट्-

सूत्र- गाङ् लिटि ।

इङ् धातु को गाङ् आदेश होता है, यदि लिट् लकार परे हो- अधि गाङ् + लिट्-

अधि गा + त- अधि गा + एश्-

अधि गा गा + ए- अधि ग गा + ए- अधि ज गा + ए- आकार का लोप- आतो लोप इटि च- अधि ज ग् + ए- अधिजगे ।

अधिजगाते अधिजगिरे ।

रूप सिद्धि- अधिजगे

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से इङ् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में अधि उपसर्ग पूर्वक	अधि इङ् + लिट्

	इङ् धातु से लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	अधि इ + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	अधि इ + त
गाङ् लिटि	इस सूत्र से इङ् धातु के स्थान पर गाङ् आदेश हुआ	अधि गाङ्+ त अधि + गा + त
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से गा भाग को द्वित्व हुआ	अधि गा गा + त
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- गा की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
ह्रस्वः	इस सूत्र से अभ्यास गा के आकार को ह्रस्व हुआ	अधि+ग गा+ त
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास के ग को ज आदेश हुआ	अधि ज +गा + त
आतो लोप इटि च	इस सूत्र से गा के आकार का लोप हुआ	अधि ज + ग् + त
लिटस्तझयोरेशि-रेच्	इस सूत्र से त के स्थान पर एश् आदेश हुआ	अधि ज + ग् + ए **अधिजगे**

लुट्- अध्येता । लृट्- अध्येष्यते । लोट्- अधीताम् । लङ्- अध्यैत । लिङ्- अधियीत । आशीर्लिङ्- अध्येषीष्ट ।

लुङ् लकार-

अध्यगीष्ट- अधि + इ + लुङ्-

सूत्र- विभाषा लुङ्लृङोः ।

लुङ् तथा लृङ् लकार में विकल्प से इङ् को गाङ् आदेश होता है - अधि + गाङ् + लुङ्-

अधि +अ + गा + + त-

अधि + अ + गा + त- अधि + अ + गा + च्लि + त-

अधि + अ + गा + स् (सिच्) + त-

सूत्र- गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित् ।

गाङ् आदेश तथा कुटादि धातुओं से परे यदि ञित् – णित् प्रत्यय न हो , तब वह ङित् होता है ।

अधि + अ + गा + स् (सिच्) + त- यहाँ गाङ् से परे त प्रत्यय ञित् या णित् न होने से ङित् हुआ-

सूत्र- घुमास्थागापाजहातिसां हलि ।

घु-सञ्ज्ञक, मा, स्था, गा, पा तथा हा धातुओं के आकार को ईकार होता है, यदि हलादि कित् या ङित् आर्धधातुक प्रत्यय परे हो ।

अधि + अ + गा + स् (सिच्) + त- ङित् त प्रत्यय होने से गा के आकार को ईकार -

अधि + अ + गी + स् + त

सकार को षकार तथा ष्टुत्व सन्धि से तकार को टकार -

अधि + अ + गी + ष् + ट- यण् सन्धि-

अध्यगीष्ट ।

गाङ् आदेश न होने पर - अध्यैष्ट ।

लृङ्- गाङ् आदेश पूर्ववत्- अध्यगीष्यत ।

रूप सिद्धि- अध्यगीष्ट

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
लुङ्	इस सूत्र से भूत काल में अधि उपसर्ग पूर्वक इङ् धातु से लुङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	अधि इङ् + लुङ्+ अधि इ + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	अधि इ + त
विभाषा लुङ्लृङोः	इस सूत्र से इङ् धातु के स्थान पर विकल्प से गाङ् आदेश हुआ	अधि गाङ्+ त अधि + गा + त
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	इस सूत्र से गा से पूर्व में अट् आगम	अधि अट् + गा + त

	हुआ	अधि अ + गा + त
च्लि लुङि	इस सूत्र से गा से परे च्लि प्रत्यय हुआ	अधि अ + गा + च्लि+ त
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश हुआ	अधि अ + गा + सिच्+ त अधि अ + गा + स् + त
गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित्	इस सूत्र से त प्रत्यय ङित् हुआ	
घुमास्थागापाजहातिसां हलि	इस सूत्र से गा के आकार को ईकार आदेश हुआ	अधि अ + गी + स् + त
आदेशप्रत्यययोः	इस सूत्र से सकार को षकार आदेश हुआ	अधि अ + गी + ष् + त
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से तकार को टकार हुआ	अधि अ + गी + स् + ट
इको यणचि	इस सूत्र से अधि के इकार को यण् यकार हुआ	अध् य् अ + गी + स् + ट **अध्यगीष्ट**

दुह् धातु- दुह प्रपूरणे ।

यहाँ स्वरित अकार की इत् सञ्ज्ञा होने से उभयपद होगा ।

लट्- दुह् + तिप्- शप्-लुक्- गुण- दोह् + ति - हकार को घकार- दादेर्धातोर्घः- दोघ् + ति- तकार को धकार आदेश- धषस्तथोर्धोधः-

दोघ् + धि- जश्सन्धि- दोग् + धि- दोग्धि । दुग्धः दुहन्ति धोक्षि दुग्धः दुग्ध ।

आत्मनेपद में- दुग्धे दुहाते दुहते । लिट्- दुदोह दुदुहे । लुट्- दोग्धा । लृट्- धोक्ष्यति धोक्ष्यते । लोट् - दोग्धु दुग्धाम् । लङ्- अधोक् अदुग्ध । लिङ्- दुह्यात् दुहीत । आशीर्लिङ्- दुह्यात् धुक्षीष्ट

18.7.4. क्स आदेश

अधुक्षत्- दुह् + लुङ्- अ + दुह् + त् (तिप्)- च्लि को सिच् प्राप्त-

सूत्र- शल इगुपधादनिटः क्सः ।

धातु के अन्त में शल् वर्ण हो, उपधा में इक् वर्ण हो , तब अनिट् धातु से परे च्लि को क्स आदेश होता है ।

अ + दुह् + च्लि + त्-   उपधा में इक्- उकार तथा अन्त में शल्- हकार होने से च्लि को क्स आदेश-
अ + दुह् + क्स + त्
ह को घ तथा भष्भाव से ह द को ध- अ + धुघ् + स + त्-
चर् सन्धि से घ को क्, स को ष - अधुक्षत् ।
आत्मनेपद में भी समान क्स आदेश होगा- अ + दुह् + क्स + त-

सूत्र- लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ।
दुह्, दिह्, लिह्,गुह् धातुओं से परे क्स का विकल्प से लुक् होता है,यदि दन्त्य तङ् प्रत्यय परे हो ।
अ + दुह् + क्स + त- दन्त्य त प्रत्यय होने से क्स का विकल्प से लुक्-
अ + दुह् + त
पूर्ववत् ह को घ, भष्भाव से द को ध तथा त को ध-
अदुग्ध । क्स का लुक् न होने पर- अधुक्षत

- **स्वयं आकलन प्रश्न-5**
  क. अधि उपसर्ग पूर्वक इङ् धातु का क्या अर्थ है ?
  ख. अध्यगीष्ट धातु-रूप में धातु तथा लकार बताएं ।
  ग. शेरते धातु-रूप में क्या आगम होता है ?
  घ. दोग्धि धातु-रूप में धातु तथा लकार बताइए ।

18.8. **ब्रू धातु**- ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि ।
यहाँ ञकार की इत् सञ्ज्ञा होने से उभयपद होता है ।

18.8.1. **आह् आदेश**

लट् लकार में ब्रू धातु के दो प्रकार से प्रक्रिया होती है ।
आह- ब्रू + लट्- ब्रू + तिप्- ब्रू + अ (शप्) तिप्- शप्-लुक्- ब्रू + तिप्-
सूत्र- ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः ।
ब्रू धातु मे लट् लकार के आदि से पाँच तिप् आदि प्रत्ययों के स्थान पर णल् आदि आदेश होतै हैं तथा ब्रू को आह आदेश होता है ।
आह् + अ (णल्)- आह । आहतुः आहुः

ब्रू + सिप्- ब्रू + अ (शप्) सिप्- शप्-लुक्- ब्रू + सिप्- आह् + थल्-

सूत्र- आहस्थः ।

आह् के अन्त में थ आदेश होता है, यदि झल् वर्ण परे हो- आथ् + थ्- चर् सन्धि- आत् + थ- आत्थ । आहथुः ।

इसके बाद ब्रू के स्वाभाविक रूप होंगे-

18.8.2. **ईट् आगम**

ब्रवीति- ब्रू + लट्- ब्रू + तिप्- ब्रू + अ (शप्) तिप्- शप्-लुक्- ब्रू + तिप्

सूत्र- ब्रुव ईट् ।

ब्रू धातु से परे पित् प्रत्यय को ईट् आगम होता है, यदि हल् वर्ण आदि में हो-

ब्रू + ई + ति

ब्रो + ई + ति- अव् आदेश- ब्रवीति ।

पित् प्रत्यय न होने पर ईट् आगम नहीं होता है- ब्रूतः ब्रुवन्ति । ब्रवीषि ब्रूथः ब्रूथ ब्रवीमि ब्रूवः ब्रूमः ।

आत्मनेपद में- ब्रूते ब्रुवाते ब्रुवते । ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे । ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे ।

18.8.3. **वच् आदेश**

उवाच- ब्रू + लिट्- लिट् लकार की आर्धधातुक सञ्ज्ञा- लिट् च

सूत्र- ब्रुवो वचिः ।

ब्रू धातु को वच् आदेश होता है, यदि आर्धधातुक प्रत्यय परे हो-

वच् + लिट्- वच् + तिप्- वच् + अ (णल्)

वच् + वच् +अ- व + वच् + अ- अभ्यास व को सम्प्रसारण उकार- लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्- उ + वच् + अ

उपधा अकार को वृद्धि- त उपधायाः- उवाच ।

वच् + अतुस् (तस्)- कित् तस् प्रतयय होने से द्वित्व से पूर्व व को सम्प्रसारण- वचिस्वपियजादीनां किति- उच् + अतुस्- उच् + उच् + अतुस्-

उ + उच् + अतुस्- ऊचतुः । ऊचुः ।

थल् में विकल्प से भारद्वाज नियम से इट्- ऊचिथ- उवक्थ ।

आत्मनेपद में- ऊचे ऊचाते ऊचिरे ।

रूप सिद्धि- उवाच

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से ब्रू की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	ब्रू + लिट् ब्रू + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	ब्रू + तिप्
लिट् च	इस सूत्र से लिट् लकार की आर्धधातुक सञ्ज्ञा हुई	
ब्रुवो वचिः	इस सूत्र से ब्रू धातु के स्थान पर वच् आदेश हुआ	वच्+ तिप् वच् + ति
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसण ल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ	वच् + णल्
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से वच् भाग को द्वित्व हुआ	वच् वच् + अ
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- वच् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास वच् के चकार का लोप हुआ	व + वच् + अ
लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्	इस सूत्र से अभ्यास के वकार को सम्प्रसारण उकार हुआ	उ अ+ वच् + अ
सम्प्रसारणाच्च	इस सूत्र से उकार तथा अकार को पूर्वरूप उकार हुआ	उ + वच् + अ
अत उपधायाः	इस सूत्र से उपधा के अकार को वृद्धि आकार हुआ	**उवाच**

लुट्- वक्ता । लृट् - वक्ष्यति वक्ष्यते । लोट्- ब्रवीतु ब्रूताम् । लङ्- अब्रवीत् अब्रूत । लिङ्- ब्रूयात् ब्रवीत । आशीर्लिङ्- उच्यात् वक्षीष्ट ।

18.8.4. उम् आगम

अवोचत्- ब्रू + लुङ्- अ + वच् + त् (तिप्)- अ + वच् + च्लि + त्- च्लि को सिच् प्राप्त

सूत्र- अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ।

अस्, वच्, ख्या धातुओं से परे च्लि को अङ् आदेश होता है- अ + वच् + अ + त्

सूत्र- वच उम् ।

वच् धातु को उम् आगम होता है, यदि अङ् परे हो-

अ + व उम् च् + अ + त्-

अ + व उ च् + अ + त्- गुण सन्धि- अवोचत् ।

आत्मनेपद में- अवोचत ।

इस प्रकार अदादि धातुओं की प्रक्रिया को हमने देखा । यहाँ यह प्रमुख रूप से ध्यान देने योग्य है, कि इस प्रकरण की सभी धातुओं में शप् का लुक् होता है । इसके अतिरिक्त यहाँ एक गण सूत्र में यङ्लुगन्त धातु भी पढी गई है-

गण सूत्र- चर्करीतं च । चर्करीतम् यह शब्द कृ धातु से यङ् प्रत्यय तथा यङ् का लुक् करने पर उपपन्न होता है । इसे यहाँ बताने का यह प्रयोजन है कि यङ्लुक् जहाँ होता है, उन धातुओं से परे भी शप् प्रत्यय का लुक् होता है । यङ् प्रत्यय प्रक्रिया भाग में हम जानेंगे ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न- 6**
  - क. लट् लकार में ब्रू धातु के स्थान पर विकल्प से क्या आदेश होता है ?
  - ख. ब्रू धातु के स्थान पर वच् आदेश किन लकारों में होता है ?
  - ग. उवाच, अवोचत्- धातु तथा लकार बताइए ।

18.9. सारांश

तिङन्त प्रकरण के पहले भाग में हम सभी धातुओं की सामान्य प्रक्रिया को समझते हैं तथा शप् प्रत्यय के आधार पर विभक्त किए गए भ्वादि गण का अध्ययन करते हैं । इस पाठ में हम अदादि गणों की धातुओं की प्रक्रिया का अवलोकन करते हैं । शप् प्रत्यय सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर

होता है जिसका प्रमुख प्रयोजन तिङन्त पदों के मध्य भाग में अकार को उपस्थित कराना है । कुछ तिङन्तों में वह अकार प्राप्त नहीं होता । अतः ऐसी धातुओं से परे शप् प्रत्यय का लुक् होता है । ऐसी धातुओं को अदादि गण में रखा गया है । जैसे- अत्ति, हन्तिस वेत्ति आदि । यही इस अध्याय में हमने मुख्य रूप से पढा । इसके अतिरिक्त कुछ धातुओं में विशेष कार्यों को जाना । जैसे लिट् में अद् धातु के स्थान पर घस्लृ आदेश, आशीर्लिङ्-लुङ् लकारों में हन् के स्थान पर वध आदेश, आर्धधातुक लकारों में अस् के स्थान पर भू, ब्रू के स्थान पर वच् इत्यादि ।

18.10. कठिन शब्दावली

विकरण- प्रत्येक गण में सार्वधातुक लकारों में होने वाले शप्, श्यन्, श्नु आदि प्रत्ययों को विकरण कहा जाता है ।

लुक्- प्रत्यय के अदर्शन को लुक् कहते हैं । जैसे अदादि धातुओं में शप् का लुक् होता है ।

असिद्ध- जो कार्य होने के बाद भी अन्य सूत्र की दृष्टि में न हुआ माना जाए, उस कार्य को असिद्ध कहते हैं । जैसे जहि इस रूप में हन् धातु के स्थान पर हुआ ज आदेश अतो हेः इस सूत्र की दृष्टि में असिद्ध होता है ।

18.11. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. अदिप्रभृतिभ्यः शपः ।

ख. घस्लृ ।

ग. धि

घ. अघसत्

स्वयं आकलन प्रश्न-2

ङ. आशीर्लिङ् तथा लुङ् ।

च. अनुनासिक (नकार) लोप

छ. कुत्व- जघनिथ

ज. ज आदेश

झ. हन्-लुङ्-प्रथमपुरुष-ए.व.

स्वयं आकलन प्रश्न- 3

क. तिप् सिप् मिप्

ख. ज्ञान (जानना)

ग. उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्

घ. आम्, लोट् का लुक्, कृ धातु का अनुप्रयोग, गुण का निषेध

स्वयं आकलन प्रश्न- 4

क. सत्ता (होना)

ख. श्नसोरल्लोपः

ग. भू

घ. एधि

ङ. यण्

च. गा

स्वयं आकलन प्रश्न- 5

क. अध्ययन(पढना)।

ख. अधि उपसर्ग पूर्वक इङ् धातु तथा लुङ् लकार।

ग. रुट् आगम।

घ. दुह् धातु- लट्लकार।

स्वयं आकलन प्रश्न- 6

क. आह् आदेश।

ख. आर्धधातुक- लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ लुङ् तथा लृङ् लकार।

ग. उवाच- ब्रू धातु-लिट् लकार, अवोचत्- ब्रू धातु- लुङ् लकार।

18.12. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी।

18.13. अभ्यासात्मक प्रश्न

क. जक्षतुः, जहि, वेद- रूप सिद्ध करो।

ख. वध्यात्, एधि- रूप सिद्ध करो।

ग. अदिप्रभृतिभ्यः शपः, श्नसोरल्लोपः इन सूत्रों की उदाहरण सहित व्याख्या करो।

इकाई-19
जुहोत्यादि-दिवादि-स्वादि गण

संरचना

19.1. पाठ का परिचय
19.2. पाठ का उद्देश्य
19.3. जुहोत्यादि धातु
- 19.3.1. हु धातु
- 19.3.2. भी धातु
- 19.3.3. पॄ धातु
- 19.3.4. हा धातु
- 19.3.5. माङ् धातु
- 19.3.6. दा धातु
- 19.3.7. धा धातु
- स्वयं आकलन प्रश्न-1

19.4. दिवादि धातु
- 19.4.1. दिव् धातु
- 19.4.2. नृत् धातु
- 19.4.3. व्यध् धातु
- 19.4.4. नश् धातु
- 19.4.5. जन् धातु
- 19.4.6. सृज्
- स्वयं आकलन प्रश्न- 2

19.5. स्वादि धातु
- 19.5.1. षु धातु
- 19.5.2. चि धातु
- 19.5.3. स्तृ धातु

- स्वयं-आकलन प्रश्न- 3

19.6. सारांश

19.7. कठिन शब्दावली

19.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

19.9. सहायक ग्रन्थ

19.10. अभ्यासात्मक प्रश्न

19.1. पाठ का परिचय-

पिछले पाठ में हमनें अदादि गण की धातुओं के विषय में जाना। इस पाठ में हम जुहोत्यादि-दिवादि-स्वादि गण की धातुओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे। हम यह तो जान चुके हैं कि धातुओं को दस गणों में विभक्त करने का कारण उनसे होने वाला शप् आदि विकरण प्रत्यय है। जैसे भू आदि धातुओं से सार्वधातुक लकारों में शप् प्रत्यय होता है, उसी प्रकार अन्य गणों की धातुओं से भी शप् प्रत्यय की प्राप्ति रहती है। हमने देखा कि अदादिगण में शप् का लुक्(अदर्शन) होता है। उसी प्रकार जुहोत्यादिगण में शप् के स्थान पर श्लु (अदर्शन) होता है तथा धातु को द्वित्व होता है। दिवादि गण में शप् की प्राप्ति में श्यन् तथा स्वादिगण में श्नु प्रत्यय होगा। ये विषय इस अध्याय के प्रतिपाद्य हैं।

19.2. पाठ का उद्देश्य

- जुहोत्यादि गण की धातुओं का परिचय
- जुहोत्यादि गण में शप् के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले श्लु का ज्ञान
- दिवादि गण की धातुओं में प्रयुक्त होने वाले श्यन् विकरण का ज्ञान
- स्वादि गण की धातुओं में श्नु प्रत्यय का ज्ञान
- इन गणों में परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं की प्रक्रिया का बोध

19.3. जुहोत्यादि धातु

इस भाग में हम हु आदि धातुओं की प्रक्रिया का अवलोकन करेंगे। जैसे अदादि धातुओं में हम जान चुके हैं कि धातुओं में शप् का लुक् होता है, उसी प्रकार हु आदि धातुओं में भी शप् से सम्बन्धित कार्य होता है।

19.3.1. हु धातु- हु दानादनयोः।

- **लट् लकार**

जुहोति- हु + लट् - हु + तिप्- हु + शप् + ति-

सूत्र- जुहोत्यादिभ्यः श्लुः।

हु आदि धातुओं से परे शप् प्रत्यय को श्लु आदेश होता है। हम पढ चुके हैं कि श्लु का अर्थ प्रत्यय का अदर्शन होना है। अतः शप् का लोप होगा - हु + ति

सूत्र- श्लौ।

श्लु होने पर धातु को द्वित्व होता है- हु +हु + ति-

अभ्यास सञ्ज्ञा तथा पूर्ववत् अभ्यास कार्य- झु + हु + ति- जु + हु + ति-
गुण- जुहोति । जुहुतः ।
जु + हु + झि-

सूत्र- अदभ्यस्तात् ।
अभ्यस्त धातु से परे झ को अत् आदेश होता है- जु + हु + अति
उकार को यण् वकार आदेश- हुश्नुवोः सार्वधातुके- जुह्वति ।

जुहोषि जुहुथः जुहुथ जुहोमि जुहुवः जुहुमः ।

- **रूप सिद्धि- जुहोति**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से हु की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	हु+ लट् हु + ल्
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	हु + तिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से हु धातु से परे शप् प्रत्यय हुआ	हु + अ (शप्) + ति
जुहोत्यादिभ्यः श्लुः	इस सूत्र से शप् का श्लु (लोप) हुआ	हु + ति
श्लौ	इस सूत्र से हु को द्वित्व हुआ	हु हु + ति
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग हु की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
कुहोश्चुः	इस सूत्र से अभ्यास के हकार को चवर्ग झकार हुआ	झु हु + ति
अभ्यासे चर्च	इस सूत्र से अभ्यास के झकार को जश् जकार हुआ	जु हु + ति
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से हु के उकार को गुण आदेश ओकार हुआ	**जुहोति**

➢ **लिट् लकार**

लिट् लकार में द्वित्व तथा अभ्यास कार्य पूर्ववत् होने से- जुहाव जुह्वतुः जुह्वुः । यहाँ विकल्प से अन्य प्रक्रिया भी होती है- हु + लिट्-

सूत्र- भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ।

भी, ह्री, भृ, हु धातुओं से लिट् लकार में आम् प्रत्यय होता है तथा श्लु के समान कार्य होता है ।

हु + आम् + लिट्- श्लु के समान धातु को द्वित्व- हु हु + आम् + लिट्-

जु हु + आम् + लिट्- जु हो + आम् + लिट्

जु हव् आम् + लिट्- जुहवाम् + लिट्-

इसके बाद गोपायाञ्चकार के समान प्रक्रिया होती है- लिट् का लुक् तथा कृ धातु का अनुप्रयोग-

जुहवाम् + कृ + लिट्-

जुहवाम् + कृ + तिप्- जुहवाम् + कृ + अ (णल्)- जुहवाम् + कृ कृ+ अ-

जुहवाम् + कर् कृ + अ

जुहवाम् + क कृ + अ- जुहवाम् +च कृ + अ- जुहवाम् + च कार् + अ-

जुहवाम् + चकार- जुहवां + चकार-

जुहवाञ्चकार ।

लुट्- होता । लृट्- होष्यति । लोट्- जुहोतु । लङ्- अजुहोत् । लिङ्- जुहुयात् । आशीर्लिङ्- हूयात् । लुङ्- अहौषीत् । लृङ्- अहोष्यत् ।

19.3.2. भी धातु- ञिभी भये ।

लट् लकार- भी + लट्- भी + तिप्- भी + शप् + ति- शप् को श्लु-

भी + तिप्- धातु को द्वित्व- भी भी + ति-

अभ्यास को ह्रस्व- भि भी + ति- अभ्यास को जश्- बि भी + ति- गुण- बिभेति ।

बिभितः- बिभीतः- बि भी + तस्-

सूत्र- भियोन्यतरस्याम् ।

भी धातु के अन्त में विकल्प से इकार आदेश होता है, यदि कित्-ङित् हलादि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो- बि + भि + तस्-

बिभितः । इकार न होने पर - बिभीतः ।

बि भी + झि- अभ्यस्त धातु होने से झ को अत् - बि भी + अति- यण् - बिभ्यति ।

लिट् लकार- बिभयाञ्चकार ।

ह्री धातु- ह्री लज्जायाम् ।

लट्- जिह्रेति जिह्रीतः जिह्रियति ।

19.3.3. पृ धातु- पृ पालनपूरणयोः ।

- **लट् लकार-**

पिपर्ति- पृ + लट्- पृ + तिप्- पृ + शप् + ति- शप् को श्लु- पृ + तिप्-
धातु को द्वित्व- पृ पृ + ति-

सूत्र- अर्तिपिपर्त्योश्च ।

श्लु होने पर ऋ तथा पृ धातु के अभ्यास के अन्त में इकार आदेश होता है- रपर- पिर् पृ + ति-
पि पृ + ति-

ऋकार को गुण- पिपर्ति ।

पि + पृ + तस्-

सूत्र- उदोष्ठ्यपूर्वस्य ।

ऋकार से पूर्व में यदि ओष्ठ्य वर्ण हो, तब ऋकारान्त अङ्ग को उकार आदेश होता है- रपर-
पि + पुर् + तस्-

सूत्र- हलि च ।

रेफान्त या वकारान्त की उपधा इक् वर्ण को दीर्घ होता है, यदि हल् वर्ण परे हो -
पि + पूर् + तस्- पिपूर्तः । पिपुरति ।

- **लिट् लकार**

पृ + पृ अ (णल्)- अभ्यास ऋ को अर्- उरत्- पर् + पृ + अ- प + पृ + अ-
ऋकार को वृद्धि- प + पार् + अ- पपार ।
पृ पृ + अतुस् (तस्)-

सूत्र- शृदृप्रां ह्रस्वो वा ।

लिट् लकार में शृ दृ तथा पृ धातुओं को ह्रस्व होता है- पृ पृ + अतुस्- ऋकार को यण् रेफ-
पप्रतुः ।

ह्रस्व न होने पर- पृ पृ + अतुस्-

सूत्र- ऋच्छत्यृताम् ।

लिट् लकार में ऋच्छ्, ऋ तथा ऋकारान्त धातुओं को गुण होता है- पृ पर् + अतुस्- पपरतुः ।
पपरुः ।

लिट् लकार-

परीता-परिता- पृ + लुट्- पृ + तिप्- पृ + तास् + तिप्-
पृ + तास् + आ (डा)- पृ + इ + त् + आ

सूत्र- वृतो वा ।
वृञ्, वृङ् तथा दीर्घ ॠकारान्त धातु से परे इट् को विकल्प से दीर्घ होता है- पॄ + ई + त् + आ ॠकार को गुण- पर् + ई + त् + आ- परीता । दीर्घ न होने पर- परिता ।

19.3.4. हा धातु- ओहाक् त्यागे ।

- **लट् लकार-** हा + लट्- हा + तिप्- हा+ शप्+ ति- हा + ति- हा हा + ति- ह हा + ति- झ हा+ ति- जहाति ।

जहितः-जहीतः- हा+ तस् - पूर्ववत् प्रक्रिया- ज हा + तस्-
सूत्र- जहातेश्च ।
यदि हलादि कित् या ङित् प्रत्यय परे हो, तब हा धातु के अन्तिम वर्ण को विकल्प से इकार आदेश होता है- ज हि + तस्- जहितः ।
जिस पक्ष में इकार नहीं होगा, उस पक्ष में-
सूत्र- ई हल्यघोः ।
श्नाप्रत्यय तथा अभ्यस्त धातु के आकार को ईकार होता है, यदि हलादि सार्वधातुक कित् या ङित् प्रत्यय परे हो ।
ज हा + तस्- अपित् प्रत्यय तस् कित्, सार्वधातुक तथा हलादि है, अतः आकार को ईकार-
ज ही + तस्- जहीतः ।
यहाँ यह तथ्य ज्ञेय है, कि सूत्र में अघोः कहा गया है । अर्थात् घु-सञ्ज्ञक धातुओं(दा धा आदि) में यह नियम प्रवृत्त नहीं होता है ।
जहति- हा + झि- झ को अत् आदेश होने से- हा + अति- पूर्ववत् प्रक्रिया-
ज हा + अति-
सूत्र- श्नाभ्यस्तयोरातः ।
श्ना प्रत्यय तथा अभ्यस्त धातु के आकार का लोप होता है, यदि कित् या ङित् सार्वधातुक प्रत्यय परे हो ।
ज हा + अति (झि)-
यहाँ सार्वधातुक ङित् प्रत्यय झि है, अतः अभ्यस्त धातु हा के आकार का लोप-
ज ह् + अति- जहति ।
लिट्- जहौ जहतुः जहुः । लुट्- हाता हातारौ हातारः । लृट्- हास्यति ।

- **लोट् लकार**

जहातु जहताम् जहतु ।

जहाहि-जहिहि-जहीहि- हा + लोट्- हा+ सिप् पूर्ववत् शप्, शप् को श्लु तथा द्वित्वादि कार्य- ज हा + सि
सि को हि आदेश- ज हा + हि- यहाँ पर ङित् प्रत्यय हि परे होने से आ को पूर्ववत् इकार तथा ईकार प्राप्त हैं।
सूत्र- आ च हौ।
हा धातु के आकार को आकार ही आदेश होता है तथा पक्ष में इकार एवं ईकार आदेश भी होते हैं, यदि हि परे हो।
अतः आकार, इकार तथा ईकार आदेश होने पर- जहाहि, जहिहि, जहीहि।

19.3.5. मा धातु- माङ् माने शब्दे च।

- **लट् लकार-**

मिमते- मा + लट्- मा + त- मा+ शप्+ ते- मा + ति- मा मा + ते-
सूत्र- भृञामित्।
भृञ्, माङ् तथा ओहाङ् इन तीन धातुओं के अभ्यास में इकार अन्तादेश होता है, यदि शप् को श्लु हुआ हो।
मा + मा + ते- शप् का श्लु होने से अभ्यास के आकार को इकार आदेश- मि मा + ते
पूर्ववत् ङित् प्रत्यय त परे होने से आकार को ईकार- ई हल्यघोः- मिमीते। मिमाते मिमते।
उसी प्रकार ओहाङ् तथा भृञ् धातु में भी अभ्यास को इकार होगा- जिहीते जिहाते जिहते। बिभर्ति बिभृतः बिभ्रति।

19.3.6. दा धातु- डुदाञ् दाने।

लट्- ददाति दत्तः ददति। लिट्- ददौ ददतुः ददुः। लुट्- दाता दातारौ दातारः। लृट्- दास्यति।

- **लोट् लकार-** ददातु दत्ताम् ददतु।

देहि- दा + लोट्- दा + सिप्- दा + शप् + सि- दा + सि- दा दा + सि - दा दा + हि-
सूत्र- दाधाघ्वदाप्।
दा-रूप तथा धा रूप वाली धातुओं की घु सञ्ज्ञा होती है। कुछ धातुएं स्वतः दा तथा धा रूप वाली हैं। जैसे- डुदाञ्, डुधाञ्। दूसरी तरफ कुछ धातुएं पूर्व में एकारान्त या ओकारान्त होती हैं, तथा बाद में आकारान्त हो जाती हैं। जैसे- दो अवखण्डने, धेट् पाने। इन सभी धातुओं की घु सञ्ज्ञा होती है।

दा दा + हि- यहाँ दा धातु की घु सञ्ज्ञा होने से आकार को एकार तथा अभ्यास का लोप होगा- घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च - देहि ।

- **रूप सिद्धि- देहि**

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से दा की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थ में लोट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	दा+ लोट् दा + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय का विधान हुआ	दा + सिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से सिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से दा धातु से परे शप् प्रत्यय हुआ	दा + अ (शप्) + सि
जुहोत्यादिभ्यः श्लुः	इस सूत्र से शप् का श्लु (लोप) हुआ	दा+ सि
श्लौ	इस सूत्र से दा को द्वित्व हुआ	दा दा+ सि
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग दा की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
सेर्ह्यपिच्च	इस सूत्र से सि को हि आदेश हुआ	दा + दा + हि
दाधा घ्वदाप्	इस सूत्र से दा धातु की घु सञ्ज्ञा हुई	
घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च	इस सूत्र से अभ्यास के दा का लोप तथा अन्य दा के आकार को एकार हुआ	**देहि**

लङ्- अददात् । लिङ्- दद्यात् । आशीर्लिङ्- देयात् । लुङ्- अदात् ।

आत्मनेपद- लट्- दत्ते ददाते ददते । लिट्- ददे । लुट्- दाता । लृट्- दास्यते । लोट्- दत्ताम् । लङ्- अदत्त । लिङ्- ददीत । आशीर्लिङ्- दासीष्ट । लुङ्- अदित ।

19.3.7. धा धातु- डु धाञ् धारणे ।

- **लट् लकार-** दधाति ।

धत्तः- धा + लट्- धा + तस्- धा + शप् + तस्- धा+ तस्-
धा धा+ तस्- ध धा + तस्- द धा + तस्

अभ्यस्त धा धातु के आकार का लोप- द ध् + तस्

सूत्र- दधस्तथोश्च ।

द्वित्व होने पर धा धातु के अन्त में यदि झष् है, तब आदि बश् (द) को भश् (ध) आदेश होता है, यदि तकार या थकार परे हो ।
द ध् + तस्- तस् प्रत्यय का तकार परे होने से दकार को धकार आदेश- ध ध् + तस्-
चर् सन्धि द्वारा धकार को तकार- ध त् + तस्- धत्तः ।
धा धातु के रूप भी उभयपद में दा धातु के समान होते हैं ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न- 1**

  क. श्लौ इस सूत्र का कार्य लिखो ।

  ख. घु सञ्ज्ञा का सूत्र लिखो ।

  ग. अर्तिपिपर्त्योश्च इस सूत्र का उदाहरण लिखो ।

  घ. भी धातु का लट् लकार का प्रथम पुरुष लिखो ।

  ङ. ज + हा + अति (झि) इस अवस्था में क्या कार्य होगा ?

19.4. दिवादि धातु

इस भाग में हम दिव् आदि धातुएं पढेंगे । दिवादि एक गण है, जिसमें आने वाली धातुओं से जहाँ शप् प्रत्यय प्राप्त होगा, वहाँ श्यन् प्रत्यय होता है ।

इस भाग में हम दिवादि गण की उन धातुओं की प्रक्रिया को समझेंगे जिन में तिप् आदि प्रत्ययों की परस्मैपद सञ्ज्ञा होती है ।

19.4.1. दिव् धातु-

दिवु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहार-द्युति-स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु

- **लट् लकार-**

दीव्यति- दिव् + लट्- दिव् + तिप्- तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय प्राप्त

सूत्र- दिवादिभ्यः श्यन् ।
दिवादि गण में आने वाली धातुओं से श्यन् प्रत्यय होता है, यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो । सार्वधातुक प्रत्यय परे होने से सर्वत्र शप् प्रत्यय प्राप्त होता है । अतः यह प्रत्यय शप् का अपवाद है, यह समझना चाहिए ।

उदाहरण- दिव् + तिप्- सार्वधातुक तिप् प्रत्यय परे होने से शप् को बाधकर श्यन् प्रत्यय- दिव् + श्यन् + ति- दिव् + य + ति-

हम पूर्व में पढ चुके हैं, कि हल् वर्ण परे होने पर रेफान्त या वकारान्त की उपधा को दीर्घ होता है, अतः-

हल् वर्ण यकार परे होने पर वकारान्त शब्द दिव् की उपधा इकार को दीर्घ आदेश- दीव् + य् + ति- दीव्यति । दीव्यतः दीव्यन्ति ।

लिट्- दिदेव दिदिवतुः दिदिवुः । लुट्- देविता । लृट्- देविष्यति । लोट्- दीव्यतु । लङ्- अदीव्यत् । लिङ्- दीव्येत् । आशीर्लिङ्- दीव्यात् । लुङ्- अदेवीत् । लृङ्- अदेविष्यत् ।

19.4.2. **नृत् धातु-** नृती गात्रविक्षेपे ।

लट्- नृत्यति । लिट्- ननर्त । लुट्- नर्तिता ।

- **लृट् लकार-**

नर्तिष्यति-नर्त्स्यति- नृत् + लृट्- नृत् + तिप्- नृत् + स्य + ति- यहाँ वलादि आर्धधातुक प्रत्यय स्य होने से इट् आगम प्राप्त-

सूत्र- सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः ।

कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् इन धातुओं से परे सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय को विकल्प से इट् आगम होता है । असिचि कहने से सिच् प्रत्यय को नहीं होता है ।

नृत् + स्य + ति- यहाँ सकारादि आर्धधातुक प्रत्यय स्य के आदि में विकल्प से इट् आगम-

नृत् + इ + स्य + ति-

उपधा ऋकार को गुण अर् तथा सकार को षकार आदेश- नर्त् + इ + ष्य + ति- नर्तिष्यति ।

इट् न होने पर- नर्त्स्यति ।

19.4.3. **व्यध् धातु-** व्यध ताडने ।

- **लट् लकार-**

विध्यति- व्यध् + लट्- व्यध् + तिप्- व्यध् + य (श्यन्) + ति-

सूत्र- ग्रहिज्यावयिव्यधिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ।

ग्रह्, ज्या, वय्, व्यध्, विच्, व्रश्च्, प्रच्छ्, भ्रस्ज् इन धातुओं को सम्प्रसारण होता है, यदि कित् या ङित् प्रत्यय परे हो ।

उदाहरण- व्यध् + य + ति- यहाँ श्यन् अपित् होने से ङित् है, अतः व्यध् के इक् वर्ण यकार को सम्प्रसारण- व् इ अ ध् + य + ति

सम्प्रसारण इकार तथा अकार को पूर्वरूप इकार- व् इ ध् + य + ति- विध्यति ।

➢ **रूप सिद्धि- विध्यति**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से व्यध् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	व्यध्+ लट् व्यध् + ल्
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	व्यध् + तिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से व्यध् धातु से परे शप् प्रत्यय प्राप्त हुआ	
दिवादिभ्यः श्यन्	इस सूत्र से शप् को बाधरकर श्यन् प्रत्यय हुआ	व्यध् + श्यन् + ति व्यध् + य + ति
ग्रहिज्यावयिव्यधिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च	इस सूत्र से व्यध् के यकार स्थान पर सम्प्रसारण इकार हुआ	व् इ अ ध् + ति
सम्प्रसारणाच्च	इस सूत्र से इकार तथा अकार के स्थान पर पूर्वरूप इकार हुआ	व् इ ध् + य + ति **विध्यति**

इसी प्रकार- पुष पुष्टौ- पुष्यति । शुष शोषणे- शुष्यति ।

19.4.4. **नश् धातु-** णश् अदर्शने ।

लट्- नश्यति ।

- **लिट् लकार**

ननाश । नश् नश् + अतुस् (तस्)- यहाँ हम पहले भ्वादिगण में जान चुके हैं कि असंयुक्त हल् के मध्य यदि ह्रस्व अकार होस तब अभ्यास का लोप तथा अकार को एकार होता है- अत एकहल्मध्येनादेशादेरेलिटि- नेश् + अतुस्- नेशतुः । नेशुः ।

नश् + थल् (सिप्)- यहाँ इट् आगम का निषेध प्राप्त होता है- एकाच उपदेशेनुदात्तात्

सूत्र- रधादिभ्यश्च ।

रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, ष्णुह् इन धातुओं से परे वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को विकल्प से इट् आगम होता है - नश् + इ + श

नश् नश् + इ + थ- न नश् + इ + थ-

अभ्यास लोप तथा अकार को एकार आदेश- थलि च सेटि- नेशिथ ।

इट् न होने पर- नश् + थ- नश् नश् + थ- न नश् + थ-

सूत्र- मस्जिनशोर्झलि ।

मस्ज् तथा नश् धातु को नुम् आगम होता है, यदि झल् वर्ण परे हो ।

उदाहरण- न नश् + थ- झल् वर्ण शकार परे होने से नुम् आगम-

न न नुम् श् + थ- न न न् श् + थ

नकार को अनुस्वार- न नंश् + थ- शकार को षकार- न नंष् + थ-

ष्टुत्व सन्धि से थकार को ठकार- ननंष्ठ ।

- **रूप सिद्धि- ननंष्ठ**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से णश् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
णो नः	इस सूत्र से णकार के स्थान पर नकार	नश्

	हुआ	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	नश् + लिट् नश् + ल्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर सिप् प्रत्यय का विधान हुआ	नश् + सिप्
लिट् च	इस सूत्र से लिट् लकार की आर्धधातुक सञ्ज्ञा हुई	
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से सिप् के स्थान पर थल् आदेश हुआ	नश् + थल्
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से नश् भाग को द्वित्व हुआ	नश् नश् + थ
पूर्वोभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- नश् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास नश् के शकार का लोप हुआ	न + नश् + थ
मस्जिनशोर्झलि	इस सूत्र से नश् को नुम् आगम हुआ	न + न नुम् श् + थ न + न न् श् + थ
नश्चापदान्तस्य झलि	इस सूत्र से नुम् के नकार को अनुस्वार हुआ	न + नंश् + थ
व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराज भ्राजच्छशां षः	इस सूत्र से शकार के स्थान पर षकार हुआ	न + नंष् + थ
ष्टुना ष्टुः	इस सूत्र से थ के स्थान पर ठ आदेश हुआ	न + नंष् + ठ **ननंष्ठ**
रधादिभ्यश्च	इस सूत्र से जिस पक्ष में विकल्प से इट् आगम होता है	नश् + इ (इट्) + थल्
	पूर्ववत् द्वित्व तथा अभ्यास सञ्ज्ञा	नश् नश् + इ +

		थ
थलि च सेटि	इस सूत्र से अभ्यास नश् का लोप तथा दूसरे नश् में अकार को एकार आदेश हुआ	नेश् + इ + थ **नेशिथ**

इस प्रकार वलादि आर्धधातुक प्रत्यय के आदि में सर्वत्र विकल्प से इट् आगम होने से दो रूप होंगे । जैसे- वस्- नेशिव नेश्व । मस्- नेश्म

लुट्- नशिता नंष्टा । लृट्- नशिष्यति नङ्क्ष्यति ।

षूङ् प्राणिप्रसवे- सूयते । दूङ् परितापे- दूयते । दीङ् क्षये- दीयते । डीङ् विहायसा गतौ (उडना)- डीयते । माङ् माने- मीयते ।

19.4.5. जन् धातु- जनी प्रादुर्भावे ।

- **लट् लकार**

जन् + लट् - जन् + त- जन् + य (श्यन्) + ते-

सूत्र- ज्ञाजनोर्जा ।

ज्ञा तथा जन् धातु को जा आदेश होता है, यदि शित् प्रत्यय परे हो ।

जन् + य (श्यन्) + ते- शित् प्रत्यय श्यन् परे होने से जन् को जा आदेश- जायते ।

लिट्- जज्ञे जज्ञाता जज्ञिरे । लुट्- जनिता । लृट्- जनिष्यते । लोट्- जायताम् । लङ्- अजायत । लिङ्- जायेत । आशीर्लिङ्- जनिषीष्ट ।

- **लुङ् लकार**

अजनि- जन् + लुङ्- अ + जन् + लुङ्- अ + जन् + त- अ + जन् + च्लि + त -

च्लि को सिच् आदेश प्राप्त-

सूत्र- दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् ।

दीप्, जन्, पूरि, तायि, प्यायि इन धातुओं से परे च्लि को चिण् आदेश विकलप से होता है ।

उदाहरण- अ + जन् + च्लि + त - च्लि को चिण् आदेश होने से-

अ + जन् + चिण् + त- अ + जन् + इ + त

सूत्र- चिणो लुक् ।

चिण् से परे त प्रत्यय का लुक् होता है- अ + जन् + इ-

यहाँ णित् प्रत्यय परे होने पर उपधा वर्ण अकार को दीर्घ प्राप्त है- अत उपधायाः

सूत्र- जनिवध्योश्च ।

जन् तथा वध् धातु की उपधा को वृद्धि नहीं होती है, यदि णित् या ञित् प्रत्यय परे हो ।

अतः वृद्धि का निषेध होने पर- अजनि । चिण् आदेश न होने पर- अजनिष्ट । अजनिषाताम् । अजनिषत ।

- **रूप सिद्धि- अजनि**

लुङ्	इस सूत्र से भूत काल में जन धातु से लुङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	जन् + लुङ् जन् + ल्
	पूर्ववत् आत्मनेपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर त प्रत्यय का विधान हुआ	जन् + त
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वड्उदात्तः	इस सूत्र से जन् से पूर्व में अट् आगम हुआ	अट् जन् + त अ + जन् + त
च्लि लुङि	इस सूत्र से जन् से परे च्लि प्रत्यय हुआ	अ + जन् + च्लि+ त
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश प्राप्त हुआ	
दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्यो न्यतरस्याम्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर चिण् आदेश हुआ	अ + जन् + चिण्+ त अ + जन् + इ +

		त
चिणो लुक्	इस सूत्र से चिण् के स्थान पर लुक् हुआ	अ + जन् + इ
अत उपधायाः	इस सूत्र से उपधा अकार के स्थान पर वृद्धि प्राप्त हुई	
जनिवध्योश्च	इस सूत्र से वृद्धि का निषेध हुआ	**अजनि**

इस प्रकार अन्य धातुएं- विद् सत्तायाम्- विद्यते । बुध् अवगमने- बुध्यते । युध् सम्प्रहारे- युध्यते ।

19.4.6. **सृज् विसर्गे-** सृज्यते ।

- **लुट् लकार**

स्रष्टा- सृज् + लुट्- सृज् + तास्+ लुट्- सृज् + तास् + त-

सृज् + तास् + आ (डा)- सृज् + त् + आ-

सूत्र- सृजिदृशोर्झल्यमकिति ।

सृज् तथा दृश् धातुओं को अम् आगम होता है, यदि झलादि अकित् प्रत्यय परे हो ।

सृज् + त् + आ- यहाँ झलादि अकित् प्रत्यय तास् प्रत्यय परे होने से अम् आगम-

सृ अम् ज् + त् + आ

ऋकार को यण् रेफ आदेश- स्रज् + त् + आ- स्रष् + त् + आ- स्रष् + ट् + आ- स्रष्टा ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न- 2**

  क. ननंष्ठ यहाँ धातु, लकार , पुरुष तथा वचन बताइए ।

  ख. जन् धातु के स्थान पर जा आदेश किन लकारों में होता है ?

  ग. दिव् धातु के अर्थ लिखो ।

  घ. व्यध् + श्यन् + तिप् -................

19.5. स्वादि धातुएं

इस भाग में हम सु आदि धातुएं पढेंगे । स्वादि एक गण है, जिसमें आने वाली धातुओं से जहाँ शप् प्रत्यय प्राप्त होगा, वहाँ श्नु प्रत्यय होता है ।

19.5.1. सु धातु- षुञ् अभिषवे ।

यह धातु ञित् होने से उभयपदी है ।

- **लट् लकार**

सुनोति- षुञ्- सु + लट् - सु + तिप्- सार्वधातुक तिप् प्रत्यय होने से शप् प्रत्यय प्राप्त-
सूत्र- स्वादिभ्यः श्नुः ।

स्वादि धातुओं से परे सार्वधातुक प्रत्यय होने पर श्नु प्रत्यय होता है । श्यन् प्रत्यय के समान श्नु भी शप् का अपवाद है ।

यहाँ सार्वधातुक प्रत्यय तिप् होने से श्नु प्रत्यय- सु + श्नु + ति- सु + नु + ति-

सार्वधातुक प्रत्यय परे होने से उकार को गुण आदेश- सुनोति । सुनुतः । सुन्वन्ति ।

लिट्- सुषाव । लुट्- सोता । लृट्- सोष्यति । लोट्- सुनोतु । लङ्- असुनोत् । लिङ्- सुनुयात् । आशीर्लिङ्- सूयात् ।

- **लुङ्**

असावीत्- अ + सु + लुङ्- अ + सु + च्लि + त्-
अ + सु + स् (सिच्) + त्- अ + सु + स् + ई (ईट्) + त्-
सूत्र- स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु ।

स्तु, सु तथा धूञ् धातुओं से परे सिच् को इट् आगम होता है, यदि परस्मैपद प्रत्यय परे हो ।

यहाँ परस्मैपद लकार होने से सिच् से पहले इट् आगम- अ + सु + इ (इट्) स् + ई + त्-

सिच् का लोप- अ + सु + इ + ई + त्-

उकार को वृद्धि- सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु- अ + सौ + इ + ई + त्-

औ को आव् आदेश तथा इ – ई को दीर्घ- असावीत् ।

आत्मनेपद- लट्- सुनुते । लिट्- सुषुवे । लुट्- सोता । लृट्- सोष्यते । लोट्- सुनुताम् । लङ्- असुनुत । लिङ्- सुन्वीत । आशीर्लिङ्- सविषीष्ट । लुङ्- असोष्ट । लृङ्- असोष्यत ।

19.5.2. **चि धातु-** चिञ् चयने ।

लट्- चिनोति चिनुते ।

- **लिट् लकार**

चिकाय चिचाय- चि + लिट्- चि + तिप्- चि + अ(णल्)- चि चि + अ-

सूत्र- विभाषा चेः ।

चि धातु के अभ्यास से परे चवर्ग को कुत्व (कवर्ग) आदेश विकल्प से होता है- चि कि + अ

णित् प्रत्यय णल् होने से इकार को वृद्धि ऐकार तथा ऐ को आय् आदेश- चिकाय । कुत्व न होने पर चिचाय ।

इसी प्रकार आत्मनेपद में भी विकल्प से कुत्व- चिक्ये चिच्ये ।

19.5.3. **स्तृ धातु-** स्तृञ् आच्छादने ।

लट्- स्तृणाति स्तृणुते ।

- **लिट् लकार**

तस्तार- स्तृ + लिट्- स्तृ + तिप् - स्तृ + अ (णल्)- स्तृ स्तृ + अ-

अभ्यास के ऋकार को अर्- स्तर् स्तृ + अ-

यहाँ आदि हल् वर्ण सकार का शेष प्राप्त है ।

सूत्र- शर्पूर्वाः खयः ।

अभ्यास में खय् वर्ण का शेष होता है, यदि खय् से पहले शर् वर्ण हों । इस प्रकार यह सूत्र हलादि शेष का अपवाद है ।

यहाँ खय्- तकार से पूर्व शर्- सकार होने से खय्- तकार का शेष- त + स्तृ + अ-

णित् प्रत्यय णल् परे होने से ऋकार को वृद्धि आर्-   त स्तार् + अ-   तस्तार । इसी प्रकार आत्मनेपद में भी-   तस्तरे ।

➢ **आशीर्लिङ्**

स्तरिषीष्ट स्तृषीष्ट-   स्तृ + सी (सीयुट्)+ स् (सुट्) + त- यहाँ ऋकारान्त धातु के अनिट् होने से इट् प्राप्त नहीं है ।

सूत्र- ऋतश्च संयोगादेः ।

ऋकारान्त धातु से परे लिङ् लकार या सिच् प्रत्यय को विकल्प से इट् आगम होता है, यदि आत्मनेपद प्रत्यय परे हो तथा धातु के आदि में संयुक्त वर्ण हो-

यहाँ आत्मनेपद त परे होने पर ऋकारान्त तथा संयोगादि स्तृ धातु से परे लिङ् लकार को इट् आगम-   स्तृ + इ + सी + स् + त

ऋकार को गुण अर्, सकारों को षकार तथा तकार को ष्टुत्व सन्धि से टकार आदेश- स्तरिषीष्ट । इट् न होने पर- स्तृषीष्ट ।

- **स्वयं-आकलन प्रश्न- 3**

क. सुनोति यहाँ शप् प्रत्यय की प्राप्ति में क्या प्रत्यय होता है ?

ख. तस्तार यहाँ अभ्यास के हलादि- शेष का अपवाद सूत्र क्या है ?

ग. चि + चि + अ (णल्) -...................

19.6. सारांश

तिङन्त प्रकरण के पहले भाग में हम सभी धातुओं की सामान्य प्रक्रिया को समझते हैं तथा शप् प्रत्यय के आधार पर विभक्त किए गए भ्वादि गण का अध्ययन करते हैं । शप् प्रत्यय सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर होता है जिसका प्रमुख प्रयोजन तिङन्त पदों के मध्य भाग में अकार को उपस्थित कराना है । कुछ तिङन्तों में वह अकार प्राप्त नहीं होता । जैसे पिछले गण अदादि में शप् का लुक होता है । इसी प्रकार जुहोत्यादि गण में हमने शप् का श्लु कार्य समझा । श्लु की विशेषता है कि श्लु होने पर धातु को द्वित्व होता है । इसी प्रकार दिवादि गण में श्यन् प्रत्यय भी हमने पढा जिससे धातुओं में यकार का श्रवण होता है । जैसे- दीव्यति , जायते आदि । स्वादिगण में श्नु प्रत्यय होता है, जिससे धातुओं में नु या नो का श्रवण होता है । जैसे – चिनुते,

चिनोति आदि । इस प्रकार तीन गणों की धातुओं की प्रक्रिया का परिचय हमने इस अध्याय में प्राप्त किया।

19.7. कठिन शब्दावली

श्लु- श्लु एक सञ्ज्ञा है जो प्रत्ययों के अदर्शन की होती है (प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः) ।

अभ्यस्त धातु- जिन धातुओं में **उभे अभ्यस्तम्** इस सूत्र से अभ्यस्त सञ्ज्ञा होती है ।

19.8. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

क. धातु को द्वित्व

ख. दाधा घ्वदाप्

ग. पिपर्ति

घ. बिभेति बिभितः/ बिभीतः बिभ्यति

ङ. आकार लोप

स्वयं आकलन प्रश्न- 2

च. नश् धातु-लिट् लकार-मध्यमपुरुष-एकवचन ।

छ. सार्वधातुक- लट्, लोट्, लङ् तथा विधि लिङ् लकार ।

ज. दिवु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहार-द्युति-स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गति

झ. विध्यति

स्वयं आकलन प्रश्न- 3

ञ. श्नु प्रत्यय ।

ट. शर्पूर्वाः खयः ।

ठ. चिकाय/ चिचाय

19.9. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

19.10. अभ्यासात्मक- प्रश्न

क. जुहोति, ननंष्ठ, जायते- रूप सिद्ध करो ।

ख. जुहोत्यादिभ्यः श्लुः- सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

इकाई-20
रुधादिगण से चुरादि गण

संरचना

20.1. पाठ का परिचय

20.2. पाठ का उद्देश्य

20.3. रुधादि धातु

- 20.3.1. रुध् धातु
- 20.3.2. तृह् धातु
- 20.3.3. हिस् धातु
- 20.3.4. भुज् धातु
  - स्वयं आकलन प्रश्न-1

20.4. तुदादि धातु

- 20.4.1. तुद् धातु
- 20.4.2. भ्रस्ज् धातु
- 20.4.3. कृष् धातु
- 20.4.4. मुच् धातु
- 20.4.5. शद् धातु
- 20.4.6. कृ धातु
- 20.4.7. गृ धातु
- 20.4.8. मृ धातु
  - स्वयं आकलन प्रश्न- 2

20.5. तनादि धातु

- 20.5.1. तन् धातु
- 20.5.2. कृ धातु
  - स्वयं आकलन प्रश्न- 3

20.6. क्र्यादि धातु

- 20.6.1. क्री धातु
- 20.6.2. मी धातु
- 20.6.3. सौत्र धातुएं

20.6.4. पू धातु

20.6.5. स्तृ धातु

20.6.6. ग्रह् धातु

- स्वयं आकलन प्रश्न- 4

20.7. चुरादि धातु

20.7.1. चुर धातु

20.7.2. कथ धातु

20.7.3. गण धातु

- स्वयं आकलन प्रश्न- 5

20.8. सारांश

20.9. कठिन शब्दावली

20.10. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

20.11. सहायक ग्रन्थ

20.12. अभ्यासात्मक प्रश्न

20.1. पाठ का परिचय

पिछले पाठ में हमनें तृतीय,चतुर्थ तथा पञ्चम गण की हु, दिव्, षु आदि धातुओं के विषय में जाना। इस पाठ में हम रुध् आदि धातुओं से लेकर चुर् आदि पाँच गणों की धातुओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे। हम यह तो जान चुके हैं कि धातुओं को दस गणों में विभक्त करने का कारण उनसे होने वाला शप् आदि विकरण प्रत्यय है। जैसे भू आदि धातुओं से सार्वधातुक लकारों में शप् प्रत्यय होता है तथा अदादि धातुओं में शप् का लुक् एवं जुहोत्यादि धातुओं में श्लु होता है, उसी प्रकार रुधादि से क्र्यादि गणों की धातुओं से भी शप् प्रत्यय की प्राप्ति रहने पर श्नम्, श, उ, श्ना आदि कोई भिन्न ही प्रत्यय हो जाता है। इसके अतिरिक्त चुरादि गण में स्वार्थ में णिच् प्रत्यय का प्रयोग इस पाठ का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है।

20.2. पाठ का उद्देश्य

- रुधादि से चुरादि तक पाँच गणों की धातुओं का परिचय
- भिन्न-भिन्न गणों में प्रयुक्त होने वाले भिन्न- भिन्न श्नम् आदि प्रत्ययों का परिचय
- परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं की प्रक्रिया का बोध
- स्वार्थिक णिच् प्रत्यय का बोध
- णिजन्त धातुओं का परिचय

20.3. रुधादि धातुएं

इस भाग में हम रुध् आदि धातुएं पढेंगे।

20.3.1. **रुध् धातु-** रुधिर् आवरणे।

- **लट् लकार**

रुणद्धि- रुध् + लट् - रुध् + तिप्- सार्वधातुक तिप् प्रत्यय परे होने से शप् प्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- रुधादिभ्यः श्नम्।

रुध् आदि धातुओं से परे सार्वधातुक प्रत्यय होने पर श्नम् प्रत्यय होता है -

रु श्नम् ध् + ति- रु न ध् + ति - रुण ध् + ति

तकार को धकार आदेश- झषस्तथोर्धोधः- रुण ध+ धि-

जश् सन्धि से धकार को दकार- रुणद्धि ।

रु न ध् + तस्- तस् प्रत्यय के ङित् होने से श्नम् के अकार का लोप- श्नसोरल्लोपः-

रुन् ध् + तस्- रु न् ध् + धस्

विकल्प से पूर्व धकार का लोप- रुन्धः । लोप न होने पर- रुन्द्धः । रुन्धन्ति । रुन्धे रुन्धाते रुन्धते

- **रूप सिद्धि- रुणद्धि**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से रुध् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	रुध्+ लट् रुध् + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	रुध् + तिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से रुध् धातु से परे शप् प्रत्यय प्राप्त हुआ	
रुधादिभ्यः श्यन्	इस सूत्र से शप् को बाधरकर श्नम् प्रत्यय हुआ	रु श्नम् ध् + ति रु न ध् + ति
झषस्तथोर्धोधः	इस सूत्र से ति के तकार को धकार हुआ	रु न ध् + धि
झलां जश् झशि	इस सूत्र से रुध् के धकार को दकार हुआ	रु न द् + धि
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	इस सूत्र से नकार को णकार हुआ	**रुणद्धि**

लिट् - रुरोध रुरुधे । लुट्- रोद्धा । लृट्- रोत्स्यति रोत्स्यते । लोट्- रुणद्धु रुन्द्धाम् । लङ्- अरुणत् अरुन्द्ध । लिङ्- रुन्ध्यात् रुन्धीत । आशीर्लिङ्- रुध्यात् रुत्सीष्ट । लुङ्- अरुधत् अरौत्सीत् अरुद्ध ।

कुछ अन्य धातुएं- भिदिर् विदारणे- भिनत्ति। छिदिर् द्वैधीकरणे- छिनत्ति । युजिर् योगे-युनक्ति युङ्क्ते । विचिर् पृथग्भावे- विनक्ति विङ्क्ते ।

20.3.2. **तृह् धातु-** तृह हिंसायाम् ।

- **लट् लकार**

तृणेढि- तृह् + तिप् (लट्)- तृ श्नम् ह् + ति- तृ न ह् + ति-

सूत्र- तृणह इम् ।

तृह् धातु से श्नम् प्रत्यय करने पर इम् आगम होता है,यदि हलादि पित् सार्वधातुक प्रत्यय परे हो।

तृ न इम् ह् + ति- तृ न इ ह् + ति- तृ ने ह् + ति- तृ णे ह् + ति- हकार को ढकार- हो ढः- तृ णे ढ् + ति-

तकार को धकार- तृ णे ढ् + धि- धकार को ष्टुत्व से ढकार- तृ णे ढ् + ढि-

ढकार का लोप- ढो ढे लोपः- तृणेढि । तृण्ढः ।

20.3.3. **हिस् धातु-** हिसि हिंसायाम्

- **लट् लकार**

हिनस्ति- हिसि धातु में इकार की इत् सञ्ज्ञा होने से नुम् आगम होता है- हि न् स् + तिप् (लट्)- हि श्नम् न् स् +ति-

सूत्र- श्नान्नलोपः ।

श्नम् से परे नकार का लोप होता है- हि न स् + ति- हिनस्ति । हिंस्तः । हिंसन्ति ।

- **लङ् लकार**

अहिनत्- हिन्स् + तिप् (लङ्)- हि श्नम् न् स् + त्- श्नम् से परे नकार का लोप-

हि न स् + त्- संयोगान्त तकार का लोप-

अहिन स्

सूत्र- तिप्यनस्तेः ।

तिप् प्रत्यय परे होने पर पद के अन्त में सकार को दकार आदेश होता है- अहिनद् । विकल्प से चर् सन्धि- अहिनत् ।

अ हि न स् + स् (सिप्)- संयोगान्त सकार का लोप- अहिन स्-

सिप् प्रत्यय में भी सकार को दकार प्राप्त-

सूत्र- सिपि धातो रुर्वा ।

सिप् प्रत्यय परे होने पर पद के अन्त में सकार को रु आदेश विकल्प से होता है ।

अहिन रु- रेफ को विसर्ग- अहिनः । पक्ष में दकार होने पर- अहिनत् अहिनत् ।

कुछ अन्य धातुएं- अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु- अनक्ति । ओविजी भयचलनयोः- विनक्ति । शिष्लृ विशेषणे- शिनष्टि । भञ्जो आमर्दने- भनक्ति । विद विचारणे- विन्ते ।

20.3.4. **भुज् धातु-** भुज पालनाभ्यवहारयोः ।

- **लट् लकार**

भुनक्ति भुङ्क्ते- भुज् + लट्-

सूत्र- भुजोऽनवने ।

भुज् धातु से आत्मनेपद होता है, यदि अवन (रक्षण) अर्थ न हो । अतः अभ्यवहार (भक्षण) अर्थ में आत्मनेपद होता है । जैसे- बालकः ओदनं भुङ्क्ते । दूसरे पक्ष में जब रक्षण अर्थ होगा, तब परस्मैपद होगा । जैसे- राजा पृथ्वीं भुनक्ति ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न-** 1

  क. रुध् धातु का प्रयोग किस अर्थ में होता है ?

  ख. रुधादि धातुओं से परे शप् प्रत्यय की प्राप्ति होने पर क्या प्रत्यय होता है ?

  ग. तृणेढि यहाँ श्नम् प्रत्यय के अतिरिक्त क्या आगम होता है ?

20.4. तुदादि धातुएं

इस भाग में हम तुद् आदि धातुएं पढेंगे । तुदादि एक गण है, जिसमें आने वाली धातुओं से जहाँ शप् प्रत्यय प्राप्त होगा, वहाँ श प्रत्यय होता है ।

20.4.1. **तुद् धातु-** तुद व्यथने ।

यहाँ स्वरित अकार की इत् सञ्ज्ञा होने से उभयपद होता है ।

- **लट् लकार**

तुदति- तुद् + लट्- तुद् + तिप्- यहाँ पूर्ववत् शप् प्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- तुदादिभ्यः शः ।

तुद् आदि धातुओं से परे श प्रत्यय होता है, यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो-

तुद् + अ (श) + ति- तुदति । तुतुदे ।

20.4.2. **भ्रस्ज् धातु-** भ्रस्ज पाके ।

- **लट् लकार**

भ्रस्ज् + लट्- भ्रस्ज् + तिप्- भ्रस्ज् + अ(श) + ति-

यहाँ हम पूर्व दिवादि प्रकरण में सम्प्रसारण विधि पढ चुके हैं- ग्रहिज्यावयिव्यधि.........- अतः र को सम्प्रसारण ऋ – भृस्ज् + अ + ति-

सकार को श्चुत्व सन्धि से जकार- भृज्जति ।

- **लिट् लकार**

बभर्ज बभ्रज्ज- भ्रस्ज् + लिट्- भ्रस्ज् + तिप्- भ्रस्ज् + अ(णल्)-

सूत्र- भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम् ।

भ्रस्ज् धातु के रेफ तथा उपधा के स्थान पर विकल्प से रम् आगम होता है, यदि आर्धधातुक प्रत्यय परे हो ।

आर्धधातुक लकार लिट् परे होने से भ्रस्ज् के रेफ तथा उपधा वर्ण सकार के स्थान पर रम् आगम- भ् रम् ज् + अ- भर्ज् + अ

द्वित्वादि कार्यों के बाद- बभर्ज । रम् न होने पर- बभ्रज्ज । बभर्जतुः बभ्रज्जतुः ।

थल् प्रत्यय में भारद्वाज नियम से विकल्प से इट् आगम होने से- बभर्जिथ बभर्ष्ठ ।

- **रूप सिद्धि- बभर्ज-बभ्रज्ज**

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से भ्रस्ज् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
परोक्षे लिट्	इस सूत्र से परोक्ष भूत काल में लिट् लकार हुआ	भ्रस्ज् + लिट्
	पूर्ववत् परस्मैपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि…….	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	भ्रस्ज् + तिप्
लिट् च	इस सूत्र से लिट् लकार की आर्धधातुक सञ्ज्ञा हुई	
परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः	इस सूत्र से तिप् के स्थान पर णल् आदेश हुआ	भ्रस्ज् + णल् भ्रस्ज् + अ
भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम्	इस सूत्र से भ्रस्ज् के रेफ तथा उपधा सकार के स्थान पर विकल्प से रम् आदेश हुआ	भ रम् ज् + अ भ र् ज् + अ
लिटि धातोरनभ्यासस्य	इस सूत्र से भर्ज् भाग को द्वित्व हुआ	भर्ज् भर्ज् + अ
पूर्वोऽभ्यासः	इस सूत्र से पूर्व भाग- भर्ज् की अभ्यास सञ्ज्ञा हुई	
हलादिः शेषः	इस सूत्र से अभ्यास भर्ज् के रेफ तथा जकार का लोप हुआ	भ + भर्ज् + अ
अभ्यासे चर्च	इस सूत्र से अभ्यास के भकार को बकार आदेश हुआ	ब + भर्ज् + अ **बभर्ज**
	दूसरे पक्ष में रम् आदेश न होने पर भ्रस्ज् को द्वित्व तथा अभ्यास कार्य होता है	भ्रस्ज + भ्रस्ज् + अ भ + भ्रस्ज् + अ ब + भ्रस्ज् + अ
स्तोः श्चुना श्चुः	इस सूत्र से सकार को चवर्ग जकार आदेश	ब + भ्रज्ज + अ-

	हुआ	**बभ्रज्ज**

लुट्- भर्ष्टा भ्रष्टा । लृट्- भर्क्ष्यति भ्रक्ष्यति । इस प्रकार सर्वत्र आर्धधातुक लकार में विकल्प से रम् आगम होने से धातु रूप में अर्ध रेफ प्राप्त होता है तथा दूसरे पक्ष में रम् न होने पर पूर्ण रेफ प्राप्त होता है ।

20.4.3. **कृष् धातु**- कृष विलेखने ।

लट्- कृषति कृषते । लिट्- चकर्ष चकृषे ।

- **लुट् लकार**

क्रष्टा कर्ष्टा- कृष् + तास् + तिप् (लुट्)- कृष् + त् + आ (डा)-

सूत्र- अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् ।

जिस अनुदात्त धातु की उपधा मे ऋकार हो, उसको विकल्प से अम् आगम होता है, यदि झलादि अकित् प्रत्यय परे हो ।

यहाँ झलादि अकित् तास् प्रत्यय परे होने से तथा उपधा में ऋ होने से कृष् धातु को अम् आगम- कृ अम् ष् + त् + आ

यण् सन्धि से ऋकार को रेफ- क्रष्टा । अम् न होने पर- कर्ष्टा ।

20.4.4. **मुच् धातु**- मुच्लृ मोचने ।

- **लट् लकार**

मुञ्चति- मुच् + तिप् (लट्)- मुच् + अ (श) + ति-

सूत्र- शे मुचादीनाम् ।

मुच्, लिप्, विद्, लुप्, सिच्, कृत्, खिद् तथा पिश इन धातुओं को नुम् आगम होता है, यदि श प्रत्यय परे हो ।

मु न् (नुम्) च् + अ + ति - नकार को अनुस्वार तथा परसवर्ण ञकार- मुञ्चति । मुञ्चते ।

इसी प्रकार अन्यत्र भी नुम् आगम होगा । लुप्लृ छेदने- लुम्पति लुम्पते । विद्लृ लाभे- विन्दति विन्दते । षिच क्षरणे-सिञ्चति सिञ्चते । लिप उपदेहे- लिम्पति लिम्पते । कृती छेदने- कृन्तति । खिद परिघाते- खिन्दति । पिश अवयवे- पिंशति ।

ओव्रश्चू छेदने- वृश्चति । उज्झ उत्सर्गे- उज्झति । लुभ विमोहने- लुभति । विश प्रवेशने- विशति । षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु- सीदति । यहाँ सद् को सीद् आदेश होता है । यह हम भ्वादि धातुओं में जान चुके हैं ।

यहाँ हम तुदादि गण की उन धातुओं का अध्ययन करेंगे जिन में परस्मैपद लकार का प्रयोग होता है ।

20.4.5. **शद् धातु-** शद्लृ शातने ।

- **लट् लकार**

यहाँ भी शद् को शीय् आदेश होता है । यद्यपि यह परस्मैपदी धातु है, तथापि-

सूत्र- शदेः शितः ।

शद् धातु से आत्मनेपद होता है, यदि शित् प्रत्यय होने वाला हो । अतः सभी सार्वधातुक लकारों में श प्रत्यय होने पर आत्मनेपद होगा ।

जैसे लट्- शीयते । लोट्- शीयताम् । लङ्- अशीयत । लिङ्- शीयेत । आर्धधातुक लकारों में शीय् आदेश तथा आत्मनेपद नहीं होते हैं । जैसे- लिट्- शशाद । लुट्- शत्ता । लृट्- शत्स्यति । लुङ्- अशदत् इत्यादि ।

20.4.6. **कॄ धातु-** कॄ विक्षेपे ।

- **लट् लकार**

किरति- कॄ + तिप् (लट्)- कॄ + अ (श) + ति –

सूत्र- ॠत इद्धातोः ।

दीर्घ ॠकारान्त धातु को इकार अन्तादेश होता है - कॄ + अ + ति- दीर्घ ॠकार को रपर इकार- किर् + अ + ति- किरति ।

कुछ स्थानों पर उपसर्ग के बाद कृ धातु होने पर सकार का श्रवण होता है। जैसे- उपस्किरति- उप + कृ + अ + ति-

सूत्र- किरतौ लवने।

उप उपसर्ग के बाद कृ धातु को सुट् आगम होता है, यदि लवन (काटना) अर्थ हो।

उप + स् (सुट्) + कृ + अ + ति- उपस्किरति।

सूत्र- हिंसायां प्रतेश्च।

उप तथा प्रति उपसर्ग के बाद कृ धातु को सुट् आगम होता है, यदि हिंसा अर्थ हो।

जैसे- प्रतिस्किरति।

20.4.7. **गृ धातु-** गृ निगरणे।

- **लट् लकार**

गिलति गिरति- गृ +अ(श) + तिप् (लट्)- पूर्ववत् दीर्घ ॠकार को इर्- गिर् + अ + ति-

सूत्र- अचि विभाषा।

गृ धातु के रेफ को विकल्प से ल् आदेश होता है, यदि अजादि प्रत्यय परे हो- गिल् + अ + ति- गिलति। गिरति।

20.4.8. **मृ धातु-** मृङ् प्राणत्यागे।

यद्यपि यह धातु ङित् होने से आत्मनेपदी है, तथापि कुछ स्थानों पर परस्मैपदी हो जाती है। जैसे-

- **लट् लकार**

म्रियते- मृ + लट् - तिप् प्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च।

मृ धातु से परे आत्मनेपद होता है, यदि शित् प्रत्यय या लुङ् अथवा लिङ् लकार परे हो।

मृ + त- मृ + अ(श) + ते- ॠकार को रिङ् आदेश- म्रि + अ + ते- इकार को इयङ् आदेश- म्रिय् + अ + ते- म्रियते।

इस प्रकार सभी सार्वधातुक लकारों तथा लुङ्- लिङ् में भी आत्मनेपद होगा । जैसे लोट्- म्रियताम् । लङ्- अम्रियत । लिङ्- म्रियेत । आशीर्लिङ्- मृषीष्ट । लुङ्- अमृत । अन्यत्र आर्धधातुक लकारों में परस्मैपद होगा । जैसे लिट्- ममार । लुट्- मर्ता । लृट्- मरिष्यति ।

इसी प्रकार कुछ अन्य तुदादि धातुएं- प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्- पृच्छति । पृङ् व्यायामे- यह वि तथा आङ् उपसर्ग के साथ प्रयुक्त होती है- व्याप्रियते । ओविजी भयचलनयोः- उद्विजते ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न- 2**

  क. क्रष्टा यहाँ कृष् धातु से लुट् लकार में क्या आगम होता है ?

  ख. श प्रत्यय परे होने पर किन धातुओं को नुम् आगम होता है ?

  ग. मृङ् धातु से किन लकारों में आत्मनेपद का प्रयोग होता है ?

20.5. तनादि धातुएं

इस भाग में हम तन् आदि धातुएं पढेंगे । तनादि एक गण है, जिसमें आने वाली धातुओं से जहाँ शप् प्रत्यय प्राप्त होगा, वहाँ उ प्रत्यय होता है ।

तनादि धातुओं में प्रायः सभी उभयपदी हैं । इनमें तन् तथा कृ धातु की प्रक्रिया यहाँ प्रतिपादित की गई है ।

20.5.1. **तन् धातु-** तनु विस्तारे ।

- **लट् लकार**

तनोति- तन् + तिप् (लट्)- तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा होने से शप् प्रत्यय प्राप्त-

सूत्र- तनादिकृञ्भ्य उः ।

तन् आदि तथा कृञ् धातु से उ प्रत्यय होता है, यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो - तन् + उ + ति- गुण- तन् + ओ + ति- तनोति ।

तनुतः तन्वन्ति । तनोषि तनुथः तनुथ । तनोमि । तन्वः तन्मः ।

आत्मनेपद- तनुते तन्वाते तन्वते । लुट्- तनिता । लृट्- तनिष्यति तनिष्यते । लोट्- तनोतु तनुताम् । लङ्- अतनोत् अतनुत ।लिङ्- तनुयात् तन्वीत । आशीर्लिङ्- तन्यात् तनिषीष्ट ।

- **लुङ् लकार**

परस्मैपद- अतानीत् । आत्मनेपद-

अतत- तन् + त (लुङ्)- अ + तन् + च्लि + त- अ + तन् + सिच् + त-

सूत्र- तनादिभ्यस्तथासोः ।

तनादि धातुओं से परे त तथा थास् प्रत्यय होने पर सिच् का विकल्प से लोप होता है ।

अ + तन् + त- अपित् त प्रत्यय के ङित् होने से अनुनासिक नकार का लोप- अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति- अतत ।
सिच् का लोप न होने पर- अतनिष्ट ।
इसी प्रकार थास् प्रत्यय में भी समान प्रक्रिया- अतथाः अतनिष्ठाः ।

- **रूप सिद्धि- अतत**

लुङ्	इस सूत्र से भूत काल में तन् धातु से लुङ् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	तन् + लुङ् तन् + ल्
	पूर्ववत् आत्मनेपद सञ्ज्ञा आदि कार्य	
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर त प्रत्यय का विधान हुआ	तन् + त
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	इस सूत्र से जन् से पूर्व में अट् आगम हुआ	अट् तन् + त अ + तन् + त
च्लि लुङि	इस सूत्र से गा से परे च्लि प्रत्यय हुआ	अ + तन् + च्लि + त
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश हुआ	अ + तन् + सिच् + त
तनादिभ्यस्तथासोः	इस सूत्र से सिच् के स्थान पर	अ + तन् + त

	विकल्प से लोप हुआ	
अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति	इस सूत्र से नकार के स्थान पर लोप हुआ	अ + त + त **अतत**
	जिस पक्ष में सिच् का लोप नहीं हुआ	अ + तन् + स् +त अ + तन् + इ + स्+ त अ + तन् + इ + ष् + त अ + तन् + इ + स्+ ट **अतनिष्ट**

20.5.2. **कृ धातु**- डुकृञ् करणे ।

कृ धातु की सार्वधातुक लकार की प्रक्रिया हम अदादि भाग में विद् धातु के प्रसङ्ग में जान चुके हैं ।

- **लट् लकार**

करोति- कुरुते ।

कुर्वः- कृ + वस् (लट्)- कृ + उ + वस्- ऋकार को गुण अर्- कर् + उ + वस्- अकार को उकार- अत उत् सार्वधातुके- कुर् + उ + वस्-

सूत्र- नित्यं करोतेः ।

कृ धातु से परे उ प्रत्यय का नित्य लोप होता है, यदि वकार या मकार परे हो-

कुर् + वस् - कुर्वः । इसी प्रकार कुर्मः ।

लिट्- चकार चक्रे । लुट्- कर्ता । लृट्- करिष्यति करिष्यते । लोट्- करोतु कुरुताम् । लङ्- अकरोत् अकुरुत ।

- **लिङ्लकार**

कुर्यात्- कृ + तिप् (लिङ्)- कृ + उ + त् - कृ + उ + या (यासुट्) + त्-
ऋकार को गुण अर् तथा अकार को उकार- कुर् + उ + या + त्-

सूत्र- ये च – यकारादि प्रत्यय परे होने पर कृ धातु के उप्रत्यय का लोप होता है- कुर् + या + त्- कुर्यात् ।

इसी प्रकार आत्मनेपद में- कुर्वीत । आशीर्लिङ्- क्रियात् कृषीष्ट । लुङ्- अकार्षीत् अकृत ।

- **सुट् आगम**

कृ धातु से पूर्व कुछ उपसर्गों के प्रयोग करने पर सकार का श्रवण होता है –

सूत्र- सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे । समवाये च ।

सम् तथा परि उपसर्ग पूर्वक कृ धातु का प्रयोग करने पर कृ को सुट् आगम होता है, यदि भूषण- अलङ्करण तथा समवाय – एकत्रित होना अर्थ की प्रतीति हो -

संस्करोति परिष्करोति- अलङ्करोति अथवा सङ्घीभवति ।

सूत्र- उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु ।

उप उपसर्ग पूर्वक कृ धातु को सुट् आगम होता है, यदि प्रतियत्न, वैकृत,वाक्याध्याहार अर्थ हों ।

प्रतियत्न- गुण का आधान करना- एधोदकस्य उपस्कुरुते- लकडी से पानी को गर्म करता है ।

वैकृत- विकार होना- उपस्कृतं भुङ्क्ते- विकृत भोजन खाता है ।

वाक्याध्याहार- वाक्य की आकाङ्क्षा होने पर शेष वाक्य की पूर्ति करना- उपस्कृतं ब्रूते ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न- 3**
  - क. तनादि धातुओं से परे सार्वधातुक लकारों में क्या प्रत्यय होता है ?
  - ख. कुरुते यहाँ ऋकार के स्थान पर क्या आदेश होता है ?
  - ग. कृ धातु को किन उपसर्गों के पूर्व में होने पर सुट् आगम होता है ?

20.6. क्र्यादि धातुएं

इस भाग में हम क्री आदि धातुएं पढेंगे । क्र्यादि एक गण है, जिसमें आने वाली धातुओं से जहाँ शप् प्रत्यय प्राप्त होगा, वहाँ श्ना प्रत्यय होता है ।

यहाँ प्रायः सभी धातुएं उभयपदी हैं। हम क्री, मी, पू, स्तृ, ग्रह् तथा सौत्र धातुओं की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।

20.6.1. **क्री धातु-** डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये।

- **लट् लकार**

क्रीणाति- क्री + तिप् (लट्)- सार्वधातुक तिप् प्रत्यय परे होने से शप् प्रत्यय प्राप्त।

सूत्र- क्र्यादिभ्यः श्ना।

क्री आदि धातुओं से श्ना प्रत्यय होता है, यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो-

क्री + श्ना + ति- क्री + ना + ति- क्रीणाति।

इसी प्रकार प्र.पु. के ए. व. में तस् प्रत्यय होने पर- क्री + ना + तस्

आ के स्थान पर ई आदेश- ई हल्यघोः- क्री + नी + तस्- क्री + णी + तस्- क्रीणीतः।

इसी प्रकार प्र.पु. के ब. व. में झि प्रत्यय होने पर- क्री + ना + झि- क्री + ना + अन्ति

श्ना प्रत्यय के आ का लोप- क्री + न् + अन्ति- क्री + ण् + अन्ति- क्रीणन्ति।

इसी प्रकार क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः।

आत्मनेपद- क्रीणीते क्रीणाते क्रीणते क्रीणीषे क्रीणाथे क्रीणीध्वे क्रीणे क्रीणीवहे क्रीणीमहे।

प्री धातु- प्रीञ् तर्पणे।

20.6.2. **मी धातु-** मीञ् हिंसायाम्।

प्रमीणाति- प्र + मी + ना (श्ना) + तिप् (लट्)-

सूत्र- हिनुमीना।

हिनु- हि धातु से श्नु प्रत्यय, मीना- मी धातु से श्ना प्रत्यय होने पर न के स्थान पर ण आदेश होता है, यदि ण आदेश का निमित्त- र् या ष् उपसर्ग में उपस्थित हो।

प्र उपसर्ग में णकार आदेश का निमित्त र होने से श्ना के न के स्थान पर ण आदेश- प्रमीणाति।

20.6.3. **सौत्र धातुएं**

स्तन्भु, स्तुन्भु, स्कन्भु, स्कुन्भु, स्कुञ् धातुएं गण पाठ में प्राप्त नहीं होती हैं, अपितु अग्रिम सूत्र में ही उपलब्ध होती हैं।

सूत्र- स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ।

स्तन्भु, स्तुन्भु, स्कन्भु, स्कुन्भु, स्कुञ् धातुओं से श्ना प्रत्यय तथा श्नु प्रत्यय होते हैं यदि सार्वधातुक प्रत्यय परे हो।

उदाहरण- स्तन्भ् + श्ना + ति- नकार का लोप - अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति- स्तभ्नाति।

स्तन्भ् + श्नु + ति- नकार का लोप - अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति- स्तभ्नोति।

इसी प्रकार स्तुन्भु- स्तुभ्नाति, स्तुभ्नोति, स्कन्भु- स्कभ्नाति स्कभ्नोति आदि रूप भी समझने चाहिए।

- **लोट् लकार**

स्तभान- स्तन्भ् + ना (श्ना) + सिप् (लोट्)- स्तभ् + ना + हि

सूत्र- हलः श्नः शानज्झौ

हल् से परे श्ना प्रत्यय के स्थान पर शानच् आदेश होता है, यदि हि परे हो।

हल् वर्ण- भ् से परे श्ना के स्थान पर शानच् आदेश- स्तभ् + शानच् + हि- स्तभ् + आन + हि

अकार से परे हि का लोप- स्तभ् + आन- स्तभान।

- **रूप सिद्धि- स्तभान**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से स्तन्भ् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लोट् च	इस सूत्र से विधि आदि अर्थ में लोट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	स्तन्भ् + लोट् स्तन्भ् + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	सतन्भ् + सिप्

तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से शप् प्रत्यय प्राप्त हुआ	
क्र्यादिभ्यः श्ना	इस सूत्र से शप् को बाध कर श्ना हुआ	स्तन्भ् + श्ना + सि
सेर्ह्यपिच्च	इस सूत्र से सि को हि आदेश हुआ	स्तन्भ् + ना + हि
अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति	इस सूत्र से नकार का लोप हुआ	स्तभ् + ना + हि
हलः श्नः शानज्झौ	इस सूत्र से श्ना के स्थान पर शानच् आदेश हुआ	स्तभ् + शानच् + हि स्तभ् + आन + हि
अतो हेः	इस सूत्र से हि का लुक् हुआ	स्तभ् + आन **स्तभान**

- **लुङ् लकार**

व्यष्टभत्- वि + स्तन्भ् + तिप् (लुङ्)- वि + अ (अट्) + स्तन्भ् + च्लि + त्- च्लि के स्थान पर सिच् प्राप्त-

सूत्र- जृस्तन्भुस्तुन्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च ।

जॄ, स्तन्भु, स्तुन्भु, म्रुचु, म्लुचु, ग्रुचु, ग्लुचु, ग्लुञ्चु, श्वि इन धातुओं से परे च्लि को अङ् आदेश होता है ।

वि + अ + स्तभ् + अङ् + त्

सूत्र- सतन्भेः - स्तन्भु धातु के सकार के स्थान पर षकार आदेश होता है ।

वि + अ + ष्तभ् + अ + त्- ष्टुत्व सन्धि से त को ट आदेश-

वि + अ + ष्टभ् + अ + त्

यण् सन्धि से इ के स्थान पर य आदेश- व्यष्टभत् ।

20.6.4. **पू धातु-** पूञ् पवने ।

- **लट् लकार**

पुनाति- पू + ना (श्ना) + ति (लट्)

सूत्र- प्वादीनां ह्रस्वः ।

पूञ्, लूञ्, स्तृञ्, कृञ्, वृञ्, धूञ्, शृ, पृ, वृ, भृ, मृ, दृ, जृ, झृ, धृ, नृ, कृ, ॠ, गृ, ज्या, री, ली, व्ली, प्ली इन चौबीस धातुओं के दीर्घ वर्ण के स्थान पर ह्रस्व आदेश होता है, यदि शित् प्रत्यय परे हो ।

शित् प्रत्यय श्ना परे होने से पू धातु के ऊ के स्थान पर ह्रस्व उ आदेश- पुनाति ।

आत्मनेपद- पुनीते ।

लू धातु- लूञ् छेदने - लुनाति- लुनीते ।

20.6.5. **स्तृ धातु**- स्तृञ् हिंसायाम् - स्तृणाति- स्तृणीते ।

आशीर्लिङ् लकार

- **स्तरिषीष्ट स्तीर्षीष्ट**

स्तृ + त (लिङ्)- स्तृ + सी (सीयुट्) + स् (सुट्) + त- यहाँ पर इट् आगम प्राप्त होता है ।

सूत्र- लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ।

वृङ्, वृञ् तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से परे आत्मनेपद में लिङ् तथा सिच् को विकल्प से इट् आगम होता है ।

इट् आगम होने पर- स्तृ + इट्+ सी+ स् + त- ॠ को अर् गुण आदेश-

स्तर् + इ + सी + स् + त

दोनों सकारों के स्थान पर षकार तथा ष्टुत्व सन्धि से तकार को टकार- स्तरिषीष्ट ।

इट् आगम न होने पर- स्तीर्षीष्ट ।

20.6.6. **ग्रह् धातु**- ग्रह उपादाने ।

लट्- गृह्णाति- ग्रह् + ना (श्ना) + ति (लट्)-

यहाँ पर ग्रह् धातु के रेफ के स्थान पर सम्प्रसारण ऋकार आदेश करते हैं, जिसे हम पहले पढ चुके हैं- ग्रहिज्यावयिव्यधिविचिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च-

गृह् + ना + ति- गृह्णाति ।

आत्मनेपद में- गृह्णीते ।

- **लिट् लकार**

ग्रहीता ग्रहिता- ग्रह् + तिप् (लुट्)- ग्रह् + त् (तास्) + आ (डा)- ग्रह् + इ (इट्) + त् + आ
सूत्र- ग्रहोलिटि दीर्घः ।

ग्रह् धातु से परे इट् को विकल्प से दीर्घ आदेश होता है, यदि लिट् लकार न हो ।

इट् को दीर्घ आदेश करने पर- ग्रह् + ई + त् + आ- ग्रहीता ।

इट् को दीर्घ न करने पर- ग्रह् + इ + त् + आ- ग्रहिता ।

- **स्वयं आकलन प्रश्न- 4**
  क. किन-किन सौत्र धातुओं से श्ना तथा श्नु प्रत्यय होते हैं ?
  ख. पुनाति यहाँ किस सूत्र से ह्रस्व होता है ?
  ग. अग्रहीत्- धातु तथा लकार बताएं ।

20.7. चुरादि धातुएं

इस भाग में हम चुर् आदि धातुएं पढेंगे । चुरादि एक गण है, जिसमें आने वाली धातुओं से स्वार्थ में जहाँ णिच् प्रत्यय होगा तथा सार्वधातुक लकारों में वैसे ही शप् प्रत्यय होगा, जैसे भ्वादि धातुओं में होता है ।
चुर् आदि सभी धातुएं आत्मनेपद के विशेष विधान होने के कारण उभयपदी होती हैं । इनमें हम चुर, कथ तथा गण धातुओ का अवलोकन करेंगे ।

20.7.1. **चुर् धातु-** चुर स्तेये

- **लट् लकार**

चोरयति- चुर् धातु-

सूत्र- सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् ।

सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच, वर्मन्, वर्ण, चूर्ण इन प्रातिपदिकों तथा चुर् आदि धातुओं से णिच् प्रत्यय होता है ।

चुर् + णिच्- अनुबन्ध लोप- चुर् + इ-

उकार को गुण ओकार- पुगन्तलघूपधस्य च- चोर् + इ

लकार का प्रयोग करने के लिए धातु सञ्ज्ञा- सनाद्यन्ता धातवः

चोर् इ + लट्- चोर् इ + तिप्- चोर् इ + अ (शप्) + ति

इकार को गुण एकार- सार्वधातुकार्धधातुकयोः- चोर् ए + अ + ति

एकार को अय् आदेश- चोर् अय् + ति- चोरयति ।

चोरयते- इस प्रयोग में आत्मनेपद के अतिरिक्त समग्र प्रक्रिया पूर्ववत् होती है । अतः आत्मनेपद का विधान ही यहाँ प्रतिपादनीय है ।

सूत्र- णिचश्च- णिच्प्रत्ययान्त धातुओं से आत्मनेपद का विधान होता है, यदि क्रिया से उत्पन्न होने वाला फल कर्ता को प्राप्त हो ।

इस सूत्र से णिच् प्रत्ययान्त चोर् इ इस धातु से आत्मनेपद का प्रयोग होने पर चोरयते यह रूप सिद्ध होता है ।

विशेष- सत्यापपाश.............. इस सूत्र में दो प्रकार के शब्दों से णिच् प्रत्यय बताया गया है - चुर आदि धातुओं से तथा सत्याप – पाश आदि प्रातिपदिकों से । इनमें सत्याप से लेकर चूर्ण तक आए शब्द प्रातिपदिक हैं । इन प्रातिपदिकों से तत् करोति, तद् आचष्टे इन अर्थों में णिच् होगा । जैसे सत्यं करोति आचष्टे वा- सत्यापयति । पाशं करोति – पाशयति इत्यादि । इसके अतिरिक्त चुर आदि धातुओं से स्वार्थ (धातु के अर्थ) में ही णिच् प्रत्यय होगा ।

- **रूप सिद्धि- चोरयति**

सूत्र	कार्य	स्थिति
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से चुर् की धातु सञ्ज्ञा हुई	
सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेना-लोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्	इस सूत्र से चुर् धातु से णिच् प्रत्यय हुआ	चुर् + णिच् चुर् + इ
पुगन्तलघूपधस्य च	इस सूत्र से चुर् धातु की उपधा उकार को गुण ओकार हुआ	चोर् + इ
सनाद्यन्ता धातवः	इस सूत्र से चोरि की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	चोर् + इ + लट् चोर् + इ + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	चोर् + इ + तिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से चुर् धातु से परे शप् प्राप्त हुआ	चोर् + इ + अ(शप्) + ति
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से इकार के स्थान पर गुण एकार हुआ	चोर् + ए + अ + ति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से एकार को अय् आदेश हुआ	चोर् + अय् + अ + ति **चोरयति**
णिचश्च	जिस पक्ष में इस सूत्र से आत्मनेपद हुआ	**चोरयते**

लिट्- चोरयामास, लुट्- चोरयिता, लृट्- चोरयिष्यति चोरयिष्यते, लोट्- चोरयतु चोरयताम्, लङ्- अचोरयत् अचोरयत, लिङ्- चोरयेत् चोरयेत, आशीर्लिङ्- चोर्यात् चोरयिषीष्ट, लुङ्- अचूचुरत् अचूचुरत।

20.7.2. **कथ धातु**- कथ वाक्यप्रबन्धे ।

- **लट् लकार**

कथयति- कथ + णिच्- कथ + इ- आर्धधातुक णिच् प्रत्यय परे होने से अन्तिम अकार का लोप- अतो लोपः- कथ् इ –

कथ् इ + तिप् (लट्)- कथ् इ + अ (शप्) + ति- यहाँ णित् प्रत्यय णिच् परे होने से उपधा अकार को वृद्धि प्राप्त- अत उपधायाः

सूत्र- अचः पूर्वस्मिन् पूर्वविधौ ।

पर पदार्थ को निमित्त मानकर अच् के स्थान में होने वाला आदेश स्थानिवत् होता है, यदि स्थानि रूप अच् से पूर्व में कोई कार्य विधेय हो ।

कथ् इ + अ + ति- यहाँ पर अच् अर्थात् अकार के स्थान पर हुआ लोप आदेश स्थानिवत् होता है, क्योंकि स्थानी रूप अच् से पूर्व उपधा अकार के स्थान पर वृद्धि रूप कार्य करना है । तात्पर्य यह है कि यहाँ जब हम उपधा अकार के स्थान पर वृद्धि करने चलते हैं, तब अच् अकार के स्थान में हुआ लोप आदेश स्थानी अकार के समान ही रहता है । अतः हमें यहाँ अन्त में लोप नहीं दिखाई देगा, अपितु स्थानी अकार ही दिखाई देगा, जिससे उपधा में अकार न होने पर वृद्धि नहीं होगी । इस प्रकार कथ् इ + अ + ति इस अवस्था में पूर्ववत् इकार को गुण एकार तथा एकार को अय् आदेश होने पर- कथयति ।

- **रूप सिद्धि- कथयति**

सूत्र	**कार्य**	**स्थिति**
भूवादयो धातवः	इस सूत्र से कथ की धातु सञ्ज्ञा हुई	
सत्यापपाशरूपवीणातूल श्लोकसेना- लोमत्वचवर्म- वर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्	इस सूत्र से कथ धातु से णिच् प्रत्यय हुआ	कथ + णिच् कथ + इ
अतो लोपः	इस सूत्र से थकार के बाद अकार का लोप हुआ	कथ् + इ
अत उपधायाः	इस सूत्र से कथ् धातु की उपधा अकार को वृद्धि प्राप्त हुई	
अचः पूर्वस्मिन् पूर्वविधौ	इस सूत्र से अकार के लोप का स्थानिवद्भाव	

	होने से वृद्धि नहीं हुई	
सनाद्यन्ता धातवः	इस सूत्र से कथ् इ की धातु सञ्ज्ञा हुई	
वर्तमाने लट्	इस सूत्र से वर्तमान काल में लट् लकार हुआ अनुबन्ध लोप	कथ् + इ + लट् कथ् + इ + ल्
तिप्-तस्-झि.......	इस सूत्र से लकार के स्थान पर तिप् प्रत्यय का विधान हुआ	कथ् + इ + तिप्
तिङ् शित् सार्वधातुकम्	इस सूत्र से तिप् प्रत्यय की सार्वधातुक सञ्ज्ञा हुई	
कर्तरि शप्	इस सूत्र से कथ् धातु से परे शप् प्राप्त हुआ	कथ् + इ + अ(शप्) + ति
सार्वधातुकार्धधातुकयोः	इस सूत्र से इकार के स्थान पर गुण एकार हुआ	कथ् + ए + अ + ति
एचोऽयवायावः	इस सूत्र से एकार को अय् आदेश हुआ	कथ् + अय् + अ + ति **कथयति**
णिचश्च	जिस पक्ष में इस सूत्र से आत्मनेपद हुआ	**कथयते**

20.7.3. **गण धातु**- गण सङ्ख्याने -

लट् – गणयति ।

- **लुङ् लकार**

अजीगणत्- गण + इ (णिच्)- अकार लोप- गण् + इ- अ + गण् + इ + तिप् (लुङ्)-

अ + गण् + इ + च्लि + त्- अ + गण् + इ + अ (चङ्) + त्-

णिच् के इकार का लोप- अ + गण् + अ + त्

धातु को द्वित्व- अ + गण् + गण् + अ + त्-

हलादि शेष तथा अभ्यास कवर्ग को चवर्ग- अ + ज + गण् + अ + त्

सूत्र- ई च गणः - गण् धातु के अभ्यास में विकल्प से ईकार आदेश होता है, यदि णिच् प्रत्यय परे हो तथा णिच् से परे चङ् प्रत्यय हो ।

अ+ज+गण्+अ+त्- अभ्यास के अकार के स्थान पर ईकार-

अ+जी+गण्+अ+त्-   अजीगणत् ।

ईकार आदेश न होने पर-   अजगणत्

➢ **रूप सिद्धि- अजीगणत् ।**

भूवादयो धातवः	इस सूत्र से गण की धातु सञ्ज्ञा हुई	
सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेना-लोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्	इस सूत्र से गण धातु से णिच् प्रत्यय हुआ	गण + णिच् गण + इ
अतो लोपः	इस सूत्र से णकार के बाद अकार का लोप हुआ	गण् + इ
अत उपधायाः	इस सूत्र से उपधा अकार के स्थान पर वृद्धि प्राप्त हुई	
अचः पूर्वस्मिन् पूर्वविधौ	इस सूत्र से अकार के लोप का स्थानिवद्भाव होने से वृद्धि नहीं हुई	
सनाद्यन्ता धातवः	इस सूत्र से गण् इ की धातु सञ्ज्ञा हुई	
लुङ्	इस सूत्र से भूत काल में लुङ् लकार हुआ	गण् + इ + लुङ् गण् + इ + ल्
तिप्तस्झि..........	इस सूत्र से लुङ् के स्थान पर त आदेश हुआ	गण् + इ + त
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः	इस सूत्र से धातु के आदि में अट् आगम हुआ	अ + गण् + इ + त
च्लि लुङि	इस सूत्र से धातु से च्लि प्रत्यय हुआ	अ+गण् + इ + च्लि+ त
च्लेः सिच्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश प्राप्त हुआ	
णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ्	इस सूत्र से च्लि के स्थान पर चङ्	अ+ गण् + इ + चङ् + त

	आदेश हुआ	अ+ गण् + इ + अ+ त
चङि	इस सूत्र से गण् भाग को द्वित्व हुआ	अ+गण्+ गण् + इ + अ+ त
	अभ्यास सञ्ज्ञा तथा हलादि शेष	अ+ग्+ गण् + इ + अ+ त
कुहोश्चुः	अभ्यास के ग् के स्थान पर जकार आदेश हुआ	अ+ज+ गण् + इ + अ+ त
णेरनिटि	इस सूत्र से णिच् के इकार का लोप हुआ	अ+ग+ गण् + अ+ त
सन्वल्लघुनि चङ्परेनग्लोपे	इस सूत्र से अभ्यास को सन्वद्भाव हुआ	
ई च गणः	इस सूत्र से विकल्प से अभ्यास के अकार को ईकार हुआ	अ+जी+ गण् + अ+ त **अजीगणत्**
	जिस पक्ष में अकार को ईकार नहीं हुआ	**अजगणत्**

- **स्वयं-आकलन प्रश्न- 5**

क. णिचश्च इस सूत्र से किस कार्य का विधान होता है ?

ख. कथ धातु का प्रयोग किस अर्थ में होता है ?

ग. अजीगणत् - धातु तथा लकार बताएं।

20.8. सारांश

तिङन्त प्रकरण के पहले भाग में हम सभी धातुओं की सामान्य प्रक्रिया को समझते हैं तथा शप् प्रत्यय के आधार पर विभक्त किए गए भ्वादि गण का अध्ययन करते हैं। शप् प्रत्यय सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर होता है जिसका प्रमुख प्रयोजन तिङन्त पदों के मध्य भाग में अकार को उपस्थित कराना है । कुछ तिङन्तों में वह अकार प्राप्त नहीं होता । तुदादिगण को छोड कर किसी भी धातु के मध्य में अकार का श्रवण नहीं होता, अपितु न, अ, उ, ना की उपलब्धि होती है जिनकी प्राप्ति के लिए हम श्नम्, श, श्ना तथा उ प्रत्यय का परिचय प्राप्त करते हैं। तुदादि धातुओं में भी अकार का श्रवण होता है, जिसके लिए श प्रत्यय होता है। शप् प्रत्यय में पकार की इत्

सञ्ज्ञा होने से यह पित् हो जाता है तथा शप् प्रत्यय होने पर गुण का विधान सम्भव होता है। दूसरी तरफ अन्य श्नम्, श आदि प्रत्ययों में पकार की इत्सञ्ज्ञा न होने से वे प्रत्यय अपित् हैं। चूँकि अपित् प्रत्यय ङित् बन जाते हैं, अतः वहाँ गुण का निषेध होता है। अन्त में चुर् आदि धातुओं से णिच् प्रत्यय का विधान होता है। अतः वहाँ णिजन्त धातुओं की पुनः धातु सञ्ज्ञा तथा लकारों में पूर्ववत् शप् आदि का प्रयोग होता है। इस गण में हम चुर् आदि धातुओं के अतिरिक्त सत्याप, पाश, रूप, वीणा, तूल, श्लोक, सेना, लोम, त्वच, वर्म, वर्ण, चूर्ण आदि सञ्ज्ञा शब्दों का भी धातु के रूप में प्रयोग को समझते हैं।

20.9. कठिन शब्दावली

क. पूर्वविधौ- पूर्वस्य विधिः- पूर्वविधिः, तस्मिन् पूर्वविधौ

ख. सौत्र धातु- जो धातु धातु-पाठ में नहीं है, बल्कि पाणिनीय सूत्रों में उपलब्ध होती हैं वे सौत्र धातुएं हैं। जैसे स्तन्भु-स्तुन्भु आदि धातु।

20.10. स्वयं-आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्वयं आकलन प्रश्न-1

ड. आवरण।

ढ. श्नम् प्रत्यय।

ण. इम् आगम।

स्वयं आकलन प्रश्न- 2

क. अम् आगम।

ख. मुच्, लिप्, विद्, लुप्, सिच्, कृत्, खिद् तथा पिश।

ग. शित् लकार- लट्, लोट्, लङ्, विधि लिङ्, तथा आर्धधातुक लकार लुङ् , आशीर्लिङ्।

स्वयं आकलन प्रश्न- 3

क. उ प्रत्यय।

ख. उकार आदेश।

ग. सम्, परि तथा उप उपसर्ग।

स्वयं आकलन प्रश्न- 4

क. स्तन्भु, स्तुन्भु, स्कन्भु, स्कुन्भु, स्कुञ् ।

ख. प्वादीनां ह्रस्वः ।

ग. ग्रह् धातु-लुङ् लकार ।

स्वयं आकलन प्रश्न- 5

क. णिजन्त धातुओं से विकल्प से आत्मनेपद ।

ख. वाक्य-प्रबन्ध (कहना) ।

ग. गण धातु- लुङ् लकार ।

20.11. सहायक ग्रन्थ

लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी ।

20.12. अभ्यासात्मक- प्रश्न

ग. रुणद्धि, स्तभान, कुरुतः, चोरयति- रूप सिद्ध करो ।

घ. तनादिकृञ्भ्य उः सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या करो ।

ङ. श्नम्, श्नु, श, श्ना- इन प्रत्ययों के विधायक सूत्र लिख कर उदाहरण स्पष्ट करो ।

परिशिष्ट

- **व्याकरण की परिभाषा-**

व्याक्रियन्ते- व्युत्पाद्यन्ते साधुशब्दाः असाधुशब्देभ्यः अनेन तद् व्याकरणम् ।

सामान्यतया हम जानते हैं कि भाषा के शुद्ध या अशुद्ध होने का ज्ञान हमें उस भाषा के व्याकरण से होता है । तथापि क्योंकि संस्कृत शब्दों में व्युत्पत्तिपरक (प्रकृति-प्रत्यय के विभाग से जन्य) अर्थ स्वीकार करने की एक सुदृढ परम्परा है अतः व्याकरण शब्द का अर्थ भी हम इसी दृष्टि से समझेंगे ।

वि + आङ् + कृ + ल्युट् यह व्याकरण शब्द का प्रकृति-प्रत्यय विभाग है । इसमें वि आङ् ये दो उपसर्ग हैं, कृ धातु (प्रकृति) है तथा ल्युट् प्रत्यय है । कृ धातु (डुकृञ् करणे) का अर्थ यद्यपि उत्पन्न करना है तथापि वि आङ् उपसर्ग जोडने के कारण इस का अर्थ अलग करना (पृथक् करना) है । ल्युट् एक कृत् प्रत्यय है जिसका अर्थ करण कारक है । इस प्रकार सभी अर्थों (प्रकृति तथा प्रत्यय के अर्थों) को जोडने से यह अर्थ निकलता है-

जिस (शास्त्र) के द्वारा पृथक् किया (अलग किया) जाता है उसे व्याकरण कहते हैं । यहाँ यह जिज्ञासा होती है कि किसे पृथक् किया जाता है तथा किस से पृथक् किया जाता है । क्योंकि हम भाषा का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं इसलिए यहाँ यह कहा जाएगा-

जिस शास्त्र के द्वारा साधु (शुद्ध) शब्दों को असाधु (अशुद्ध) शब्दों से अलग किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं । इसी को हम संस्कृत में इस प्रकार कहते हैं-
व्याक्रियन्ते- व्युत्पाद्यन्ते साधुशब्दाः असाधुशब्देभ्यः अनेन तद् व्याकरणम् ।

- **सूत्र का लक्षण-**

पाणिनि का व्याकरण सूत्र रूप में हमे प्राप्त होता है अतः यहाँ सूत्र क्या है यह समझना आवश्यक है जिसके लिए हम सूत्र का लक्षण पढेंगे-
अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम् ।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ।।

सूत्र में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं-

अल्पाक्षरम्- कम अक्षरों वाला, असन्दिग्धम्- सन्देहरहित, सारवद्- सारयुक्त, विश्वतोमुखम्- अनेक स्थलों पर प्रवृत्ति वाला, अस्तोभम्- अनर्थकत्व आदि दोषों से रहित, अनवद्यम्- अनिन्दनीय।

- **सूत्र के भेद**

सञ्ज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥

भिन्न- भिन्न कार्यों की दृष्टि से सूत्र के 6 प्रकार हैं।

1. **सञ्ज्ञासूत्र-** सञ्ज्ञासञ्ज्ञिबोधकं सञ्ज्ञासूत्रम्।

जो सूत्र सञ्ज्ञा तथा सञ्ज्ञी का बोध कराए वह सञ्ज्ञा सूत्र है। जैसे- वृद्धिरादैच्। आ ऐ औ ये सञ्ज्ञी हैं तथा वृद्धि सञ्ज्ञा है।

2. **परिभाषासूत्र-** अनियमे नियमकारिणी परिभाषा।

अनियम होने पर जो सूत्र नियम व्यस्थित करता है वह परिभाषा सूत्र है। जैसे- स्थानेऽन्तरतमः। सुधी + उपास्य यहाँ इक् वर्ण ईकार के स्थान पर यण् वर्ण- य् व् र् ल् प्राप्त होते हैं। इको यणचि इस सूत्र से कौन सा यण् वर्ण होगा यह अनिश्चित है। यही अनियम है। यहाँ स्थानेऽन्तरतमः बताता है कि य् व् र् ल् में से जो वर्ण ईकार के साथ अधिक समानता रखता है वह आदेश होगा। अतः ईकार के स्थान पर यकार होगा। यही नियम है जो स्थानेऽन्तरतमः सूत्र करता है। इस प्रकार परिभाषा सूत्र विधि सूत्रों की सहायता कर उनके उपकारक होते हैं।

3. **विधिसूत्र-** अपूर्वविधानं विधिः।

जो सूत्र किसी अपूर्व कार्य का विधान करता है वह विधि सूत्र है। जैसे इको यणचि। यह अच् परे होने पर इक् वर्ण के स्थान पर यण् वर्ण का विधान करता है जो किसी अन्य सूत्र द्वारा बोध्य नहीं है। अतः यह विधि सूत्र है। सामान्यतया सन्धि, प्रत्यय, आगम आदि के विधायक सूत्र विधि सूत्र होते हैं।

4. **नियम सूत्र-** पूर्वेण सिद्धे आरभ्यमाणः विधिः नियमः।

जो सूत्र पहले किसी अन्य सूत्र द्वारा कार्य सिद्ध होने पर उसी कार्य का विधान करता है वह नियम सूत्र है। जैसे- पतिः समास एव। यह पति शब्द की समास होने पर घि सञ्ज्ञा करता है। जैसे- भूपति, सभापति आदि। यहाँ इन ह्रस्व इकारान्त शब्दों की घि सञ्ज्ञा शेषो घ्यसखि इसी सूत्र द्वारा सिद्ध है। पुनः पतिः समास एव यह घि सञ्ज्ञा करता है। जिससे पति शब्द की समास में ही घि सञ्ज्ञा हो, अन्यत्र असमास में न हो , यह अर्थ निकलता है। इससे केवल पति शब्द की घि सञ्ज्ञा नहीं होती है। इस प्रकार नियम सूत्र का प्रयोजन निषेध होता है।

5. **अतिदेश सूत्र-** अन्यतुल्यत्वविधानम् अतिदेशः।

अन्य में अन्य के समान व्यवहार करना अतिदेश है। इसे आरोप भी कहा जाता है। जैसे – सुधी + उपास्य- सु ध् य् + उपास्य यहाँ यदि हम आदेश यकार को हम स्थानी ईकार के समान समझें, तो यही अतिदेश है।

6. **अधिकार सूत्र-** उत्तरोत्तरगमनम् अधिकारः।

कुछ सूत्र अपने स्थान पर किसी विशेष अर्थ का बोध नहीं कराते तथा अग्रिम सूत्रों में उपस्थित होते हैं। वे अधिकार सूत्र हैं। जैसे- प्रत्ययः यह अधिकार सूत्र अग्रिम सूत्रों स्वौजस्...., अजाद्यतष्टाप् इत्यादि में उपस्थित होता है। इससे हमें ज्ञात होता है कि सु औ जस्....., टाप् आदि शब्दों की प्रत्यय सञ्ज्ञा होती है। अधिकार किसी विशेष सूत्र की सीमा तक होता है।

- **सूत्रों में विभक्तियों के अर्थ**

महर्षि पाणिनि के सूत्रों का अर्थ पदों में लगी हुई विभक्तियों के अधीन होता है। आइए इसे समझते हैं –

सूत्रों में सामान्यतया ये विभक्तियां पदों में लगी होती हैं- प्रथमा, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी।

प्रथमा- विधि सूत्रों में प्रथमा विभक्ति विधेय के साथ लगी होती हैं। जैसे इको यण् अचि यहाँ यण् में प्रथमा है जो विधेय है। सञ्ज्ञा सूत्रों में सञ्ज्ञा तथा सञ्ज्ञी दोनों में प्रथमा होती है। जैसे- अदर्शनं लोपः। यहाँ अदर्शनं सञ्ज्ञी तथा लोपः सञ्ज्ञा है। दोनों में प्रथमा है।

पञ्चमी- पञ्चमी विभक्ति निमित्त वाचक पदों में होती है। जहाँ पञ्चमी होती है सामान्यतः उससे पर में कार्य का विधान होता है। जैसे – उद् + स्थानम् यहाँ उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य यह सूत्र प्रवृत्त होता है। उदः में पञ्चमी है । अतः उद् से पर में स्था/स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होगा। इस प्रकार उद् पूर्वसवर्ण कार्य का एक प्रकार से निमित्त हुआ।

सप्तमी- सप्तमी विभक्ति भी निमित्त पदों में होती है। जहाँ सप्तमी होगा सामान्यतः उससे पूर्व में कार्य होगा। जैसे सुधी + उपास्य यहाँ इको यण् अचि यह सूत्र प्रवृत्त होता है। अचि इस पद में सप्तमी है। अतः अच् से पूर्व बिना किसी रुकावट से इक् जहाँ हो , वहाँ यण् होता है। इसलिए अच् उकार से बिना रुकावट पूर्व ईकार के स्थान पर यण् यकार होगा।

षष्ठी- जिन सूत्रों से कोई वर्ण/शब्द विकार बताया जाता है उनमें षष्ठी विभक्ति स्थान अर्थ को प्रकट करती है तथा जिस शब्द में षष्ठी है वह स्थानी कहा जाता है। जैसे इकः यण् अचि यहाँ इकः इस पद में षष्ठी है। अतः इक् के स्थान पर यण् हो, यह अर्थ निकलता है। स्थान का अर्थ प्रसङ्ग अर्थात् प्राप्ति है। अच् से पूर्व इक् के उच्चारण का प्रसङ्ग होने पर यण् का उच्चारण हो, यही तात्पर्य है।

- **सवर्ण-ग्रहण**

हमने सञ्ज्ञा प्रकरण में सवर्ण सञ्ज्ञा को समझा है- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्। जिन वर्णों की परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है उन में सवर्ण ग्रहण होता है। परन्तु सभी जगह सवर्ण ग्रहण नहीं होता है। अतः हम इसके लिए सवर्ण-ग्राहक सूत्र पढते हैं- **अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः-** अण् उदित् सवर्णस्य च अप्रत्ययः। यहाँ दो स्थलों पर सवर्ण ग्रहण होता है – अण् तथा उदित् में।

अण् प्रत्याहार है जिसे केवल इसी सूत्र में लण् के णकार तक लिया जाता है। अतः अण्- अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल। इन में सवर्ण ग्रहण होगा। इस का आशय यह है कि जिस वर्ण की जितने वर्णों के साथ परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है उतने वर्णों का ग्रहण होता है। जैसे 18 अ की परस्पर सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। अतः यदि कहीं अ कहा गया है वहाँ अ से 18 अ का ग्रहण होगा। इस प्रकार अण् प्रत्याहार के वर्णों में सवर्ण ग्रहण होता है। अण् प्रत्याहार में ह तथा र दो वर्णों की सवर्ण सञ्ज्ञा किसी अन्य के साथ नहीं होती है। अतः इन दो में सवर्ण-ग्रहण नहीं होता है। बाकी वर्णों में सवर्ण ग्रहण इस प्रकार होगा-

अ-18, इ- 18,उ- 18, ऋ- 30 (18 ऋ + 12 ऌ), ऌ – 30 (12 ऌ + 18 ऋ), ए- 12, ओ- 12, ऐ-12, औ- 12, य- 2, व- 2, ल- 2

यहाँ सूत्र में अप्रत्ययः कहा गया है जिसे हम अण् के साथ जोडते हैं । अप्रत्ययः- अविधीयमान (जिसका सूत्र द्वारा विधान न हो रहा हो) । अविधीयमान अण् में ही सवर्ण का ग्रहण होता है । जैसे – इको यणचि यहाँ इक्- इ उ ऋ ऌ अविधीयमान हैं । अतः सवर्ण ग्रहण होता है । जैसे इ से ई का ग्रहण । अतः जैसे इति + आदि यहाँ ह्रस्व इकार के स्थान पर यण् होता है उसी प्रकार सुधी + उपास्य यहाँ दीर्घ ईकार के स्थान पर भी होगा । इसी प्रकार यण् विधीयमान है अतः य व ल से सवर्ण का ग्रहण नहीं होगा ।

उदित्- उदित् में सवर्ण-ग्रहण होता है । उदित्- कु चु टु तु पु । यहाँ यह आशय है कि यदि किसी सूत्र में कु कहा है तब वहाँ कवर्ग के वर्णो- क ख ग घ ङ का ग्रहण होगा । इसी प्रकार चु से चवर्ग, टु से टवर्ग, तु से तवर्ग, पु से पवर्ग । जैसे चोः कुः इस सूत्र से क ख ग घ ङ इन में से किसी वर्ण का विधान होगा ।

- **तपरविधि**

सवर्ण-ग्रहण में अ इ उ आदि सभी वर्णो से उनके सभी भेदों का ग्रहण होता है । तथापि कहीं-कहीं पर कुछ ही भेदों का ग्रहण होता है । इसके लिए हम तपर विधि को समझते हैं । सूत्रों में कुछ स्थलों पर वर्णों के पूर्व या पर में तकार का प्रयोग होता है। जैसे- अदेङ् गुणः- अत्, इतश्च- इत् इत्यादि । इन स्थलों पर तपर विधि होती है । तपर करने का प्रयोजन होता है- समकाल का बोध कराना । अर्थात् जिस काल (ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत) वाले स्वर के साथ त जोडा है वह उसी काल का बोध कराएगा । जैसे अत् यहाँ त का प्रयोग ह्रस्व अकार के साथ है । अतः यहाँ अकार से केवल ह्रस्व अकार का ग्रहण होगा । यदि हम केवल अ इतना कहेंगे तब अ से ह्रस्व- दीर्घ-प्लुत सभी का ग्रहण होगा ।

तपर दो प्रकार का है-

तः परः यस्मात्- जिस वर्ण के बाद में त हो, वह तपर है । जैसे- अदेङ् गुणः- अत् यहां अकार के बाद त है । अतः अकार तपर है । इसलिए केवल ह्रस्व अकार की गुण सञ्ज्ञा होती है ।

तात् परः- तपरः । त् के बाद जो वर्ण है वह भी तपर होता है । जैसे- वृद्धिरादैच्- आत् ऐच् यहाँ त के बाद ऐच्- ऐ औ हैं । अतः ये दोनों तपर हैं । इसलिए दीर्घ ऐ तथा औ की ही वृद्धि सञ्ज्ञा होती है प्लुत की नहीं ।

- **रपर विधि**

जिस वर्ण के पर में र है वह रपर है । जैसे अर्, आर् आदि । जब ऋकार के स्थान पर हम अण्- अ इ उ का विधान करते हैं तब अण्- अ इ उ रपर होते हैं । अर्थात् अ- अर्, इ- इर्, उ- उर् । जैसे- देव + ऋषि – देव् अर् षि- देवर्षि।

- **पूर्वत्रासिद्धत्व**

पूर्वत्रासिद्धम् (8-2-1) - पूर्वत्र असिद्धम् । यह सूत्र 8वें अध्याय के दूसरे पाद का पहला सूत्र है । अतः इस सूत्र से पूर्वत्र – पहले सूत्र की दृष्टि में पर सूत्र असिद्ध होता है । इस सूत्र से पूर्व 7 अध्याय तथा आठवें अध्याय का पहला पाद है । इसे हम सपादसप्ताध्यायी कहते हैं । एवं इस सूत्र के बाद आठवें अध्याय के तीन पाद हैं जिन्हें हम त्रिपादी कहते हैं । इस प्रकार सपादसप्ताध्यायी सूत्रों की दृष्टि में त्रिपादी सूत्र असिद्ध होते हैं । असिद्ध का अर्थ यहाँ अविद्यमान समझना है ।

जैसे, मनस् + रथः यहाँ सकार के स्थान पर रु आदेश करने पर-

मनोरथः- मन रु + रथः- मन र् रथः- इस अवस्था में-

हशि च (6-1-114) से रु के स्थान पर उकार प्राप्त है ।

रो रि (8-3-14) से पहले रेफ का लोप प्राप्त है ।

यहाँ विप्रतिषेधे परं कार्यं के अनुसार पर सूत्र **रो रि** बलवान् है, अतः र का लोप होना चाहिए, तथापि पूर्वत्रासिद्धं सूत्र के अनुसार **हशि च** यह सूत्र सपादसप्ताध्यायी में है तथा **रो रि** त्रिपादी में है । अतः **हशि** च की दृष्टि में **रो रि** असिद्ध है । इसलिए रु के स्थान पर उकार होता है न कि र का लोप ।

पूर्वत्रासिद्धम् अतिदेश सूत्र है तथापि यह अधिकार भी है । जिससे त्रिपादी में इसकी उत्तरोत्तर उपस्थिति होती है । अतः जहाँ दो त्रिपादी सूत्रों में पूर्व सूत्र की दृष्टि में पर असिद्ध होता है ।

- **विप्रतिषेध**

विप्रतिषेध का अर्थ तुल्य बल वाले सूत्रों के बीच विरोध है । जब दो सूत्र अपने भिन्न- भिन्न स्थलों पर कार्य करते हों परन्तु कभी किसी एक स्थल पर एक साथ प्राप्त हो जाएं तब ऐसी स्थिति को विप्रतिषेध कहते हैं । जैसे, **सुपि** च यह सूत्र रामाभ्याम् इस स्थल पर दीर्घ करता है तथा **बहुवचने झल्येत्** यह सूत्र रामेषु यहाँ एकार आदेश करता है । इस समय इन सूत्रों में कोई विरोध नहीं है । परन्तु राम + भ्यस् यहाँ दोनों सूत्र प्राप्त होते हैं क्योंकि भ्यस् यञादि प्रत्यय है , अतः दीर्घ प्राप्त है तथा वही भ्यस् झलादि बहुवचन भी है, अतः एकार आदेश भी प्राप्त है । इस प्रकार दोनों सूत्रों में विप्रतिषेध है । इस अवस्था में कौन सा कार्य करना है इसके लिए सूत्र है- **विप्रतिषेधे परं कार्यम्** । अतः रामेभ्यः यहाँ पर कार्य एकार आदेश होता है।

- **अपवाद**

अपवाद का सामान्य अर्थ बाधक है । पाणिनि के सूत्रों में प्रायः बाध्य-बाधक भाव होता है । अपवाद को समझने के लिए एक परिभाषा ज्ञातव्य है- येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति । जिस सूत्र के अवश्य प्राप्त होने पर जो दूसरा सूत्र आरम्भ किया जाता है वह दूसरा सूत्र पहले वाले का बाधक अर्थात् अपवाद होता है ।

जैसे- उपेन्द्रः- उप + इन्द्र- यहाँ अवर्ण के बाद अच् वर्ण इकार होने से गुण होता है उसी प्रकार यह गुण कृष्ण + एकत्वम् यहाँ भी प्राप्त है । गुण की अवश्य प्राप्ति में वृद्धिरेचि यह सूत्र उपस्थित होता है जो आद् गुणः इसका अपवाद बन कर बाध करता है ।

- **उपदेश**

हम बहुत से सूत्रों में उपदेश-पद को देखते हैं । जैसे –उपदेशेऽजनुनासिक इत् , हलन्त्यम् आदि । उपदेश का अर्थ कौमुदी में आद्योच्चारण है । इसी दृष्टि से इस पर विचार करते हैं । उपदेश पाणिनि-कात्यायन-पतञ्जलि का आद्य उच्चारण है ।

इसमें कुछ विशिष्ट पदार्थ आते हैं । जैसे –धातुपाठ, 14 माहेश्वर सूत्र, गणपाठ, उणादि, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, आदेश –

धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम् ।

आगमाः प्रत्ययादेशाः उपदेशाः प्रकीर्तिताः ।।

धातु, माहेश्वर सूत्र, प्रातिपदिक, निपात,प्रत्यय, आगम, आदेश सामान्यतया ये ही इपदेश हैं ।

धातु, सूत्र, प्रत्यय आदि जिस स्वरूप में निर्दिष्ट किए गए हैं, उसी स्वरूप में उपदेश हैं । जैसे – कृ धातु डुकृञ् इस प्रकार धातुपाठ में निर्दिष्ट है । अतः यही उपदेश है । उसी प्रकार 14 माहेश्वर सूत्र, नदट् आदि प्रातिपदिक, तुक् आदि आगम, अण् आदि प्रत्यय,तिप् आदि आदेश ।

- **स्थानिवद्भाव**

यह एक अतिदेश है । अतिदेश का अर्थ होता है अन्य के समान किसी अन्य को समझना । स्थानिना तुल्यः स्थानिवद् अर्थात् स्थानी के समान । आदेश को स्थानी के समान समझना ही स्थानिवद्भाव है । स्थानी के धर्म आदेश में आरोपित किए जाते हैं ।

उदाहरण- भू + लट्- भू + तिप् यरहाँ लट् स्थानी है तथा तिप् आदेश है । लट् प्रत्यय है तो हम आदेश तिप् को भी प्रत्यय समझते हैं । हम यहाँ पर स्थानी लट् का जो प्रत्ययत्व धर्म है उसका अतिदेश आदेश तिप् में करते हैं जिससे तिप् प्रत्यय हो जाता है ।

उसी प्रकार अस् धातु के स्थान पर भू आदेश करते हैं । स्थानी अस् के धर्म धातुत्व का आरोप आदेश भू में करते हैं जिससे भू को भी धातु समझ लेते हैं ।

- **प्रयत्न**

प्रयत्न शब्द वर्णों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है । प्रयत्न दो प्रकार का है- आभ्यन्तर तथा बाह्य । वर्णों की उत्पत्ति से पूर्व में जो मुख में क्रियाएं होती हैं वे आभ्यन्तर प्रयत्न हैं । जैसे कण्ठादि उच्चारण स्थानों का परस्पर स्पर्श करना या कम स्पर्श करना, मुख के अन्दर कण्ठ विवर का विकास होना या कम विकास होना आदि । इस दृष्टि से पाँच आभ्यन्तर प्रयत्न हैं – स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत, संवृत ।

वर्णों की उत्पत्ति के बाद होने वाले प्रयत्न बाह्य हैं । ये ग्यारह हैं- विवार, संवार, नाद, घोष, अघोष, श्वास, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित ।

- **अङ्ग**

अङ्ग एक सञ्ज्ञा है जिसका सूत्र हम पढ चुके हैं – यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् । इसमें अङ्गम् यह सञ्ज्ञा पद है तथा तदादि यह सञ्ज्ञी है । तदादि का अर्थ है- तत् आदिः यस्य । तत् शब्द से हम समझेंगे, जिससे प्रत्यय का विधान हुआ है । भू शप् तिप् यहाँ तिप् प्रत्यय का विधान भू धातु से हुआ है । अतः तत् से भू धातु समझेंगे । वह भू जिसके आदि में है वही तदादि है । । भू शप् + तिप् यहाँ भू शब्द भू शप् इस समुदाय के आदि में है । अतः भू शप् यह तदादि है । अतः तिप् प्रत्यय परे रहते **भू शप्** इस समुदाय की अङ्ग सञ्ज्ञा होगी । अतः सामान्यतया प्रकृति भाग जिस समुदाय के आदि में हो, उसकी अङ्ग सञ्ज्ञा होती है ।

कभी- कभी समुदाय हमें नहीं मिलता है । जैसे राम + सु यहाँ राम शब्द से सु प्रत्यय हुआ है । राम यह प्रकृति भाग किसी भी समुदाय के आदि में नहीं है । इस अवस्था में राम को स्वयं के आदि में समझेंगे । जिससे राम ही तदादि है इसलिए राम की अङ्ग सञ्ज्ञा होती है ।

- **नदी**

नदी सञ्ज्ञा का सूत्र है- **यू स्त्र्याख्यौ नदी** । यू- ई + ऊ । अतः ईकारान्त तथा ऊकारान्त शब्दों की नदी सञ्ज्ञा होती है यदि वे शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग हों । जैसे – देवी, कुमारी, वधू, चमू आदि । यहाँ हमने नदी सञ्ज्ञा का उदाहरण बहुश्रेयसी यह शब्द पढा है जो पुंल्लिङ्ग है – बहवः श्रेयस्यः यस्य सः । यहाँ एक वार्तिक का आश्रय लिया जाता है – **प्रथमलिङ्गग्रहणं च** । जो शब्द समास में हों वे यदि समास से पहले स्त्रीलिङ्ग हों तो उनका भी नदी सञ्ज्ञा में ग्रहण होता है । बहश्रेयसी शब्द में श्रेयसी समास से पहले स्त्रीलिङ्ग है । अतः समास होने पर भी उसकी नदी सञ्ज्ञा होगी ।

यहाँ हमें समझना आवश्यक है कि नदी सञ्ज्ञा किन शब्दों की नहीं होती है । **नेयङुवङ्स्थानावस्त्री-** जिन ईकारान्त शब्दों में इयङ् तथा ऊकारान्त शब्दों में उवङ् आदेश होता है उनकी नदी सञ्ज्ञा नहीं होती है । जैसे- धी, श्री, भू आदि । यह निषेध स्त्री शब्द में नहीं होता । अर्थात् यद्यपि स्त्री शब्द ईकारान्त है तथा इसमें इयङ् आदेश भी होता है फिर भी यहाँ नदी सञ्ज्ञा होती है ।

उपर्युक्त नदी सञ्ज्ञा का निषेध आम् प्रत्यय होने पर नहीं होता है । आम् प्रत्यय में इन शब्दों की विकल्प से नदी सञ्ज्ञा होती है । जैसे - श्री, धी, भू आदि शब्दों की आम् प्रत्यय में विकल्प से नदी सञ्ज्ञा होगी ।

नदी सञ्ज्ञा का अग्रिम नियम है- **ङिति ह्रस्वश्च** । यहाँ हम यू शब्द को जोडते हैं – इ + उ – यू । यहाँ हम दो प्रकार के शब्द लेते हैं- ईकारान्त-ऊकारान्त शब्द, जिनमें इयङ्-उवङ् आदेश होते हैं तथा ह्रस्व इकारान्त-ह्रस्व उकारान्त शब्द । सूत्र में ङिति है, अतः ङित् प्रत्यय परे होने पर नदी सञ्ज्ञा होगी । इस प्रकार इयङ्-उवङ् आदेश वाले नित्य स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त-ऊकारान्त तथा ह्रस्व इकारान्त-ह्रस्व उकारान्त शब्द, उनकी नदी सञ्ज्ञा विकल्प से होती है यदि ङित् प्रत्यय परे हो । स्वादि प्रत्ययों में चार ङित् प्रत्यय हैं- ङे ङसि ङस् ङि । अतः इन स्थलों पर ही नदी सञ्ज्ञा होगी ।

इयङ्- उवङ् आदेश वाले नित्य स्त्रीलिअङ्ग शब्द- श्री, भू, भ्रू ।

ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द- मति, कृति, तनु, लघु आदि ।

- **घि**

घि सञ्ज्ञा के लिए हमने जो सूत्र पढा है वह है- **शेषो घ्यसखि** । यहाँ हम **यू स्त्र्याख्यौ नदी** से यू पद की अनुवृत्ति करते हैं । नदी सञ्ज्ञा में हमने यू (ई + ऊ) से ईकारान्त तथा ऊकारान्त शब्द लिए थे । इस सूत्र में शेष कहा गया है । अतः यहाँ हम यू से दीर्घ से बचे हुए ह्रस्व इकार तथा ह्रस्व उकार का ग्रहण करेंगे । इस प्रकार ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त शब्दों की घि सञ्ज्ञा होती है ।

सूत्र में असखि कहा गया है अतः सखि शब्द यद्यपि ह्रस्व इकारान्त है फिर भी उसकी घि सञ्ज्ञा ही होती है ।

- **वाच्य**

सामान्यतया यह हम सभी जानते हैं कि तीन वाच्य हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य । इन वाच्यों के ज्ञान के लिए हम इस सूत्र को समझते हैं- **लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः** । इस सूत्र में हम कर्तरि इस पद की अनुवृत्ति करते हैं । इसके बाद सूत्र का विभाग करते हैं-

लः कर्मणि कर्तरि तथा लः भावे कर्तरि च अकर्मकेभ्यः । लः – लकार अकर्मक धातुओं से कर्ता तथा भाव में होते हैं, यह दूसरे सूत्र का अर्थ है । उदाहरण- भू धातु अकर्मक है, जिससे भवति इस रूप में लकार का अर्थ कर्ता है । इसे हम कर्तृवाच्य कहते हैं । उसी प्रकार भूयते यहाँ लकार का अर्थ भाव है । यह भाववाच्य है ।

इस प्रकार पहले सूत्र का अर्थ है- सकर्मक धातुओं से लकार कर्ता तथा कर्म अर्थ में होते हैं । उदाहरण- पठ् धातु सकर्मक है, जिससे पठति इस रूप में लकार का अर्थ कर्ता है । यह कर्तृवाच्य है । उसी प्रकार पठ्यते यहाँ लकार का अर्थ कर्म है । इसे हम कर्म वाच्य कहते हैं ।

- **इट् आगम**

हम देखते हैं कि बहुत से लकारों में धातु-रूपों में इकार का श्रवण होता है । जैसे – बभूविथ, भविष्यति इत्यादि । यह इकार इट् आगम से प्राप्त होता है । यद्यपि इट् आगम के बहुत से नियम हैं तथापि मुख्य रूप से वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को इट् आगम होता है- **आर्धधातुकस्येड् वलादेः** । जैसे – भू + थल् यहाँ थल् प्रत्यय वलादि तथा आर्धधातुक सञ्ज्ञक है । अतः यहाँ इट् होता है । उसी प्रकार भविष्यति, भविता , पठिष्यति इत्यादि में समझना है ।

कुछ धातुओं में यह इट् आगम नहीं होता है । जैसे दृश्- द्रक्ष्यति, स्तु- स्तोष्यति, नी- नेष्यति आदि । अतः यह समझना आवश्यक है कि किन धातुओं के प्रयोग में इट् होगा तथा किन में नहीं होगा । इसके लिए हम इट् आगम का प्रमुख निषेध सूत्र समझना होगा –

एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्- उपदेश अवस्था में जो धातु एकाच् (जिस में एक अच् हो) तथा अनुदात्त स्वर से युक्त है उस धातु से वलादि आर्धधातुक प्रत्यय को इट् नहीं होता है । जैसे- नी, स्तु आदि धातुएं एकाच् तथा अनुदात्त हैं इसलिए इनमें इट् नहीं होगा ।

यहाँ प्रश्न होता है कि हम कैसे जान सकते हैं कि किस धातु में स्वर अनुदात्त है ? अतः अनुदात्त धातुओं का सङ्ग्रह कौमुदी आदि ग्रन्थों में प्राप्त होता है । उस सङ्गह में सभी एकाच् तथा अनुदात्त धातुएं बताई गई हैं । ये धातुएं दो प्रकार से हैं- अजन्त धातुएं तथा हलन्त धातुएं ।

अजन्त अनुदात्त धातुएं-

ऊदृदन्तैर्यौति-रु-क्ष्णु-शीङ्-स्नु-नु-क्षु-श्वि-डीङ्-श्रिभिः ।
वृङ्-वृञ्भ्यां च विनैकाचोऽजन्तेषु निहता स्मृताः ।।

ऊत्- ऊकारान्त, यु,रु, क्ष्णु-शीङ्-स्नु-नु-क्षु-श्वि-डीङ्-श्रि-वृङ्-वृञ् इन धातुओं को छोडकर अन्य सभी एकाच् अजन्त धातुएं अनुदात्त हैं ।

ऊकारान्त तथा उपर्युक्त अन्य धातुएँ अनुदात्त नहीं हैं । अतः इनमें इट् का निषेध नहीं होगा । जैसे भू- भविष्यति, यु- यविष्यति, शीङ्- शयिष्यते ।

इनके अतिरिक्त अन्य सभी एकाच् अजन्त धातु अनुदात्त है। जैसे नी- नेष्यति, जि- जेष्यति, चि- चेष्यति, स्तु- स्तोष्यति इत्यादि।

हलन्त अनुदात्त धातुएँ-

हलन्त धातुएं प्रायेण 102 हैं जिनका पाठ चकारान्त धातु, जकारान्त धातु, दकारान्त धातु इस रूप में किया गया है जो कौमुदी आदि ग्रन्थों में द्रष्टव्य है।

- **भ तथा पद सञ्ज्ञा**

हमने षड्लिङ्ग प्रकरण में देखा कि शब्दरूपों की सिद्धि-प्रक्रिया में भ तथा पद सञ्ज्ञा का उपयोग होता है। भसञ्ज्ञा होने पर कुछ विशेष कार्य होते हैं तथा पद सञ्ज्ञा होने पर कुछ अन्य विशेष कार्य। आइए समझते हैं-

पद सञ्ज्ञा- स्वादिष्वसर्वनामस्थाने। पद सञ्ज्ञा पूर्व भाग की होती है जिसके लिए कुछ विशेष प्रत्यय पर में होने आवश्यक हैं। जैसे- स्वादि असर्वनामस्थान प्रत्यय। स्वादि से सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय से लेकर तद्धित में कप् प्रत्यय तक समझने हैं। अतः स्वादि तथा तद्धित प्रत्ययों में पूर्व भाग की पद सञ्ज्ञा होती है। सूत्र में असर्वनामस्थान कहा गया है। अतः असर्वनामस्थान प्रत्यय में पूर्व भाग की पद सञ्ज्ञा नहीं होती। जैसे- विश्वपा + सु / औ/जस्/अम्/औट् इन 5 प्रत्ययों में विश्वपा की पद सञ्ज्ञा नहीं होती। विश्वपा + शस्......सुप् इन 16 प्रत्ययों में पद सञ्ज्ञा होगी।

भ सञ्ज्ञा- यचि भम्। इस सूत्र में स्वादिषु असर्वनामस्थाने जोड लेंगे। अतः प्रायः जहाँ पद सञ्ज्ञा होती है वहीं भ सञ्ज्ञा भी होगी। जैसे स्वादि तथा तद्धित में पूर्व भाग की पद सञ्ज्ञा होती है, वहीं भ सञ्ज्ञा भी होगी। इसके अतिरिक्त पहले 5 सु औ जस् अम् औट् इनमें पदसञ्ज्ञा नहीं होती, उसी प्रकार भ सञ्ज्ञा भी नहीं होगी। पद सञ्ज्ञा 16 स्वादि प्रत्ययों में पूर्व भाग की होती है परन्तु भ सञ्ज्ञा इन सभी स्थलों में नहीं होगी। इसके लिए सूत्र में यचि कहा गया है। इसका अर्थ है – य तथा अच्। अर्थात् 16 प्रत्ययों में यकारादि अथवा अजादि प्रत्यय होगा वहाँ पूर्व भाग की भ सञ्ज्ञा होगी। यकारादि प्रत्यय हमें तद्धित ही प्राप्त होता है। अतः स्वादि में हमें केवल अजादि प्रत्यय ढूंढना है। शस् से सुप् तक 16 प्रत्ययों में शस्-टा-ङे-ङसि-ङस्-ओस्-आम्-ङि-ओस् ये 9 प्रत्यय हैं। अतः ये 9 प्रत्यय जब होंगे तभी पूर्व भाग की भ सञ्ज्ञा होगी।

अभी तक निष्कर्ष यह निकला-

जब 16 में हलादि प्रत्यय (भ्याम् भिस् भ्याम् भ्यस् भ्याम् भ्यस् सुप्) होंगे तब केवल पद सञ्ज्ञा करनी है।

जब 16 में 9 अजादि प्रत्यय होंगे तब भ सञ्ज्ञा तथा पद सञ्ज्ञा दोनों हो सकती हैं ।

अब यहाँ प्रश्न होता है कि क्या अजादि प्रत्यय होने पर भ तथा पद दोनों सञ्ज्ञाएं होंगी या दो में एक ? इसके समाधान के लिए हम सूत्र पढते हैं- **आकडारादेका सञ्ज्ञा** । इसके अनुसार यहाँ एक ही सञ्ज्ञा होती है । फिर प्रश्न होता है कि कौन सी सञ्ज्ञा करें- भ या पद ? इसका उत्तर है- **विप्रतिषेधे परं कार्यम्** । दोनों में जो पर सञ्ज्ञा है वही होगी । अतः भ सञ्ज्ञा पर होने से हो जाती है । इसके अतिरिक्त यदि हम यकारादि तथा अजादि प्रत्यय में भ सञ्ज्ञा नहीं करेंगे तब भ सञ्ज्ञा सूत्र ही व्यर्थ हो जाएगा । जहाँ हम भ सञ्ज्ञा करने चलेंगे वहाँ पद सञ्ज्ञा प्राप्त रहेगी । अतः भ सञ्ज्ञा की प्रवृत्ति कहीं भी नहीं होगी । इसे किसी कार्य का अनवकाश होना कहते हैं तथा जो विधि अनवकाश होती है वह बाधक (अपवाद) बन जाती है । इस प्रकार भ सञ्ज्ञा पद सञ्ज्ञा का बाधक हो जाती है ।

इस प्रकार सिद्धान्त यह है-

विश्वपा + हलादि प्रत्यय (भ्याम् भिस् भ्याम् भ्यस् भ्याम् भ्यस् सुप्)- विश्वपा की पद सञ्ज्ञा

विश्वपा + अजादि प्रत्यय (शस्-टा-ङे-ङसि-ङस्-ओस्-आम्-ङि-ओस्)- विश्वपा की भ सञ्ज्ञा

भ तथा पद सञ्ज्ञाएं अलग-अलग स्थानों पर होती हैं । इससे रूप सिद्धि में भी अन्तर दिखाई देता है ।

विश्वपः- विश्वपा + शस् (अजादि प्रत्ययः) विश्वपा की भ सञ्ज्ञा होने से **आतो धातोः** से आकार का लोप होगा। हलादि प्रत्यय होने पर पद सञ्ज्ञा में लोप नहीं होगा ।

विश्वौहः- विश्ववाह् + शस् (अजादि प्रत्यय)- यहाँ विश्ववाह् की भ सञ्ज्ञा होने से सम्प्रसारण होगा । विश्ववाड्भ्याम् यहाँ भ्याम् हलादि प्रत्यय में पद सञ्ज्ञा होने से सम्प्रसारण नहीं होगा ।

राजभ्याम्- राजन् + भ्याम् (हलादि प्रत्यय) यहाँ राजन् की पद सञ्ज्ञा होने से नलोप होता है । राज्ञः- राजन् + शस् (अजादि प्रत्यय) – यहाँ पद सञ्ज्ञा न होने से नलोप नहीं होता है ।